अथश्रीमद्भागवतभाषाएकादशस्कंधप्रारंभः

व्यास
कृष्ण
उद्धव
चतुर्दास
ऋषि
श्रीसुक
परिक्षित
राजे
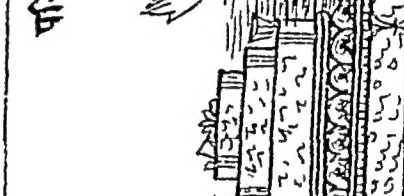
श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगोपालकृष्णायनमः ॥ ॥अथश्रीएकादशस्कंधभाषालिख्यते ॥ दोहा ॥ ह
रिगुरुभक्तप्रसादतैंश्रीधरमिलतविवेक ॥ एकादशइकतीसमैंअधिकएकतैंएक ॥ १ ॥ वेदव्यासकृत
मूलपैंचतुर्दासकृतसार ॥ सुगमजानसबनगरहैंलहैंसुतत्वविचार ॥२॥ श्रीधरपहलेंध्यायमैंचतुर्दासकहिमा
न ॥ विप्रसापकेव्याजतैंमुसलकौआख्यान ॥ ३॥ ॥ चौपाई ॥ संतदाससतगुरुकेचरना ॥ तिनकौं
गहौंसुदृढकरिसरना ॥ जातैंउपजैज्ञानबिचारा ॥ छूटैभरमकर्मव्यवहारा ॥१॥ बहूरोजगतजनमनही
आवुं ॥ तिनकोंनिजानंदपदपावूं ॥ तिनकीआग्याहिरदैधरौं ॥ लोकहितारथभापाकरौं ॥२॥ श्रीभग
वानविरंचहिंभाष्यो ॥ सोविरंचिनारदसौंआष्यो ॥ सोनारदव्यासहीसमुझायौ ॥ व्यासभाषकरिशुकहि
पढायो ॥३॥ सोशुकह्यौपरिक्षतआगैं ॥ छूयौदैतसुपनज्योंजागे ॥ सोइसूतअजहुंविस्तरे ॥ सहअआ
सीऋषीमनधरें ॥ ४ ॥ श्रीभगवानआपयहभाष्यौ ॥ तातैंनामभागवतराष्यौ ॥ आपामिलनकौंपंथबतायै
यामारगबहुतनिहरिपायौ ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्यासदेवजोभागवत ॥ भाष्योद्वादशस्कंध ॥ ति
नमैंएकादशकह्यौ ॥ नैनलहैंज्योंअंध ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकादशइकतिसअध्याय ॥ ति
नकौबहुरोंकहूंसुनाय ॥ जदुकुलनासप्रेममगयौ ॥ बहुतभांतिवैरागउपायौ ॥ ७ ॥ हरिरिपुपंथकह्योपुन
चारी ॥ जनकहिंजोगेश्वरनिबिचारी ॥ सोनारदवसुदेवहिकह्यौ ॥ पायौज्ञानपरमपदलह्यौं ॥ ८ ॥ छठे
कृष्णउधवप्रस्ताव ॥ तेइसकरनिजज्ञानसुनाव ॥ दूजाधवविनासाविस्तार ॥ एइकतीसज्ञाननिजसार ॥ ९ ॥

श्रीशुकदेवकरतआरंभ ॥ श्रोतानृपतिअडिगतजअंभं ॥ तनशुकजीयहकीयोविचार ॥ ज्ञानबिनानाहींउधार ॥ १० ॥ तातैब्रह्मज्ञानसमझाऊं ॥ प्रथमहिदृढवैरागउपाऊं ॥ पंषीऊडेपषंव्हैजैसे ॥ ज्ञानवैराग्यमिलेहरिऐसें ॥ ११ ॥ राजासुनोजगतसुखजैसें ॥ जिनसौंगीलागीभ्रमतनरऐसें ॥ भएकोटिछपनकुलजादव ॥ ज्यौंघनघमंडिचिहुंदिसिभादव ॥ १२ ॥ तिनकौंबहुतभांतिविस्तारा ॥ गनतीकरतरहेंकोंपारा ॥ भवनआपनोकमलाकीयौ ॥ नवनिधजहांबसेरालीयौ ॥ १३ ॥ बहुरिसुधरमासभाममगाई ॥ बैठेंजहांनब्यापेकाई ॥ तिनकीसमताकौनबताऊं ॥ तिनलोकमेंकहीनउपाऊं ॥ १४ ॥ तिनकीबातकहतअबऐसी ॥ पलकमांहिसुपनेकीजैसी ॥ च्यारघरीमेंसबसंघारे ॥ ज्यौंबुदबुदापवनकेंमारें ॥ १५ ॥ रामकृष्णतिहांकौतिकहारा ॥ आपुहिआपसकलसंहारा ॥ विप्रश्रापकोकीनौंब्याजा ॥ एसबकृष्णदेवकेकाजा ॥ १६ ॥ कोकनिकौंवैराग्यजनायौ ॥ उद्धवयाद्वारासमझायौ ॥ प्रथमभीमअर्जुनद्वैअनी ॥ दुष्टनृपतिअरुसेनाहनी ॥ १७ ॥ याविधिभूकौंभारउतार्यौ ॥ नामरूपजलकौविस्तार्यौं ॥ जाकौंगहिपहुंचैभवपारा ॥ आगेंजनजेहोहिअपारा ॥ १८ ॥ बहुतभांतिकरिअदभूतकर्म्म ॥ थाप्योजगतभागवतधर्म ॥ याविधिसबकेकाजसंहारें ॥ तनहरजीवैकुंठपधारें ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसीसुनिअदभूतकथा ॥ जदुकुलकोंद्विजश्राप ॥ कृष्णकरीराजातहां ॥ लषवैतिनकौंपाप ॥ २० ॥ ॥ राज्ञोवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेतोविप्रभक्ततेसारे ॥ परमद्रानअरुसेवकभारें ॥ विप्रकोपकीनौक्योंपूर्ण ॥ जातेंनासभए

सबतूर्ण ॥ २१ ॥ कौननिमितआपसौंकौन ॥ कहोकृपाकरीकरुणाभौन ॥ एकमनाजादवतैंसारैं ॥ आ
पुहीआपकौंनाविधिमारैं ॥ २२ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूकौंभारहरनकेकाजा
भूअवतारलियोवृजराजा ॥ बहुविधभूकौंभारउतार्यौ ॥ तबमनमैंगोपालविचार्यौ ॥ २३ ॥ ज्यौंलागे
हजादवकुलसारौं ॥ त्यौंलगिनहीभूभारउतार्यौं ॥ ममआधीनरहैंएसारैं ॥ तातेंनिजकरवनेनमारैं ॥
२४ ॥ दूजोकोईसकेनहीमारी ॥ तातेंकीजेजतनविचारी ॥ ज्यौंबहुवांसबढेवनमांही ॥ पवननिमितपाई
घरसाईं ॥ २५ ॥ आपआपुमैंअग्निउपावैं ॥ तासौंलागसकलजलजावैं ॥ हैंत्यौंइहांपवनद्विजआप ॥
क्रोधअग्नितहांआपहिआप ॥ २६ ॥ कविविस्तारहोइसंघार ॥ यहठरयोकृष्णविचार ॥ आएसकल
ऋषिसरभौंन ॥ निकटक्षेत्रकरवायोंगोन ॥ २७ ॥ कणवअंगिराविश्वामित्र ॥ दुरवासाभृगुआत्रेअग
स्त ॥ कस्यपवामदेवअरुनारद ॥ औरबहुतऋपीबहुविसारद ॥ २८ ॥ तहांसबेमुनिसुखसौंबेठे ॥ ज
दुकुमारतहांछलकरिपेठे ॥ सांबहींबनिताभेषबनायो ॥ वस्त्रादिकनिउदरअधिकायो ॥ २९ ॥ अति
बीनतीसौंचरणनिलागे ॥ पुछेकृष्णखरेतिनआगें ॥ यहबनितारपूछेद्विजराजा ॥ सनमुपहोतलगेंअति
लाजा ॥ ३० ॥ निकटप्रसवआयोहैंयाकौं ॥ करोबिचारआपमैंताकौं ॥ तुमत्रिकालदरसीसनजानौ ॥
कहाजनहिसोहमहिबषानौं ॥ ३१ ॥ तबकरीक्रोधवचनतेभनै ॥ कुलनासनमुसलएजनै ॥ जातेंतुमबहु
मदसौंमातें ॥ दुष्टबुद्धिहोवोसबजातें ॥ ३२ ॥ वैनसुनतअतिभयमनआयौ ॥ तबहीतहांउदरतेछोटिकायो

देष्योतहांलोहकीमुसल ॥ तबतिनजान्योनाहींकुसल ॥ ३३ ॥ तेसबबहुभांतिपिछताये ॥ लेमुसलराजा
पैंआये ॥ उग्रसेनसोंबोलेबेन ॥ अतिमलीननाहिंजोरेंनेन ॥ ३४ ॥ सुन्योआपअरुमूसलदेष्यौ ॥ जीबन
सबनिगयोकारिलेष्यौ ॥ मूसलरेतचूरनकरवायो ॥ कृष्णनपुछोसमुंदबहायो ॥ ३५ ॥ तातेंरेतरह्योअति
तुच्छ ॥ ताकोंनिगलगयोएकमच्छ ॥ तेचूरणलहारनिकेमारे ॥ आएतीरभअतृनसारे ॥३६॥ झीवरए
कजालबिस्तार्यौ ॥ औरनिसंगमछसोपर्यौ ॥ ताकेउदरलोहसोपायो ॥ व्याधएकसोबानबनायौ ॥३७
॥ हरजीबातसकलसोजांनी ॥ बहुतभलीहिरदेमेमानी ॥ जद्यपिजोगअन्यथाकरनें ॥ परीमनमाहींस
कलसंहरनें ॥ ३८ ॥ यहिविधिसकलआपमनमांई ॥ ताकौंफेरिसकैंक्युंकाई ॥ निश्चैऐसीथापूर्व्यापू
॥ यदुकुलषोऊंद्विजकेसरापू ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥यहबैरागनिरूपयो ॥ ज्ञानकाजशुकदेव ॥
ज्ञानकहोंअबज्योंलह्यौ ॥ नारदसोंवशुदेव ॥ ४० ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुरानेएकादशस्कंधेअ
ष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांजदुकुलश्रापनिरूपणंनामप्रथमोऽध्यायः ॥१॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
दुजैश्रीवसुदेवजी ॥ पूछोनारदपास ॥ नवयोगेश्वरजनकप्रति ॥ कीनौज्ञानप्रकास ॥ १ ॥ श्रीशुकउ
वाच ॥ ॥ चौपाई ॥ द्वारावतीआपतहांपालक ॥ ताहांनहींदक्षआपकौतालक ॥ नारदातिहांनिरंत
रआवें ॥ कृष्मदेवकेदर्सनपावें ॥ १ ॥ जीवनमुक्तभजेनितजाकौं॥वंध्यौजीवतजेक्यौंताकौं ॥ जाकौंसक
ललोकमेंकाल ॥ जाहांतहांनिसिदिनाबिहाल ॥ २ ॥ मानवतनइंद्रियनिसौंराजा ॥ इतनिहारिसेवाकेसा

जा ॥ वंछैजांहींब्रह्मसुरराजा ॥ कृष्णदेनसेवाकेकाजा ॥ ३ ॥ ऐसीदेहभागतेंपावें ॥ हरिकीसेवाक्यौंछ
टिकावें ॥ पलमेंकाटैंकालकेपास हरिकोंपावेंहरिकोंदास ॥ ४ ॥ एकवारवशुदेवकेभवन ॥ नारदकी
योकृपाकरिगवन ॥ तिनबहुविधपूजाबिस्तरी ॥ तापीछैंअस्तुतीकरी ॥५॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ हेप्र
भुजीतुमारौआगमना ॥ सबदेहीनकौंसुषकौंभवना ॥ उपमातुमहीकोनकीदीजे ॥ जिनकेदरससकलभय
छीजें ॥ ६ ॥ औरदेवदेवैंसुषदुषकौं ॥ तुमसेंसाधप्रगटपरसुषकौं ॥ जिनकेह्रदेविराजेराम ॥ तिनतेंहो
इकोननहींकाम ॥ ७ ॥ ऐसेफलदाइकसबदेवा ॥ तेतोलहैंजेनीकरेंसेवा ॥ ज्यौंकरलेंदरपनकौंकोई ॥
आपकरैंआभासेसाई ॥ ८ ॥ तुमसेंसाधसदासुपदाई ॥ जिनकीमहिमाकहीनजाई ॥ जद्यपिदरसमेंभ
योकृतारथ ॥ पूछौंदेवतथापिहितारथ ॥ ९ ॥ जोभागवतधर्मसुनीजीव ॥ जनममरणतजिपावेपीव ॥ तिन
आचर्यानितुमकोंदेव ॥ हरिप्रष्णसोभाष्योभेव ॥ १० ॥ पूर्वजनमसेवामेंकरी ॥ मायामोह्योसमुझउनपरी
॥ तबमेंहरिपुत्रकरीवऱ्यौ ॥ तांहिंहुतेंनहींउधऱ्यौ ॥ ११ ॥ तातेंअबमेंतुमरीसरना ॥ सोकछूकऱ्योमी
टेज्यौंमरना ॥ काहांलौंकहौंजगतकेदुष ॥ जामेंसुपनेहुंनहींसुष ॥ १२ ॥ जहांजहांजाइतहांतहांका
ल ॥ हरिबिनजीवसदाबिहाल ॥ ऐसेंबचनसुनेजबनारद॥ तबतेंबोलेपरमविशारद ॥१३ ॥ ॥ दोहा
परमबचनवसुदेवकेसुनिकेंभयोअनंद ॥ भगवतधर्मप्रकाशियोबोलिपूरनकंद ॥ १४ ॥ नारदउवाच ॥
चौपाई ॥ ॥ धनवसुदेवधन्यतुमबानी ॥ जाकरिपूछेसारंगपानी ॥ कोइहोइसकलजगघातक ॥ वि

ष्णुधरमतेंरहेनपातक ॥१५ ॥ श्रवणकीरतनआदरध्यान ॥ अनुमोदनउकरेंसयान ॥ सोपुनितहोवेंतत
काल ॥ बहुरीपरेंनहिजमकेजाल ॥ १६ ॥ तुमयहकीयोबडोउपकार ॥ मोहिसुमारयोसिरजनहार ॥
जाकोश्रवनकीरतनऐसौ ॥ अंधकारकौंसूरजसैसौं ॥ १७ ॥ तुमसोंकहोंकथाइतिहास ॥ जातेंछूटेंभव
केपास ॥ ऋषभदेवसूनतनवजोगेश ॥ तिनकेंसुनियोजनकनरेस ॥ १८ ॥ सुनिकेब्रह्मपराइनभयो ॥ ज
नममरनसंसारसबमयो ॥ अबउतपतीकहतहौंतिनकी ॥ पूरणप्रीतरामसोंजिनकी ॥ १९ ॥ स्वायंभुवम
नुनृपतीसिरताजा ॥ ताकौंतनयप्रीयव्रतराजा ॥ ताकौंआग्नीध्रसुतभयौं ॥ नाभिजनमताहितेंलयों ॥ २० ॥
ताकेऋषभदेवअवतारा ॥ जिनप्रगटायोब्रह्मविचारा ॥ ताकेपुत्रएकसतभए ॥ सकलवेदकेपारहिगए ॥
२१ ॥ तिनमेंबडेभरतसेंनाम ॥ जाकेरहदेवसेनितराम ॥ जातेंभरतखंडयहकह्यौ ॥ तातेंअजनाभनाम
तेंलह्यौ॥ २२॥ प्रथमबोतहीभोएभोग॥ समझत्यागपुनिलीयोजोग॥ मनक्रमबचनकरिंहरिभक्ति॥ तीजज
नमलहीतिनमुक्ति॥२३॥तिनमेंनवनवषंडनरेस॥एकअरुअसीकरमउपदेस॥नवतेमहाभोगअधिकारी॥
सबतजीसेवेंचरणमुरारी ॥ २४ ॥ तजिअनर्थअर्थविस्तारें ॥ याविधिजीवबहुतनिस्तारें ॥ देहअतीतदि
गंबरबेष ॥ सदाहृदयमेंएकअलेष ॥ २५ ॥ कविहरीअंतरिक्षपिप्पलायन ॥ आविहोंत्रपरबुधपरा
यन ॥ द्रुमिलचमसकरभाजननाम ॥ इननवनिकौब्रह्ममेधाम ॥ २६ ॥ आपहिंआदिसंसारपसारा ॥
सबकौजानेंसिनजनहारा ॥ द्वैतभावकौभिनौषंड ॥ याविधिविचरेंसकलब्रह्मंड ॥ २७ ॥ सुरअरुसाध

॥३

सिद्धगंधर्व ॥ किंनरजक्षनागनगसर्वं ॥ सकललोकमेंइछाचारी ॥आडरहितसबमेंअधिकारी॥२८॥ निमिसनामजनककेसत्रा ॥ एकवारतितकीनोयत्रा ॥ रविसिसोभितजिनकीदेहा ॥ आवतदेषेनृपतिविदेहा ॥ २९॥ राजाअग्निविप्रउठिध्याए ॥ आगेंव्हैलेवकोंआए ॥ क्रमक्रमआनिधरेसिंवासन ॥ क्रमहिंक्रमतेंबेठेआसन ॥ ३० ॥ तबहीताहिक्रमपूजाकीनी ॥ करिदंडोतप्रदक्षिणादीनी ॥ थकआभरणवस्त्रबहुरंगा ॥ तेसबसोभेतिनकेअंगा ॥ ३१ ॥ ज्ञानविचारब्रह्ममयएसें ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकजेसें ॥ तबकरजोरिमयोनृपठाढौ ॥ बाल्योवचनप्रेमअतिबाढौ ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ तबनृपकोंआनंदबढेएकछुनरहिसंभाल ॥ प्रेममगनव्हैबोलियोबानीपरमरसाल ॥ ३३ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥चौपाई ॥ तुमपारषतपरमहरिजीकें ॥ मैजानेसबईनमेनीकें ॥ जीवनिकेंउधरषेकारज ॥ सकललोकमेंविचरोआरज ॥ ३४ ॥ धनमेघनमेरोअवतारा ॥ जातिंपायोदरसतुमारा ॥ नानायोनिजीवयहपावें ॥ मानुषतनसोंकबहुकआपावें ॥३५॥ याविधिनरदेहबहुगेहें ॥ दुरलभसाधसंगनवलेहें ॥ जिनकेंसंगमिटेंभवबंधा ॥ नैनअनंतलहेंज्यौंअंधा ॥३६॥ प्राणनाथहरिहिरदेविराजें ॥ छूटेकर्मभरमभयभाजें ॥ आधोक्षणहोवेंसतसंगा ॥ सोइकरेजगतभयभंगा ॥ ३७ ॥ तातेंममसंदेहमिटावो ॥ परमपेमसोमोहिसुनावो ॥ भगवतधर्मकहोविस्तारी ॥ जोमेहोंसुननेअधिकारी ॥ ३८ ॥ जिनतेंमिटेंजगतभयभारी ॥ बहुरिआपकौंदेतमुरारी ॥ एसुनिबचनसबनिसुषपाए ॥ तबहींमानदेबेनसुनाए ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

नृपकेमनआनंदभयोभाग्योभरमअंदेस ॥ तबराजाप्रश्नकरिबोल्योकविजोगेस ॥ ४० ॥ ॥ कविरुवाच
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राजाप्रश्नकरीतुमएसी ॥ बडभागापुछतहैंजेसी ॥ निरभयपदएकहेंदेवा ॥
हरिकेचरनकमलकीसेवा ॥ ४१ ॥ ताकौंछोडिकरेंनरजोई ॥ दुपकोमूलहोतहैंसोई ॥ जहांजहांजाई
तहांदुपभारी ॥ कालपासकहुंटरेंनटारी ॥४२ ॥ तातेंकहेंभागवतधर्मा ॥ मिलेंरामछूटेंभवभर्मा ॥ श्री
मुपश्रीभगवानसुनायो ॥ आपमिलनकोपंथबतायो ॥ ४३ ॥ मूरखउजेहोवेंकोई ॥ इनपंथहरिपावेसोई
॥ श्रमनहिहोहिविलंबनलागें ॥ भर्मनिसासुतोज्यौंजागें ॥ ४४ ॥ आंषिंषिमुदिउध्यावेंकोई ॥ याहरिपं
थनकछुभयहोई ॥ हरिमिलनकोमारगएहा ॥ हरिभजीमुगतहोईयहदेहा ॥ ४५ ॥ हरिकीभक्तिसबने
तेन्यारी ॥ कौटिविघनतैटरैनटारी ॥ अजरनामहैभक्तिपियारी ॥ तातेंपारहोइनरनारी॥ ४६ ॥ हरि
मिलनेंकोमारगकहौं ॥तेरेउरकौसंसादहौं ॥ मनक्रमबचनबुद्धिअरुचित ॥ होईसुभावहूंतेंजोनित ॥ ४७
॥ सोसबहरीहोसमर्पनकरैं ॥ योभगवतधर्मनिविस्तरै ॥ जबयहजीवहरीहिविसरवै ॥ तबहरिकोमाया
आवरवै ॥ ४८॥ तबआपनोस्वरूपभुलायो ॥ आपमानितनमेंमनलायौ ॥ द्वैतभावतबउपजेमनमें ॥ ताहि
तेंयहमरेजनमें ॥ ४९ ॥ तातेंबुधिसेवेहरिचरना ॥ जातेंमिटेंजनमअरुमरना ॥ सोधिलेइउतमगुरुदेवा॥
हरिकोंजानिकरेंनितसेवा॥ ५०॥सोज्यौंज्यौंआचणंबतावें ॥ त्यौंत्यौंहरिसौंहेतलगावे ॥ कपटनभजेतजेंस
बकास ॥ छूटेंजगतामिलेंतबराम ॥ ५१ ॥ द्वैतकछुहैयेनाहिराजा ॥ आभास्यौसोमनकौकाजा ॥ जेसेंमृ

षामनोरथसुपना ॥ मनहींकरैंतदोनोंउपना ॥ ५२ ॥ हरिकेजनमकर्मगुणनामा ॥ सुनैंकहैंसुमरैंसबजा
मा ॥ तजैंलाजहोवैनिहसंगा ॥ मगनरहैंनितहरिकेरंगा ॥ ५३ ॥ हेकछुनाहींपारहैंसोहैं ॥ ताकेसंग
लागिसबमोहैं ॥ तोसंकल्पविकल्पनकीजैं ॥ मनदृढराषिरामरसपीजैं ॥ ५४ ॥ ऐसेंभजतप्रेमअधिका
वैं ॥ सबतनरोमांचितव्हैंआवैं ॥ गदगदशब्दअटपटेबैंना ॥ द्रवेंचितजलबरषैंनैंना ॥ ५५ ॥ रोवैंह
सैंउचैंसुरगावैं ॥ कबहुंमोनमहिरहोजावैं ॥ लोकबेदकुललाजनव्यानै ॥ ज्यौंउनमताविवसयोंठानै ॥
५६ ॥ दसदिसिसरीतासिंधूनगनागा ॥ रविशशितारांहंसरुकागा ॥ षितिजलपावकपवनआकासा ॥
जोकछूदेषैंहरिकेदासा ॥ ५७ ॥ हरिकौरूपसकलकौंजांनै ॥ जहांतहांपरनामहींठांनै ॥ कबहूंभूलनभा
सैंआना ॥ भयेअनन्यभजैंभगवांनां ॥५८॥ ज्यौंज्यौंबढैंकृष्णअनुरागा ॥ त्यौंत्यौंओरसकलकोत्यागा
ज्यौंज्यौंअनुभोजनप्रतिग्रासा ॥ तोषतोषअरुभुषविनासा ॥ ५९ ॥ याविधिकरतेसाधनभक्ति ॥ हरि
जीसुंबाढैंअनुरक्ति ॥ तबकछुओरभुलिनहींभासैं ॥ तबहिरदेमैंज्ञानप्रकासैं ॥ ६० ॥ ब्रह्मएकदसहूंदि
शिदेषैं ॥ द्वैतभावकरकदैंनलेषैं ॥ एसेंअंगभागवतमाहीं ॥ सोहरिमेंहैंजगमैंनाहीं ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ एसुनिकाविजीकेवचन ॥ कीनोंप्रश्णविदेह ॥ अबभाषोभागवतके॥ लछनकरुनागेह ॥ ६२ ॥

॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुजीकहोभागवतलछन ॥ जिनबसहोवैंरामांविचछ
न ॥कोनधर्महिरदेदृढराषैं ॥ क्यौंआचरैंकोनाबिधिभाषैं ॥६३॥ कोनसुभावनिरंतरतिनकौं।।द्वैतभावनाहीं

उराजिनकें ॥ वोलेहरिजोगेश्वरदूजें ॥ नृपकेवचननहुतातिनपूजें ॥ ६४ ॥ हरिरुवाच ॥ ॥ चौपाई
स्थावरजंगमसूषमथूला ॥ एकप्रकृतिसकलकोमूला ॥ सोएकआतमकेआधारा ॥ सोआतमाअंसनिर
कारा ॥ ६५ ॥ हरिजोतेंउपजेंएदोई ॥ अंतलीनहरिमेंहीहोई॥तातेंअबहूंहरिकोंजाने ॥ द्वैतभावकबहूं
नहीआनें ॥ ६६ ॥ ज्योंसागरबुदबुदातरंगा ॥ यौंसबजगतजगतपतिसंगा ॥ यानिधजांनीभयोजोथीरा
॥ सोहरिजनउत्तमहैंबीरा ॥ ६७ ॥ जाकौंहरिसौंनिहचलप्रेमा ॥ अरुहरिजनसंगतिनितनेमा ॥ सब
जीवनिपरिकरुणाआनें ॥ सबउधरेत्द्दवदेयोंजानें ॥ ६८ ॥ जोंकोउतापरिदोषहींठानें ॥ तहांतजेकेजौं
योंछानें ॥ निसदिनरहेंरामरंगराता ॥ सोहरिजनमध्यमहीताता ॥ ६९ ॥ जोमुरतिमेंहरिकोंजानें ॥
मनक्रमवचनआनमाहिआनें ॥ ताकौंपूजेहिताचितलाई ॥ कछुनमागेंसहजशुभाई॥७०॥तेंहरिजननभजे
हरिजानी ॥ सतगुरुबिनानाहींपहिचानी ॥ सबआतमाहरिकोंनहिजाने ॥ सोप्राकृतजनसाधुबपांनें ॥
७१ ॥ बहुरिकहुंउत्तमहरिभक्त ॥ ताहीपुरुषहुजेंआसक्त ॥ दरसपरसतेंकारजसारें ॥ तेहरिजनभव
सागरतारें ॥७२॥ कृष्णबसेजाकेमनमाहीं ॥ औरकछुसतजानेंनाहीं ॥ जोकछुकहेंसुनेंअरुदेषें ॥ इं
द्रियकृतमायासबलेषें ॥ ७३ ॥ सोहरिजनउत्तमनरदेवा ॥ तातेंमिलेंनिरंजनभेवा ॥ जोजनब्रह्मविचार
हिपायो ॥ आपसमजीसुषमाहिसमायो ॥ ७४॥ जनममरणनदेहकोंजानें ॥ क्षुधातृषाकोंप्राणहिमानें ॥
तृष्णाबुधिरुमयसोमनकों ॥ यहलछनउत्तमहरिजनकों ॥ ७५ ॥ कर्मवासनाअरुसबकामा ॥ तिनकौ

भूलिनजानेनामों ॥ वासुदेवमेंकीनौवासा ॥ सोकहिएउत्तमहरिदासा ॥ ७६ ॥ जिनकेजातिवरनकुल
कर्मा ॥ लोकनबेदनहिंआसरमा ॥ भूलिदेहअभिमाननआवें ॥ सोउत्तमहरिदासकहावें ॥ ७७ ॥ कि
सिवस्तुपरिममतानाहीं ॥ अरुतनकोअभिमाननमाहीं ॥ सबभूतानिपरिसमताआनें ॥ सोउत्तमहरिदासव
खांनें ॥७८ ॥ अष्टसिधित्रिभुवनसुषआवें ॥ परिसोकबहूमननडूलावें ॥ लवनिमिषार्द्धतजेंनाहिंचर्णां ॥
गुणातीतनिरभयपदसर्णां ॥ ७९ ॥ नाकौंशिवविरंचिअरुदेवा ॥ तनमनलाइकरेंनितसेवा ॥ तेऊजाकें
चर्णनपावें ॥ ताकौंजनक्यौंकरिछाटिकावें ॥ ८० ॥ हरिकेचर्णचंद्रचितजाकौं ॥ इहातापउठैक्यौंता
कौं ॥ एसोउत्तमहरिजनकहिए ॥ ताकेंसंगपरमपदलहिए ॥ ८१ ॥ याकोंहरिजोनिमषनत्यागें ॥ प्रे
मदोरिबाधेक्यौंभागें ॥ सोकहिएउत्तमहरिदासा ॥ कदेंनतजीएताकोपासा ॥ ८२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
त्रिविधभक्तलछनकहेंनृपसौंहरिजोगेस ॥ तबमायाकेजानबेकीनीप्रश्नणनरेस ॥ ८३ ॥ ॥इतिश्रीभाग
बतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेभाषाटीकायांनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कवीहरीके
वचनसुनिपूछतहेंनृपराय ॥ अंतरिक्षप्रबुधमनपिप्पलायनऋषिराय ॥ १ ॥ आविहोंत्रविचारतेंकह्योतत्वनि
बसार ॥ श्रीधरतीजैध्यायमेंहैयोगेश्वरचाय ॥ २ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अव
करीक्रिपाकहोहरिमाया ॥ जिनयहसकललोकभरमाया ॥तुमरेमुषसरोजकीबानी हरिकीकथाअमृतमय
जांनी ॥ १ ॥ ताकेपिवततृतिनहींमानौ ॥ सदापिऊंऐसीमनजांनौ ॥ भवकेतापतपनजोदेही ॥ ताकौंपरम

ओपदीएही ॥ २ ॥ ऐसेंसुनीनृपतीकेबेना ॥ वकताकौंउपजावतचैना ॥ तबबोलेबानीअभिरामा ॥ ती
जेअंतरिक्षसेंनामा ॥ ३ ॥ ॥ अंतरिक्षउवाच ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ प्रथमहीदूजोहुतोनंनामा ॥
आपुहिआपविराजेरामा ॥ दयासिंधुमनमांहिविचारा॥तबयहकर्योसकलसंसारा ॥ ४ ॥ पंचभूतकरि
रचियादेह ॥ बांध्योतहांआतमाएह ॥ जातेंपहिलेंभोगवेंभोगा ॥बहुर्योदूषितहोइभवरोगा ॥ ५ ॥ तातें
मोसोंचितलगावें ॥ मेरोनिजानंदपदपावें ॥ मगनरहेमेरेआनंदा ॥ वहुरिनहिंपावेंदुषदंदा ॥ ६ ॥ याही
तेंयहभवविस्तार्यौ ॥ भितरअंसआपनोडार्यौ ॥ इंद्रियदसअरुमनविस्तारें ॥ वहुभांतिकेंविषेसवारें
७॥सोयहअंसइंद्रियनिमनसौं॥भोगभोगवेंसबयातनसौं ॥आपभूलिभोगनमनदीनौ ॥ तबअभिमानदेहकौ
कीनौ ॥ ८ ॥ भोगनिमितकर्मविस्तारें ॥ तिनकेफलसुषदुषभएभारें ॥ तिनकर्मनितेंजोनिअनंता ॥ जन
ममरणकौलेंहनअंता ॥ ९ ॥ प्रलयअवधिलौंभ्रमेंनिरंतर ॥ लीनहोइपुनिमायाअंतर ॥ अष्टिसमेंबहुर्यो
तनपावें ॥ भवसागरकौअंतनआवें ॥ १० ॥ भ्रमतभ्रमतप्रलेंअवधिआवें ॥तबसबनासकालमनभावें ॥
तबसतवरषनवरषेंजलधर ॥ तेजतपेंतहांद्वादसादिनकर ॥ ११ ॥ वहुर्योअग्निशेषमुषानिसरें॥प्रलयप
वनामिलिजहांतहांपसरें ॥ सारोलोकभस्मतबकरें ॥ बहुरोंप्रलयमेघसंचरें ॥ १२ ॥ हातींसुंढधारुजल
वरषें॥ यौंअखंडवीतेसरवरषें॥तबहोवेंविराटकौनासा॥आतमकरेप्रकृतिमेंवासा॥१३॥जोअभक्तहोवेंब्रह्मा
हु॥तोइूंब्रह्ममाहिनहिजाहूं ॥जेहरिभक्तसुहरिकौपावें॥ औरप्रकृतिमेंसकलसमावें ॥ १४ ॥पवनकरेंजब

गंधहोक्षीनां ॥ भूमिहोइतबजलमेलीना ॥ त्यौंहींरसकौंहरेंसमीर ॥ तातेंमिलैंतेजमेंनीर ॥ १५ ॥ अंध
कारजबरूपहिहरें ॥ तेंजतबैपवनसंचरें ॥ बहूरिस्परसहरेंआकासा ॥ पवनकरेतबनभमेवासा ॥१६॥
कालकीयोजबशब्दहिक्षीनां ॥ तामसअहंकारनभलीना ॥ तामसअहंकारमनामिलें ॥ राजसअहंकार
दोउगलें ॥ १७ ॥ इंद्रियअरुराजसअहंकारही ॥ सत्वअहंकीनौअहारहीं ॥ बुधिदेवसात्विकअहं
कारा ॥ महतत्वकीनौसंहारा ॥ १८ ॥ महतत्वसौंप्रकृतिहिमिलें ॥ याविधिकालसकलकौंगिलें ॥ऐसी
हिविधिवारंवारा ॥ उतपतिप्रलयनअंतनपारा॥ १९ ॥ यहसबहरिकीमायाकरें ॥ उपजावेंप्रतिपालेंहरें ॥
मैंतुमकौंसंक्षेपसुनाई ॥ बहुरिप्रष्णकरोमनभाई ॥२०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसीसुनीमायाप्रबलउपज्यो
नृपकेभीत ॥ तबपूछोआधीनव्हैतातरबेकीरीत ॥ २१ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई॥
ऐसीप्रबलईसकीमाया ॥जिनयहसकललोकभरमाया ॥ ताकौंतुमसेंग्यानितरें ॥ हमसेंदेहीक्यौंनिस्तरें ॥
२२ ॥ ताकौंसुषेंतरीएदेवा ॥ सोकरिकृपापावतावोभेवा ॥ एसुनिवचननृपतिकेसुधा ॥ तबबोलेचौथेंप्र
बुधा ॥ २३॥प्रभुधउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सकलमनुष्यसुषानिकेकाजा ॥ करेंकर्मआरंभहि
राजा ॥ तिनतेंकेवलदुषअधिकारा ॥ अवहूंअरुआगेंविस्तारा ॥ २४ ॥ पाएहूंधनदुपअपारा ॥ नित्य
दिनचिंताकौंअधिकारा ॥ सोउअतिदुर्लभनहींआवें ॥ जोआयेतोथीरनरहावें ॥ २५ ॥ त्यौंहीग्रहकुटंब
सुतदारा॥पलकमांहिढईजाईपसारा ॥ ज्यौंपंथमांहिमिलनाहोई ॥ घरींमांहीविछरैंसबकोई ॥२६॥ जो

कछूइहांकमेंकमावें ॥ तिनतेंज्योनिज्योनिदुषपावें ॥ इनमेंकोईनहीछोडावें ॥ आपआपकौसबकोइजावें ॥ २७ ॥ याहिविधिनस्वरपरलोका ॥ स्थिरनरहींबिधिहुंकोओका ॥ छोटेबडेनीचबहुभांती ॥ तिनकेमतकीमिटेनकांती ॥ २८ ॥ मदमत्सरअरूचाहेमांना ॥ कामक्रोधअरुलोभसमाना ॥ तृष्णाबंधेकछूनहीजाने ॥ आपआपुमेंजुधहिंठांने ॥ २९ ॥ कालपाइउहांतेंपरें ॥ बहुरिआईइहांअवतरें ॥ योंविचारीवैरागउपावें ॥ तबहिसोधिगुरूसरणेंआवें ॥ ३० ॥ ब्रह्मजानितासेवाठांनें ॥ आलसकपटकामनाभांने ॥ तातेंसीषेंभक्तिकेअंगा ॥ जिनतेंहरिजीतजेनसंगा ॥ ३१ ॥ शब्दब्रह्मसकलजोभाषें ॥ परब्रह्मनितत्त्वदेयेरापें ॥ एसेंगुरुबिनज्ञाननपावें ॥ तातेंसोधिगुरुपेंआवें ॥ ३२ ॥ सबतेंमनकोसंगमिटावें ॥ उलटिसाधसंगतिसोंलावें ॥ सममित्रउत्तमबहुमानें ॥ ब्रह्मज्ञानीसबपूजाठांने ॥ ३३ ॥ सौचपाठतपमौनतितिक्षा ॥ बहुविधिलेवेंगुरूसौंशिक्षा ॥ ब्रह्मचर्यअरुकोमलरहना ॥ हिंसात्यागिद्वंधसबसहना ॥ ३४ ॥ एकाकीआश्रमनहींबांधें ॥ वस्त्रटुककेबलकलसाधें ॥ जहांतहांआतमचेतनदेषें ॥ परमातमानियंतालेषें ॥ ३५ ॥ ग्रंथभक्तिकीश्रधाकरैं ॥ निंदारागद्वेषपरिहरैं ॥ देहवचनअरुमनकौंदंडें ॥ समदमसतसंतोषनषंडें ॥ ३६ ॥ जनमकर्मअरुगुणहरिजीकें ॥ सदासुनेंउधारणजीकें ॥ त्यौंहीकहेंनिरंतरध्यावें ॥ सोइकरेंहरिहीजोभावें ॥ ३७ ॥ जपतपजोगजज्ञव्रतदांनां ॥ तनमनधनदारासुतप्रांनां ॥ जोकछुसोसबहीरहिनिवदें ॥ याविधिसकलकर्मकौंछेदें ॥ ३८ ॥ थावरजंगमहरिमयजानें ॥ परिसेवासंतनकीठामे ॥

मिलिपरसपरहरिगुणगावैं ॥ निसदिनकहतसुनतसुषपावैं ॥ ३९ ॥ पलपलप्रीतिन्नटैहीएहूलैं ॥ गुणनि
संभालततनकौंभूलैं ॥ दूजाभावनकबहूंउपनैं ॥ प्रेममगनजागतअरुसुपनै ॥ ४० ॥ ऐसेंप्रेमभक्तिकौपावैं
॥ पलपलतनपुलकितव्हैंआवैं ॥ कबहुंहरिचितवनतेंरोवैं ॥ कबहुंहसेंआनंदितहोवैं ॥ ४१ ॥ कबहुना
चैंकबहुंगावैं ॥ लज्जारहितज्यौंज्यौंमनभावैं ॥ कबहुंसुमरिसुमरिमिलिजावैं ॥ स्वासशब्दवाहरनहींआवैं
॥ ४२ ॥ याविधिलेवेंगुरुसौंशिष्या ॥ गुरुशिष्यनकौहपारिष्या ॥ ब्रह्मपराइनताजानकेरै ॥ मायाभूलि
नआवैंनरै ॥ ४३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥एसुनीवचनविदेहकेतहृदयवढ्योआनंद ॥ प्रश्नकरीतवब्रह्म
कीज्यौंछूटैंभवफंद ॥ ४४ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ब्रह्मचेतनमैंतुमअधिकारी ॥
तुमहोंहयमैंहृदैविचारी ॥ तातैंकहोंब्रह्मकोरूपा ॥ जानेंजाहिमिटैग्रहकूपा ॥ ४५ ॥ परमातमाब्रह्मभग
वाना ॥ एसबएककिधोहैंनाना ॥ सबजीवनकौंअतिकरुनायन ॥ तबबोलेपंचमैंपिप्पलायन ॥ ४६ ॥
पिप्पलायनउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुख्मथूलसकलसंसारा ॥ जाकोशक्तीसकलपसारा ॥
उत्पत्तिप्रलयकरैंवायांकौं॥काहुंतेंजनमनहींताकौं॥४७॥जाग्रतसुपनसुषोपतितूरिया॥चहुंमेसदाएकरसपुरी
या॥इंद्रियदेहहृदयअरुप्राना॥जातैंचैतनहैवरतांना ॥ ४८ ॥ जेसैंयहजडलोहावरतैं॥ चंबकसंगबहुत
विधिनिरतैं॥सोभगवानब्रह्मपुनिसोई॥सोपरमातमजानेकोई ॥४९ ॥मनअरुबुद्धिचितअरुप्राना॥इंद्रियदे
हशब्दअभिमाना ॥ कोईतांहीपहुचिनहिसकै ॥ जातजातवेंषरीथकै ॥५० ॥ जेसैंपावकलोहतपायो

॥ पावकसमांनतेजातिनपायौ॥सबप्रकासैंसबकौंजालैं॥परीपावकपरजोरनचालैं ॥५१॥यौंसबइंद्रियत्न्हृदय अचेतन॥ताकेसंगहुतेसबचेतन॥औरसकलअर्थनिकौंजानै॥कौनशकातिजोताहिपछानै॥५२॥लेलेअर्थ बखांनेबेदा॥परिप्रत्यक्षनजानैंभेदा ॥ यहनहीयहनहीयहनहीहोई ॥ यातेंपरैंसत्यहैंसोई ॥५३ ॥ सूषमयू लनजावेबरनी ॥ गगनपवनपावकजलधरनी ॥नहीमनबुधिचितअहंकारा॥ चिदानंदमयसबकेपारा ॥५४ नासोबालवृधनहीजुवा ॥ नासौंबिनसैंनांसोहुवा ॥ त्रियापुरुषक्लीवरनहोई ॥ सुरनरनागअसुरनहींसोई ॥ ५५ ॥ रक्तपितअसेतनहरिता ॥जातिबरनआश्रमनहिधरिता ॥ सीतउष्णचंदनहीसूरा ॥ दिवसन रातनिकटनहीदूरा ॥ ५६ ॥सुषदुषराहितबसैंसबमांही॥आपुहिआपलिपैंकहुंनाहीं ॥बंध्योभावसौंआतम अंसा ॥ सून्यसरोवराविलसेहंसा ॥ ५७ ॥ गगनपवनपावकअरुनीरा॥धरानिबंधएकोएशरीरा ॥ पंच वस्तएपंचोबंधा ॥ शब्दसपरसरूपरसगंधा ॥ ५८ ॥ इंद्रियदशअरुतिनकेदेवा ॥ सातिकराजसताम सभेवा ॥ मनबुधिचितमहतत्वअहंकारा ॥ एकप्रकृतिकौंसकलपसारा ॥ ५९ ॥ एकब्रह्महैताकोकार ण ॥ विनइच्छासबकौविस्तारण ॥ ज्यौंभुवमैंबहुघटउपजावें ॥ भुवमेंरहिभुवमाहिसमावें ॥ ६० ॥ तेस बघटदीसैविधिनाना ॥ परिभुवछोडकछूनहिंअना ॥ त्यौंसबजक्तआदिमधअंता॥ औरनकछूएकभगवं ता ॥ ६१ ॥ सोनाहिंउपजैंबिनसैंनाहिं ॥ बालजुवादिकपरैंनछांहीं ॥ बढेंनघटैंचलैंनहिंडोलै ॥ रोषनतौ षमौननहींबोलैं ॥ ६२ ॥ जहांतहांपूरएपरमअनूपा ॥ चिदानंदबिज्ञानसरूपा ॥ देहभेदबहुधासोसोहैं ॥

ज्ञानबिनासारोजगमांहें ॥ ६३ ॥ जैसेंपवनएकहींप्राना ॥ दसइंद्रिसंगदोसैंनाना ॥ उद्भिजस्वेदजरायुज
अंडा ॥ चारिषानपूरनब्रह्मंडा ॥ ६४ ॥ लिंगदेहजादेहहिजावैं॥प्राणवायुतहांआनिमिलावै ॥ शब्दसु
परसरूपरसगंधा ॥ मनअहंकारबुधिचितबंधा ॥ ६५ ॥ लिंगदेहइनहीनवकौंहें ॥ इनकेमिटैनिरंतरसो
हें ॥ निंद्राबससुषपातिजबआवें ॥ तबयहलिंगदेहछटिकावैं ॥ ६६ ॥ अहंकारममताकहुंनाहीं॥मनअरु
बुधिचितसबजांहीं ॥ तबअद्वैतएकहैसोई ॥ द्वैतभावकौनामनकोई ॥ ६७॥मनचितबुधिअहंकारनर
हें ॥ जागेंप्रथमबातजोकहें ॥ जोकरनोतोजोतोकीयौ ॥ आगेंपिछैंलीनोदीयौ ॥ ६८ ॥जातेंसोहरिजान
नहारा ॥ याबिधिकीजैंज्ञानविचारा ॥ परिवासनासहिताहिरहें ॥ तातेंदेहेफेरकरीगहें ॥ ६९ ॥ लिंगस
रीरसहीतवासना ॥ तांहिंमिटैनवसासना ॥ तातेंहरीचरणंनचितलावैं॥ औरसकलबंधनछटिकावैं ॥७०
याविधिसकलचितमळनासें ॥ रविसमानतबब्रह्मप्रकासें ॥ जोनरप्रथमभक्तिनहींजानें ॥ तोवहकर्मजोग
कौंठांनें ॥ ७१ ॥ कर्मजोगतेंउपजैंभक्ति ॥ तबहरीचरणबढेआसक्ति ॥ तातेंहोइब्रह्मप्रकासा ॥ छू
टैंकालजालभवपासा ॥ ७२ ॥ ॥ दोहा॥ ॥ एपिप्पलायनबेनसूनिकौनिप्राष्णामिथलेस॥कर्मजोग
अबकरीकृपाकहोपरमजोगेस ॥ ७३ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कर्मजोगअब
होगुसाई ॥ मैंआयोतुमरीसरनाइं ॥ जाकेकीएकटैंसबकर्मा ॥उपजैंज्ञानहोइनिहभर्मा ॥७४ ॥ दुजो
मणकहोतुमरहा ॥ याकौंमेरेंअतिसंदेहा ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी ॥ब्रह्मपराइनब्रह्मविचारी ॥ ७५

एकबारकृपाकरिआए ॥ पितासमीपदरसमेंपाए ॥ यहप्रश्नमेंतिनसोंकीनी॥उत्तरनादियौहृदैधरिलीनी ॥ ७६ ॥ नहीनोलेसोकहोंनेंकारन ॥ यहमाषोभवसागरतारन ॥ ऐसेंबचननृपतिजबभाषें ॥ आविरहोत छठतबआषें ॥ ७७ ॥ ॥ आविरहोत्रउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राजासुनहुंकर्मगतिगहना ॥ तातेंजहांतहांबनेंनकहना ॥ यहज्यौंहेत्यौंबेदबषानें ॥ तातेंयाहिनकोईजानें ॥ ७८ ॥बेदप्रगटकरताहरि देवा ॥ ऋपिअरुपुरुपलहेक्यौंभेवा ॥ भेवलहेंबिनुमिटेनमरनां ॥ लहेभेवपावेंहरिचरनां ॥ ७९ ॥ तातेंतु महुतंतबनाला ॥ जातेंकरयोनकर्मबिसाला ॥ अबहींकहोंसुनोचितलाई ॥ जांनेजाहिज्ञानअधिकाई ॥ ८० ॥ कर्मजोगहैतीनप्रकारा ॥ कर्मअकर्मविकर्मपसारा ॥ हरिनिमितसोकहिएकर्मा ॥ हरिबिहीनसो सकलविकर्मा ॥ ८१ ॥ सोअकर्मजोदोउत्यागें ॥ ज्ञानबिनासुषइहांनआगें ॥ कर्मकरतछूटेंसबकर्मा ॥ उपजेंज्ञानमिटेंभवभरमा ॥ ८२ ॥ कर्मतजनकौकर्मग्रहावें ॥ तातेंबेदनसमझ्यौआवें ॥ पहिलेस्वर्गादि कफलभाषें ॥ आगेंसकलदुरिकरीनाषें ॥ ८३ ॥ ज्यौंकोइबालकरोगीहोवे ॥ औषदकटुकनामसुनी रोवे ॥ ताकौंलाडूपितादिषांवे ॥ औषदकाजलोभउपजावें ॥ ८४ ॥ औषदकोफललाडूनाहीं ॥ औष दपीयेरोगसबजांही ॥ त्यौंस्वर्गादिकलेभदिखावें॥ कर्मनासकौंकर्मकरावें ॥ ८५॥ स्वर्गादिकफलपहुपित वांनीं ॥ तोरेपहुपहोतफलहानी ॥ तातेंकरेंबेदकेकर्मा ॥ हरिकेहेतबडोयहधर्मा ॥८६॥ औरकछुफलभूल नजानै ॥ हरिकेहेतकर्मसबठानै ॥ मेंकरतायोंकढेनभाषें ॥ जोकछुसोहरिकौकरीराषें ॥ ८७ ॥ याविधिप्रेम

भक्तिउपजावें ॥ तवसबकर्मआपुहिजावें ॥ तवहींप्रगटेज्ञानप्रकासा ॥ मिलैंरामछुटेभवपासा ॥८८॥ बेदकपं
तथकह्योमतोसौं॥अत्रसुनितांत्रिपंथपुनमोसौं॥त्र्हदेगांटकांटिजोचहैं॥सोविधिसोयोंपूजागहैं॥८९॥ बेदमि
लितभाषतहौंपूजा॥जातेंमिटैंसकलभ्रमदूजा॥श्रीगुरुसोंपरसादहींपावें॥सोज्योंज्योंसबोवेधींहवतींवें॥९० ॥
जामुरतिपरिइछाहोई॥हरिजानिकरिपूजेंसोई ॥अतिपवित्रहोइकरेअस्नांनां॥ मनकीतजेंवासनानाना ॥
॥ ९१ ॥ वायुअपानछीकजंभाई ॥ औरपवनगुएउठेनकाई॥सनमुषवेठिकरेंतनरिछा ॥ अंगन्या
समंत्रपाठिइछा ॥ ९२ ॥ आसनसुधसाजसेवाकी ॥ सबलेवेढेंतजेंनवाकी ॥ विष्णुरूपप्रतिमामेंआनें ॥
अर्धपादअरुविष्टरठांनें॥ ९३ ॥ मूलमंत्रकरीसेवाकरे ॥ औरनकछूवचनउचरे ॥ सकलअंगहरिनि
कैंध्यावें ॥ शंषचक्रगदापदमनिलपावें ॥ ९४ ॥ भूषनबसनपारषदसहीता ॥ हस्तबदनदेषतदुषदहिता
विविधभांतिअसनानकरावें ॥ करितिलकादिकवस्त्रपहिरावें ॥ ९५ ॥ बहुसुगंधमालापहिरावें ॥ बहुभां
तिकरिभोगलगावें ॥ गंधधूपआरतीउतारें ॥ घंटाआदिशब्दविसतारें ॥९६॥ याविधिमंत्रनिसोंसबकरैं
स्तांपीछेअस्तुतिविस्तरें ॥ बहुरिकरेदंडौतप्रनामा ॥ पढेंमंत्रलेवेंहरिनामा ॥ ९७॥ बाहिरवस्तुमिलेंतेआने
॥ औरनिमनसौंपूजाटांने॥तनमनभयेनिरंतरसेवें ॥वहप्रसादमाथेंकरिलेवें ॥९८ ॥ बहुरिदेवकौंहिरदेध
री ॥ मुरतिसयनपोटारिकरी ॥ याविधिहरिकेंआतमजानें ॥ यथाशक्तिसबपूजाठानें ॥ ९९ ॥ ज्ञान
ज्ञानकाजएसाधनभक्ति॥ ज्ञानपावेंतबहोवेंमुक्ति॥ उभेप्रतिमाहरिकीसेवा ॥ साधूप्रगटसोहरिदेवा १००

एसेंसवेंउपजेज्ञाना॥बेगिआंनमिलेंभगवाना ॥ भवसागरतऱ्योजोचहैं ॥ सेवासहितप्रीतमनगेंहे ॥ १०२
दोहा ॥ ॥ एसुनीबचनाबिदेहके ॥ बाढ्योंमनमेंप्यार ॥ तबगुणअरुकर्मसहित ॥ पूछैंहरिअवतार

॥ १०२ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधोविदेहप्रश्नेतृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥ ॥ दोहा
॥ नारायणअवतारसबलीलाआदिअनाद ॥श्रीधरचौथेंध्यायमैंद्रुमिलजनकसंवाद ॥ १ ॥ ॥ जनक
उवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबअवतारकथाविस्तारो ॥ गुणअरुकर्मसहितउचारो ॥ जेजेलिएले
होजेआगें ॥ अबहेंसबभाषोअनुरागें ॥ १ ॥ एसुनीनृपतिजनकेबैनां ॥ कृपासिंधुकरुणाकेएनां ॥ तब
सातमेंद्रुमिलसेनामा ॥ बोलेवचनपरमदमअभिरामा ॥२ ॥॥द्रुमिलउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जे
अनंतकेगुणअवतारा ॥ तीनकौंनृपतिलहेंकोपारा॥भुमिरेनुकणीकाकोईगनें॥सोउकहासकलगुणभनें॥३॥
हरिकेगुणअवतारअनंता॥बालबुधिजोचाहेअंता॥तातेंकछूएकमेंभाषौं॥ तेरेंल्हदेसंसेनाहिंराषौं ॥ ४॥पंचभू
तनिर्मितब्रह्मंडा॥राष्योनीरमांहिज्यौंअंडा॥ तामेंअंसआपनोधारा ॥ सोहेंआदिपुरुषअवतारा ॥ ५॥ ति
नकीदेहहुंतेसबदेहा ॥ दहमाहिवरतेसबएहा॥तिनकेअंगानितेंसबअंगा ॥ इंद्रियअहंबुधीबहुरंगा॥ ६ ॥
सतरजतमतेंसकलपसारा ॥ उतपतिअरुपालनसंहारा ॥ प्रथमहिंरजतेंब्रह्माकीयौं ॥ सात्विकीजन्मबिष्णु
कोंदीयौ ॥ ७ ॥ तामसकरीसंकरउपजाए ॥ तिनसौंसकललोकनिपजाए ॥ ब्रह्मारचेंविष्णुप्रतिपालें ॥
हरेंरुद्रयौंभवपंथचालें ॥ ८ ॥ बहुरिसुनोहरिकेअवतारा ॥ भवसागरकेतारनाहारा ॥ धर्मपितारुअमुर

तिमाता।।तहांनरनारायणविख्याता।।९।।आतमज्ञानभक्तिविस्तारैं।।यासौंलागिजीवनिस्तारैं ।। अवकहौंप्रग
टकरेआचरना।।नारदआदिनितसेवैंचरना ।।१०।। एकवारसुरपतीमनओन्यो ।। ममलोकलेवैंयोंजान्यों
।। तवातिनआग्याकांमहिदीनी ।। कामसंगसेनासवलीनी ।। ११ ।। रंभादिकअपछराअपारा ।। त्रिविध
पवनवसंतपसारा ।। वदरीषंडसवैंचलीआए ।। नरनारायणवेठेपाए ।। १२ ।। भारिभारिवांननिहनैंशारि
रा ।। निहफलमएअग्नीज्यौंनीरा ।। तवतैंमनमथवहुतहेरांनैं ।। आपअग्निजीवनिगतिमांनैं ।। १३ ।। ह
रिअपराधइंद्रकृतजांन्यों ।। हसिबोलैंतिनकोभयभांन्यो ।। मतिभयोकरोपंचसरवीरा।। देवनारभवप्राणश
मीरा ।। १४ ।। वैठौइहांअतिथकरवावौ ।। हमआश्रमसुफलकरिजावौ ।। एसुनोंअभेदांनकेंवेनां ।। ते
सवजोनीसकैंनहींनेना।।१५।।लजाभारनवाएसीसा।।वोलैंवचनजांनिजगदीसा ।।हेप्रभुयहकछुनांहिंअचंभा
।। तुमहोंप्रकृतिपुरुषकेथंभा ।। १६ ।। निरविकारनिरगुननिरभेदा ।। जिनकौंजानिसकेनहिंवेदा ।। निजा
नंदपूरणमुनिसारे ।। तेसेवतहैंचर्णतुमारे ।। १७ ।। तुमरेचर्णसरणजोआवे ।। तिनकौंसूरवहुविघनउप
वें ।। तिनकौंलोकदाविपगनोंचैं ।। एपहेतुमरेंपदउंचे ।। १८ ।। तातौंविघनकरैंसवदेवा ।। मिटतोजांने
आपनीसेवा ।। औरकिसिकौंविघननकरहि ।। यातैंतिनहिंदंडसवभरहीं ।। १९ ।। परितवजननहिंविघ
नसंतावैं ।। विघनिसीसचर्णदेजावैं ।। जोत्रिभुवनपतितुमरषवारैं ।। कहांकरैंतवविघ्नविचारैं ।। २० ।। ता
तैंतुमरोकहांअचंभा ।। जातैंमोहिसकीनहिरंभा ।। क्षुधातृषाअरुआलसनिंद्रा ।। सीतउष्णवर्षारितुतंद्रा।।

२१ ॥ जिभ्याशिस्नादिकविस्तारा ॥ इनकेगुणतेंजलधिअपारा ॥ ताकोंबहुतकष्टकरितरें ॥ गोपदकोबूडितेमरे ॥ २२ ॥ तिनकौंतपसबमिथ्याहोई ॥ दहुलोकमेंएकनकोई ॥ तातेंसबसाधनजोकरें ॥ तुमरीभगतिबिनानहिंतरें ॥ २३ ॥ याबिधिदेववचनउचरे ॥ तबहरिजीएकअचंभाकरें ॥अतिअद्भुतछबिनारिअनेका॥ मनमोहनीएकतेंएका॥२४॥तेसबसेवाकरतादिपाई॥मांनोंरंभासखियनिसौंआई॥तीनकेंगंधरूपसबमोहें ॥ चंद्रउदयउडगनज्यौसोहें ॥ २५ ॥ तिनसौंहरिजीबोलेंबेंना ॥ इनमेंएकलेहोतुममेनां ॥ स्वर्गलोककोभूपणरूपा ॥ जातेंएसबपरमअनूपा ॥ २६ तिनसबहरिकोंकीयोप्रनांमा ॥ लीनीएकउरवसीनांमा ॥ करिप्रनामपुनीवारंवारा ॥ पहुचेंसकलइंद्रदरबारा ॥२७ ॥ तिनहींइंद्रप्रसंगसुनायौ ॥ विस्मयत्रासइंद्रमनआयो ॥ बहुरिलीयोहंसअवतारा ॥ चारीभएसनकादिकुमारा ॥ २८ ॥ दत्तकपिलअरुपिताहमारा ॥ एआठहुंब्रह्मरूपविस्तारा ॥ हयग्रीवमधुप्राणनिवारें ॥ ताकरिहरिबेदउधारें ॥२९ ॥ सतवृतराजाहरिभक्ता ॥ तिनकौंहरिजीकीयोविरक्ता ॥ बिनहिप्रलयप्रळयदिषरायौ ॥ माछरूपहिंज्ञानहिंसमुझायौं ॥ ३० ॥ बहुरिवराहरूपहरिधार्‍यौ ॥ हिरण्याक्षदुष्टअतिमार्‍यो ॥ बहूरिमहीहुतिजलमांही ॥ सोउपरस्थापीपलमांहि ॥ ३१ ॥ कूर्मव्हैमंदिरागिरधार्‍यो ॥ अमृतकाढिसुरकारंजसार्‍यों ॥ ग्राहग्रह्योग्रजराजपुकार्‍यौं ॥ तबहरिजीततकालउबार्‍यौं ॥ ३२ ॥ बालषिल्यादिकजोरिषिराजा ॥ अंगुष्ठसमअकारविराजा ॥ कस्यपकेंकाजेंएकवारा ॥ समधिनिकेतेबनहीसिधारा॥३३॥

॥ तहांगाइकेपगजलसोंभरिया ॥ तिनमैंआपुआपुसबपरिया ॥ हांसीकरैंइंद्रतहांखरो॥ तबतिन
द्हदेहरिसंभरो ॥३४॥ जबआतमकोकोईनाहीं ॥ तबतुमनाथउधारणमांही ॥ तातेंअबहमभएअना
था ॥ करुनासींधुगहोकरहाथा ॥ ३५ ॥ इतनींसुनीहारतकीबानी ॥ तहांउठिधाएसारंगपानी ॥
तहांकरिगहिहरिसबानेउधारा ॥ बालखिल्यउधारनअवतारा ॥ ३६ ॥ ब्रह्महित्याभएइंद्रसंभान्यौ ॥
तबहिंहरिजीप्रगटउधान्यौ ॥ सुरवनिताजबअसुरनिहरी॥तबतेंहरिशरनअनुशरी ॥ ३७ ॥ तबहरि
जीतेसकलउधारी ॥ असुरमारसबबिपतीनिवारी ॥ पुनिनरसिंघरूपतनधान्यौ ॥ असुरहिरन्यकस्यप
जिनमान्यौ ॥ ३८ ॥ जनप्रहलादहिलीनौराषि ॥ जाकीप्रगटकहेसबसाषी ॥ जबजबअसुरप्रबलअ
तिभए ॥ देवनिकेअस्थलहरिलए ॥ ३९ ॥ तबतबसबमन्वंतरमाहीं ॥ विष्णुकलाअवतारधरांहीं ॥
मारिअसुरसबदुषनिमिटावें ॥ सरनांगतसुरनरसुषपावें ॥४०॥वामनरूपइंद्रकेकाजा॥ भिक्षाछलछल्यो
बलराजा ॥ तीनलोकलेइंद्रहीदए ॥ बलिकीभक्तिआपवसभए ॥ ४१ ॥ बहुरिअधरमीउपजेराजा ॥
परसरामप्रगटेतिहकाजा ॥ एकाबिसवारकरीनिहक्षत्री ॥ भुवमैंकहुंनराष्योक्षत्री ॥ ४२ ॥ बहुरिभएद
शरथसुतरामा ॥ जेहैंप्रगटलोकअभिरामा ॥ सायरउपरिसैलाजिनतारें ॥ रावनआदिदुष्टजिनमारें ॥
४३ ॥ आगेंरामकृष्णअवतारा ॥ भूकौंप्रबलहरेंगेंभारा ॥ यदुकुलजन्मकमैंतंकरिहैं ॥ जिनसौंलागि
जीवनिस्तारिहैं ॥ ४४ ॥ असुरदेषियज्ञानिकेंकरतां ॥ जीवनिमारिउदरकेभरता ॥ बुधरूपहरिजातिबध

२१ ॥ जिभ्याशिस्नादिकविस्तारा ॥ इनकेगुणतेंजलधिअपारा ॥ ताकोंबहुतकष्टकरितरें ॥ गौपदक्रो
बूडितेमरें ॥ २२ ॥ तिनकौंतपसबमिथ्याहोई ॥ दहुलोकमेंएकनकोई ॥ तातेंसबसाधनजोकरें ॥
तुमरीभगतिबिनानहिंतरें ॥ २३ ॥ याबिधिदेववचनउचरे ॥ तबहरिजीएकअचंभाकरें ॥आतिअद्भुत
छबिनारिअनेका॥ मनमोहनीएकतेंएका॥२४॥तेसबसेवाकरतादिषाई॥मांनोंरंभासखियनिसौंआई॥ती
नकेंगंधरूपसबमोहें ॥ चंद्रउदयउडगनज्यौंसोहें ॥ २५ ॥ तिनसोंहरिजीबोलेबैना ॥ इनमेंएकलेहोतुम
मेनां ॥ स्वर्गलोककोभूषणरूपा ॥ जातेंएसबपरमअनूपा ॥ २६ तिनसबहरिकौंकीयोप्रनांमा ॥ लीनी
एकउरबसीनांमा ॥ करिप्रनामपुनीवारंवारा ॥ पहुंचेसकलइंद्रदरबारा ॥२७ ॥ तिनहिइंद्रप्रसंगसुना
यौ ॥ विस्मयत्रासइंद्रमनआयो ॥ बहुरिलीयोहंसअवतारा ॥ चारिभएसनकादिकुमारा ॥ २८ ॥
दत्तकपिलअरुपिताहमारा ॥ एआठहुंब्रह्मरूपविस्तारा ॥ हयग्रीवमधुमाएनिवारें ॥ ताकरिहरिबेदउधा
रें ॥२९॥ सतव्रतराजाहरिभक्ता ॥ तिनकौंहरिजीकीयोविरक्ता ॥ तिनहिप्रलयप्रळयदिषरायौ ॥ मा
छरूपहिंज्ञानहिंसमुझायौ ॥ ३० ॥ बहुरिवराहरूपहरिधार्यौ ॥ हिरण्याक्षदुष्टआतिमार्यो ॥ बहुरिमही
हुतिजलमांही ॥ सोउपरस्थापीपलामांहे ॥ ३१ ॥ कूर्मव्हैमंदिरागिरधार्यौ ॥ अमृतकाढिसुरकार
जसार्यौं ॥ ग्राहग्रह्योग्रजराजपुकार्यौं ॥ तबहरिजीततकालउबार्यौं ॥ ३२ ॥ बालषिल्यादिकजो
रिषिराजा ॥ अंगुष्ठसमअकारविराजा ॥ कस्यपकेंकाजैंएकवारा ॥ समधिनिकेतेबनहींसिधारा॥३३॥

॥ तहांगाइकेपगजलसौंभरिया ॥ तिनमैंआपुआपुसबपरिया ॥ हांसीकरैंइंद्रतहांखरो॥ तबतिन
त्हदेहारिसंभरो ॥३४॥ जबआतमकोकोईनाहीं ॥ तबतुमनाथउधारणमांही ॥ तातेंअबहमभएअना
था ॥ करुनासींधुगहोकेरहाथा ॥ ३५ ॥ इतनौंसुनोहारतकीबानी ॥ तहांउठिधाएसारंगपानी ॥
तहांकरिगहिहरिसबानेउधारा ॥ बालखिल्यउधारनअवतारा ॥ ३६ ॥ ब्रह्महित्याभएइंद्रसंभान्यौ ॥
तबहिंहरिजीप्रगटउधान्यौ ॥ सुरवनिताजबअसुरानिहरी॥तबतेंहरिशरनअनुशरी ॥ ३७ ॥ तबहरि
जीतेसकलउधारी ॥ असुरमारसबविपतीनिवारी ॥ पुनिनरसिंघरूपतनधान्यौं ॥ असुरहिरन्यकस्यप
जिनमान्यौ ॥ ३८ ॥ जनप्रहलादाहिलीनौराषि ॥ जाकीप्रगटकहेसबसाषी ॥ जबलबअसुरप्रबलअ
तिभए ॥ देवनिकेअस्थलहरिलए ॥ ३९ ॥ तबतबसबमन्वंतरमाहीं ॥ विष्णुकलाअवतारधरांहीं ॥
मारिअसुरसबदुषनिमिटावें ॥ सरनांगतसुरनरसुषपावें ॥४०॥वामनरूपइंद्रकेकाजा ॥ भिक्षाछलछल्यो
बलराजा ॥ तीनलोकलेइंद्रहीदए ॥ बलिकीभक्तिआपवसभए ॥ ४१ ॥ बहुरिअधरमीउपजेराजा ॥
परसरामप्रगटेतिहकाजा ॥ एकबिसवारकरीनिहक्षत्री ॥ भुवमेंकहुंनराष्योक्षत्री ॥ ४२ ॥ बहुरिभएद
शरथसुतरामा ॥ जेहैंप्रगटलोकअभिरामा ॥ सायरउपरिसैंलजिनतारें ॥ रावनआदि दुष्टजिनमारें ॥
४३ ॥ आगेंरामकृष्णअवतारा ॥ भूकौप्रबलहरेंगेंभारा ॥ यदुकुलजन्मकमैंतेंकरिहैं ॥ जिनसौंलागि
जीवनिस्तारिहैं ॥ ४४ ॥ असुरदेषियज्ञानिकेंकरतां ॥ जीवनिमारिउदरकेभरता ॥ बुधरूपहारजीतबध

रिहैं ॥ यज्ञनिंदगाखंडविस्तारिहैं ॥ ४५ ॥ बहुधरैंगेकलंकीरूपा ॥ अतिअपराभकरैंगभूपा ॥ कलीके अंतसकलसंहारिहैं ॥ बहुरिप्रवृतसतजुगकारिहैं ॥ ४६ ॥ ऐसैंविष्णुकर्मअवतारा॥ कोईकहतनपावैपारा ॥ कहुएकमैंतुमसौंकहैं ॥ औरहिकोटिअनंतनिरहैं ॥ ४७॥ इनकौंकहैंसुनैंजोगावैं ॥ प्रेमसहित निसवासुरध्यावैं ॥ सोभवसागरमैंनहींरहैं ॥ पावैंज्ञानपरमपदलहैं ॥ ४८ ॥ ॥ दोहा ॥ अबैंना सुनिद्रुमिलकें ॥ कीनीप्रश्ननरेंद्र ॥ प्रभुजीतिनकीकोनगति ॥ जेनभजेगोविंद ॥ ४९ ॥ ॥इतिश्री भागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेविदेहप्रश्णेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥कर्मशुभाशुभभजनाविधिसाधनज्ञानदृढांहि ॥ करभाजनअरुचमसमुनिकहीपांचमैंमांहि ॥ १ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥जेनहिकरहीहारिकीसेवा ॥ तिनकीकहोकोनगतिदेवा ॥ तिनकेतृपतिनसुपनेंआवैं ॥ निसदिनतृष्णाअग्निजलावैं ॥ १ ॥ परिजोबहुविधिधर्मउपावैं ॥ तोमोहिकहोकछूसुषपावैं ॥ एकहीवचन जनकजबरहैं ॥ अष्ठमैंचमसनामतबकहैं ॥ २ ॥ चमसउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥हरिजीबिप्रबदनतैंकरे ॥ बाहुनितैंक्षत्रीविस्तरैं ॥ जंघनिव्हैवैश्यउपजाए ॥ सुद्रातिमिचर्णनितैंआए ॥ ३ ॥ याहीभांतिकीएआश्रमां ॥ तातैंभजनसबनिकौधर्मा ॥ तातैंआपुहिंकरैप्रतिपाला ॥ आपुहींपोषैदीनदयाला ॥४॥ ऐसैंप्रभुकौंजोबिसरे ॥ तेअपराधअपारानिकरैं ॥ तेगुरुद्रोहीअरुमित्रद्रोही ॥ स्वामीद्रोहीकृतघ्ननिओही ॥ ५ ॥ तिनअपराधनअधमगतिजावैं ॥ कवहूंभूलिनहिंसुषपावैं ॥ सुद्रजोपिताअंतजआदि ॥ तिनकों

हरिकथाश्रवनादि ॥६॥ तेंमनमेंअभिमाननधरैं ॥ तातेंतुमसोंक्रिपाहिकरैं ॥ यातेंइनकोंहेंउधारा ॥ परिउंच
नकोवारनपारा ॥७॥विप्रअरुक्षत्रीवैश्यात्रिवरनां॥ याकोंयज्ञविहितविधिकरनां॥इनसबहिनकेतेंअधिकारी
तातेंबहुतभएविकारी ॥८॥तातपर्यकोंजांनेंनाहीं॥पशुपतिवांनीमेंभरमाहीं॥विष्णुंभजनउत्तमअधिकारा॥पायो
ताहिनलषेंगवारा॥९॥ कर्मअकर्मविकर्मनजांनें॥अतिकठोरआपहिंबहुमांनें॥ हमपंडितयज्ञानिकेकारक॥औ
रबहुतकर्मनिविस्तारक॥१०॥आपुभ्रमेंऔरनिभ्रमावें॥प्रियवांनीबहुभांतिसुनावें॥कामअरुअर्थअर्थकरिमांनें
पढिपढिवेदसाखिबहुआंनें ॥ ११ ॥ बहुसंकलपकरैंमनमांहि ॥ बहुतबडूरिआरंभकराही ॥ त्यौंहित्यौं
राजसअधिकारा ॥ कामक्रोधरुलोभअहंकारा ॥ १२ ॥ दंभकपटचतुराइआनैं ॥ हरिभक्तिनिकी
हांसीठांनैं ॥ आपुआपुमिलिवैठेंजबहीं ॥ ग्रहकेसुषानिसराहेंतबहीं ॥ १३ ॥ जिनमेंआनंदक्षणहैनाहीं
॥ दंभमानसोंजज्ञकराहीं ॥ बहुतपसुनिमारेंअज्ञानि ॥ तीनअपराधसकेंनहींजांनी ॥ १४ ॥ इतनोधन
आयौयहयेहैं॥ एतेंमिलेंएतोतबव्हैहैं ॥ कुलसंपतिविद्याठकुराई ॥ त्यागरूपबलकर्मबढाई ॥ १५ ॥ इ
नकोंबलबाढौअधिकाई ॥ तातेंह्रदयसमुझनुहींआई ॥ हरिभक्तनसौंठांनेहांसी ॥ मगहदमरैंछांडिपल
कासी ॥ १६ ॥ थावरजंगमसबघटमांहीं ॥ हरिपूरणषालीकहुंनाहीं ॥ ज्यौंआकासलिप्तनहींहोई ॥
त्यौंहरिबेदकहतहैंसोई ॥ १७ ॥ परिवेमूढनकबहुंजांने ॥ जातेंहरिभक्तनिनाहिंमानें ॥ बहुतमनोरथनिस
दिनकरें ॥ तृष्णातापजरतनहींटरें ॥ १८ ॥ मद्यपानअरुमांसअहारा ॥ नारीनेहसहितजगसारा ॥ तास

कलहित्यागेवेनिमित्ता ॥ विधिमेंवेदलगायोचित्ता ॥ १९ ॥ संगकमेतौंनारिबिवाही ॥ तांहुंरेंबहुतैथितिना
हीं ॥ वनीताकौदेवेंरितुदांनां ॥ प्रजानिमिताचितनाहिंआंनां ॥ २० ॥ याविधिकर्मसकलछोडावैं ॥ बहुरि
वेदसबत्यागकरावैं ॥ ऐसेंहिआमिषअसेंमदपानां ॥ यज्ञमांहिनहींकहुंआना ॥ २१ ॥ बहुरिऊहांहुंतें
छाडावें ॥ एसोतातपर्यकौपावें ॥ हरिकीसरनेंआवेंकोई ॥सारिविधिएकसमझैसोई ॥२२॥ केजोतिनकी
सरनेंआवें ॥ अभिप्रायसारोसोपावें ॥ वेहरिजनअरुहरिहिनजांनें ॥ आपुहिकौंपंडितकरिमानें ॥ २३
तातेंतातपर्यनहींजानें ॥ पढोपढिवेदअनर्थनिठानें ॥ धनएसोजोकरेंउधारा ॥ सोधनषोवेंवृथागवांरा ॥ २४
जोधनहरिकेकाजलगावें ॥ सोतबप्रेमभक्तिकौंपावें ॥ तातेंहोईज्ञानप्रकासा ॥ तबहरिमिलेंमिटेंभवपासा ॥
२५ ॥ एसेंधनतेंमूढअजाना ॥ देहकाजषोवेंभरमांना ॥ कालनिरंतरहरतनदेषें ॥ बहुमंदमतिदूरकरि
लेषें ॥ २६ ॥ मद्यमांसमषमआनींजें ॥ औरभूलिकहुंनामनलीजे ॥ तहांउआपुलेइघांनां ॥पानपानते
अधगतिजांना ॥ २७ ॥ त्यौंवनीतारितुदांनहींदेवे ॥ औरभुलिकहुंनामनलेवें ॥ सोजबलागीएकसुतहो
ई ॥ सुतकेभयत्यागिएसोई ॥ २८ ॥ एसोसकलवर्णनिकोधर्मा ॥ ताकौंभूलिनपावेमर्मा ॥ मरमहीन
श्रुतिसुमृतिवषानें ॥ मूरषआपुहींपंडितमांने ॥ २९ ॥ तातेंवहुतकर्मआरंभे ॥ इंद्रीमनकदेनहींथंभे ॥ द्रो
हकरेंबहुजीवनिमारें ॥ तेवहुजन्मतिनहींसंघारें ॥ ३० ॥ थावरजंगमसबघटमांहीं ॥ एकैहरिदूजाकोना
हीं ॥ तिनकौंद्रोहकरेंतनपोषें ॥ दारासुतनिआनसंतोषें ॥ ३१ ॥ नहींमूरषनहींतत्वगनानि ॥ पढीपढीग्रं

यहुहींअभिमांनी ॥ तेअसाधसेगोसिबजानी ॥ तिनसोंज्ञाननमांडेंज्ञानी ॥३२॥ तेसबकरेंआपनोघाता॥
सपनेंहूंनलहेंकुसलाता॥कर्मपंथमेंसुषकोंचोंहै ॥ अमृतदेकरिबिषाहीबित्योंहैं॥ ३३॥नानातापतपतजोंरहैं॥
करेंमनोरथफलहिनलहैं॥बहुतभांतिश्रमकरिउपजाए ॥ सुतवितदारासबमनभाए ॥ ३४ ॥ तिनसबनि
कौंछोडईहांहीं ॥ बंधेंआपजमद्वारोंजांही ॥ जमकेंदूतनरकभोगावें ॥ तहांकेदुखकहेंनहींजावें ॥ ३५
तिनकोंकोनाहिराषनहारा ॥ हरिरक्षकसोनहीसंभारा ॥ कहाकहींकछूकहेंनजांही ॥ हरिबिनकहूंपलक
सुखनाहीं ॥ ३६ ॥ ॥दोहा॥ ॥ चमसबचनसुनिभूपकें ॥ बाढोएत्रासअरुप्यार ॥ तबजुगजु
गकोपूछीयो ॥ हरिकोभजनप्रकार ॥ ३७ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कोंनसमेंके
सोअवतारा ॥ केसोवर्णनामआकारा ॥ केहिविधिभजेंवर्णआश्रमा ॥ कहोज्ञानकेसाधनधर्मा ॥ ३८
॥ जिनतेंज्ञानलहेंसबत्यागें ॥ नितहरिचरणकमलअनुरागें ॥ सुनिनृपबेंनभक्तिकेसाजन ॥ तबबोलेंनव
मेंकरभाजन ॥ ३९ ॥ ॥ करभाजनउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सतत्रेताद्वापरकलिकाला ॥
बहुतभांतिभजोएगोपाला ॥ बहुविधिबरनबहुतआकारा ॥ बहुतनामबहुभजनप्रकारा ॥ ४० ॥ सतजु
गसुकलबरनभुजचारी ॥ सीसजटातनवलकलधारी ॥ कंठजनेउकरजपमाला ॥ दंडकमंडलअसमृग
छाला ॥ ४१ ॥ तबमनुषहोंवेंसबसुधा ॥ समनिरवैरसुत्हृदपरिबुधा ॥ आस्थिरकरिइंद्रियमनप्राना ॥
करेंसबेंतिनहरिकोंध्यानां ॥ ४२ ॥ हंससुपरमधर्मजगेदवर ॥ निरमलपरमात्मअरुईश्वर ॥ पुरुषोत्तवै

कुंठअव्यक्ता ॥ ताकेनामहोइयहव्यक्ता ॥ ४३ ॥ रक्तवरणत्रेताजुगमांही ॥ त्रिगुणमेषलागळेपहरा
ही ॥ पीतकेससर्वादिकहाथा ॥ ऋगयजुसामत्रयमेंनाथा ॥ ४४ ॥ तबतिनहेतयज्ञादिककरें ॥ वेदवि
हितकर्मनिविस्तरें ॥ सर्वदेवमयहरिकोंजांनें ॥ तबसबयोंहरिपूजाठानें॥४५॥प्रश्नीगर्भउरुगाकहीइजें ॥
विष्णुवृषाकपिजज्ञभनिजें॥ सर्ववेदउरुकृमविजयंत ॥ऐसेंनामकहेंसबसंत ॥ ४६ ॥ द्वापरपीतवसनघन
स्यामा ॥ शंषादिकआयुधआभिरामा ॥ चारिबाहुभृगुलाताधरना ॥ लक्ष्मीचिन्हबहुतआभरना ॥ ४७
॥ चामरछत्रआदिबहुसेनां ॥ महाराजलछनसुषदेनां ॥ वेदतंत्रविधिसेवाकरें ॥ सबअरपनपूजाविस्तरें
॥ ४८ ॥ वासुदेवसंकरषणदेवा ॥ प्रद्युमनअनिरुधअभेवा ॥ नाराइनभगवानअनंता ॥ जिनकोंकोइल
हैंनहीअंता ॥ ४९ ॥ विस्वरूपविस्वेस्वरस्वामी ॥ सर्वातमासर्वअंतरजांमी ॥ बहुतभांतिअस्तुतिविस्तरें॥
विधिसोंद्वापरपजाकरें ॥५०॥ कलिजुगपीतपीतांबरधारी ॥ कृष्णदेवघनस्याममुरारी ॥ सहतपारषदबहु
आभरनां ॥ श्रवनकीरतनपूजाकरनां ॥ ५१ ॥ इंद्रियमनबहुभरेविकारा ॥ तिनतेंराषेंचरणतुमारा ॥ स
बविधिसर्वतीर्थकोवासा ॥ सुमरताहिंपुरेंसबआसा ॥ ५२ ॥ शिवविरंचिसुरनरमुनिध्यावें ॥ जाकोंभेद
वेदनहींपावें ॥ राषीलेतशरणेंजेआवें ॥ जनममरणसबदुषनिमिटावें ॥ ५३ ॥ केवलहोतदीनउधारें ॥
भवसागरकेपारउतारें ॥ ऐसेचरणतुमारेंगायो ॥ ताकीसरणदीनमेंआयो ॥ ५४ ॥ अतिसुषतजीसु
रबंछेनाकों ॥ ऐसोराजछोडिकिरीताकों ॥ दशरथभगतवचनशतकरनां ॥ बनकोगवनकीयोजिनचर

नां॥५५॥हेममृगदयितामनभायो॥जोताकेपीछेउठिधायो ॥ जोभगवतनकेयोंआधीनां॥ऐसेंचरणशरणमें
लीना॥५६॥ऐसोविधिकलिअसक्तातिकरें ॥जहांविधिहरिनामनिउचरें ॥ मुनेंकहेंसुमरेंअरुध्यावें॥तेतत
कालतत्वकोंपावें॥५७॥याविधिजेजुगजुगहरिसेवें॥तिनतिनकौंहरिज्ञानहोदेवें ॥ज्ञानपाइनिजतत्वसमावें ॥
जहांजाइवहुरोनहींआवें ॥ ५८ ॥ जेकलजुगकेगुणकौंजानत ॥ तेवहुविधिअसक्तिकौंठानत ॥ जेसो
परमसारकालिमांही ॥ तैसोऔरजुगनिमेंनाहीं ॥ ५९ ॥ सतजुगध्यांनयज्ञत्रेतामही ॥ द्वापरप्रतिमापूजे
रामही॥कलीकेवलनामादिकगावें॥ सोसोफलततकालहिंपावें ॥ ६० ॥ याभवसागरमांहीनिरंतर॥ दुषित
जीवपरेंनाहिअंतर ॥ तांमेंहरिगुननामउचारन ॥ एकजिहाजसकलकौंतारन ॥ ६१ ॥ पापअघोरअपा
रकलमांहीं ॥ जामेंपुण्यलेसकहूंनाहीं ॥ यामेंहुहरिगुणनिउचारें ॥ तेतारेंआपऔनिकौंतारें ॥ ६२ ॥
तेकृतकृत्यतेहीबडभागी ॥ जेकलिहरकीरतअनुरागी ॥ आपुसमरेंऔरनसुमरावें ॥ तेजगजनमबहुरि
नहींआवें ॥ ६३ ॥ सतत्रेताद्वापुरअवतारहीं ॥ तेकलजुगकीवांछाकरहीं ॥ कलीकछुसाधनश्रमनाहीं
॥ हरिगुणगावतहरिहिसमाहीं ॥ ६४ ॥ अरुकहुंकोइदेसविसुधा ॥ द्रावडादिमानवतहांबुधा ॥ जेउपजे
तेभक्तिकरें ॥ तातेंतहांबहुतउधरें ॥ ६५ ॥ अरुजहांतामृपरणीकृतमाला॥कावेरिपयसुनोविसाला ॥
अरुसरस्वतीपहलमवाहनी ॥ गंगाआदिदुरितदाहनी ॥ ६६ ॥ जेमानवजलपीवेंइनकौं ॥ दूरिहोयत्हदे
मलतिनकौं ॥ तेसर्वथाहोइहरिभक्ता ॥ साधनसंगहोवेंआसक्ता ॥ ६७ ॥ भूतकुटंबपितरऋषिदेवा ॥ इ

नकेरीतिकरैसचसेवा ॥ सोईनरनहींसेदाकरै ॥ सोसबतजिहरिकौंअनुसरै ॥६८॥ जेविधतजीहरिचरणै आवै॥तिनकेमलहरिदुरिवहावैं॥ बहुर्‍यौंमलउपजैनहींकोई ॥ उपजैंकदेंहरेहरिसोई ॥ ६९ ॥ तातेंस बविधिकोफलएका ॥ गहियेंहरिपदछांडिअनेका ॥ सबकैंप्रभुसबहींसुषदाता ॥ सरनागतपालकविख्या ता ॥ ७० ॥जबजबजोजोसरनहीआयौ ॥ तबहींतबतिनहींहरिपायौ ॥ तातेंऔरसकलपरिहरीयें ॥ श्रीभगवानचर्णचितधरीयें ॥ ७१ ॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसेंसुनिसबहूंकेंबे नां ॥ जनकहृदेउपज्यौंअतिचैनां॥संसामिट्यौसकलभ्रमभाग्यौ ॥ ब्रह्मज्ञानसूतोसाजाग्यौ ॥ ७२ ॥ त बतिनकीबहूपूजाकीनी ॥ विप्रनिसहितप्रदक्षिणादीनी ॥ याविधिदरसनपायेसबहीं ॥ अंतरध्यानभयेतेतब हीं ॥ ७३ ॥ जनकविदेहऔरसबत्याग्यो ॥ हरिकेचर्णकमलअनुराग्यो ॥ याविधिब्रह्मपरायनभयो ॥ तरिभवसिंधुब्रह्ममेंगयो ॥ ७४ ॥ याहिविधितुमहींबडभागी ॥ भैहोहरिचरणाअनुरागी ॥ औरसकल कौंतजिहोसंगा ॥ तबपावोगेब्रह्मप्रसंगा ॥ ७५ ॥ अरुतुमतोदेवकीवसुदेवा ॥ भयेकृतारथकरिहरिसेवा तुमरेजशपूर्‍योजगसारा ॥जिनकेहरिलीनौअवतारा ॥ ७६ ॥ दरसनआलिंगनआलापा ॥ आसनभो जनसयनमिलापा॥हरिसोंपुत्रजांनिचितदीनौ॥तातेंसकलभजनतुमकीनौ॥७७॥कपटवासुदेवाशिशुपाला॥ दंतवक्रशल्यादिकराला॥वैरभावकृष्णहिचितधार्‍यौ॥तिनिहुंकौंहरिदेवउधार्‍यो॥७८॥तोजेप्रेमप्रीतसोंसेवैं तिनकौंक्यौंनपरमपददेवैं॥अबतुमपुत्रबुद्धिमातिआंनौ॥कृष्णदेवकौब्रह्महिंजानौ ॥ ७९॥ मायाकरिधारीन

रदेही ॥ पारब्रह्मतुमजांनोएही॥ बाढ्यौदेषिभूमअतिभारा ॥ मेटनकाजधर्‌योअवतारा ॥ ८० ॥ परम
पुनीतजसहींविस्तरहीं ॥ नासौंलागिजीवानिस्तरहीं ॥ जेजेइनसौंहितलगावें ॥ तेतेसकलपरमपदपावें ॥ ८१
॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसीसुनिनारदकीबांनी ॥ वसूदेवदेवकीअद्भुतमांनी ॥ आप
हेंदुहूंमुक्तकरिजान्यौ ॥ हरिमेंभावब्रह्मकौआंन्यौ ॥ ८२ ॥ यहइतिहासकथाजोभाषे ॥ सावधानसुनि
हिरदेराषैं॥ सोसबभवबंधनछिटकावें ॥ उपजैंज्ञानपरमपदपावें ॥ ८३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एभाष्यो
सक्षेपसौं ॥ हरिमिलनैंकोद्वार ॥ हरिउधवसंवादअब ॥ बरनौंकरिविस्तार ॥८४ ॥ ॥ इतिश्रीभाग
वतेमहापुराणेएकादशस्कंधेवसुदेवनारदसंवादेपंचमोऽध्यायः ॥ ५॥ ॥ ॥ दोहा ॥ छठैबरणींद्वारि
काश्रीधरसुखश्रीकृष्ण ॥ ब्रह्मादिस्तुतिकरचलेउद्धवकीयोप्रश्ण ॥ १ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ बहुरिसुनोनृपआतमविद्या॥ जाकिजानेंमिटैंअविद्या ॥ मिटैंअविद्याब्रह्महिपावें ॥ ब्रह्मपाई
फेरनहींआवे ॥ १ ॥ तबब्रह्मासनकादिकसंगा॥ नारदादिरंगेहरिरंगा ॥सकलप्रजापतिभृगुमरीच्यादिक
अरुमहादेवलीनेंभूतादिक ॥ २ ॥ सुरसमुहसंगलेस्वरपाते ॥ पवनअरुस्वानिसूतग्रहपाते ॥वसुअगिरा
रुद्रगनदेवा ॥ साध्यादिकअरुविद्वेदेवा ॥ ३ ॥ ऋषिगांधर्वपितरअरुनागा ॥ च्यारनासिद्धभयेअनुरा
गा ॥ अप्परअरुगुह्यकविद्याधर ॥ किंनरजक्षादिकमायाधर ॥ ४ ॥ कृष्णदेषिवैकारजसारे ॥ आ
नंदितद्वारिकापद्धारे ॥ केइनांचेकेइगावें ॥ केइबाजेंबहुतबजावें ॥ ५ ॥ केइजयजयशब्दउचारें ॥

केईकृष्णजसहिंविस्तारें ॥ याविधिकरेबहुतउछाहा ॥ मगनभयेंहरिप्रेमप्रवाहा ॥ ६ ॥ श्रीभगवानमनुष तनधारी ॥ दरसनसबमनहरनमुरारी ॥ लोकनिमांहिजसहींविस्तारें ॥ श्रवनादिकनिसकलअघजारें ॥७ निधिरिधिपूरणद्वारावती ॥ जाकेसमनहींअमरावती ॥ तामेंब्रह्मादिकनाकिआयें ॥ कृष्णदेवकोदरसनपा ये ॥ ८ ॥ स्वर्गब्रक्षफूलनकीमाला ॥छांदितकीन्हेंदीनदयाला ॥ पावतदरसत्रिपतिनहींहोवें ॥ चित्रलिषें सेंसनमुषजोवें ॥ ९ ॥ चित्रवतबंदनआस्तुतिकरें ॥ उत्तमअर्थनिजसबिसतरें ॥ सहितबीमतीअरुपरना मा ॥ दरसभयेसनपूरनकामा ॥ १० ॥ ॥ ब्रह्माउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुचर्णसरोज तुमारा ॥ मनक्रमबचनाचित्तआहंकारा ॥ इंद्रियबुधिप्रांनअरुदेहा ॥ बंदतहेहमप्रगटेएहा ॥ ११ ॥ जाकोंप्राणावचनमनसाधें ॥ सावधाननिसदिनआराधें ॥ भावसहितआभिअंतरध्यावें ॥ तेउयाविविधिप्र गटेनपावें ॥१२ ॥ धनधनहमधनभागहमारा ॥ प्रगटहिंदेषेंचर्णतुमारा ॥जिनकेंध्यानकीरतनश्रवना ॥ बहुरिनहोवेंआवागवनां ॥१३ ॥ तुमअद्वैतद्वैतयहकर्यो ॥ अपानिमायासबनिस्तर्यो ॥तुमहीतेंउपजे संसारा ॥ सदारहेंतुमरेंआधारा ॥ १४ ॥ तुमहींमांहिंलीनसबहोई ॥ तुमसोंपरससकेनहींकोई ॥ रा गरहितआनंदस्वरूपा ॥ अजितअमिताचिद्रूपअनूपा ॥ १५ ॥ विद्याअध्ययनश्रवनअरुदाना ॥ क्रि याउपासनतपअसनाना ॥ त्यागजोगयज्ञादिकजेतें ॥ आतमसुधकरेंनाहिंएतें ॥ १६ ॥ तवगुनश्रवनपर तअघनासें ॥ ज्यौंतममांहीसूर्यप्रकासें ॥ तातेंजन्मकर्मगुणधारो ॥ दीनबंधुदीननउधारो ॥ १७ ॥ जो

तवचरणकमलमुनिध्यावें ।। भवभयभीतनपलछिटकावें ।। आरुनिजभगतनिरंतरसेवें ।। भयनहींसमुझैंनहीं कछूलेवें ।। १८ ।। अरुएकैंवैकुंठनिमिता ।। हृदयधरतांचर्णनिंचिता ।। बहुरिएकसेवेंसहकामा ।। एकभयैंचाहेंनिहकामा ।। १९ ।। जीवनमुगतभएएकसेवें ।। प्रेमभावसौंअतिसुषलेवें ।। एकेजज्ञादिकसों भजें ।।सर्वदेवमयतुमकौंयजें ।। २० ।। एकेवर्णअदिआश्रमा ।। तुमरेहेतकरैंसबधर्मा ।। एकएकरूप करिध्यावें ।। द्वैतभावकबहुंनहींल्यावें ।। २१ ।। एकेतुमप्रतिमाकौंसेवें ।। एकैनामनिरंतरलेवें ।। एकेश्रवनकीरतनध्यानं ।। कहांलगिकाहियेंजेविधिनाना ।। २२ ।।ज्योंजेजेतवचर्णनिसेवें ।। तेतेसबदंछीतफललेवें ।। सोतवचर्णप्रगटहमपायो ।। तातैंअबदीजैंमनभायौं ।। २३ ।। यहहमवंछापूरनकरो ।। अपनेचरणकमलचितधरौ ।। भस्मकरोदूरगींवासना ।। जिनतैंउपजेंभवसासना ।। २४ ।। परमदयालपरमहितकारी ।। इछापूरकदेवमुरारी ।। इछापूरणकरोहमारी ।। निहचलउपजेंभक्तितुमारी ।। २५ ।। जोतवजनवनमालाकरें।।प्रेमसहिततवआगेंधरें।।कमलादेषिसपर्धाआनें।।ताकौंआपसहपतनीजानें।।२६ ।।परितुमएसेंदीनदयाल।।भगतीआधीनिकरतप्रतिपाला।।तबइंदिरानिरादरकरौ ।। वनमालाताउपरधरौ ।। २७ ।। जोतवचरणभगतीस्वरकारन ।। दुष्टअसूरसेनासंहारन ।। असुरानिकौंअधगतिकेदाता ।। सुरनस्वर्गदीनेंविष्याता २८ ।। अभयदानअघनासनवांनौ ।। लोकवेदयहप्रगटबषानौ ।। बांधीधजागंगतीहुंलोका ।। जाकेंदर्शमिटैंभवसोका २९ ।। ब्रह्मादिकसुरनरआधिकारी ।। तुमरेंचरणकमलबसचारी ।। जोअतिब

लिबेलअलीना ॥ नाहिंआगधनीआधीना ॥ ३० ॥ जबजबआसुरनतेंदुषपावें ॥तबतबसरनचरनकीआ
वें ॥ तबहींसुषउपजेंदुषभाजें ॥ अपनेंअपनेठौराविराजें ॥ ३१ ॥ प्रकृतिपुरुषमहातत्वानियंता ॥ तुमइन
केंकारनभगवंता ॥ तुमतेंपुरुशक्तिजोंपावे ॥ प्रकृतिमिलिमहतत्वउपावें ॥ ३२ ॥ तातेंउपजैंईहब्रह्मंडा ॥
जलअधरतरेज्योंअंडा ॥ थावरजंगमविविधप्रकारा ॥ तातेंहोईसकलविस्तारा ॥ ३३ तातेंतुमयासबके
करता ॥ उपजावनप्रतिपालनहरता ॥ तुमआधारसकलकेस्वामी ॥ तुमफलदाताअंतरजामी ॥ ३४ ॥
जोकछुहोईसकलजगमांही ॥ तुमकरतादूजोकोऊनाहीं ॥ परीकहूंलिप्तहोहूंनहींदेवा ॥ कोउलषनिसकें
तवभेवा ॥ ३५ ॥ सोलहसएकेसतआठा ॥ जिनकेंहृदयप्रेमअतिकाठा ॥ हावभावसोंप्रीतिबढावें ॥ म
दनबांनबहुभांतिचलावें ३६ ॥ तुमतोहूनवसहोवोनाहिं ॥ निश्चलनिजानंदपदमांही ॥ औरछोडिजेबैठोको
ई ॥ करतबासनाबंधेसोई ३७ ॥ एईनदीप्रगटतुमकीनी ॥ जिनकीमहिमापरेनचीन्हीं ॥ एकगंगचर
णानकोंनीरा ॥ परसतानिरमलकरेंशरीरा ॥ ३८ ॥ दूजीतबकीरातिकीसारिता ॥ त्रिभुवनजहांतहांवि
स्तरता ॥ श्रवनकरतअंतरमलनासैं ॥ निरमलहृदयब्रह्मप्रकासैं ॥ ३९ ॥ ब्रह्मप्रकाशभयेभवनाहीं ॥
घेलेएकमेकमिलिमांहीं ॥ईनदेनदीनभजेजेपंडित ॥ तिनकोंकालकरतनहिषंडित ॥ ४० ॥ तातेंनाथाक्रिपा
अबकीजें ॥ साधसंगहमकोंनितदीजें ॥ जिनमेंकथानदीहमपावें ॥ तातेंतवचर्णानीचितल्यावें ॥ ४१ ॥
श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ योंलेशीवशक्रादिकसंगा ॥ आस्तुतिकारिबहूतप्रसंगा॥ बहुर्यो

विधिएवचनसुनायें।।जाकेकाजसकलहमआयें ।। ४२ ।। ।। ब्रह्माउवाच ।। ।। चौपाई।।हेप्रभुहम
तुमविनतीकीनी ।। धरनीभारभईजबचीनी ।। तातेंतुमलीनौअवतारा ।। सकलउताऱ्यौभूवकोभारा ।। ४३ ।।मि
टिअधर्मधर्मोविसताऱ्यौ।।सबसंतनिकौकारजसाऱ्यौ ।। औरकीरतीबहुविधिविस्तारि ।। भवसागरतरवेकौंक
री४४।।लेअवतारभूपजदुवंसा।।सकलजननकौंमिद्ऱ्यौसंसा।। बहुविधिकीनैंकर्मअपारा।।जिनसौंलागिजेहै
भवपारा ।। ४५ ।।अरुजदुकुलद्विजश्रापविनास्यौ।। नहिरहिहैदिनद्वैहभास्यौ ।। तातेंदेवकाजसबकऱ्यौ ।।
करवैकुंकछुनाहींउवऱ्यौ ।। ४६ ।। गईबरषसतआवपचीसा ।। तातेंहमविनवैंजगदीसा ।। अबकरिकृ
पाचलोनिजलोका ।। करतपुनीतहमारेओका ।। ४७ ।। हमहैंदासतुमारेदेवा ।। निसदिनकरेंतुमारीसेवा
।। ऐसीसुनीब्रह्माकीवांनी ।। तबहसीबोलेसारंगपानी ।। ४८ ।। ।। श्रीभगवानउवाच ।। ।। चौपाई
मैंसबसुनीतुमारीबांनी ।। तुमरौकाजभयोमैंजांनी।।परियदुकुलयोंहींपारिहरौ ।। तोनाससकलभुकोमैंकरौं।।
४९ ।। औसबजादवबहुमदमता ।। एनरहेसोंमेरीसता ।। मोहितजेंसबप्रबलईटांनें ।। ज्योंसायरमजादा
भांनें ।। ५० ।। तातेंनासहेतउपजायौ ।। श्रापसबनिविप्रनतेंपायौ ।। अबईनसबईनकौविनसाउं ।। पीछे
तुमलोकनिमैंआंउ ।। ५१ ।। ऐसेंसुनिहरिजीकेबेना ।। हृदयबढ्यौसबनिकौंचैंना ।। करिप्रणिपतिविन
तीसारें ।। अपनैंअपनैंलोकपधारें ।।५२।। ।। श्रीशुकउवाच ।। ।। चौपाई ।। ।। तवनरपतीकोस
भामझारे ।। बेठेयदुकुलसहितमुरारी ।। द्वारावतीउठेउतपाता ।। तिनकौदेषिकाहिहरिवाता ।। ५३ ।।

श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐंउतपातउठें च हुंऔरा ॥ अतिभयदाईकदीसेंघोरा ॥ अ
त्द्विजआपभयोकुलमांही ॥ तातेंभलीदेखियतनाही ॥ ५४ ॥तातेंअबइहांनहींरहियें ॥ तजीऐंवेगिजायो
जोचहीयें ॥ अतिपुनितक्षेत्रप्रभासा ॥ तहांवेगिचलोकोजेंवासा ॥ ५५ ॥ एकबारदक्षआपहींदयो ॥
सशीकौंक्षेरोगतबभयौ ॥ जबसोसशीप्रभासहींन्हांयौ ॥ छूट्यौआपपरमसुखपायो ॥ ५६ ॥ तातेंअ
बप्रभासचलीजे ॥ तहांजाईअसनानाहिकीजैं ॥ नृपतिदेवपितरनकोंकरीयें ॥ विप्रभोजनबहुविधिविस्तरीयें
॥ ५७ ॥ तिनकोंदानबहुताविधिदीजैं ॥श्रद्धासहितप्रनामहीकीजैं॥तिनप्रसाददुपरिपहरियें ॥ ज्योंनावनसों
सागरतरीयें ॥ ५८ ॥ ऐसीसुनीहरिजीकीबांनि ॥ तबजादवनिभलीकरीमानीं ॥ तवचलवैंकोंसकलवि
चारें ॥ अपनेंअपनेंरथनिसंवारें ॥ ५९ ॥ तबउद्धवहरिकौंनिजदासा ॥ दोषसकलविधिभयोंउदासा ॥
चलिएकांतहरिजीपैंआयों ॥ चर्णनिपरिकेंवचनसुनायों ॥ ६० ॥ ॥ उद्धवउवाच॥ ॥चौपाई ॥दे
वदेवईश्वरजोगेस॥श्रवनकीरतनहरनकलेस॥यदकुलकौंसंघाराहिंकरिहों ॥ अबतुममृत्युलोकपरिहारिहों
॥६१॥विप्रआपमेंटनसामर्था॥नाहिमिटोसोयहहेंअर्था॥मेरेंजीवनचर्णतुमारा॥जैसेंमीनउदकआधारा॥६२
प्राणनाथअबएसोकीजें ॥ संगआपनेंमोकोलीजें ॥ तुह्मरेंसबआचर्णअनूपा ॥ सबकौंअतिकल्याणस्व
रूपा ॥ ६३ ॥ जिनकौंपाईऔरसबत्यागें ॥ त्रिभुवनकौंसुषदुषसेंईलागें ॥ आसनगवनअसनअसनाना
॥ जागतअरुसोवतविधिनिना ॥ ६४ ॥ सदानिरंतरकौंमेदासा ॥ ज्योंपलतज्योंतुमारोंपासा ॥ माया

भयनहिंमेरेंकहूं ॥ तुमबिनअर्धनिमिषनरहूं ॥६५॥ गंधवसनमालाआमरना ॥ तुमउतीरणकौमेंधरना ॥ महाप्रसादनिरंतरपोष्यो ॥ दरसपरसबहुविधिसंतोष्यो ॥ ६६ ॥ एसौमेंनिजदासतुमारो ॥ मायाकरिहैकहाहमारो॥ मायाभयअरुतुमरेहेता ॥ होइंदिगंबरउरधेरता ॥ ६७ ॥ इंद्रियदेहप्राणमयसाधे ॥ सावधानतुमकौआराधें ॥ ब्रह्मबिचरिसदामनल्यावें ॥ तेनिजरूपतुमारोपावें ॥ ६८ ॥ हमकछुकमंत्रअकमनजानें ॥ ह्रदयज्ञानवैरागआनैं॥ तुमरेभगतनकोमिलिसंगा ॥ भवतारियेंमुनितवप्रसंगा ॥ ६९ ॥ तुमरैकमेंवचनपरिहासा ॥ आवनगवनरूपप्रकासा ॥ कहतसुनतसुमरतसुषमांही ॥ भवसागरहमरहीयेनाही ॥ ७० ॥ तातेंमायाभवनहींआनो ॥ आपहींसदामुक्तकरीमांनों ॥ पारतुमबिनांप्राणतजेंजांही ॥ तातेंमोहिछोडीयेंनाहीं ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवनिजभगतकें ॥सुनेंवचनगोपाल॥तबकरुणामयकरीक्रिपा ॥ बोलेवचनरसाल ॥ ७२ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेभगवतउद्धवसंवादेभाषाटीकायांषष्ठोऽध्यायः ॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उद्धवप्रतिश्रीकृष्णजीकह्यौसातमेंज्ञान ॥ दत्तयदुसंवादमेंशिक्षाआटबषान ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥महाभागउद्धवयहयोंहीं ॥ ज्योंतुमकहीबातहेंयोंहीं ॥ शिवविरंचिसक्रादिदेवेसा ॥ बंछेममवैकुंठप्रवेसा ॥ १ ॥ भूमेंभारवढरौजबभारी ॥तबब्रह्मापासपुकारी ॥ ब्रह्मादिकामिलबिनतिकरी ॥ तातेंमनुष्यदेहमेंधरी ॥ २ ॥ अबभूकौसबभारउतार्यो ॥ सकलसुरनिकोकारजसार्यो ॥ अरुजसकोकीनोंविसतारा ॥ जातेंजीवजां

होंभवपारा ॥ ३ ॥ जदुकुलआपलह्यौदिजपासा ॥ आपुआपुमैव्हैहैनासा ॥ आजहूंतेंसप्तादिनमांहीं ॥ सिंधुद्वारिकारापैंनाहीं ॥ ४ ॥ जबहींमैंतजिहौंयहलोका ॥ तबपावैगोदुषभयसौका ॥ कलिजुगआनि अधिष्टतहोई ॥ तातेंअधकारहैसबकोई ॥ ५ ॥ तातेंउद्धवसुतिनडभागा ॥ अबतूंकरसबहीकौत्यागा ॥ मोमेसदाचितथिरकरौ ॥ समदरसीव्हैभूवविचरौ ॥ ६ ॥ लोकछूकहतसुननमआवै ॥ मनअरुबुधि जहांलगीजावै ॥ सोयहसबमनकौकृतजांनौ ॥ छिनभंगुरमायाकरिमानौ ॥ ७ ॥ जिनयहसकलसतक रिजाना ॥ तिनकेभेदभयोहेनाना ॥ ताभेदहिब्रह्मकरिनहींजांनै ॥ विधिनिषेधतांहितैमानै ॥ ८ ॥ विधिनि षेधजोभाषैवेदा॥सोताकौजाकोहेभेदा॥भेदामिटेत्रिनकरेनत्यागा॥तातेंएदेंकोयेंविभागा॥९॥ज्यौंज्यौंतजेसुषा त्यौहोई॥तातेंवेदबतावेदोई॥आगैनाईछुडावैसारै॥जैआपुहींहूतेंविसतारै ॥ १० ॥तातेंएसबामिथ्याजानौ ॥उंचनीचगुएदोषनमांनौ॥इंद्रियअरुमननिहचलकरौ॥अहंकारममतापरिहरौ ॥ ११ ॥ सुषमथूलस कलविस्तारा ॥ अेकहींआतमकेआधारा ॥ सोआधारब्रह्मकोमांनौ ॥ एसौविधभवकेभयभांनौ ॥१२ याविधिभेदअर्थकौजांनौ ॥ बहुरिदृढदेनिश्चलकरिमांनौ ॥ दुहूंलोककीआसाछांडौ ॥ याविधिअंतराय सबपांडौ ॥ १३ ॥ जितनीयाकेआसाहोई ॥ तेतौविघनकरैसबकाई ॥ ज्यौंज्यौंतजतेजावैआसा ॥ त्यौं त्यौंमिटेविघनकोपासा ॥ १४ ॥ जबयहहोईआतमरामां ॥ तबतहांनहींआसाकौधामा ॥ तब विघनानिके करतादेवा ॥ तेहीउलटीकरेंतासेवा ॥ १५ ॥ तातेंविधिनिषेधसबनाषौ ॥ आसाछांडिदृढदेहरिराषौ ॥

दूजोकबहूंभूलिनलेषौ ॥ १६ ॥ अरुनिजपायौब्रह्मग्याना ॥ तिनकोंविधिनिषेधनहींनाना ॥ परितिनकैंनि
ताहिंविधिहोई ॥ कदेनिषेधनपरसैंसोई ॥ १७ ॥ वेसुषदुषगुणदोपनजांनैं ॥ बालकसमआचर्णनिटानैं ॥
परिविधिसारीसेवाकरैं ॥ अरुनिषेधआपुहिपरिहरैं ॥१८ ॥ सबपरिसुत्द्वदसदांअतिसांत ॥ ज्ञानविज्ञा
नसहीतनीतदांत ॥ सबजगब्रह्मजांनिथिरहोई ॥ बहुरौजनमनपावैसोई ॥ १९ ॥ ऐसैंसुनीहरिजीकेबैं
नां ॥ अतिदुष्करअरुअतिसुषदेनां ॥ तत्वसुननकीबाटीप्यासा ॥ तबबोलैंउद्धवनिजदासा ॥ २० ॥
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोगस्वरूपजोगउपजावन ॥ जोगदांनजोगस्वरभावन ॥ तुम
त्यागकत्यौसौमेरेहेत ॥ सोदुष्करआवैंनहीचेत ॥२१॥ क्यौंहोवैविषयनिकोत्यागा॥पुत्रकलत्रादिकअनुरा
गा ॥ यहतनयहधनएसुतमेरैं ॥ यहबनितायहग्रहयहचेरैं ॥ २२ ॥ याविधिमनअहंकारसमुद्रा ॥ बु
डिरत्यौमेमतिकौंक्षुद्रा ॥ तुमरीमायाअतिभ्रमायौ ॥ तातैंज्ञानत्द्वदेनहींअयौ ॥ २३ ॥ अबतुममोहिंशि
ष्यहिंउपदेसो ॥ मेरेउरकछूज्ञानप्रवेसो ॥ तातैंअबबहुविधिसमझ्यावौ ॥ ममउरपूरनज्ञानबढावौ ॥२४॥
जातैंसबतजितुमकौंपावों ॥ बहुरौजगतजन्मनहींआवौ ॥ अरुदूजोएसोनहीकोई ॥ जातैंलाभज्ञानकोहो
ई ॥ २५ ॥ ब्रह्मादिकतनधारीजेते ॥ तवमायाबसकीनैंतेते ॥ तातैंमायाहीकौंदेषैं ॥ कर्मअरुभोगभलैं
करीलेषैं ॥ २६ ॥ तातैंमेजनुतुमरीसरना ॥ सोकीजैंपावुंतुमरचना ॥ तुह्मरोआदिअंतनपारा ॥ ज्ञानरू
पसबहींतैंन्यारा ॥ २७ ॥ सोईतरंगहोकरजाकौ ॥ मायाकछूनसकेकरीताकौ ॥ तुमहींतेंउपजेंयहजी

वा ॥ जैसेंअगनिहूंतेंबहूदीवा ॥ २८ ॥ सदांरहैतुमरैआधारा ॥ नित्यउठीपोषैसिरजनहारा ॥ औसैंप्रभु
कौंसिवैंनहीं ॥ तातैंपरैपरमदुषमाहीं ॥ २९ ॥ याभवकेदुषकहैनजांहीं ॥ पर्यौनिरंतरमैंतिनमाहीं ॥ अब
मोकौंसरनांगतिजांनौ ॥ देकरिज्ञानसकलभयभांनौ ॥ ३० ॥ मेरेतनमनधनुतुमचरनां ॥ मनवचकर्मआ
यौमेसरनां ॥ एसैंसुनिउद्धवकेबैनां ॥ हरिहसिबोलेअंबुजनैनां ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ उद्धवमैकहदेवौज्ञांनां ॥ सतकहतहौंनांहींआंनां ॥ याजगसाधभयैहैजेतैं ॥ आपुहिंआप
उधरेतेतैं ॥ ३२ ॥ आपुहिंभलैबुरोपहिचांनै ॥ छोडिबुरौभलाकौंठांनै ॥ गुरुआपुनौआपुहींहोई ॥ प
शुपंपीभावैजोकोई ॥ ३३ ॥ परिनरनतएसोहैनीको ॥ ब्रह्माआदिसबनिकोटीको ॥ जातैंब्रह्मविचारहीं
पावैं ॥ बहुरीजगतजनमनहींआवैं ॥ ३४ ॥ एकपदद्वैपदात्रिपदएका ॥ चोपदादिबहुपादअनेका ॥ मैब
हुभांतिसृष्टिविसतारी ॥ तिनमेंप्रियनरदेहसमारी ३५ ॥ मोहिपावैंसोयाकरिपावैं ॥ औरसबानिसुषदुषभो
गावैं ॥ यामेंमेरोकरैंविचारा ॥ सावधानव्हैबहुतप्रकारा ॥ ३६ ॥ भाईयहतौजडहैदेहा ॥ इंद्रियादिक
अरुसकलसनेहा ॥ अपनैंअपनैंअरथनिगहैं ॥ सोएशकातिकोंनकोरहै ॥ ३७ ॥ अरुसोवतजबसूप
नांपावैं ॥ तबतौंइंद्रियतनाछिटकावैं ॥ सुपनमांहिसुषदुपकौंलहैं ॥ जागेबातसकलकौंकहैं ॥ ३८ ॥ ता
तेंमेतोयहतननाहीं ॥ मेतोवासकियौयामांहि ॥ तौबनितासुतबितपरिवारा ॥ मेरोतोनहींसकलपसारा ३९
एतौसकलदेहसंगजांहीं ॥ सोयहदेहकदेमैंनाहीं ॥ नातैंसुपनमांहींनहिकोई ॥ उहांसकलऔराहिहोई ४०

अरुभाईमेंतौंवहनाहीं ॥ जोतनदीसैंसुपनांमांहीं ॥ जातेंउहहुथीरनरहावैं॥ताकौंतजीयामेंफिरिआवैं ॥४१॥
वातेंयहयातेंवहझूठि ॥ यहानिजज्ञानगत्योमेंमूठी ॥ जोईनदोहूंदेहकोंलहैं ॥ जोइंद्रियनिव्हैंसबअर्थनिगहैं
॥४२॥ इंद्रियबुध्यादिकअरुबानीं॥याकौंकोईसकेनहिंजानीं॥सोमैंनिपनिरंतरएका॥उपजेबिनसेदेहअने-
का ॥ ४३ ॥ भाईसोमैंकहातेंआयौं ॥ किनतनादेनौंकिनउपजायौं॥अबतौंमेंद्वैदेहआधारा ॥ पलकोरहन
सकौंनिरधारा ॥ ४४ ॥ एदोउतजिकहांमैंरहौं ॥ जोहैंसततांहिदृढगहौं ॥ ऐसेंबहुविधिकरेंविचारा ॥
त्यागेदेहादिकपरिवारा ॥ ४५ ॥ सोजहांतहांतेंलेवैज्ञाना ॥ कबहूंकछूनज्ञानेंआंना ॥ याविधिआपआप
कौंतारैं ॥ लहैंब्रह्मभवदुषानिवारैं ॥ ४६ ॥ यहविचारमानवतनहोई॥दूजाभूलिनजांनेकोई ॥ तातेंतुममा
नवतनपायौ ॥ अरुकछूएकमेंतौंहीलषायौ ॥ ४७ ॥ तातैंतजोसकलकोसंगा ॥ मनवचक्रमहोईनिहसं
गा ॥ सबतैंपरेंआपकौंजानौं ॥ सौआधारब्रह्मकेमानौं ॥ ४८ ॥ जहांतहांदेषोयहउपदेसा ॥ याविधि
करोब्रह्मप्रवेसा ॥ ऐसैंजहांतहांलेवैज्ञाना ॥ बहुतकभयेब्रह्मपरवाना ॥ ४९ ॥ तिनमेंकहूंएककीबाता ॥
जोइतिहासकथाविष्याता॥दत्तादिगंबरअरुयदुभूपा ॥ तिनकौहेसंवादअनूपा ॥ ५० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
सुनिउद्धवइतिहासअब ॥ भाषोपरमअनूप ॥ वक्तादत्तात्रेयजहां ॥ अरुपूछकजदुभूप ॥ ५१ ॥
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकसमेंभूपातियदुनामां ॥ गएसिकारछोडीनिजधामां ॥ तबतानगरनिकटहैं
सूता ॥ देष्यौएकपरमअवधूता ॥ ५२॥ निरभयनिश्चलइच्छाचारी॥तेजानिधांनतरुणतनधारी॥ कारिप्र

णामबहुतप्रकारा ॥ यदुभूपातिंतववचनउचारा ॥ ५३ ॥ ॥ यदुउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हेप्रभूपूर
णपरमदयाला ॥ कहौंक्रिपाकरिहोहुक्रपाला ॥ एसिबुधिकहांतुमपाई ॥ जातेंबिचरौसहजसुभाई ॥५४
भयेश्रकर्त्ताईच्छाचारी ॥बालकसमसबचिंताटारी ॥ सबजगनिशदिनयहविचारैं॥ धर्मअर्थकामविस्ता
रैं ॥ ५५ ॥ सोनहींउपजैंनहिंदुषपावे ॥ तिनसौंलागिसबआयुगमावें ॥ तुमसमस्थसबहींविधिजांनौ ॥
क्रियानिपुनप्रियबैनबषांनौ ॥ ५६ ॥ सबविधिसरसतरुणतनसुंदर ॥ तुष्टपुष्टिकौंलिपैनदुर्दर ॥ नाकछूवं
छौनाकछूकरौ ॥ जडउनमतिगतिजिमिविचरौ ॥ ५७ ॥ तृष्णांकामलोभदैलागी ॥ सकललोकदाझैति
नआगी ॥तूमअनंदमयदाझौनाहिं ॥ ज्यौगयंदगंगोदकमांहीं ॥ ५८ ॥ देहअर्थसबहींतुमत्यागैं ॥ र
हौआनंदितशोकनहींलागैं ॥ संगनकोईरापेदेवा ॥ कोईलहिनसकैतवभेवा ॥५९॥ तातेंकहौक्रिपाकरि
नाथ॥भवजलबूडतपकरौहाथ॥यौंजदुभूपबिनतीकरी॥तबअवधूतागिराउचरी॥६०॥ अवधूतउवाच॥
चौपाई ॥ ॥ सुनजदुभूपपरमबडभागी॥ जाकीमतिहरिसौंअनुरागी ॥ बहुतहैंमेरेगुरुदेवा ॥ जिनतैं
मैंज्ञान्यौंसबभेवा ॥ ६१ ॥ परिमैंमतौआपतैंलीनौं ॥ तिनमैंमौसौंकिनहूंनदीनौ ॥ तेगुरुसकलसूनौतुममो
सौं ॥ हरिजनजांनकहतहौंतोसौं ॥ ६२ ॥ धरनीगगनपवनअरूपांनी ॥ अनलचंद्ररविकपोतहींजांनी
॥ अजगरसिंधुपतगअभृंगा ॥ कुंजरमधुहरतारकुरंगा ॥ ६३ ॥ मीनपिंगलाकुररअरूबाला ॥
कन्यासरकरतअरूब्याला ॥ मकरिभृंगीएचोबीसा ॥ ईनतेंशिष्यौसुनोमहीसा ॥६४॥प्रथममैंधरनीमैंगुन

देष्यौ ॥ सोमेंपरमतत्वकरीलेष्यौ ॥ सबेरहेंधरनीआधारा ॥ तापरिमूढकरैंअपकारा ॥६५॥ ठौरठौ
रअतिउत्तमअंगा ॥ ताकौंकरैंबहुतविधिभंगा ॥ ताकैपरवतवृक्षअनंता ॥परउपगारसबैंवरतंता॥६६॥
परअपराधकछूनाहिंजांनें ॥ उलटीआपअपकाराहिंठानैं ॥ ऐसीशिषधरनीकीलिवैं ॥ जोजनहारिचर्णानि
कौंसेवें ॥ ६७ ॥ ॥ प्रथमगुरु ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्राणवाईज्योंलेहीआहारा ॥ स्वाद
कुस्वादनकोईप्यारा ॥ ज्यौंहरीजनआहारहींलेवें ॥ स्वादकुस्वादनाहिंचितदेवें ॥ ६८ ॥ बिनाआहारवि
चारनआवैं ॥ स्वादकुस्वादनमनठहरावैं ॥ तातैंएतोलेईआहारा ॥ जेतोहोवेंप्राणआधारा ॥ ६९ ॥
अरुज्यौंपवनफिरेजुगमांही ॥ शुदअशुद्धालेपैंकछूनाहीं ॥ नानाभेदनिमेंसंचरैं ॥ प्रियअप्रियगुणदोषनध
रे ॥ ७० ॥ यौंविषयनिग्रहतेंजोगी ॥ मनवचनकर्मनहोवैभोगी ॥ भेदअनेकानिमेंअनुसरैं ॥ परीकछू
भेदत्हदेनहींधरैं ॥ ७१ ॥ अरुज्योंपवनगंधसंजोगा॥लिप्तभयौजानैंसबलोगा॥परिसोपवनसदाएकरूपा॥
लिपैंनकवहुंईसोअनूपा ॥७२॥ पंचभूतनिमितत्यौंदेहा ॥ सकलविकारानिकोएग्रेहा॥तामेंजोगीलितनहोई॥
औरलिप्तसबजानेंकोई ॥ ७३ ॥ ॥ द्वितीयगुरु ॥ २ ॥ ॥चौपाई ॥ ज्यौंसबहिंनमेंएकआका
शा ॥ अरुसबहिनकौंतामेंवासा ॥ सबउपजैंबिनसैंवरतांही ॥ गगननालेपैंकालतिहूंमाहीं ॥ ७४ ॥ त्यौं
बहुविधिसबजगतपसारा ॥ मुनिदेषैंआतमआधारा ॥ जोकछुदेषैंजडहैंसोई ॥ ताकेंसंगतैंचेतनहोई
॥ ७५ ॥ ज्यौंआतमदेहानिमेंदेषैं ॥ त्यौंपरमातमजहांतहांलेषैं ॥ एकअनंतनकहूंआवरनां ॥ लिपैंनछि

पैजन्मनहींमरना ॥ ७६ ॥ सोपरमातमआतमएक ॥ कदैनदेषैंभुलिआनेका ॥ ज्यौंन्यौंगगनघटानिमें
होई ॥ बाहरहुंपुनिजहांतहांसोई ॥ ७७ ॥ कहिवेकोंद्दैनांतरएका ॥ यौंआनमअरुब्रह्मविवेका ॥ ज्यौं
वहुमेहपवनदांमनी ॥ बरपैंबहुंबासरजांमनी ॥ ७८ ॥ पारैनभालैतकदेनहींहोई ॥ औरालिप्तजांनेसबको
ई ॥ त्यौंआतममेंदेहअनंता ॥ उपजेंवरतेपावेंअंता ॥ ७९ ॥ परिआतमांलिमकहूंनाहीं ॥ साधाविचारेंयौं
मनमांहीं ॥ यहअंबरगुनतोहिसुनायौं ॥ अबभाषोंजिजलतेपायो ॥ ८० ॥ ॥ तृतीयगुरु ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ नितनिरमलऔरानिर्मलहरै ॥ तापमेटीसीतलताकरैं ॥ सबसुषदाईकाहितरसवंत ॥ एगुनज
लकेसषिसंत ॥ ८१ ॥ ॥ चतुर्थगुरु ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेजवंतअरुदीपतजुक्ता ॥ क्षोभरहित
जहांतहांनिरमुक्ता ॥ स्वादरहितसबभक्षनकरैं ॥ अग्निनलिपैंसंचनहींधरैं ॥ ८२ ॥ त्यौंहीज्ञानतेजमयहो
ई ॥ इंद्रियादिकृतदपितसोई ॥ जदपिबहुविधिभोजनकरैं ॥ स्वादरहितगुनदोषनधरैं ॥ ८३ ॥ काहुं
हुंतेक्षोभनहींहोई ॥ काहूंकेगुणमिळेनसोई ॥ उदरप्रमांनलेहिअहारा ॥ कछनजांनैंसंचैसारा ॥ ८४ ॥
गुप्तरहेंन हिभूलजनावै ॥ कन्हिंप्रगटप्रगटव्हैंआवैं ॥ परिइछातेंआहुतकोंलेई ॥ तिनतेंपापरहेंनाहिदेई ॥
८५ ॥ त्यौंमुनिगुप्तआपतेंरहैं ॥ पोजिलेहिताकोंभ्रमदेहैं ॥ उत्तमभोजनआदिहोई ॥ परइछातेंलेवेसो
ई ॥ ८६ ॥ वहुज्यौंअग्निएकरसएका॥बहुविधिदिसैंकाष्टअनेका ॥ त्यौंआतमाएकसबमांहीं ॥ भेद
देहकृतसंचेनाहीं ॥ ८७ ॥ दिवामसालप्रगटज्यौंहोई ॥ ज्वालाजातलषेसबकोई ॥ परितेंदीसेंत्योंकेत्योंहीं

प्रतिदिनदेहजातहैयोंहीं ॥ ८८ ॥ ॥ पंचमोगुरु ॥ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
जेसेंशशीकोबढैकला ॥ त्योंत्योंदिनदिनदीसेभला ॥ पूर्णव्हैकरिदिनदिननासैं॥सकलमिटैंतवनहींप्रकासैं ॥
८९ ॥ त्योंबालादिअवस्थाआवैं ॥ व्हैकरितरुनक्रमहीक्रमजावैं ॥ तवआतमदेषीयतनाहीं ॥ परिहैस
दाकालतिहूंमांहीं ॥ ९० ॥ ॥ गुरुछठो ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्योंरविकिरणनिसौंजलछेवें
समयपाईबहुज्योंसबदेवैं ॥ परिकबहुंअभिमाननआनैं ॥ लीयोदीयोआपुंनहींजांनैं ॥ ९१ ॥ त्योंमुनिसुनें
कहैंअरुदेषैं ॥ सकलअर्थइंद्रियकृतलेषैं ॥ नितआतमांअकरताजांनैं ॥ सबतजोब्रह्मविचाराहिठांनैं ॥
९२ ॥ ज्योंघटजलप्रतिबिंबितसूरा ॥ लिप्तदेखियैंपरिहैंदूरा ॥ त्योंआतमांदेहसनबंधा ॥ थूलदृष्टिजांनतहैं
अंधा ॥ ९३ ॥ ॥ सतमगुरु ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबकपोतकोकथासुनाऊं ॥ तेरेमन
कोभ्रमहिंमिटाउं ॥ एककपोतकपोतीसंगा ॥ बनमेंकीनोयेहप्रसंगा ॥ ९४ ॥ आपुआपुमेंअतिअश
क्ता ॥ आठपहरमेंपलनविरक्ता ॥ मनसोंमनअंगनिसोंअंगा ॥ नैनत्रीनैनबुद्धरोबहुरंगा॥९५ ॥अवनगव
नअसनअस्थाना ॥ सैनवैनसारीविधिनाना ॥ मिलिसकलकर्मनिकोंकरैं ॥ निरभयरहेनकाहूंतेंडरैं ॥
॥ ९६ ॥ सोकपोतबनितावसकोआौ ॥हावभावतनमनहरिलिआौ ॥ वनिताजोवंछेसोल्यावे ॥ कष्टसहित
नोहीविधिपावैं ॥ ९७ ॥ सोअस्त्रीजीतत्र्योंतुमराजा ॥ अपनौलषेनकानअकाजा ॥ तनमयभयोंनिरंतर
चहैं ॥ प्राणनिहूंसैंताहिप्रियकहैं ॥ ९८ ॥ ताकीत्रीयाअंडउपजायें ॥ तिनमैंमनदूनोमिलिलाये ॥ तवह

रिमायाशिशुनिरमये ॥ कोमलअंगरोमतवभये ॥ ९९ ॥ तवहुंमिलीकरीतिनकोंपोषें ॥ बहुतभांतिता
कोंसंतोपें ॥ कोमलवचनसुनेंमुषदरसें ॥ अपनेंअंगअंगसोंपरसें॥१००॥हरिकीमायाबहुतभुलाये ॥
आपुआपुमेंसकलबंधाये ॥ पुत्रसनेहरहेंअनुरागें ॥ सिरपरकालनलषैंअभागें ॥ १ ॥ एकवारबालक
केकारन ॥ चारौलेंनगएतेआरन ॥ तांहिसमेंव्याधिएकआयौ ॥ बालकदेषिजालबिछरायौ ॥ २ ॥
देष्योकनिकनदेष्योजाला ॥ बंधेआनिसकलषगबाला ॥ तबदोउचाराकौंल्याये ॥ जिनिग्रहमांहिनबा
लकपायें ॥ ३ ॥ तबदेषेंमातातेबाला ॥ बंधेजालमांहिंबिहाला ॥ तबसोतहांपुकारतधाई ॥ जालमांहि
सुतहेंतबधाई ॥ ४ ॥ तबकपोतदेषेंसबबंधे ॥ हरिमायाकीनेंअतिअंधे ॥ तबबहुभांतिकरैविलापा ॥
लेपेंबहुतआपनेंपापा ॥ ५ ॥ हाहापापकोंनमेंकीनें ॥ एसेंदुषदेवमोहिदीनें ॥ जाकीयहपतिव्रतानारी ॥
पुत्रनिलेसुरलोकसिधारी ॥ ६ ॥ मोहीछोडसूंनेंग्रहमांहीं ॥ सबमिलिआपुइंद्रपुरजांहीं ॥ नामेंसुषभो
गएयहलोका ॥ नहिंसाधनपायोपरलोका ॥ ७ ॥ धर्मअर्थकामसबजामें ॥ कछुवैनहींरह्योग्रहतामें ॥
अबप्राननिराष्यौकछुनाहीं ॥घरीघरीमेंदुषआधिकाही ॥ ८ ॥ याविधिभयोबहुताबिहाला ॥ बंधदेषेंबनी
ताअरुबाला ॥ व्याकुलबुधिविचारनकर्यौ ॥ आपहूआईजालेमेपर्यौ ॥ ९ ॥ सहितकुटुंबकपोतहींपा
यौ ॥ तबहींभयौव्याधिमनभायौ ॥ ऐसीमेंकपोतकीदेषी ॥ तबहींरहदैआपुनेंयहलेषी ॥ ११० ॥ यौं
हींकुटंबहीवेंजाकें ॥ तृष्णारागबढैअतिताकें ॥जीवानिअतिआरंभनिकरें॥सहितकुटंबकालमुषपरें॥११

॥याविधिजोमानवतनपावैं ॥ सोतोद्वारब्रह्मकेआवैं ताहुंपारिजोंग्रहाहितकरैं ॥सोनरब्रह्मद्वारचढीपरैं ॥१२॥
तातैंभोगकुटंबअरुग्रेहा ॥तिनकरिजीवलहैंप्रतिदेहा॥एसौमानवतननगवैयैं॥ज्ञाकरिदेवानिरंजनपैयैं॥१३॥
दोहा॥ यहभाषीगुरुआठकी ॥ शिष्यामैंतुमपास ॥ अबऔरनकीकहतहौं ॥ज्यौंछूटभवपास ॥११४॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेअवधूतेतिहासोपाष्यानेसतमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
दोहा ॥ ॥ शिक्षानवामित्रादिलेकहीआठमैंमांहि ॥ ज्यौंज्यौंभाषतदत्तजीत्यौंयदुमनहर्षांहि ॥ १ ॥
॥ अवधूतउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जैंइंद्रियसुषकछुकहावैं ॥ तैंतोंस्वर्गनर्कहूंआवैं ॥ जौंसुकरकू
करसुषमांहीं ॥ त्यौंहिंदेवऔरकछूनांहीं ॥ १ ॥ अरुजोसुषआपुहीतेंआवैं ॥ कर्मलिष्योसोकोईनामि
टावैं ॥ अरुज्यौंकोईदुषकौंनहींचहै ॥ परिदुषआपुआपुहीरहै ॥ २ ॥ त्यौंहीसुषआपुहीतेंआवैं ॥ वि
तजांनैंनरबहुदुषपावैं ॥ तातैंधनसुषनामनलेवैं ॥ होईअकरताहारिपदसेवैं ॥ ३ ॥ स्वादकुंस्वादबहुतके
थोरा ॥ जोहरिजीपठवेंतिसबोरा ॥ ताकोंभक्षैंरहैंउदासा ॥ अजगरव्रातिगहैयहदासा ॥ ४ ॥ जोक
बहुंअहारनआवैं ॥ तौंथिररहैनकछुमनलावैं ॥ कर्मआधीनदेहकोंजानै ॥मनकृमवचनउद्यमठांनैं ॥५॥
अतिसांमर्थइंद्रियमनदेहा ॥ परिकछुउद्यमकरैंनएहा ॥ निश्चलब्रह्मनिरंतरसेवैं ॥ यहशिष्याअजगर
तेंलेवैं ॥ ६ ॥ ॥ गुरुनवमो ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥दर्शनपरसनपरमगंभीरा ॥ अधिकअगाधज्ञान
सोनीरा ॥ वारपारकोईथाहनलहै ॥ एगुनमुनिसायरकैगहै ॥ ७ ॥ ज्यौंबरषाबहुनीरमवेरा ॥ सायर

कछुअटेनलेसा ॥ ग्रीपममेंकछूहीननहोई ॥ सदासमर्थआपतेंसोई ॥ ८ ॥ त्यौंकोईबहुविधिअरचावै
॥ भोजनवस्त्रादिकपहीरावैं ॥ अस्तुतिमानवडाईदेवैं ॥ बहुतभांतिबहुतोंमिलिसेवैं ॥ ९ ॥ अरुएकोलै
जाहींउतारी ॥ निंदादिकएकठानैभारी ॥ परिनारायणमयमुनिमांहि ॥रागद्वेषकछूउपजैंनाहीं ॥ १० ॥
गुरुदशमो ॥१०॥ चौपाई ॥ ॥ बनितावस्त्रकनकआभरनां ॥ बहूविधिमायाकेउपकरना॥इनमेंआई
परैंजोकोई ॥ अग्निपतंगसमानसोहोई ॥११॥ ॥ गुरुईग्यारमो ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
ज्योंलगीमुनिसमझैनिजदेहा ॥ ज्याचाअहारलेईबहूग्रेहा ॥ यातैंबहूअनुरागनबढैं ॥ यहशिष्यामधूकर
तेंपढैं ॥ १२ ॥ छोटेंबढेंबहूताविधिग्रंथा ॥ तिनतेंसारगहैंहरिपंथा ॥ ज्यौंमधूकरबहूफूलनिमांहिं ॥ वास
गहैंफूलनिकौंनांहीं ॥ १३ ॥ सोमधूकरद्वैविधकौंकेहीयैं ॥ दहूपासतेंशिष्यालहीये ॥ बहूतग्रहनीतेलेई
अहारा ॥ उदरंप्रमानएकहीवारा ॥ १४ ॥ ॥ गुरुबारमों ॥ ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥
दूजेकोकछूसंचनधरैं ॥ निर्भयब्रह्मविचारहींकरैं ॥ संग्रहभूलिकरेजोकबहीं ॥ मधुमाषीज्योंविनसैंतब
हीं ॥ १५ ॥ जोकोईधनसंग्रहकरैं ॥ सोकोईऔरहींपरिहरैं ॥ ज्यौंमधूमाषीमधसंग्रहैं ॥ मधूआसोउ
दमाविनलहैं ॥ १६ ॥ ॥ गुरुतेरमो ॥ १३ ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ पुतलाकाष्टहूकोजोहोई ॥ पग
हूबुधिपरसैंमतिकोई ॥ परसकरतहावैंदृढबंधा ॥ ज्योंकरिदकरिनिसंबंधा॥१७॥मृत्युजांनिबनिताकौंत
जैं ॥ पंडितकबहूंभूलिनभजैं ॥ भजतेंहोवैंकरीसमाना ॥ एकाहिंमिलिमारेगजनांना ॥ १८ ॥ ॥ गुरु

चउदमो॥१४॥चौपाई॥ ॥ हरिविनगीतसुनैंनहीं और॥गयोचाहैजैहरिकेठोरा॥औरसुनगतातेहोवेऐसी
॥व्याधगीतहरिनांकीजैसी१९॥सुनोहरिनगातिसुनिबहुरंगा॥सृंगीरिषिज्यौंगनिकासंगा॥अबलाधनिमुक्त
नहींहोई॥तिनकैंशब्दसुनैंनहींकोई॥२० ॥गुरुपनरमो ॥१५॥ ॥चौपाई॥ ॥ मुनिजिन्हाग्र
सन्कनकरैं ॥ स्वादकुस्वादशकलपरहरें ॥ जिन्हारसतेंहोवेंकाला ॥ जैसैंमीनमरैंततकाला ॥ २१॥
जेमुनिसबअर्थनिपारिहरैं ॥ जाईएकांतबासकौकरैं ॥ सहजइंद्रियसबहोवेंक्षीना ॥ परिरसनानहींहोई
अधीनां ॥ २२ ॥ रसनासबकौंफिरिजिवावें ॥ जबाहिंरससंजोगहींपावें ॥ यौंसबइंद्रियजीतैंकोई ॥
परिरसनांकरमैंनहींहोई ॥ २३ ॥ सौंलगिसकलव्रथाकरिजांनो ॥ रसनाजीतजीतकरिमांनो ॥ तातैंमु
निरसनांबसकरैं ॥ औरसकलसाधनपरिहरैं ॥ २४ ॥ योंजेएकएकवसभये॥तेसबजमकैंद्वारैंगये ॥
परिजोएकपंचबसहोई ॥ ताकैंदुषजांनैंगोसोई ॥ २५ ॥ ॥ गुरुसोलमो ॥ १६ ॥ ॥चौपाई॥
बहुरिएकगनिकापिंगला ॥ तातेमैंशिष्योगुनभला ॥ सोतुमसंभाषतहौंराजा ॥ जातेंसरैंतुमारैंकोजा ॥
॥ २६ ॥ जनकाविदेहपुरीमैंवासा ॥ नामापिंगलारूपनिवासा ॥ एकवारशृंगारवनायौ ॥ धनिकपुरुषम
नमैंठहरायौ ॥ २७॥ बैठिनिकासिभवनकैद्वारा ॥ आगेचल्यौजाईबाजारा ॥ कोईभलोआवंतादेषैं ॥
यहआवैंगोयोंकरिलेषैं ॥ २८ जबवेआगेंकोचलिजावैं ॥ तबपिंगलाऔरकौंध्यावैं ॥ औरौआइआ
इचलिजांहिं ॥ सौंयहदुषपावैंमनमांहीं ॥ २९ ॥ तबहूंउठिंभीतरकौंआवैं ॥ कबहूंव्याकुलबाहिरआवैं ॥

अर्द्धरातिएसौविधिभयौ ॥ लोकबजारचलतरहगयौ ॥ ३० ॥ तबवहभग्नमनोरथभई ॥ चिंतादुषअ
तुलअनुभई ॥ अपनौतिरस्कारकरिमांन्यौं ॥ सबतैंहीनआपकौंजांन्यौं ॥ ३१ ॥ तबताकौंकोईबडभा
गा ॥ जातेंउपज्यौंदृढवैरागा ॥ ज्यौंलगिनहिंउपजैंनिरवेदा ॥ त्यौंलगिनहिमिटैंभवषेदा ॥ ३२ ॥ याभव
नपाशिपदुपअनेका ॥ तामेंपरमरत्नसुषएका ॥ बंधनबंध्योजीवअपारा ॥ तिनकौंहरिजिरच्यौकुठारा
।३३॥ताकीमाहिमाकहीनजावैं॥जाकेभागबडेसोपावैं ॥ जाकौंनामकहैवैरागा ॥ सोताहरिकोदीयौसुहागा
॥ ३४ ॥ जांहिदेईसोईपेंपावैं॥ भवभयछोडिब्रह्ममेंजावैं ॥ तातैंमानवसबाछिटकावै ॥ ज्यौंत्यौंकरिवैंराग
उपावें ॥ ३५ ॥ तबपिंगलावचनउचारैं ॥ बहुतभांतिआपुहिंधीकारैं ॥ गएदिननकौंअतिपछितावैं ॥
सबतैंदृढवैरागबढावैं ॥ ३६ ॥ ॥ पिंगलाउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अहोएकमेरोअज्ञानां
॥ जाकिंरदृदैबदूरीभ्रमनानां॥जलबुदबुदासमजोनरदेहा॥तासौंशुषहितकीयोसनेहा ॥ ३७ ॥ पुरनसर
नततजिजलपासा ॥ मृगजलधाईकरीजलआसा ॥ चारपदारथदाईकदेवा॥सदानिकटकौंलद्योनभेवा ॥
॥ ३८ ॥ सत्यसदासुषदाइकस्वामी ॥ सोछांड्यौनिजपतिधननांमी ॥ जुठोसदाकालमुषमांहीं ॥ जातेंदु
पसोकआधिकाहि ॥ ३९ ॥ एसोपुरुषताहीमेंभज्यो ॥ आपहिंदुषआपकौंसज्यौं ॥ देहवेचमेंदेहहीपो
ष्यौ ॥ यांहिभांतिमनहींसंतोष्यौ ॥ ४० ॥ अखिलंपटतृष्णादाव्यौ ॥ दुषितनरनसौंमेंसुषचाव्यौ
॥ हाडेमदमंजाअरुअंता ॥ मांसरुधिरत्वकरोमअनंता ॥ ४१ ॥ विष्टामुत्रस्वेदक्रामिएहा ॥

झरैंद्वारनपवएसीदेहा ॥तामेंकहोरमितक्योंहोइं ॥ मोसीमूढऔरनहींकोइं ॥ ४२ ॥ यापुरमांहिंजनकनृ
पएसैं ॥ सूरअधिकारसुरेखरजैसैं ॥ तोहूंपारसिबसुषकौतजैं ॥ व्हैविदेहहरिचणंनिभजैं ॥ ४३ ॥ अ
रूसबप्रजाभजेहरिचरनां ॥ जातेंमिटैंजन्मअरूमरनां ॥ जाकौंभजैंब्रह्माशिवसेषा ॥ परिसोतिनहूंकदैनदे
षा ॥ ४४ ॥ एसैंप्रभूकौंजेनरसेवें ॥ तिनकौंरिझिआपकौंदेवें ॥ ऐसोप्रभूमैंनहींआराध्यौ ॥ कीओ
अनर्थअर्थनहींसाध्यौ ॥ ४५ ॥ अबमेंआपनिवेदनकरौं ॥ औरसकलउरतेंपरिहरौं ॥ अप
नेपतिहरजीकेसंगा ॥ सदारमौंज्यौंश्रीअरधंगा ॥ ४६ ॥ कहाऔरसुरनराप्रियकरीहैं ॥ जे
वापुरेंआपुहीमरीहैं ॥ अरूतेसुषकोइंथिरनाहीं ॥ देषतसकलपलकमेंजांहीं ॥ ४७ ॥ मेरीदृष्टीदु
षिसबआवैं ॥ कालाधीनकहांसुषपावें ॥ तातेंमेंयहनिश्चैजांनी ॥ कृपाकरीहैंसारंगपानी ॥ ४८ ॥ जि
नमेरेवैरागउपायौ ॥ अपनेंचर्णकमलचितलायौं ॥ यहहरिक्रपाविनानहींहोइं ॥ जोवैंरागलहैंनरकोइं
॥ ४९ ॥ जातेंसबबंधनभवनासैं ॥ ह्रदयरमापतिआपप्रकासैं ॥ मेंतोमंदभागनीऐसी ॥ त्रिभुवनमांहिंन
हींकोजेसी ॥ ५० ॥ ताकौंकिसौंहरिकौभजनौं ॥ केसोकालजालकौंतजनौं ॥ परितेंदीनबंधुगोपाला ॥
पतितउधारनपरमदयाला ॥ ५१ ॥ तिनहींअपक्रपायहकरी ॥ जिनमेरेंउरऐसीधरी ॥ आबलेयापर
सादहिंसीसा ॥ निसादिनभज्यौंचरनजगदीसा ॥ ५२ ॥ जितनेंयादेहिनिरवाहौं ॥ सोइंनहिआरंभसक्षा
हौं ॥ सहजमांहिंजोहरिजील्यावैं ॥ ताकरियादेहविरतावैं ॥ ५३ ॥ याभवकूपपर्‍योंनितप्रांनी ॥ विषेअ

वरनदृष्टिछिपांनी ॥ तापरिअजगरकालगिरास्यो ॥ यौंनरबहूतपाससौंपास्यौ ॥ ५४॥ ताकौंहरिविनकौ नछोडावैं ॥ आपहीकोंनहींछूटनपावैंअरुआपहीआपकौंराषैं ॥ जवसबवस्तुत्वदैमैंनाषैं ॥ ५५ ॥ जवहीहरिकोसरनहींआवैं ॥ तबहींआपहींअपुछोडावैं ॥ वेप्रभूनिजानंदमयदेवा ॥ कहांकरैंकोतिनकी सेवा ॥ ५६ ॥ परिसबजगतकालछिटकावैं ॥ हरिकीसरनआपुसुषपावैं ॥ तातैंऔरसकलकौंत जौं ॥ प्रेमभावहरिचर्णनिभजौं ॥ ५७ ॥ याविधिआपुहींआपउधारौं ॥ आपनहींभवसागरडारौं ॥ ॥ अवधूतउवाच ॥ ॥ यौंपिंगलापरमगतिपाई ॥ दुहूंलोककीआसामिटाई ॥ ५८ ॥ सीतल व्हैंसेजामैंगई ॥ परमानंदाहिप्रापतभई ॥ यहशिष्यामैंयातेंलीनी ॥ भलीजानीउरस्थिरकीनि ॥ ५९ ॥ ज्यौंलगीआसकरैंनरकोई ॥ त्यौंलगिसुषीकदेनहींहोई ॥ जबहींसकलआसाछिटकावैं ॥ तबततकाल परमपदपावैं ॥ ६० ॥ ॥ गुरूसतरमो ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहगुरूसत्रहकीकही ॥ शिष्यामैंसमुझाई ॥ अबऔरनकीकहतहैं ॥ सुनियौहितचितलाई ॥ ६१ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेम हापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानउद्धवसंवादअवधूतेतिहासोपाख्यानेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीधरनवमेंध्यायमैंशिक्षाकहींअनूप ॥ गुणचौवीसौंसुनतहींभयोकृतारथभूप ॥ १ ॥ ॥ अवधूतउवा च ॥ चौपाई ॥ ॥ जोजोहितकरिसंग्रहकरैं ॥ सोईसोअतिदुषविस्तरैं ॥ जवहिहितसंग्रहछिटकावैं ॥ तनअपारसुपसागरपावैं ॥ १ ॥ कुररपंपीकहूंआमिषपायौ॥सोलेउड्यौबहुताहितलायौ॥ तबबहूतेंकुर

रनिदुपदयौ ॥ आमिषतज्यौंसुषीतनभयौ ॥ २ ॥ यहमेंशिष्याकुररतेंपाई॥तातेंसंग्रहकरौनकाई ॥ ॥
गुरुअठारमो ॥ १८ ॥ ॥ बहुरिशिष्यबालकतेंपाई ॥ मेरेउरजातेंमतिआई ॥ ३ ॥ नमेमानअ
पमानहींजांनौ ॥ चिंताकछूचिंतनहींआनौ ॥ निशदिनरहोआतमारामा ॥ कबहूंकछूनउपजेंकामा ॥
४ ॥ याभवमांहिद्वैकौंसुषहैं ॥ औरसकलजीवनिकौंदुषहैं ॥ उद्यमरहितबालकमतिहीनां ॥ अरुजोगु
एातीतपदलीना ॥ ५ ॥ ॥ गुरुउगणीसमो ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकविप्रकेहुतिकुमारी ॥
ताविवाहकीविप्रविचारी ॥ ताकेमातपिताएकवारा ॥ औरगांमकीहूंकांमासिधारा ॥ ६ ॥ समाचारए
कविप्रनिपाई ॥ व्याहकाजतिनकेंघरआएं ॥ कन्यावचनाकिसासौंभाषें ॥ तिनतेंद्विजआदरकरिराषें ॥
७ ॥ तबतिनकेंभोजनकीधारी ॥ चावरषोटनलगीकुमारी ॥ तबताकेकरज्यौंज्यौंदोलें ॥ त्यौंहींत्यौंकर
कंकनबोलें ॥ ८ ॥ तिनलजितव्हैसकलउतारें ॥ द्वैद्वैदहुंहाथनिमेंधारें ॥ बहुरिलगिजबचावरछरनें ॥
तोहूलगिशब्दतेंकरनें ॥ ९ ॥ तबतिनएकएकहीराष्यौं ॥ चुपकरिरहेंबहुरिनहींभाष्यो ॥ मेंविचरतहों
इछाचारी ॥ तातेंदेषित्हृदयमेंधारी ॥ १० ॥ बहुतनिसंगबढैबकवादा ॥ दूजेंहूतेंहोईअनुवादा ॥ तातें
रहेंअकेलाजोगी ॥ सदाविचारब्रह्मरसभोगी ॥ ११ ॥ ॥ गुरुवीसमो ॥ २० ॥ चौपाई ॥ आस
नप्रांनदेहमनबंधें ॥ दृढवैरागत्हृदेमेंसंधे ॥ निहचलव्हेंनितब्रह्मविचारें ॥ यौंक्रमक्रमरजतमकौंजारें॥१२
॥ त्यौंत्यौंनिहचलव्हैसमाधी ॥ तजतेजावेसकलउपाधी ॥ तबज्योंपावकईंधनहींना ॥ त्यौंहोवेंनिजपदमें

लीना ॥ १३ ॥ तवकबहूंकछूदैतनजानै ॥ सिलासमानदेहगुएभानें ॥ ज्योंआगेव्हैनृपतिगयौ ॥ सेना शब्दबहुतविधिभयौ ॥ १४ ॥ परिसरकरभेदनहींपायौ ॥ याविधिसरमैंचित्तलगायौ ॥ एशिष्यलईमें यातें ॥ निहचलबुद्धिभईममतातैं ॥ १५ ॥ ॥ गुरुएकवीसमो ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्यो लोकनितेंडरैभुजंगा ॥ बसैंगुहामेंरहेअसंगा ॥ सावधांनअतिथोरोबोले ॥ गत्यादिकअंतरनहींखोलैं ॥ १६ ॥ यहआरंभदुषकौमूला ॥ तेआरंभेजेनरभूला॥सरपपराएग्रहमेंरहें॥ याविधिमुनीअहीशिष्यागहें ॥ १७ ॥ ॥ गुरुबावीसमो ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकेआपनिरंजनदेवा ॥ जाकौंकोइलहैनहीं भेवा ॥ आपहींतेंमायाविस्तारें ॥ सतरजतमबहुभेदपसारें ॥ १८ ॥ बहुरिंआपहींसबसंग्रहैं ॥ निजानंदमयएकैरहें ॥ तातेंएसबमिथ्याजांनौ ॥ याकौंकरतासोंसतमांनौ ॥ १९ ॥ यहशिष्यामकरितेंलेवें ॥ सबतेंदरैंब्रह्मकौंसेवें ॥ ॥ गुरुत्रेवीसमो ॥ २३ ॥ ॥ जहांजहांयहमनकौंधारैं ॥ निसवासरकबहुं नहींटारै ॥ २० ॥ रागद्वेषभयैक्योंहिहोई ॥ होतरूपतांहींकोसोई ॥ भृंगिकीटहुंतयहलीनों ॥ तोमनहरिचरणैंथिरकीनों ॥ २१ ॥ ॥ गुरुचोवीसमो ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यहचोवीसगुरुनकोशिष्या ॥ तोंसोंमेंभाषिदृढदिष्या ॥ अबतनतेंसीष्योंसोंकहों ॥ तेरेंसबअज्ञानहींदहों ॥ २२ ॥ मेरीदेहमोहीसमझावें ॥ दृढयज्ञानवैरागउपावें ॥ ज्यौंबालापनगयोविलाई ॥ त्योंअबयहजोबनबीजाई ॥ २३ ॥ आवेजरामरणतेआगैं ॥ बहुविधिदुषदेकौंलागैं ॥ स्वानसृगालनिकौंयहभक्षा

तिनसौंप्रीतनजोरेदक्षा ॥ २४ ॥ पुत्रकलत्रअर्थपशुगेहा ॥ कुलकुटुंबअवअरुसेवकजेहा॥ तिनसौंमि
लिजादेहाहिसेवैं ॥ सोईअंतमहादुषदेवैं ॥ २५ ॥ आगेकुबहूंकर्मकमावैं ॥ अबजमकेदरबारपठावे
॥ रसनिमितषैंचेनितरसना ॥ प्राणसदाचाएजलअसना॥२६ ॥ नेनरूपअरुशब्दहिंश्रवनां ॥ इंद्रियचा
हैनारिकौंवरना ॥ त्वचारूपरसनासिकागंधा ॥ चरनगवनकरकारिहैंधंधा ॥ २७ ॥ याविधिसबमिलि
लूटेताकौं ॥ बंध्यौदेहसौदेषेजाकौ ॥ तातैंनेहदेहकौंतजिये ॥ सदानिरंतरहरिकौंभजिये ॥ २८ ॥ हरि
जबमायागुणविस्तारे ॥ तबनानाविधिदेहसंवारैं ॥ तिनतिनमनसंतुष्टनभयौ ॥ बहूर्यौमानवतननिरमयौ ॥
२९ ॥ ताकौंदेषिपरमसुषपायौं ॥ तामैंअपनोधामबनायो ॥ तबहूंरिजीवोलेयहबानी ॥ जोप्रगटयहबेद
बखानी ॥ ३० ॥ मोहीलहैसोयाकरिलहै॥ याकरिसबभवबंधनदहैं ॥ जबमेरेहितकरेंउपायी ॥ तबमें
याकोंकरींसहाई ॥ ३१ ॥ तातैंयहअतिदुर्लभदेहा ॥ श्रीभगवानरच्यौंनिजगेहा ॥ अतिदुर्लभाकिहूंजत
ननपावे ॥ जोपावतोथिरनरहावें ॥ ३२ ॥ प्रतिदिनमृत्युनिरंतरग्रासें ॥ एकदिनांततकालबिनासें ॥ ज
रारोगभयसोकनिधाना ॥ जामेंपलकसुषनहिप्राना ॥ ३३ ॥ तातैंताहीपाईकारिराजा ॥ करिलीजीमें
आपनौंकाजा ॥ जातैंयहछूटेसंसारा ॥ जाकेदुषकौंवारनपारा ॥ ३४ ॥ निशदिनदेवनिरंजनभजियें ॥
व्हैभयभीतविषैसबतजियैं ॥ विषयषानपानसुतदारा ॥ एसबदेहनिवारंवारा ॥ ३५ ॥ तातैंत्यागसकल
कौंकीजे ॥ हरिकेचरणकमलचितदीजैं ॥ याविधिईनतौंशिष्यापाई ॥ तबमैंऔरसकलछिटकाई ॥

॥ ३६ ॥ भूवमेविचरौंव्हैनिहसंगा ॥ यातनहूकौंछांड्यौसंगा ॥ सदारहौंहरिचर्णानिवासा ॥ बहुविधिदे
र्प्योंसकलतमासा ॥ ३७ ॥ बहुतगुरुनितैपूरणज्ञाना ॥ जहांतहांलैवैसाधुसुजाना ॥ छूटैअहंकारअरु
ममता ॥ त्हृदयआनिविराजेसमता ॥ ३८ ॥ निरगुनसगुनभेदपहिंचानै ॥ सारअसारअस्थिरास्थिर
जानैं ॥ जहांतहांलैलेदृष्टांता ॥ संसेंद्वैतमिटावेसांता ॥ ३९ ॥ परिएपरमारथगुरुनाहीं ॥ एसबगुरुहैसत
गुरुमाही ॥ सतगुरुतैंसबज्ञानहिंपावें ॥ तबसबजगअग्यानमिटावैं ॥ ४० ॥ तातैंमेरेसदाआनंदा ॥ त्हृ
दयविराजैपरमानंदा ॥ याविधिजेजेहरिकौंसेवें ॥ तिनकौहरिचर्णानिजदेवें ॥ ४१ ॥ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसैंजदुकौंबचनसुनाये ॥ मनकेभ्रमसंदेहगमाये ॥ राजाबहुविधिपूजाकी
नी ॥ करिप्रणामविनतीकीनी ॥ ४२ ॥ तबराजाकौंकरिसनमाना ॥ दत्तात्रयमुनिकीयोपयानां ॥ राजा
वचनधारीउरमांहीं ॥ सबकौंसगतज्योंखिनमाही ॥४३ ॥ ब्रह्मदृष्ठिसबहीमेंआंनी ॥ ऐसोभयोपरमवि
ज्ञानी ॥ सोराजाजदुवडोहमारौ ॥ जिनअपनौंभवसंकटटारौ ॥ ४४ ॥ तातैंउद्धवऔरनकोई ॥ गुरु
आपुनोआपुंहिहोई ॥ आपुहिबूडैंआपुहितरैं ॥ आपुहिजमेआपुहिमरैं ॥ ४५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
यहभाष्यौविज्ञानमय ॥ सबअद्वैतउपाई ॥ अबतोसौंसाधनकहौं ॥ बहुतभांतिसमुझाई ॥ ४६ ॥॥
इतिश्रीभागवेतमहापुराणेएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेनवमोऽध्याय ॥ ९ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ हो
तदेहसंबंधतैं ॥ याकौंसंसृतिकाल ॥ अधिरदशमेंध्यायमैं ॥ बरणतकृष्णकृपाल ॥ १ ॥ ॥ श्रीभ

गवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनउद्धवअबसाधनकहौं ॥ तेरोसबसंदेहहीदहौं ॥ जातेंउपजतब्र
ह्मगिनाना ॥ छूटैऔरसकलभ्रमनाना ॥ १ ॥ ममभक्तनिजमारगभाषें ॥ तेसबत्दृदयबोठिमेंआपें ॥
तेकहीयेंआतमकेधर्मा ॥ औरसबेंबंधनकेकर्मा ॥ २ ॥ तिनाकौंसावधानव्हेंजानें ॥ वर्णाश्रमकुलमें
थ्यामानें ॥ जैजैबहूआरंभनिकरैं ॥ सुषचाहैंनिसदिनदुषभरैं ॥ ३ ॥ आगेंकौंबंधनउपजावैं ॥ तिनकेसं
गजमद्वारेंआवैं ॥ योंविचारीसबआरंभतजैं ॥ व्हैनिहकामचर्णममभजैं ॥ ४ ॥ जहांलगेहैंनानाबूधी ॥
सोउद्धवसबजानकुबुद्धी ॥ द्वैतभावसौंभ्रमकारिजानौं ॥ सुपनमनोरथभ्रमकारिमानौं ॥ ५ ॥ तातेंऔरक
र्मसबतजो ॥ नितनैमित्तिककछुएकजो ॥ तेउकछूसत्यनहींजानैं ॥ करेंतोकरैंनहींतोभानैं ॥ ६ ॥ भ
क्तिमाहींज्योअंतरपरैं ॥ तेतोभूलिनकबहूंकरैं ॥ जोजासमयनअंतरजानैं ॥ तोतासमयसहजमेंठानैं ॥
७ ॥ यमनिमांहींनिहचलचितधरैं ॥ नियमनिकौंभावेंतोकरैं ॥ ब्रह्मविज्ञगुरूसरनहींजावैं ॥ तातेंभेदस
कलकौंपवें ॥ ८ ॥ यमअरुनियमकछुनाहीसेवें ॥ सदगुरूकहेंशिष्यसोलेवें ॥ मानरहितमच्छरनहीजा
नैं ॥ तनमनअरापिप्रीतिकौठानैं ॥ ९ ॥ जहांतहांतेंममतापरिहरैं ॥ सावधानआलसनहिकरें ॥ तजे
असूयावृथानबोलें ॥ तनमननिहचलकदैंनडोलैं ॥ १० ॥ श्रद्धासहितआसक्तीहोई ॥ गुरूचर्णनिशि
ष्यसेवेसोई ॥ दारासुतावितगेहकुटुंबा ॥ सकलभूतआतमापितुअंबा ॥ ११ ॥ तिनसबहीनकौंसमकरि
देषे ॥ मेमेराकारिकदैंनलेषैं ॥ रहेंउदासआसापरिहरैं ॥ निसिदिनब्रह्मविचाराहिकरैं ॥ १२ ॥ सूक्ष्म

स्थूलदेहद्वैजैंहैं ॥ ममंरूपमायाकेतेहैं ॥ इनिदूनैतैंआतमदूर ॥ स्वप्रकाशचैतनभरपूर ॥ १३ ॥ स्थूल
शरीरप्रगटजडएहा ॥ चैतनकरैताहीवहदेहा ॥ सोवहतनजडहैअंगा ॥ चैतनहोईआतमासंगा ॥ १४
सोआत्मादुहूतैंन्यारा ॥ दहुंप्रकासकदहुंआधारा ॥ ज्यौंएककाष्टअनलपारिजरैं ॥ सोदूजेप्रकासतकरैं
॥ १५ ॥ परीसोअनलदुहूतैंन्यारा ॥ स्वप्रकाशआतमआधारा ॥ बहुधासोबहुकाठनिसंगा ॥ पावैउ
तपातिस्थितिअरुभंगा ॥ १६ ॥ त्यौंद्वैतनहरिमायाकीयै ॥ तेआतमाआपुकरिलीयै ॥ तिनसंगजन्मम
रणदुपावैं ॥ लहैंआनंदजबाहिछिटकावैं ॥ १७ ॥ तातैंबहूविधिकरैंविचारा ॥ आतमजानैंसबतैंन्या
रा ॥ एकअजन्माअरुअविनासी ॥ चैतनघनपूरणसुषराशी ॥ १८ ॥ तनउपजैबिनसैंबरतांही ॥
परमअसूधशुधनकांहीं ॥ सकलविकारनिकौंसंघाता ॥ प्रगटदिसैंआवतजाता ॥ १९ ॥ मोसोंयासौं
केसोसंगा ॥ मेचेतनयहजडबहुरंगा ॥ यौंविचारित्यागेंतनममता ॥ आतमद्दष्टिसकलमेंसमता ॥ २०
याविधिह्रदयहोइथिरज्ञाना ॥ मिलैब्रह्मछूटैंसबनाना ॥ प्रथमअरणीआस्थिरगुरुदेवा ॥ दूजीशिप्यकरै
तिनसेवा ॥ २१ ॥ गुरुकेबचनश्रवनमंथाना ॥ याविधिउपजैंपावकज्ञाना ॥ उपजैंज्ञानतमकेगुनदहैं ॥
कर्मबीजकोईनहींरहै ॥ २२ ॥ तबज्यौंपावकतेजसमावैं ॥ इंधनविनानपलकरहावै ॥ त्यौंआतमांब्रह्ममय
होई ॥ इंधनकर्मभस्मकरीसोई ॥ २३ ॥ अरुजेमूढनयहाविधिजानैं ॥ तेबहुविधिकर्मनिकौंठानैं ॥ तैं
कर्मनिकैंफलनिभोगावैं ॥ जन्ममरणकौअंतनआवैं ॥ २४ ॥ जहांजहाजायेतहांतहांकाला ॥ निशिदिन

रहैंसदांबिहाला ॥ यहजगदीसैंयौंकैंयौंहिं ॥ परिएकोपलरहेनयौंही ॥ २५ ॥ औरैंऔरहोइअकारा ॥ तिनसंगातिमनबहूतप्रकारा ॥ कबहूंज्ञानत्दहदैनाहिंआवें ॥ जन्मजन्ममरिमारिदुषपावें ॥ २६ ॥ कर्मनि जोकर्मनिआचरैं ॥ सुषआरुजोदुषभोगनिकरैं ॥ एचारौदीसेपरितंत्रा ॥ तातैंसबताजियैंयहामित्रा ॥ २७ ॥ जेपंडितश्रुतिस्मृतिजानैं ॥ तत्वलहैंविनुकर्मनेठावें ॥ तेमूरषदेहाअभिमानी ॥ आपुहिआपकाहा वतज्ञानी ॥ २८ ॥ हरिजनसंगनकबहूकरैं ॥ तत्वनसुनैंकर्मविस्तरैं ॥ तिनतैंभलेजेकच्छूनहिंजांनैं ॥ तत्ववचनसुनित्दहदयैंआनैं ॥ २९ ॥ जद्यपिअंतसुपनिकौंजांनैं ॥ अरुक्षणभंगुरदेहनिमानैं ॥ परिसोतत्वनसमझेतेऊ ॥ जातैंलहैंभक्तिकोभेऊ ॥ ३० ॥ कालमृत्युजाकौंनितग्रासैं ॥ ताकौंकहोकहांसुखवासैं ॥ ज्यौंकोइमारनकौंलीजैं ॥ सूलीनिकटषरोलेकीजैं ॥ ३१ ॥ अरुताकौंजोभोगभोगावें ॥ सोकिधौंकहौंकेसोसुषपावें ॥ अरुयौंहीनस्वरपरलोका ॥ मदमत्सरनिंद्याभयशोका ॥ ३२ ॥ तिनकेहेतजतनबहूकरैं ॥ सिद्धनहोइविघनआतेपरैं ॥ ज्यौंषेतिमेंविघनअनेका ॥ त्यौंस्वर्गादिकलहैंकोएका ॥ ३३ ॥ अरुजोलह्यौंतोथिरनाहीं ॥ देषतबिनसीजाइपलमांही ॥ ईहांयज्ञकरैंबहुकोई ॥ अरुजांअंतराइनहिंहोई ॥ ३४ ॥ तबसोस्वर्गलोककौंजावें ॥ ह्वैकरिंदेवदेवसुषपावें ॥ अपनेंपुण्यनिकौंउपजायौं ॥ उतमजाहींविमानहीपायौं ॥ ३५ ॥ बहुगांधर्वगानकौंकरैं ॥ बहुसुंदरनारिमनहरैं ॥ इच्छाहोवेंतहांचालिजावें ॥ सहितविमानाविलंबनलावें॥ ३६ ॥ अमृतपानातिहानितकरैं ॥ वस्त्रआभर्णदेहबहूधरैं ॥ योनितमगन

वहुतसुनगावें ॥ परवेकीकछुचितनआवें ॥ ३७ ॥ जेतोंपुंजईहाकोहोई ॥ तेतोरहेस्वर्गमेंसोई ॥ पुन्य
क्षिणपुनिहोवेजवहीं ॥ कालतहांतेढाहेतबहीं ॥ ३८ ॥ सोसुषकहोतज्यौंवयौंजावें ॥ तेसुषकीकच्छुकह
तनआवें ॥ रह्यौचाहेंपरिक्यौंकारिरहें ॥ कालअधीनमहादुषलहें ॥ ३९ ॥ कोईसुषपावेंकहूंजेतौं ॥
छिनलियैहोवेंदुषतेतौं ॥ सोतजिस्वर्गभूमिमेंआवें ॥ पीछेंजोनिअनंतानिपावें ॥ ४० ॥ यहुभाषीविधिकी
गतितोसों ॥ अवनिषेधकीसुनियोमोसों ॥ जोकुसंगमेंपानीपरें ॥ तोबहुभांतिअधर्मनिकरें ॥ ४१ ॥
णछेकामइंद्रियआधिना ॥ अस्त्रीलंपटलोभीअरुदीनां ॥ बहुजीवनकीहिंसाकरें ॥भूतप्रेतगणकौंअनुसरें
॥ ४२ ॥ मेहिएकवसोंसबमांहीं ॥ तिनकेद्रोहनकरमेंजांहीं ॥ बहूरिआनिथावरतनलहैं ॥ जन्मजन्म
वहुसंकटसहें ॥ ४३ ॥ तातेंविधिनिषेधजेकरें ॥ तेसवजन्ममरनमेंपरें ॥ कर्मकरेंतिनतेतनधरें ॥ तनध
रिधरिवहुदुषसोंमरें ॥ ४४ ॥ तातेंप्रवृत्तिमेंसुखनाहीं ॥ भावेंब्रह्मलोकाकिनजांहीं ॥ लोकपालसबलोक
समेता ॥ इतनौरहेंब्रह्मादिनजेता ॥ ४५ सोईब्रह्माअंतनरहें ॥ तीतरबाजकालत्योंगहें ॥ अमरहेंमेरेंभ
यमांहीं ॥ पवनवहेंनिहचलपलनाहीं ॥ ४६ ॥ सूर्यचंद्रएकरसचलें ॥ मरजादातेसिंधुनटलें ॥ मृत्युनि
रंतरसबकौंग्रासै ॥ मेरेंकालरूपतेंत्रासें ॥ ४७ ॥ तातेंकहूंनसुषप्रवृत्ती ॥ सुषचाहेंसोगहेंनिवृत्ति ॥ अ
रुइंद्रियकर्मजपावें ॥ तिनकौंरजसततमवरतावें ॥ ४८ ॥ सोआतमाइंद्रियवसहोई ॥ तातेंसुषदुपपावें
सोई ॥ परिआतमाअकरताजानौं ॥ भोगरहीततांहींतेंमानौं ॥ ४९ ॥ कर्मअरुभोगादिकहेंजेतें ॥ इंद्रि

यअरुगुणकृतसबतेंतें।।ज्यौंलगीयहइंद्रियगुणबंधा।।त्यौंलगिमिटेनगुणसंमंधा ।। ५० ।। तनमनबंधमिटेंनहीं
ज्यौंल्यौं।।नानाभांतिबहुताविधितोलौं।।नानाभावरहैंजबलगैं।।पराधीनआतमातबलगैं।।५१।।पराधीनजबलगी
यहरहैं ।। तबलगीकालनिरंतरगहैं।।तातेंज्योप्रवृत्तिरतहोवैं।।जुगजुगजन्मजन्मांतरोवैं ।। ५२ ।। प्रथमहूंतो
मेंएकनिरंजन ।। ताहीतेंउपज्योंयहअंजन ।। कालआत्मालोकअरुवेद ।। धर्मसुभावबहुतविधिभेद ।।
५३ ।। एसबमायासत्यनकोई ।। तातेंबुधअनुरक्तनहोई ।। एकनिरंजनआत्माजानें ।। तबसबसंकट
भवकैभानें ५४ ।। लोकअरुवेदवासनातजैं ।। इंद्रियदेहविषैंनहींभजैं ।। मनपहुंचेसोमिथ्यालेषे ।। मनाती
तसोजहांतहांदेषे ।। ५५ ।। ब्रह्मअरुआतमाएकाविचारैं ।। याविधिसकलउपाधहीजारैं ।। तबहीएकब्र
ह्मकौंपावैं ।। छूटेंद्वैतबहुरोनहीआवैं ।। ५६ ।।यहआतमाअरुदेहविवेका ।। याकौंजानीयेंएककौंएका ।।
एसेंबचनकहैंजबकृष्ण ।। उद्धवदासकरितबप्रष्ण ।। ५७ ।। ।। उद्धवउवाच ।। ।। चौपाई ।।
हेप्रभुजोयहसारौभर्मा ।। इंद्रियदेहविषेगुणकर्मा ।। अरुआतमाअनिहअबंधा ।। ताकौंकियौंकोनाविधिबं
धा ।। ५८ ।। अरुजोबहुग्ज्ञानकौंलहैं ।। छोडिउपाधिदेहमेरहैं ।। सोबहुन्योंक्यौंलिप्तनहोई ।। अरु
क्यौंकारिजानीजैंसोई ५९ ।। कैसेंबिचरैंकैसेंरहैं ।। कैसेजीवेकैसेंकहें ।। कैसेंपहरेकैसेंसोवें ।। कैसेंसुनै
कोनाविधिजोवैं ।। ६० ।। अरुआतमएकैदूनाहीं ।। एकमुक्तक्यौंएकबंधाहीं ।। एकेबंधेंएकक्यौंमुक्ता
एतोबहूतएककौंउक्ता ।। ६१ ।। गुणअनादिआत्माअनादि ।। तातेंयहतोबंधनआदि ।। नित्यमुक्त

क्योंकहीयेंदेवा ॥ याकौमोहीबतावोभेवा ॥ ६२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवनिजभक्तिकैंसुनिकारि निर्मलबैन ॥ ताकौंप्रतिउत्तरकह्योंहारेजीकरुणाअयन ॥ ६३ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानउद्धवसंवादेभाषाटीकायांदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ बंधमोक्षहारेभक्तिभक्तइनकेलक्षणसार ॥कहेग्यारमैंध्यायमेंश्रीधरनंदकुमार ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ चौपाई ॥

॥ सुनिउद्धवअबपरमगोयाना ॥ जातेंभेदामिटेतुमनाना॥बंधअरुमुक्ततोहिसमझाऊं॥ तेरोसबअज्ञान मिटाऊं ॥ १ ॥ बंधमुक्तजौंकहियेंकोई ॥ सोतोसकलगुणनितेंहोई ॥ तेसबगुणमायाकेजानौ ॥ इनतें दूरिआतमामानौ ॥ २ ॥ सोकअरुमोहजन्मरुसुष ॥ भयमरनादिकअरुबहुदुष ॥ एसारेमायाकृतकेवल॥सदाएकआत्मानिहकेवल ॥३॥ ज्यौंसपनैसुषदुषअनेका॥ तिनमैंआतमकौंनहीएका ॥ तेसबबुधिअरुमनकौंहोवें ॥ इंद्रियदेहप्रगटतेंसोवें ॥४ ॥पुनिबुध्यादिककच्छुनहिरहें॥ताकौंप्रगटसुशोपतिकहें ॥ तवयहआतमानिरंतरहोई ॥ परिताकौंसुषदुषनहींकोई ॥ ५ ॥ ज्यौंसुपपतिमेंआतमरहैं ॥ त्यौंव्यवहारपीछलैंगहैं ॥ परिताकौंकोईनविकारा ॥ एसबमायाकैंव्यवहारा ॥ ६ ॥ परिआतमाआपनहिमानैं तातेंसुषदुषबहुविधिजानैं ॥ परिआतमाएकरसानित्य ॥ बंधमोक्षएसकलअनित्य ॥ ७ ॥ उद्धवजानौएकअविद्या ॥ अरुदूजीजोकहीएविद्या ॥ एहेंदोऊमेरीशक्ती ॥ इनमेंसबहिंनकीयाशक्ती ॥ ८ ॥ बंधनकयोंचाहींमैंयाकौं ॥ मेरिअविद्यापठाऊंताकौं ॥ अरुजाकेंबंधनहीमिटाऊं ॥ ताकौंविद्याशक्तिप

टाऊं ॥ ९ ॥ एदोऊमुक्तअरुबंधा ॥ तेममशक्तनुंकैंसंबंधा ॥ आतमहैंसोमेरोरूप॥ सबतैंन्यारौपरम
अनूप ॥ १० ॥ ज्यौंशशिकैंप्रतिबिंबअनेका ॥ परितेबहुतनहिंसबएका ॥ अरूजाजाकोघटबिनसाई
॥ सोईसोसाशिमाहिंसमाई ॥ ११ ॥ यौंसबआतममेरोअंसा ॥ परिघटसंगलहैंदुषसंसा ॥ घटकौंना
सकरैंसोतबहीं ॥ विद्याशक्तिजांहिंयोजबहीं ॥ १२ ॥ सोईसोतबसोकौंलहैं ॥ औरसकलभवहिमेरे
हैं ॥ अरूप्रतिबिंबघटनिहुंमांही ॥ सदाअलिप्तलिप्तकहुंनाहीं ॥ १३ ॥ परिघटसंगलिप्तसैंहोवैं ॥ अरू
यौंलिप्तओरऊंजोवैं ॥ यौंआतमासकलतैंन्यारा ॥ सदाअलिप्तनलिपैंविकारा ॥ १४ ॥ परियातनमें
आपबंधाना ॥ ताकैंसंगलेहैंदुषनाना ॥ अबमैंबंधमुक्तकोकहुं ॥ तेरेंसबसंदेहहोदहुं ॥ १५ ॥ एकदेह
मेंद्वैकोवासा ॥ परमात्माअत्मकैंपासा ॥ ज्यौंद्विपंषीरहैंतरूमांहीं ॥ तरूतैंभिन्नलिप्तकहुंनाहीं ॥ १६ ॥ दो
ऊचैतनएकसमाना ॥ सषारूपएकहिअस्थांनां ॥ आपहुतैंतिनबासाकीयो ॥ तिनमैंएकतरूहिंचितदीयो
॥ १७ ॥ देहवृक्षकैंसुषफलपावैं ॥ तातैंदुषआपुहिंआवैं ॥ तबताकाजकर्मबहुकरैं ॥ तिनतैंजुगजुगजनम
मेंमरैं ॥ १८ ॥ देहमरैंमरनौंकरिजानैं ॥ देहजन्मतैंजन्माहिमानैं ॥ एसैंसदाबहुतदुषपावैं ॥ द्वैमैंसोअत
मांकहावैं ॥ १९ ॥ परमातमादेहतरूमाही सुषफलकबहुंपावैनाहीं ॥ तातैंकछुकर्मनहिमहैं ॥ निजानंद
मयानिहचलरहैं २० ॥ यौपरमातमआतमजानैं ॥ देहअतीतदुहूंकोंमानैं ॥ सुषफलअहारआरंभानितजैं
॥ मुक्तिहोइपरमात्माबजैं॥२१॥ज्यौंतनमांहिमुक्तिपरमात्मा॥विद्यापाईबसैंत्यौंआत्मा॥ तनमैंहैंपरितनमैंना

हीं ॥ अपुंहिजानभयोथिरमांहीं ॥ २२ ॥ सुपनदेषिज्योंजागेकोई ॥ सोसोसुमनचितारैसोई ॥ परि
सोसुपनदेहअरुसुपनां ॥ मिथ्याजानिभरमतेंउपनां ॥ २३ ॥ अरुजोसहितअविद्याहोई ॥ सोतिनमें
नाहिंपरिहैंसोई ॥ ज्योंसोवतसुपनांतपावें ॥ ताकौंआपजानिमनलावैं ॥ २४ ॥ तनमेंबंधमुक्तजेजीवा ॥
बंधजीवमुक्तसोशिवा ॥ बहुरिकहौंमुक्तिकेलक्षन ॥ जिनकौंजानिहोइविचक्षन ॥ २५ ॥ देषेसुनेकहें
कच्छुकरें ॥ सोकछुकरत्वदैनहिधरें ॥ सकलअर्थइंद्रियकृतजानें ॥ आपुहिएकरतासबमानें ॥ २६ ॥
पूर्वकर्मआधीनशरीरा ॥ कर्मकरेंइंद्रियमनसीरा ॥ तनमेंवासकीयोनहिजानें ॥ सुरपआपुहिकरतामानै
॥ २७ ॥ बहुरिमुक्तएसीविधिरहें ॥ अहंकारयातनकोदहें ॥ आसनअटनअसनअरुसघना ॥ दर
सपरसअघ्रानरुवयनां ॥ २८ ॥ इनमेंइंद्रियकौवरतावें ॥ आपनकछुप्रीतिबहुलगावें ॥ रहैंमाहिपरिलि
तनहोई ॥ ज्योंआकाशपवनराविंतोई ॥ २९ ॥ विद्यानामप्रसीइकपाई ॥ दृढवैरागरसःनचदाई ॥ तासौं
काटेंसंसैसारें ॥ जागिसकलभ्रमभेदनिवारें ॥ ३० ॥ इंद्रियप्रानबुद्धिमनमांहीं ॥ कबहूंकछुवासनानाहीं
॥ सोजद्यपितनहूमेंदरसें ॥ परिसोमुक्तनहीनहींपरसें ॥ ३१ ॥ एकदुष्टतनपीडाकरें ॥ एकबहुतपूजा
विस्तरें ॥ परिबुधरोपतोपनहिंआनें ॥ सकलदेहकृतामिथ्यामानें ॥ ३२ ॥ विधिनिषेधजोकाईकरैं ॥
किंवाकहेंग्रंथविस्तरें ॥ सुनिकछुभलोबुरोनाहिदेपें ॥ गुनअरुदोषरहितसमलेषें ॥ ३३ ॥ विधिनिषेधना
हीकछुकरें ॥ नाकछुकहैनत्वदेधरें ॥ निसिदिनरहैंब्रह्मरसमंत ॥ इच्छामेंज्योंजडउनमत ॥ ३४ ॥

ऐसेचिन्हमुक्तिमैंमानों ॥ अरुमुमुक्षकौसाधनजानौ ॥ मुक्तभयेजेंचाहैंकोई ॥ एसचसावधानसाधेसोई
॥ ३५ ॥ निजसबशब्दब्रह्महेंजान्यौं ॥ पररिनिजतत्वनहींपहचांन्यों ॥ ईनसाधनमांहिरतनाहीं ॥ तिनके
श्रमसबमिथ्याजाहीं ॥ ३६ ॥ शब्दब्रह्मब्रह्मकेकाजा ॥ हरिजीअरुहरिभक्तनिसाजा ॥ तातैब्रह्मविनाश्र
मऐसें ॥ वंध्यागाईसेंईजेजैसें ॥ ३७ ॥ बंध्यागाईदुग्धबिनहोई ॥ पराधीनतनराषेकोई ॥ असतनारी
पुत्रअन्याई ॥ धर्मबिहूनोंधनअधिकाई ॥ ३८ ॥ ज्योंइनतेंदिनदिनदुषहोई ॥ कबहूंसुषपावैंनहींकोई ॥
मोहिविनात्योंबहुविधिजानी ॥ केवलबंधनहींकोंजानी ॥ ३९ ॥ मोतेंजगतउतपतिसिंघारा ॥ सबप्रतिपाल
नविविधप्रकारा ॥ किंवाजन्मकर्ममैंबहुतेरें ॥ जावानीमैंनाहींमेरें ॥ ४० ॥ मेरेनानाविधिसंबंधा ॥ जावानी
मैंनाहींबंधा॥ बंध्याबानीताहींविचारैं ॥ निहफलजांनिनगंडितधारैं ॥ ४१ ॥ याविधिजानिबहुतप्रकारा ॥
बहुतभांतिकरिबहुतविचारा ॥ जांहांतांहातैंमनाहिनिवारैं ॥ पूरणएकब्रह्ममेंधारें ॥ ४२ ॥ जोतज्ञद्विजेना
नाअर्थ ॥ मनधारणकौंनहींसमर्थ ॥ सोममहेतकर्मसबकरैं ॥ प्रेममगनफलजसपरिहरैं ॥ ४३ ॥ औ
रेकर्मअकर्मविकर्मा ॥ बंधनजानितसैंसबभर्मा ॥ जाहिंतैंउपजैंममभाक्ति ॥ तांहिमेंराषेंअनुरक्ति ॥४४
॥ श्रद्धासहितसनेगुनमेरें ॥ जिनतेंकर्मनआवेंनेरें ॥ गावैसमरैंअस्तुतिकरैं ॥ प्रेमसहितनिशदिनविस्तरैं
॥ ४५ ॥ जेकछुकर्मकामअरुअर्थ ॥ करैसकलतैंमेरेंअर्थ ॥ ममआधीननिरंतररहैं ॥ मनक्रमवचन
आननहींगहैं ॥४६॥ याविधिहोवेनिश्चलभक्ति॥ औरसकलतैंसकलविरक्ती ॥तवमेरोनिजरूपाहेंजानें॥

नामदहीभानैं ॥ ४७ ॥ तबताहीयदमाहींसमावैं ॥ जातैंजन्मफिरिनहींआवैं ॥ परियहसतसंगततैं होई ॥ संतसंगतीविनुलहैनकोई ॥ ४८ ॥ भक्तिनिविनाभक्तिनहींपावैं ॥ भक्तिविनानहींमोमैंआवैं ॥ तातैंसतसंगतकूकरैं ॥ दूजोजतनसकलपरिहरैं ॥ ४९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसुनिहरजीकेवचन ॥ मनमेंबाढीप्यास ॥ तबभक्तनीअरुभक्ति ॥ कैंलछनपूसेदास ॥ ५० ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूपूरणपरमअनंता ॥ याजगबहूभांतीकेसंता ॥ जाकौंसंतकहौतुमदेवा ॥ ताकौंमोहीबतावोभेवा ॥ ५१ ॥ अरुजोभक्तिकौंनजोठानैं ॥ तातैंतुमनिजरूपाहिंजानैं ॥ तबउद्धवकोदेबहूमाना ॥ कृपासिंधुबोलेभगवांनां ॥ ५२ ॥ ॥श्रीभगवानुउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परमकृपालद्रोहनहींजानैं ॥ क्षमावंतअरुसत्यबपांनैं ॥ निंद्याराहितद्वंद्वसवसमता ॥ परउपकारत्हदैनहींममता ॥ ५३ ॥ आएकामबुद्धिथिररहैं ॥ इंद्रियाजितकौमलतांगहैं ॥ सदाचारसंग्रहनहींजानैं ॥ लघुदीरवक्कबहुनाहिंआनैं ॥ ५४ ॥सीतलत्हदैंबिचारहीकरैं ॥ धर्मआपनैंद्दढताधरैं ॥ सावधानअरुराहितविकारा ॥ धीरजवंतदयाआधिकारा ॥ ५५ ॥ सोकमोहअरुक्षुधापिपासा ॥ जरामृत्युजीतैंषटपासा ॥ आपुमानअपमाननजानैं ॥ औरनकौबहुमानाहिठानैं ॥ ५६ ॥ जोकोईसरणांगतआवैं ॥ ताकौंजीत्यौंज्ञानउपावैं ॥ सबकौमित्रशुभाशुभजान ॥ द्दढविश्वाससकलभ्रमभानैं ॥ ५७ ॥ ममआधेनानिरंतरहैं ॥ साधनसौंबलक ... मोहिकौंकरताकारिजानैं ॥ कबहूंभुलनआपुंआनैं ॥ ५८ ॥ जयाणि...

बताए ॥ तोहूंविधिनिषेधसवतजैं ॥ दृढनिश्चलममचर्णनिभजैं ॥ ५९ ॥ एसौभक्तनिजभक्तकहावैं ॥
ताकैंसंगभक्तिकौंपावैं ॥ देसरुकालरहितसर्वात्मा ॥ चिदानंदमयप्रभुपरमात्मा ॥ ६० ॥ एसौंजानिजा
निमोहिभजैं ॥ औरसकलसंकलपहीतजैं ॥ सोमेरोकहियैनिजभक्ता ॥ तासौंनितहूंजौंअनुरक्ता ॥ ६१
॥ अरुजैएसोमोहिनआनैं ॥ परिअत्यंतप्रीतिकौठानैं ॥ लेकरिमोहिसकलपरिहरैं ॥ तेजनमोहिआपवस
करैं ॥ ६२ ॥ एभक्तनकैंलक्षनकाहिये ॥ मेरिकृपाहूंतेंतेलहिए ॥ तिनकौंपाइभक्तिकौंपावैं ॥ भक्तिपा
इममचर्णनिआवैं ६३ ॥ तातैंमोहिचहैंजोकोई ॥ममसंतनकौंसेवेसोई ॥ आबमेंकहौंभक्तिकेअंगा ॥
जातैंहोवैंमेरोसंगा ॥ ६४ ॥ ममप्रतिमामेंमोकोभजै ॥ मनक्रमवचनफलादिकतजैं ॥ हितसौंदर्शपर्शपरि
चर्या ॥ अस्तुतिअरुदंडवतसपर्या ॥ ६५ ॥ मेरीकथाविषैंआतिश्रद्धा ॥ मोविनुकछुनकरैंपलअर्धा ॥
मेरेंजन्मकर्मगुनगावैं ॥ सदानिरंतरमोकोंध्यावै ॥६६॥ तनअरुतनकैंपिछेजेतै॥मोकोंसदांसमरपैंतेतैं ॥
जनमाष्टमीआदिजेपर्वा॥बहूतउछाहकरैंतेसर्वा॥६७॥ नृत्यगीतअरुबहूविधिवाजा ॥ मंदिरबहुतरूपविधिसा
जा॥कथाकीरतनबहूविधिचर्चा॥जागरणादिकबहूविधिअर्चा॥६८॥ एसेज्ञानिबहुतउछाहा॥सबपरवणि
सबविधिनिरवाहा॥मथुरादिकहरिधामनिजावैं॥बहूतभांतिकरिप्रेमबढावैं ॥६९॥ औरनिकौंआचरणासिषा
वैं॥ठौरठौरप्रतिमापधरावैं॥बहुविधिकरैंबागफूलवाई॥क्रीडाथानसहितचतुराई ॥७०॥ पुरमंदिरबहुभांत
करावैं ॥ ज्योंहरिअरुहरिभक्तनिभावैं ॥ आपमांहिजोंशक्तिनहोई॥ताहुउद्यठानेसोई ॥७१॥बहूविधिम

नें ॥ समदरसनयहपूजाठानें ॥ ८४ ॥ ईंनसबठौरनिपूजाकरैं ॥ मेरोरूपत्हृदेमेंधरैं ॥रूपचतुरभुजआ
युधचारी ॥ स्यामसरीरपीतांबरधारी ॥ ८५ ॥ सीसमुकुटसुभकुंडलकरना ॥ कौस्तुभआदिबहुविधि
आभरनां ॥ ऐसोरूपसबानिमेंध्यावें ॥ सावधानव्हैंप्रीतिबढावें ॥ ८६ ॥ याविधिवाईकूपसरबागा ॥
जपतपदानदयाव्रतजागा ॥ मेरेहितकर्मजोकरैं ॥ मोबिनऔरत्हृदैंनहींधरैं ॥ ८७ ॥ इनसाधननि
करैंनरजोई ॥ प्रेमभगतिममपावेंसोई ॥ एसाधनकरैंईनभांती ॥ साधुमिलापहोईदिनराती ॥ ८८ ॥ ति
नतेंऐसीजुगतीपावें ॥ जातेंज्ञानभक्तिउरआवें ॥ तातेंज्ञानभक्तिकौंकारन ॥ एकभक्तभवसागरतारन ॥
८९ ॥ तातेंभक्तनसौंहितलगावें ॥ जिनतेंमेरीभक्तिहिंपावें ॥ तिनकौंबनिजभक्तिकौंनित्या ॥ कबहूंऔ
रनआवेंचैत्या ॥ ९० ॥ मेउनकोमेरोहेंसोई ॥ ऐसोभेदनजानेंकोई ॥ जोकछुकहोंकरोमेंसोई
॥ जद्यपिमेरेंमननहिहोई ॥ ९१ ॥ मोहिमिलनकोएकउपाया ॥ बहुविधिपोजतऔरनपाया ॥
साधुसंग मिलिभक्तिकरहीं ॥ सोईएकजगतजलचरही ॥ ९२ ॥ भक्तनविनाभक्तिनहिपावें ॥ भक्ती
बिनानहींमोमेंआवें ॥ मोबिनऔरजहांजहांजाईं ॥ तहांतहांकालनिरंतरषाईं ॥ ९३ ॥ यहअतिगोप्य
मतोहैमेरो ॥ मेरेआधीनचितहैंतेरो ॥ तातेंयौंयहतोसोकह्यौं ॥ आगेंकछुकहिवेनहींरह्यौं ॥ ९४ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिगोप्यआपनोमतोतोहीकह्यौसमुझाए ॥ जातेंछूटैभक्तभयमोमेंरहेसमाए ॥ ९५ ॥
॥ इतिश्री भागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

हिमाकहेकहावें ॥ औरनिसौंमेलकरेंकरावें ॥ मंदिरादिबहुभांतिबोहारें ॥ बहू वेधिसींचिधूळनिवारे ॥
॥ ७२ ॥ चित्रविचित्रचोकविस्तारें ॥ व्हेकरिदासआपनिस्तारें ॥ मानरहितकदंभनजानें ॥ जोरकछु
करेंसोनहिंबखानें ॥ ७३ ॥ मोकोंकरेंआरतीजासौं ॥ औरकछुनहिंदेषतसौं ॥ ममप्रसादप्रीतिसौंले
वें॥प्रीतिहीनजीवनहिंदेवें॥७४॥योंहिज्योंज्योंउपजेप्रेमां॥त्यौंत्यौंअधिकबढावेंनेमा ॥ममभक्तनिकेरहैआधी
न॥तनमनधनसोंनितलोलीन॥७५॥अरुएकादशठोरनिभद्रा॥ ममपूजाकरैरहैरैंअभद्रा॥सूर्यअग्निविप्रअ
रुगाई ॥ भक्तिवेषआकाशअरुवाई ॥ ७६ ॥ जलअरुधरनीआपमेंत्योंहीं ॥ सबनिमांहिममपूजायोंहीं
॥ विद्यायत्रसूर्यकीपूजा ॥ मोकोंछांडिनजानेंदूजा ॥ ७७ ॥ वरषाराजसकरिउपजावें ॥ सात्विकसीतस
वनिवरतावें ॥ तामसग्रीषमसकलविनासें ॥ सकलजगतकोंआपुप्रकासें ॥ ७८ ॥ तातेंमेरीपरमविभूति ॥
ऐसेंज्ञानीकरेंअस्तुती ॥ पावकमांहींहोमकरीज्यों ॥ विप्रनिअतिथिभावभजीजें ॥ ७९॥ तृणजलादि
गाइकीपूजा ॥ भक्तभेषमेंऔरनदूजा॥भक्तभेषनिजबंधवजानें ॥ अतिप्रसन्नव्हैपूजाठानें ॥ ८० ॥ ज्यों
आपनेंबंधुसंबंधी ॥ तिनसौंप्रीतिसबनिहेबंधी॥ तिनकौंबहुतभांतिकरिसेवें ॥तनमनधननिहचलकरीदेवें ॥
८१ ॥ सोंहिभगतआपनेभाई ॥ ऐसेंज्ञानीकरैंअधिकाई ॥ तनमनधनसोंप्रीतिबढावे ॥ जिनतेंमेरेपदहीं
पावें ॥ ८२ ॥ ह्रदयाकासध्यानसोंसेवें ॥ सबआधारपवनचितदेवें ॥ जलाकोजलअरुफूलफलादि॥
भूधरणीपूजेमंत्रादि ॥ ८३ ॥ भोगनिसूंनिजदेहाहिभजे ॥ मोविचअंतरायसबतजें ॥ सबभूतनमेंमोकोंजा

नें ॥ समदरसनयहपूजाठानें ॥ ८४ ॥ इंनसबठौरनिपूजाकरें ॥ मेरोरूपत्हदेमेंधरें ॥रूपचतुरभुजआ
युधचारी ॥ स्यामसरीरपीतांबरधारी ॥ ८५ ॥ सीसमुकुटसुभकुंडलकरना ॥ कौस्तुभआदिबहुविधि
आभरनां ॥ ऐसोरूपसबानिमेंध्यावें ॥ सावधानव्हेंप्रीतिबढावें ॥ ८६ ॥ याविधिवाइकूपसरबागा ॥
जपतपदानदयाव्रतजागा ॥ मेरेंहतकमंजोकरें ॥ मोबिनऔरत्हदेंनहींधरें ॥ ८७ ॥ इनसाधननि
करेंनरजोई ॥ प्रेमभगतिममपावेंसोई ॥ एसाधनकरेंइंनभांती ॥ साधुमिलापहोईदिनराती ॥८८ ॥ ति
नतेंऐसीजुगतीपावें ॥ जातेंज्ञानभक्तिउरआवें ॥ तातेंज्ञानभक्तिकौंकारन ॥ एकभक्तभवसागरतारन ॥
८९ ॥ तातेंभक्तनसौंहितलगावें ॥ जिनतेंमेरीभक्तिहिंपावें ॥ तिनकौंबनिजभक्तिकौंनित्या ॥ कबहूऔ
रनआवेंचेंत्या ॥ ९० ॥ मेउनकोमेरोहेंसोई ॥ ऐसोभेदनजानेंकोई ॥ जोव छुकहोंकरोंमेंसोई
॥ जद्यपीमेरेंमननहींहोई ॥ ९१ ॥ मोहिमिलनकोएकउपाया ॥ बहुविधिधोजतऔरनपाया ॥
साधुसंगमिलिभक्तिकरहीं ॥ सोईएकजगतजलचरही ॥ ९२ ॥ भक्तनविनाभक्तिनहिपावें ॥ भक्ती
बिनानहींमोमेंआवें ॥ मोबिनऔरजहांजहांजाईं ॥ तहांतहांकालनिरंतरषाईं ॥ ९३ ॥ यहअतिगोप्य
मतोहैमेरो ॥ मेरेआधीनचितहेंतेरो ॥ तातेंयौंयहतोसोकह्यौं ॥ आगेंकछुकहिवेनहींरह्यौं ॥ ९४ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिगोप्यआपनोमतोतोहीकह्योसमुझाए ॥ जातेंछूटैभक्तभयमोमेंरहेसमाए ॥ ९५ ॥
॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

॥दोहा॥ ॥ महिमासंगतिसारतैंकर्मफलनकोत्याग॥कहीबारमैंध्यायमैंयथाव्यवस्थालाग॥१॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवगोप्यसुतौसुनमेरौ॥पावैंमोहिंमिटेभवफेरौ॥आपमिलनकोमार्गदिखाऊं॥औरसकलकुमार्गमिटाऊं ॥ १ ॥ जोगकहीजौअष्टप्रकारा॥ सांख्यप्रवृत्तिपुरुषविचारा॥ बहूविधिवर्णाश्रमकेधर्मा ॥ सकलत्यागिहोवेनिहकर्मा ॥ २ ॥ वेदादिकबहुविद्यापाठा॥जहांलगीहैंतपअतिकाठा॥ होमजज्ञसरवापीकूपा ॥ इच्छादानसमयअनुरूपा ॥ ३ ॥ एकादशीआदिव्रतजेतें ॥ गुपतमंत्रमेरेहैकेतें ॥ ममप्रतिमापूजाआचरणा ॥ तीरथाटननियमयमकरनां ॥ ४ ॥ औरौसमदमआदिकजेते ॥ साधनसकलमुक्तकेतेते ॥ इनसबइनतैंमोहिनपावैं ॥ साधूजनपलमांहि ॥ ५ ॥ उनतैंमनकौसंगतछूटैं ॥ ममचरणनिमैंचित्तनहीचहूटैं ॥ तातैंमोहीनपावैंउनतैं ॥ पावैंवचनसाधूकैंसुनतैं ॥ ६ ॥ साधूऐसेवचनसुनावै ॥ शत्रूमित्रसुप्तदुषजनावैं ॥ सारअसारकालनिःकाला ॥साधूदिषावैसबसतकाला ॥ ७ ॥ सबतैंमनकौसंगमिटावै॥ मेरेचरणकमललपटावैं ॥ ऐसीविधभवसागरतारैं ॥ मेरेजनततकालउधारैं ॥ ८ ॥ जेतेतिरेतरेगेंजेतें॥अरुअबहूतरतेहैंकेते॥तेसबसाधुसंगततैंजानौ ॥दूजौऔरउपायनमानौ ॥ ९ ॥ षगमृग जातुधानअसूरादिक॥चारणसिधनागगुह्यादिक॥अपसरविद्याधरगंधर्वा॥जितजिनपायौंतेतेसरवा॥१०॥वैस्यशूद्रअंतजअरुनारी॥बहूराजसतामसअधिकारी॥जुगजुगजेसतसंगतिआये॥तिनहितिनमेरेपदपाए॥११॥वृत्रासूरवृषपर्वावानां॥बलिप्रहलादविभीषणजाना॥मयसुग्रीवऋक्षहनुमंता॥गजअरुगीधिव्याधअ

वंता ॥ १२ ॥ तुलाधारकुब्जाबृजगोपी॥ धर्मनिकीसिमाजिनलोपी ॥ जज्ञवंतविप्रनकीवनिता ॥ पुरुष
नकीकिनीअवमानिता ॥ १३ ॥ औरअनेककहांलोकहीयैं ॥ कहतकहूतकहूंअंतनलहीयैं ॥ तिनकछु
विद्यावेदनजानैं ॥ सांख्यरूजोगनहींपहिचानैं ॥ १४ ॥ जपतपजज्ञव्रतादिनकीनैं ॥ औरनधर्मनकोइचीं
नैं ॥ पारसोसाधुसंगतिनपाया ॥ तसबमेरेचर्णनिआया ॥ १५ ॥ अरुतूंउद्धवयौंमातिजानौं ॥ तिनकौ
संगतिमेरीमांनौं ॥ उद्धवसंतअरुमेंदूनाहीं ॥ मेहिहोसंतनउरमाही ॥ १६ ॥ किनहूंमिलौधारिकैतन
कौं ॥ मिलकरसोधौंतिनकेमनकौं ॥ ऐसीविधिएकनिकौंतारौं ॥ एकनिसाधूरूपउद्धारौं ॥ १७ ॥
साधूनिव्हैमनकेमलहरौं ॥ सोमनअपनेंचर्णनिधरौं ॥ ऐसिविधिएकानिउद्धारौं ॥ जहानारीताहांमोहिता
रो ॥ १८ ॥ साधूसंगसोमेरोसंगा ॥ साधूसकलहेंमेरोअंगा ॥ तातैंदोउसाधुसंगब्यानौं ॥ कैतोदो
उमेरोतनमानौं ॥ १९ ॥ गोपीगाईवृक्षनवनागा ॥ औरोमूढबुधिजडभागा ॥ ममसतसंगप्रेमातिनबांध्यौं
॥ भावभक्तिमोकौंआराध्यौं ॥ २० औरकछूसाधननाहिजानौं ॥ अरुनहींब्रह्मरूपकरीमान्यौं ॥ परि
तिनकोहितमोसोंभयौं ॥ तातैंसबमनकोमलगयौ ॥ २१ ॥ श्रमहींबिनातिनमोंकोपायौ ॥ अतिअपारभव
दुषमिटायौ ॥ जाकौंजोगसांख्यव्रतदाना ॥ जज्ञवेदविद्याविधिनाना ॥ २२ ॥ करिसयांसबहुतदुषगहैं
॥ तेउमोकोंकदेंनलहैं ॥ ताकौंतिनसुषहीमैंपायौ ॥ जेकेवलमनमोसोंलायौ ॥ २३ ॥ रामसहितमोहिपा
यौंजवहीं ॥ चलेअक्रूरमधुपुरतबहीं ॥ तनतेंगोपीमेरेहेत ॥ पाइमुरछाभयोअचेत ॥ २४ ॥ बहुरिस

मझमहादुषपावैं ॥ निसवासरममचरणंनिध्यावैं ॥ मोहिछोडिसबदुषमयलेषैं ॥२५॥ जोनिसिमोंसंगपल
सीवीते ॥ तेइतिनकौंकल्पव्यातितैं ॥मेरेगुणनिसुनैंअरुगावैं ॥ लीलारूपदृदैमैंध्यावैं ॥ २६ ॥ कबहूंवि
रहमहादुषरोवैं ॥ कबहूंतपतदशोदिशजावैं ॥ कबहूंप्रानतनकोभाषैं ॥ ममदरशनआशातैंराषैं ॥२७॥
निंदभूपत्रससकलगवांई ॥ औरदेहगुनरह्योनकांई ॥ तिनकैंदुषतेईजेजानैं ॥ केमैंतीजोकहावषानैं॥२८
॥ विरहप्रचंडअनलअधिकारा ॥ सकलविकारभएजरिछारा ॥ प्रेमप्रवाहसकलमलछारैं ॥ यौमोंबि
चकेअंतरटारैं ॥ २९ ॥ तबयहउपजीपरमअनूपा ॥ भालिआपभलिममरूपा ॥ जोजोगेस्वरब्रह्माहिध्यावैं
व्हेंकरिंब्रह्मआपुविसरावैं ॥ ३० ॥ अरुज्योंसरितासिंधुसमावैं ॥ नामरूपगुणभेदगमावैं ॥ त्यौंवेभईरू
पसबमेरौं ॥ द्वैतभावकहूंरह्योननेरौ ॥ ३१ ॥ पापजोनिअबलातेसारी ॥ सुरतिकीमरजादाटारी ॥ नि
जपतिछोडाकियोविभचारा ॥ असतिनमोकोंजान्योजारा ॥ ३२॥ब्रह्मभावकछुएनहींजान्यौं॥ तिनपरपु
रुषमोहिनितमान्यौ ॥ परितोहूंभवसिंधुमिटायौ॥सतनिसहस्त्रणिममपदपायौ ॥ ३३ ॥ तातैंउद्धवसुनबडभा
गा ॥ लोकवेदसबकौंकरत्यागा ॥ जोहिंसुन्योसननकोजोई ॥ प्रवृतिनिवृतिजोकछुहोई ॥ ४४ ॥ सबत
जिएकसरणममआवौ ॥ द्वैतभावमनतैंबिसरावौं ॥ जहांतहांममरूपहिदेषौ ॥ आपापरकछुऔरनलेषो
॥ ३५ ॥ एसैंव्हेकरिमोकौंपैहौ ॥ तातैंजगतजनमनहींऐंहो ॥ योंहरिजबबानीविस्तरी ॥ तबउद्धवआंसं
काकरी ॥ ३६ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभूतुमत्यागवेदकौंकह्यौं ॥ सोमेरेरस

॥ तुमरीआग्यावेदकहावें ॥ ताहिंछोडिकेसेंसुषपावें ॥ ३७ ॥ तुमहींश्रुतिमेंकरणेंभाषे ॥ तुमहींइहादूरिकरिनाषें ॥ तातेंमनभरमतहेंमेरो ॥ थिरकीजैंअपनेंजनकेरौ ॥ ३८ ॥ किधोएसत्यकिधौंएदवा॥याकोंमोहिवतावोंभेवा॥ तवगोपालवचनउचारैं ॥ ज्यौंरविउदयमध्यअंधियारे ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवअवसुनपरमागियाना ॥ तातैंतवछूटैभ्रमनाना ॥ प्रथमाहिंआपानिरंजनएका ॥ औरकछूनहींहूंतोअनेका ॥ ४० ॥ बहूरिकियोमायाविस्तारा ॥ रच्योदेहबहूअंगप्रकारा ॥ तातेंआपुप्रवेसाकीयौ ॥ प्राणअरुशब्दसंगकरिलीयौ ॥ ४१ ॥ सोतांशब्दचक्रआधारा ॥ परानामकीनोआगारा ॥ मणिपूरकपश्यतिनामा ॥ चक्रविशुद्धमध्यमाधामा ॥ ४२ ॥ बाहिरप्रगटवैषरीवानी ॥ जेइहलोकअरुवेदवषानी ॥ स्वरलघुमातरअक्षरजेतैं ॥ नानाभांतिविस्तरैंतेतैं ॥ ४३ ॥ लोकमांहिथोरेविस्तारैं ॥ वेदमांहितिएतहैंसारैं॥पारितिनकौंबहूविधिविस्तारा ॥ जाकौंकोईलहैंनाहिपारा॥ ४४ ॥जैसेंअनलकाष्ठमाथिकाढ्यौ ॥ इंधनसंगपवनआतिवाढ्यौ ॥ यौंममवानीकौविस्तारा ॥ जातेंप्रगट्यौंसकलपसारा ॥ ४५ ॥ यहविस्तारशब्दकौसारौ ॥ जामेंचेतनरूपहमारौ ॥ इंद्रियउपजीदशप्रकारा ॥ सूत्रमनबुधिचितअहंकारा ॥ ४६ ॥ सतरजतममायागुणजानौं ॥ सबविस्तारतिहूंकौंमानौं ॥ जोअद्वैतएकानिरधारा ॥ तिनकीनोमायाविस्तारा ॥ ४७ ॥ तिनमेंबहूतभांतिआभास्यौ ॥ उत्तममध्यमनीचप्रकास्यौ ॥ विधिनिषेधतातेंकरीलये ॥ सुषदुषद्वैतिनकेफलभये ॥ ४८ ॥ इहसंसारएकतेंऐसें ॥ एकवी

जतेंब्रह्मवनजैसें ॥ तातैयहसबएकआधारा ॥ परिएकहिकैंासकलपसारा ॥ ४९ ॥ तैसेंवस्त्रतंतुमयहोई ॥ औतपोतदूजानहिकोई ॥ ऐसेंयहभवतरुहैएका ॥ द्वैफलअरुसाषअनेका ॥५० ॥ यहसबममचेतनआधारा ॥ परितोहूवैतनतैंन्यारा ॥ सोचितनहेंमेरोअंसा ॥ यामेंभूलनअनौसंसा ॥ ५१॥ यहसंसारवृछहैंमसौं॥मैंभाषतहोंसुनियोतैसौं ॥ पापअरुपुन्यबीजद्वैयाकै ॥ मूलअपारवासनाताकै ॥ ५२ ॥ आदहिकेत्रियगुणत्रयसाषा॥तिनतेंपंचभूतपरसाषा॥उपसाषामनअरुइंद्रीयदशा॥शब्दादिकसबेंपंचोरस ॥५३ कफअरुवातापितत्रयवलकल॥सुषअरुदुषप्रगटहैंद्वैफल॥तामैंद्वैपंषीकौवासा॥परमातमअरुआतमपासा॥५४॥जेमूर्षयहभेदनजानैं॥तब्रहूंभांतिवेदविधिथाने॥तिनतेहोवैंब्रदुलविधिबंधा॥जुगजुगदुषपावैंतेअंधा॥५५ ॥ जोयहदेहवृक्षकरिजानैं ॥ आपुहिपंषीन्यारोमानै ॥ वेदस्मृतिसबमायादेषैं ॥ सकलअतीतआपुकौंलेषैं ॥ ५६ ॥ तबयहविधिनिषेधछाटकावै ॥ सुषअरुदुषकेनिकटनआवैं ॥ सकलमांहिआपुहिकौंजानै॥ भेददेहकृतमायामानै॥५७॥चेतनशक्तिब्रह्मकरिदेषैं ॥ औरसकलमायाकारिलेषैं ॥ परियहभेदसकलतवपावैं ॥ जबसतगुरकीसरनैंआवे ॥ ५८ ॥ सतगुरुविनानपावैकोई ॥ ब्रह्मादिकभावैसोहोई ॥ तातैगुरुकोसरनैंआवैं ॥ दृढउपासनभक्तिबढावैं ॥ ५९ ॥ गुरुसेवाकौएसौप्रभाव ॥ तातैंउपजैमेरोभाव ॥ गुरुसेवातैंपावैंभक्ति ॥ गुरुसेवासेंसकलविरक्ति ॥ ६० ॥ गुरुसेवातैंज्ञानहिलहैं ॥ गुरुसेवातैंकर्मनिदहैं ॥ गुरुसेवातैंपरमप्रकासा ॥ गुरुसेवाममचर्णनिवासा ॥ ६१ ॥ मोहीमिलनकौयैहिउपाई ॥ गुरु

सेवाबिनऔरनकांई ॥ तातैंगुरूकीसरनहींआवैं ॥ तनमनधनसौंहेतलगावैं ॥ ६२ ॥ जातैंउपजैंज्ञानकुठा
रा ॥ सबपासीनकोंकाटनहारा ॥ त्रयगुणलिंगशरीरउपाधि ॥ जोंआत्मकोंलागीव्याधी ॥ ६३ ॥ ज्ञा
नकोठारसकलकौंहिरैं ॥ याविधिआतमनिर्मलकरैं ॥ पीछैंग्यानध्यानसबत्यागैं ॥ निशदिनएकब्रह्मअनु
रागैं ॥ ६४ तबसोब्रह्ममांहीसमावैं ॥ बहूर्योजगतजन्मनहींआवैं ॥ तातैंतुमसाधनसबत्यागो ॥ निसदि
नएकब्रह्मअनुरागो ॥ ६५ ॥ ॥दोहा॥ ॥ यहउद्धवतोसौंकह्यौं॥भवमोचनममज्ञान ॥अबनहुर्यौं
साधनसहित॥भाषौंपरमनिधान॥ ६६ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवा
देद्वादशोऽध्यायः॥१२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ होतसत्वगुणवृद्धिकरज्ञानउदयक्रमजान ॥ कह्योतेरमैं
ध्यायमैंहंसरूपआख्यान ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनउद्धवअबपरम
ज्ञाना ॥ जातेंपावेपरमनिधाना ॥ जातेंज्ञानहोइसोकहों ॥ याविधितुवअज्ञानहींदहौं ॥ १ ॥ सातिकरा
जसतामसजेहैं ॥ उद्धवतेगुणमायाकेहैं॥सुषदुषसबतिनहिकेजानौ ॥ तिनतेंपरेंआतमामानौ ॥२॥ तातैंन
रसातिककौंगहैं ॥ सातिककरिरजतमकौंदहैं ॥ पीछैंब्रह्ममांहीथिरहोई ॥ सातिककौंतबत्यागैंसोई ॥३
ऐसीविधितीनोगुणदहैं ॥ तबव्हैब्रह्मब्रह्ममैंरहैं ॥ ज्यौंज्यौंहोईसत्वअधिकारा ॥ त्यौंत्यौंप्रेमभक्तिविस्तारा
॥ ४ ॥ सकलवस्तुसात्त्विकजबभजैं ॥ तबहीसात्त्विकगुणउपजै ॥ सात्त्विकज्यौंज्यौंत्यौंत्यैंभक्ति ॥
त्यौंहीत्यौंअन्यत्रविरक्ति ॥ ५ ॥ तबरजतमदोउमिटजावे ॥ तातेंतनकेगुनहींआवैं ॥ हरषअरुशोक

मानअपमाना ॥ निंद्राआलसगर्वगुमाना ॥ ६ ॥ रागद्वेषआदिकहेंजेते ॥ द्वंद्वसकलरजतमकेतेते ॥
तातेंरजतमजवहींजाहीं ॥ तवातिनकेगुगउपजेंनाहीं ॥ ७ ॥ तातेंसात्विकसंगतीकरें ॥ रजतमकीसंगतप
रिहरें ॥ मूलसकलकौंसंगतिकारन ॥ संगतिवोरेंसंगतीतारन ॥ ८ ॥ देशअरुकालपवित्रजलपान ॥ ग्रं
थअरुकर्मजन्मअरुध्यान ॥ गर्भाधानआदिकसंसकार॥मंत्रजापएदसप्रकार ॥ ९॥ एदसजाकौंहोवैजेसें
॥ गुणविस्तारेंताकोंतैसें ॥ सातिकतोसात्विकउपजावें ॥ राजसतोंराजसअधिकावें ॥ १० ॥ ताम
सतोतामसविस्तरें ॥ जेसेंएदशतेसेंहोंकरें ॥ जाहिजामेंजोगुणहोई ॥ सोसोउत्तमजानेसोई ॥११
॥ परिजोउत्तमसाधवषानें ॥ सोवहसातिकउत्तमजानें ॥ जोअतिनिंद्यतमोगुणसोहें ॥ सोराजसक
छुमध्यमजोहें ॥ १२ ॥ तातेंएदशसातिकसेवें ॥ राजसतामसनामनलेवें ॥ राजसतामसजोहितहोई ॥
तोहुंसबछिटकावेंसोई ॥ १३ ॥ सात्विकसंगतिउपजैसत्व ॥ त्यौंत्यौंलहैभक्तिकोतत्व ॥ त्यौंलगिदृढउप
जैविज्ञाना ॥ देंएकसकलभगवाना ॥ १४॥ अरुदोनोदेहनिभ्रमजानें ॥ सबविस्तारसुपनसममानें ॥तबय
हब्रह्ममांहिस्थिरहोई॥ सातिकहूंकोबोनरजोई ॥१५॥ ज्यौंबांसनितेंउपजेअनल ॥अरुहोवेंमारुततेंप्रबल ॥
सबकासानिकौंदाहेंसोई ॥ आपुत्रहूरिउपसम्यतहोई ॥ १६ ॥ यौंसाधनयातनतेंहोवें ॥ होईप्रचंडयात
नकौषोवें ॥ बहुर्यौंआपुउपसामितहोई ॥ साधनलेसरहेंनहीकोई ॥ १७ ॥ गुणातीतसोंकहिएजोगी ॥
तीनोंकालब्रह्मरसभोगी ॥ सोवहुरौभवमेंनहींआवें ॥ मोहिमिल्यौंमोमांहिसमावें ॥ १८ ॥ तातेंसबसाधन

छटिकावौं ॥ एकनिरंजनमौंकौंध्यावौ ॥ तवहरिकीसूनिअद्भुतबानी ॥ जवउद्धवयहप्रश्नबषानी ॥ १९ ॥
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूयहांएसोकहीयैं॥ ज्ञानादिकतजैंसुषलहीयैं ॥ परिजैं
विपयसुपनिकौंचाहैं ॥ तातैंवहूआरंभसबाहैं ॥ २० ॥ तेवापुरंसदादुषमैंरहैं ॥ कबहूंभूलिनसुषकौंलहैं॥
परितेतोविषयनिदुषजानैं ॥ जानबूडवयौंउद्यमठानैं ॥ २१ ॥ ज्योंबकरामारनकौंलेजैं ॥ लेछेलनिमेटा
ढौकीजैं ॥ वहनिलजकछुलाजनजांनैं ॥ तिनिसौंमिलिविषयादिकठानैं ॥ २२ ॥ अरुजैसैंगरधभअरुकु
ता ॥ तिरस्कारतेंसहैंबहूता ॥ सुषकेहेतसबानिआधीना ॥ सदादुबंलत्हृदयअतिदीना ॥ २३ ॥ वेतोंमू
ढकछूनहींजानैं ॥ तातैंविषयानिउद्यमठानै ॥ औतोनरजानैंसबबाता ॥ देषेजक्तचल्यौसबजाता ॥ २४ ॥
प्रथमेतोसुपआवैंनाहीं ॥ जोआवेतोथिरनरहांहीं ॥ ऋरुजौदिनचाररहिजावैं ॥ कालहूतेतोषननपावैं ॥
२५ ॥ कालनिरंतरग्रसतेंजावैं ॥ एकदिनाजमद्वारपठावैं ॥ तहांनरकहैंबहुतप्रकारा ॥ जिनकेदुषकौंअं
तनपारा ॥ २६ ॥ ऐसीसबविधिमानवजानैं ॥ तोहूंवयौंआरंभनिठानै ॥ आपुआपजमद्वारपठावैं ॥ आ
पुआपुकौंदुषउपजावैं॥२७॥आगेचौंन्यांशीभयभारैं॥विषयनिकौंबहुदुषविस्तारैं॥याभवजलकेदुषअपारा
कहोकहांलोंवारनपारा ॥ २८ ॥ सोयहसकलाक्रिपाकरिकहो॥ मेरेउरकौसंसादहो ॥ यौंकहिकैंउद्धव
जबरहैं॥तबहरिजीप्रत्युत्तरकहैं ॥२९॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवयहआतमाअ
विनाशी ॥ ज्ञानरूपपरमसुषराशी ॥ सोजबहींयातनमैंआवैं ॥ तबस्वाधीनाविवैंसुषपावैं ॥ ३० ॥ बहूत्यौ

तिनहितउद्यमगहैं ॥ नहींपावैतोदुषकौलहैं ॥ याविधिसुषदुषजबहींजानैं ॥ तबहींदेहआपुकरीमांनैं ॥
३१ ॥ ऐसेंबढैदेहअहंकारा ॥ तबहीराजसकौअधिकारा ॥ राजसरहितजबहींमनहोई ॥ तबइहसु
पदुषजानैसोई ॥ ३२ ॥ तबसंकल्पविकल्पनिकरैं ॥ निशिदिनित्हृदयविषैंसुषधरैं ॥ तबजासुषहींसु
अरुदेषैं ॥ तबवशहैंनिजसुषकरिलेषैं ॥ ३३ ॥ तबहिंहृदेमेंबाढैकाम ॥ ज्ञानविचारनराषैनाम ॥ तातैंब
बहूराजसअधिकारा ॥ राजसतैंमनगहैंविकारा ॥ ३४ ॥ तबराजसकैंवेगप्रचंडा ॥ ज्ञानहीमारिकरै
सतषंडा ॥ तातैंज्ञानसुनैंअरुजानैं ॥ अरुऔरनिसौंआपुवषानैं ॥ ३५ ॥ परिसोकामनहींठहिरावैं ॥
लेकरिपकरिकरमकरावैं ॥ परिजद्यपियानरकोबुधी ॥ रजतमतैंनहींपावैंसुधी ॥ ३६ ॥ तेहूंनिशदिन
दोषविचारैं ॥ उरतेंसकलकामनाटारैं ॥ सावधानआलसनहींकरैं ॥ क्रमक्रममममचर्णनिचितधरैं ॥ ३७ ॥
आसनजीतिकरैवसप्रान ॥ निषिदिनउराषैममध्यान ॥ अरुममशिष्यचारसनकादी ॥ सकलतत्वज्ञानि
नुकेआदि ॥ ३८ ॥ तिनविचारकरिजोगहींभाष्यौ ॥ सोतोइहैऔरसबनाष्यौ ॥ ज्योंहींज्योमनदूजोतजे
॥ अरुज्यौंज्यौंममचर्णनिभज्यैं ॥ ३९ ॥ याहीतैंसबमिटैविकारा ॥ याहीतैंछूटैसंसारा ॥ याहीतैंममच
रणनिपावैं ॥ बहुरिजगतनमनहींआवैं ॥ ४० ॥ तातैंपरमजोगयहराष्यौ ॥ तातैंमेरेशिष्यनिभाष्यौं ॥
जबयहबानीबोलैंकृष्ण ॥ तबउद्धवजनकीनीप्रश्ण ॥ ४१ ॥ ॥ उद्धववाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हेप्रभु
कौनसमेयारूपा ॥ तुमभाष्यौयाज्ञानअनूपा ॥ सनकादिकानिकौनविधिलह्यौ ॥ क्यूपुछौकेसंतुमकह्यौ ॥ ४२

॥ ज्ञानसहितसबमोकौकहौं ॥ मेरेउरकौसंसैदहौं ॥ जबयहउद्धवकीनोप्रश्ण ॥ तबबोलेकरुणा
मयकृष्ण ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी ॥ जन्म
होतेतिनगहीनिवार्ती ॥ मनवचक्रमसोंतजीप्रवर्ती ॥ ४४ ॥ प्रश्णकरीतिनब्रह्माआगे ॥ एसोभेदसूवतज्यों
जागें ॥ अतिसुपमज्ञानिनहिपरैं ॥ उत्तरकहोकोनविधिकरें ॥ ४५ ॥ सनकादिकवाच ॥ चौपाई ॥
हेप्रभूब्रह्ममयदेवा ॥ याकौहमहींवतावौभेवा ॥ विषयवासनाचितहोगव्यौ ॥ चितप्रीतीकारिकैंमिलिरव्यौ ॥
४६ ॥ दोउमिलेंआपुमेरसें ॥ नीरअरुपीरपरस्परजेसें ॥ भिन्नाभिन्नावनमुक्तनहोई ॥ बयोंकरिभिनहो
यएदोई ॥ ४७ ॥ यहबानीब्रह्मउरधारी ॥ उतरदेनकोबहुताविचारी ॥ परितौंऊंउतरनाहिआयौ ॥
जातिकर्मनीसोमनलायौ ॥ ४८ ॥ तबब्रह्मायहबुद्धिविचारी ॥ जाहिनकोईतांहिंमुरारी ॥ तातेंक्योंचित
वनमेरो ॥ हंसरूपमेंप्रगयौमेरो ॥ ४९ ॥ हंसरूपतातेंदिपरायौ ॥ जातेंयहआसयसमझायौ ॥ केज्ञोहं
सवृत्तिकोंग्रहें ॥ सोईयाकेभेदहिलहें ॥ ५० ॥ तवतिनदेषिमोहिसुषपायौ ॥ ब्रह्मामिलिउठिमाथौनायौ ॥
करिविनतीतनवचनबषाने ॥ हेप्रभूतुमकौंहमनहीजांने ॥ ५१ ॥ तवतिनसोंजोमेंकछुकह्यौ ॥ तिनकेउर
कासंसाढह्यौ ॥ तेईवचनकहौंअबतोसों ॥ सावधानव्हैसुनियोमोसों ॥ ५२ ॥ तुमकौंहोयुंपूछेंजबहीं ॥
कह्योंज्ञानउत्तरमेंतबहीं ॥ मनकौंसंसैसबहिंमिटायौ ॥ विद्यमानपरब्रह्मबतायौ ॥ ५३ ॥ हंसहरीजबह
सकरबोले ॥ कृपानिधानतबअंतरपोले ॥ ॥ हंसउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विप्रहुंप्रश्णकरीतु

मऐसी ॥ करनेनहींसंभवेतेसी ॥ वस्तुविचारेंद्वैतनकोई ॥ तोयाकौउत्तरक्यौंहोई ॥ ५४ ॥ अरुजोदेहरूपहूंकहियें ॥ तोहूंकछुद्वैतनलहीयें ॥ पंचभूतनिर्मिततनसारैं ॥ जोकछुजहांलगौंविस्तारैं ॥५५॥तातेंसकलएकद्वैनाहीं ॥ दूजोकौनविचारौंमाही ॥ पुरुषदृष्टदेषेंतेंएका ॥ प्रकृतिदृष्टिहूंन हींअनेका ॥ ५६ ॥ तातेंकेरीप्रष्णतुमऐसी ॥ बहुतनमांहिंकरीजैंजेसी ॥ अरुजोदीसेतत्वविचारा ॥ तोनहींप्रकृतिपुरुषविस्तारा ॥ ५७ ॥ जोकछुदीसैंसुनीएकहीयें ॥ मनअरुबुद्धिजहांलौंलहियै ॥ सौसबमैंहीदूजोनाहीं ॥ ऐसौज्ञानधरौंमनमांहीं ॥ ५८ ॥ नामरूपतेंसकलविकारा ॥ आद्य अंतमध्यमाटीसारा ॥ त्यौंहींआदिअंतमध्यमाही ॥ मेहोएकद्वैतकछुनाहीं ॥ ५९ ॥ द्वैतदृष्टिसोदुषकोकारण ॥ ब्रह्मदृष्टिनिजसुषविस्तारण ॥ लगैंतरंगानिसौदुषलहैं ॥ तबसुषजबहींतीजलगहैं॥६० ॥ त्योंहींद्वैतदृष्टिसोईदुषा ॥ एकदृष्टिसोहैनिजसुषा ॥ अरुतुमप्रष्णविरिंचिसोकारिं ॥ सोमेंहृदयआपुनेंधरी ॥६१ ॥ विपयनिमांहिचितामिलिरह्यौ ॥ अरुविषयनिचितहहिढगह्यौ ॥ हेपुत्रहूंयहयोहीसत्य ॥ परितेआत्मामांहिअसत्य ॥ ६२ ॥ विषयाचितएदोउमाया ॥ आत्मब्रह्मनिरंजनराया ॥ विषयनिसौंजबचितलगायौ ॥ तबहिंचिततिनमेंसुषपायो ॥ ६३ ॥ तबविषयनिकोंध्यानहींकरें ॥ तिनकैंहेत कर्मविस्तरैं ॥ तातैंएकमेकामिलिरहैं ॥ ऐसैंजन्मजन्मदुषसहैं ॥ ६४ ॥ तातैंआत्ममेरोअैसा ॥ मेरि शरणग्रहैंतजीसंसा॥ताहिरहूंतेंविषयपरिहरैं ॥अरुचिततैंचितवननहींकरैं ॥ ६५ ॥ विषयाचितवृथाकारि

जानें ॥ तिनतेंपरेंआपुकौंमानें ॥ ब्रह्मरूपएकआविनासी ॥ ज्ञानरूपचेतनसुषरासी ॥ ६६ ॥ मनअरु बुद्धिचितअंहकारा ॥ इंद्रियविषयदेहविस्तारा ॥ एभरमरूपसकलहैंमाया ॥ भूलिआत्माआपुबंधाया ॥ ६७ ॥ एसैंजानसकलछटिकावैं ॥ आपुहींमोहिएककरिध्यावैं ॥ जाग्रतस्वप्नसुपुतिबषांनौं ॥ तेआ चर्णाबुद्धिकेंजानौं ॥ ६८ ॥ तिनतेंपरेंआतमारूप ॥ सदाएकरसपरमअनूप ॥ सातिकहूतेंजागरनहोई राजससुपनलहैंसबकोई ॥ ६९ ॥ सुषोपतितामसगुणतेंआवें ॥ मनअरुबुद्धितिहुंकूंपावें ॥ एकरूप आतमातिहुंमांहीं ॥ सापिभूतालिपैंकहूंनाहीं ॥ ७० ॥ तातेंतिहूंगुणनितेंन्यारौ ॥ निजानंदमयरूपहमारौ ॥ तातैंस्थितव्हेकरैंविचारा ॥ सहजाहिंछूटैंत्रिगुणपसारा ॥ ७१ ॥ देहविषैंबंध्योअभिमाना ॥ तातेंभेदउ थ्योयहनाना ॥ तातेंनिजानंदविसरायौ ॥ कालअसंष्यमाहादुषपायौ ॥ ७२ ॥ ऐसैंजानितजेअभिमाना कदैनकरैंसुषानिकोंध्याना ॥ तिहूंगुणानितैंकरैंविरक्ति ॥ चोथैंपदबांधेआसक्ति ॥ ७३ ॥ तबसहजेंमो माहिसमावे ॥ बहुर्यौकदेदेहनाहिपावैं ॥ अरुजोसकलग्रंथविस्तरैं॥वेदधर्मनानाविधिकरैं ॥ ७४ ॥ प्रवृ त्तिमांहीबहूताविधिजागैं॥ परिजोजानिदैतनहींत्यागैं ॥ सोनितसोवतजागतजानौ ॥ ताकौंमैंदृष्टांतबषांनौ ॥ ७५ ॥ जैसैसयनकरैंनरकोई ॥ सोवतसुपनलहैंपुनिसोई ॥ बहुतभांतिकरैंव्यवहारा ॥ लेनदेनजलपान अहारा ॥ ७६ ॥ बहूरैंरैनभएतेंसोवें ॥ दिवसभएयौंहोउठिजावैं ॥ एसीविधकेयौंदिनवीतें ॥ सोवत जागतसकलव्यतीतैं ॥ ७७ ॥ बहूरोवहेएसीमनआनैं ॥ रातिहूंदिनकोनिाद्रभानैं ॥ कदेनसोवतजागत

रहें ॥ सावधानआलशनहींगहैं ॥ ७८ ॥ ऐसैंकाजआपनौंकरैं ॥ चौरादिकधनकौनहींहरैं ॥
पारिजनयहाजागिकगिदेपैं ॥ तबवहसकलावृथाकरीलेषैं ॥ ७९ ॥ सोवतजागतसबव्यवहारा ॥
जाकेंहितजागेसोसारा ॥ आपुंहिंसबमिथ्याकरीजानैं ॥ कबहूंभूलिसत्यनहींमानैं ॥ ८० ॥
सोहिंवेदधर्मआचरना ॥ अरुतेसुषजिनकेहितकरना ॥ तेसबस्वप्नरूपव्यवहारा ॥ पंडितछोडैंसकलप
सारा ॥ ८१ ॥ भ्रमतेंदेहधर्योअभिमाना ॥ तातेंवर्णाश्रमभएनाना ॥ तातेंकरैंबहूतविधिकर्मा ॥ सुख
निमितविस्तारेंधर्मा ॥ ८२ ॥ पारेतेसकलवृथाकरिजानौ ॥ सुपनजागरणसमकरीमानौ ॥ जोदेहादिक
सकलपसारा ॥ चेतनकरीवरतानवहारा ॥ ८३ ॥ सुषदुषभोगकरेंअरुजानें ॥ आपुहींसुषिदुषिकारि
मानें ॥बहुर्योजबाहेसुपनकोंपावें ॥ बहूव्यवहारनिसौंमनलावें ॥ ८४ ॥ तबहूंजानैंसकलपसारा ॥ आ
पापरसुषदुषयवहारा ॥ बहूरिसुषोपतिमांहिसबजाई॥मनबुधिचितअहंकारनकाई ॥ ८५ ॥ तबआतमा
निरंतररहें ॥ जागेंसकलबातजोकहें ॥ लीयोदीयोअरुआयोगयों ॥ जहांलगिपीछैअनुभयो ॥ ८६ ॥
सोआतमाएकरसरहें ॥ तिहूकालकीवातानिकहें ॥ योंअविनासीआतमाएक ॥ दूजेमायाभेदअनेक ॥
८७ ॥ तीनअवस्थाहैयेमनके ॥ मनमेंआभासेहेंतिनकैं ॥ तिनातनकौंतिनौगुणजेहें ॥ तीनागुणमायाकेत
हें ॥ ८८ ॥ असैंविधिनिश्चेसैंजानें ॥ निशदिनत्हृदयविचारहिठानें ॥ सकलउपाधिनकौआगारा ॥
ज्ञानपडगकाटैंअहंकारा ॥ ८९ ॥ त्हृदयमाहिमैंताकौभजौं ॥ सावधानव्हैकदेंनतजौं ॥ यहसारोजग

भ्रमकरीजानों ॥ मानकोकृतमिथ्याकरीमानौ ॥ ९० ॥ ज्यौंएकनिकौंउपजतदेषैं ॥ अरुएकनिकौंविन
सतपेपें ॥ साईरीतसकलकीजानैं ॥ स्वप्नसमानत्हदेमेंमानें ॥ ९१ ॥ आग्निसाहितज्यौंलकरीहोई ॥
बालकलकरिफिरावेकोई ॥ औरभांतिहेंदीसेऔर ॥ धीरपरीचंचललहैंनठौर ॥ ९२ ॥ त्यौंयहंजगतर
हेंथिरानित्य ॥ परिअतिचंचलसकलअनित्य ॥ एकब्रह्ममेंसबआभास्यौ ॥ त्रिगुणपाईबहुभेदप्रकास्यौ ॥
९३ ॥ स्वप्नरूपगुणमेंज्योंभोगी ॥ यौंबहूभांतिविचारेंजोगी ॥ तातेंजगतेंदृष्टिउतारें ॥ सांचजानित्हदय
नहींधारें ॥ ९४ ॥ तृष्णाछोडिनिश्चलव्हेंरहें ॥ मनवचक्रमकछुकर्मनगहें ॥ इहाराहितब्रह्मरसभोगे ॥ नि
जानंदमयहोवेंजोगी ॥ ९५ ॥ ऐसेंवृथाजानिसबत्यागैं। । निहचलह्वेब्रह्मअनूरागैं ॥ सोजबरहेंदेहहुंमा
हीं ॥ तोहूंफिरिभ्रमउपजैंनाहीं ॥ ९६ ॥ जोयहदेहजाईकहुंआवैं ॥ बैठेंउठेंपीवेंअरुषावें ॥ औरकछूक
रेंव्यवहारा ॥ पारिसोसिधनजानैसारा ॥ ९७ ॥ निश्चलरहेंनिरंजनमांही ॥ देहादिककछूजानैंनाही ॥
ज्योंकोईतनवस्त्रानिधरैं॥बहूज्यौंसूरापानकहूंकरैं ॥ ९८ ॥ सोतिनवस्त्रनिजानेंनाहीं ॥ प्रथमबंधेतातेंनहींजा
हीं ॥ कर्मरहेयातनकेजोलौं॥सहीतइंद्रियसबबरतेंतोलौं ॥ ९९ ॥ कर्मनिताकौंतनकोपोषैं ॥षानपानसौंनि
त्यसंतोषें ॥ जोगीब्रह्ममांहिथीररहैं ॥ देहादिककछुशुद्धनलहैं ॥१००॥ जैसेंस्वप्नदेषिकरीजागैं ॥ तासु
पनासुनहींअनूरागै॥तैसैमोहानिसातेंजाग्यौं॥बहूरिनालिपैंब्रह्मअनुराग्यौ ॥१०१॥देहथकांब्रह्महिंमिलरह्यौ
॥भवकौसकलबीजातिनदह्यौ॥सोंबहूरोभवमैंनहींआवैं॥ब्रह्ममिल्यैंसोब्रह्मसमावैं॥२॥तातेंदेहआदिविस्तारा

मकरीतजोत्रिगुणमयसारा ॥ त्रिगुणातीतब्रह्मकोंसेवों ॥ विषयनिकौंकछुनामनलेवौ ॥ ३॥ विषयनिचित दोउभ्रमजानौ ॥ ब्रह्ममांहिरहीदोनुभानौ ॥ सकलअतीतआपुकोंदेषों ॥ सबघटएकद्वैतनलेषौं ॥ ४ ॥ ब्रह्मअरुआपुएककरीमानौ ॥ द्वैतभावकबहूंजिनआनौ ॥ निशादिनब्रह्मविचारहिंकरौं ॥ परिबलमेरोत्हृ दयमेंधरौं ॥ ५ ॥ ममआधीननिरंतररहौं ॥ याविधिजक्तबीजसबदहौं ॥ यातेंबहूरिनभवमेंआवों ॥ ब्रह्मरूपव्हेंब्रह्मसमावौ ॥ ६ ॥ यहमेतोसोंकह्योंविचारा ॥ सांख्यअरुजोगसकलकोंसारा ॥ मेरोगुह्यम तोऽर्मतिजानौ ॥ वहुतभांतिहृदेमेंआनौ ॥ ७ ॥ तुमरोहितमनमांहिविचाऱ्यों ॥ मेंहोंविष्णुहंसतनुधाऱ्यौं ॥ मेहोब्रह्मसकलकोईस ॥ मोंविनऔरेंसकलअनिस ॥ ८॥ सांख्यअरुसत्यतेजतपजोग ॥ प्रियसमदम श्रीकिरतिभोग ॥ औरौंवस्तजहांलोसार ॥ तेसमस्तमेरैंअधारा ॥ ९ ॥ तातेंजोममशरणेंहिंआवें ॥ उत्तमवस्तसकलकौंपावें॥मौंविनवहूसाधनहोगहें॥नोहूंकदेंनसुषकोलहें॥१०॥मैंनिरगुणअरिसबगुणसेवों मैंनिरपेक्षसकलचितदेवों॥कछुनचहौंकरौंउपकार॥सबकौंहितसबकौंआधार ॥११॥ सबउपजावोंसबप्र तिपारों॥सबपोषौंसबसंकटटारौं॥तातेंमोहितजेंदुषपावें ॥ तबहींसुपोसरणजबआवें ॥१२॥ सरणागत कोंवेगिउधारौं ॥ आपुमिलाऊंभवभयटारो ॥ तातेंसबतजोमोकोंभजों ॥ पावोमोहिजगतभयतजो ॥१३॥ ॥ उद्धवयहमेंज्ञानसुनायो ॥ सनकादिकनिपरमसुषपायो ॥ हृदयरहोसंदेहनकाई ॥ मोहमिल्नकोसब विधिपाई ॥ १४ ॥ वहूतभांतिममपूजाकरी ॥ वहूतभांतिअस्तुतिविस्तरी ॥ मेरोभजनत्हृदयमेंधाऱ्यो ॥

औरसकलततकालनिवार्यो ॥ १५ ॥ आपुक्रतारथातिनकरिमान्यौ ॥ द्वैतभावताजिब्रह्मपाहिंचान्यौ ॥ तब
तिनकैंअस्तकातिकरितेहीं ॥ अरुब्रह्मादेषतआगेंही ॥ १६ ॥ सबहीनकौंआनंदवढायौ ॥ तबमेंअप
नेधामसिधायौ ॥ तातैंउद्धवयहतुमजांनौ ॥ अपनेंपरमभागकरिमांनौ ॥ १७ ॥ सनकादिकसमानतुमकी
यें॥तेईवचनमेंतुमकोदीयौं ॥ तातेंइहैंज्ञानउरधारो ॥ ब्रह्मजानिसबद्वैतनिवारो ॥१८॥ ममआधीनसद
हीरहौं ॥ दूजीसकलवासनादहौं ॥ एसैंहिंनिजपदकौंपैहो ॥ जातैंजगबहूरौनहींऐहौं ॥ ११९ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसोंकह्योपरमज्ञानानिजसार ॥ जाकौंगहिनिजपदलह्योंछूटैसबसंसार
॥ १२० ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांहंसगीतायां
त्रयोदशाध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीधरचवथैंध्यायमैंभक्तिश्रेयकल्याण ॥ ध्यानयोग
हरिकहतहैंसाधनसहितप्रणामा ॥ १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसोसुनि
हारिजीसोंज्ञाना ॥ भक्तिउधारकभ्रमसबहांनां ॥ यहउद्धवदृढकरिउरधरी ॥ परिकन्हुप्रश्णकृष्णसौंक
री ॥ २ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परमदयालदयानिधिदे
वा ॥ मोकोंबडौं वतायोभेवा ॥ भक्तिहूतेंपहियेंतुमचरना ॥ छूटैजगतजन्मअरुमरना ॥ २ ॥परि
अबएकप्रश्णसोंकहौं ॥ मेरेयासंदेहहिंदहौं ॥ जेबहुविधिश्रुतिसमरातिजानैं॥तेतौबहूसाधनवषानैं॥३॥ मु
क्तिहेतबहूपंथानिकहैं ॥ अरुतेबहुतेंमिलिगहैं ॥ तातैंतेउपंथअसेष ॥ भक्तिसमाकेकह्युविसेष ॥ ४ ॥

नरकहेस्वर्गमेंतोलौं ॥ एकाइहांहिकामवपानैं ॥ आगेंस्वर्गनरकहींजानैं ॥ १७ ॥ जोतनईहांकरैभोग
निकों ॥ ईहांहिछोडिजाईतातनकौं ॥ आगेंसुषदुषलहैंनकोई ॥ तातैंभोगकरौसबकोई ॥ १८ ॥ ए
सेग्रंथनिकाहिभ्रमावैं ॥ धर्मरायकौषवरनपावैं ॥ एककहेंसमदमअरुसत्य ॥ दूजोसाधनसकलअनित्य
॥ १९ ॥ जोगग्रंथबहूसापबषानैं ॥ तिनतैंमुदमुक्तिकौंजानैं ॥ सामअरुदामदंडबहूभेद ॥ ईनकौंगहैं
एकपढीवेद ॥ २० ॥ न्यायसहितसबउद्यमकरैं ॥ उत्तमधर्मजानिउरधरैं ॥ दानभोगउत्तमकरिभाषैं
॥ ईहमुक्तसाधनकरिराषैं ॥ २१ ॥ एकैंजज्ञदानतपगहैं ॥ एकहींजमनियमसंग्रहैं ॥ एकहिंतीर्थव्रतम
नधरैं ॥ कहूंकहांलोंवहूविधिकरैं ॥ २२ ॥ तिनतैंस्वर्गादिकसुषपावैं ॥ छिनभयेईहांफिरआवैं ॥ बहु
ज्योंनीचजोनीवहुलहैं ॥ नरकनिमेंकेईजुगरहैं ॥ २३ ॥ अरुजबरहैंस्वर्गहूंमांहिं ॥ तबहूंकछुसुषपावैंना
हीं ॥ कामक्रोधनिंदाअपमाना ॥रागद्वेषइच्छाअभिमाना ॥ २४॥ इत्यादिकनिग्रसैंनिसरहैं ॥ तातैंकौन
भांतिसुपलहैं॥भक्तिविनाविधिलोकहिंजावैं॥कालतहूतैंउलटढहावैं॥ २५॥तातैंउद्धवभ्रमहैंसारा॥सुषममचर्ण
निकेंआधारा॥जिनमेरचर्णनिचितधर्‍यौ॥साधनसाधसकलपरिहर्‍यौ॥२६॥तिनकौंउद्धवजोसुषहोई ॥ सो
कहूंनपावेकोई ॥ सोसुषकत्योसुन्यौनहींआवै॥सोईपैंजानैंजोपावै॥२७॥सोपावेजोमोसोंमागैं ॥ औरसक
लआसयकौंत्यागैं ॥ ममआधीननिरंतररहैं ॥ दूजीसकलकामनादहैं ॥ २८॥ सकलवस्तकौंकी
नौंत्याग ॥ अंतःकरणधरौवैराग ॥ समदरसीनित्यसीतलचित ॥ ममचिंतवनव्हैदेहढव्रत ॥२९॥ ताकों

ज्ञाजाप्रभुपंथतुमेंपाहियें ॥ बहुरौंभवसागरनहींएयैं ॥ सोसोपंथकृपाकरिकहौं ॥ मेरीसकलमूढतादव्हौ
॥ ५ ॥ तुमविनयहदूजोनहींकहैं ॥ ज्ञानलहैंसोतुमसौंलहैं ॥ उद्धवऐसीपूछीवाणी ॥ तवउद्धवकीप्रश्नवषा
णीं ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाइ ॥ ॥ उद्धवकल्पसमयजबभयौ ॥ तबयहतत्वली
नव्हैगयौं ॥ पुनिमेंसृष्टिसमययहज्ञाना ॥ ब्रह्मांसौंश्रुतितत्ववषाना ॥ ७ ॥ सोईश्रुतिपुनिब्रह्मपढायौं ॥ भृग्वा
दिकस्वयंभूपायौं ॥ सप्तमहाऋषिभृगुजनआदी ॥ अरुस्वायंभुमनूमन्वादि ॥ ८ ॥ तिनअष्टनितेंयहावि
स्तारा ॥ नानाभांतिकेभेदअपारा ॥ सुरनरअसुरासिद्धगंधर्व ॥ विद्याधरयक्षादिकसर्व ॥ ९ ॥ सप्तद्वी
पनरबहुतप्रकारा ॥ किंनरकिंपुरुषादिअपारा ॥ सतरजतमतिनकीउतपती ॥ तातैंबहूविधिभईप्रकृति ॥
१० ॥ तिनतेंभयबहूताविधिभेदा ॥ तिनतेंसोईजानेंवेद ॥ वेदतत्वकितंहुंरहगयो ॥ आपुसुभावसमतिनक
व्यौ ॥ ११ ज्योंज्यौतिनकेभएसुभाव ॥ त्यौंत्योंजान्यौंश्रुतिकोभाव ॥ त्यौहिंत्योंआचरणनिकरैं ॥ त्यौंत्यौं
आपुस्मृतिविस्तरैं ॥ १२ ॥ परंपराजेतिनतेंहोवैं ॥ तिनकेश्रुतिसमृतिजोवैं ॥ तिनतैंआपुकरैंबहुग्रंथा ॥
नानाभांतिचलावैंपंथा ॥ १३ ॥ एसोविधिउपजेपाषंडा ॥ ज्ञानधर्महोईसतपंडा ॥ ममममायाकरिमोहित
होवैं ॥ तातेंतत्वपंथनहीजोवैं ॥ १४ ॥ अपनीअपनीरुचिअनुमाना ॥ करेकर्मअरुभाषैंज्ञाना ॥ नाना
विधसाधनासुनावें ॥ तिनतिनतैंकल्याणबतावैं ॥ १५ ॥ एकैबहूविधिधर्मनिभाषैं ॥ तिनतैंमुक्तिभुक्तिकौं
आषैं ॥ एकैकहैंजसहीविस्तरीयें ॥ जातैंसकलदुपानैंतैंतरीयैं ॥ १६ ॥ जाकौंजसयाजगमेंजोलौं ॥ सो

नरकहेस्वर्गमेंतोलौं ॥ एकाइहांहिकामबषानैं ॥ आगेंस्वर्गनरकहींजानैं ॥ १७ ॥ जोतनईहांकरेभोग
निकों ॥ ईहांहिछोडिजाईतातनकौं ॥ आगेंसुपदुषलहैंनकोई ॥ तातैंभोगकरौसबकोई ॥ १८ ॥ ए
सेंग्रंथनिकहिभ्रमावैं ॥ धर्मरायकीषबरनपावैं ॥ अेककहेंसमदमअरुसत्य ॥ दूजोसाधनसकलअनित्य
॥ १९ ॥ जोगग्रंथबहूसापबपानैं ॥ तिनतेंमुळमुक्तिकौंजानैं ॥ सामअरुदामदंडबहूभेद ॥ ईनकौंगहें
एकपढीवेद ॥ २० ॥ न्यायसहितसबउद्यमकरैं ॥ उत्तमधर्मजानिउरधरैं ॥ दानभोगउत्तमकरिभाषैं
॥ ईहमुक्तसाधनकरिरापें ॥ २१ ॥ एकैंजज्ञदानतपगहें ॥ एकहींजमनियमसंग्रहैं ॥ एकहिंतीर्थव्रतम
नधरें ॥ कहूंकहांलोंबहूविधिकरें ॥ २२ ॥ तिनतैंस्वर्गादिकसुषपावैं ॥ छिनभयेईहांफिरआवैं ॥ बहु
ज्यौंनीचजोनीवहुलहैं ॥ नरकनिमेंकेईजुगरहैं ॥ २३ ॥ अरुजबरहेंस्वर्गहूमांहिं ॥ तनहूंकछुसुषपावैंना
हीं ॥ कामक्रोधनिंदाअपमाना ॥रागद्वेषइच्छाअभिमाना ॥ २४॥ इत्यादिकनिग्रसैंनिसरहैं ॥ तातैंकौन
भांतिसुपलहैं॥भक्तिविनाविधिलोकहिंजावैं॥कालतहूंतैंउलटढहावैं॥ २५॥तातैंउद्धवभ्रमहैंसारा॥सुषममचर्ण
निकेंआधारा॥जिनमेरचर्णनिचितधर्‍यो॥साधनसाधसकलपरिहर्‍यौ॥२६॥तिनकौंउद्धवजोसुषहोई ॥ सो
कहूंनपावेकोई ॥ सोसुषकह्योसुन्यौनहींआवैं॥सोईपैंजानैंजोपावैं॥२७॥सोपावेजोमोसोंमागैं ॥ औरसक
लआसयकौंत्यागैं ॥ ममआधीननिरंतररहैं ॥ दूजीसकलकामनादहैं ॥ २८ ॥ सकलवस्तकौंकी
नौंत्याग ॥ अंतःकरणषरौवैराग ॥ समदरसीनित्यसीतलचित ॥ ममचिंतवनन्हदैहढव्रत ॥२९॥ ताकों

दसौंदिशासुपरूप ॥ सोसुपजोआतिररमअनूप ॥ जोजनमेरैंसूषकौंजानैं ॥ ताकौंमनकितहूंनाहिमानैं ॥
॥ ३० ॥ ताकैंसबआधीनहिंरहैं ॥ परिसोमोबिनकछुनगहैं ॥ ब्रह्मलोककौंकदेंनलेवें ॥ इंद्रलोकपल
चितनदेवैं ॥ ३१ ॥ सबभूराजनेननहींदेपैं॥सप्तपातालसुषत्रणकारिलेसैं ॥ जोगसिधीआणूमादिकअष्ट
॥ जोगीजनहितसाधेकष्ट ॥३२॥ तिनहूंकोंकबहूंनहींलेई॥आपुहूतेंतिनसेंबेतेंई ॥मुक्तिनिकटहिंरहैंसदाई
परिमेरो जनछूवेंनकाई ॥३३॥ मेहीएकसदाप्रीयताकौं॥ममचर्णनिचितरातोजाकौं॥तांहितैंमेरोप्रियसोई॥
ताबिनऔरप्रियनहींकोई ॥ ३४ ॥ त्यौंमेरोसुलविधिनहींप्यारौ ॥ नहींसंकरज्यौंरूपहमारौं ॥ नहींप्रिय
त्यौंसंकर्षणभाई ॥ श्रीअर्धंगात्यौंनहीसाई ॥ ३५ ॥ योंनहींप्रियमेरेममदेह ॥ जेसोतुमसोंपरमसनेह ॥
तुमसेंभक्तमहाप्रीयमेरें ॥ ताकौंरहोनिरंतरनेरें ॥ ३६ ॥ इछारहीतअरुसीतलहृदय ॥ समनिरवैरस
बनिपरिसूहृदय ॥ ब्रह्मदृष्टिदेषेसबमांहीं ॥ ब्रह्मविचारतजेपलनाहीं ॥ ३७ ॥ मैंताकौंप्रथमयोंकरौं ॥
त्रिगुणपासबंधनविस्तरों ॥ परिताकौंएसोबलभारी ॥ काटीमायाशक्तिहमारी ॥ ३८ ॥ एतपरिसब
औगुणतजैं ॥ उलटीआईममचर्णनिभजें ॥ अरुसबसुपताकेंवसरहैं ॥ सोतजिमोहीकछूनगहैं ॥ ३९
॥ बहूतिनकेभवबंधनदहैं ॥ नामप्रगटकरिमेरौकहैं ॥ तिनतिकौंममचर्णनिल्यावैं ॥ सदासबनितैंआपुछि
पावें ॥ ४० ॥ अहंकारममतानहींआनै ॥ मोहिंछोडिदूजोनहींजानें ॥ गुणातीतताजनकेंपाछें ॥ यहतन
धारिफिरोमेंआछें ॥ ४१ ॥ सातिकगुणधारीयहदेह ॥ करौंसूधताचर्णनिपेह ॥ निहकंचनतनहूंनाहिर

क्त ॥ मोहिसोंतिनहींअनुरक्त ॥ ॥ ४२ ॥ सीतलहृदयविगतअभिमाना ॥ कृपावंतसबएकसमाना॥ केहूंकामचलेंनहींबुधी॥ मोहीसेईपाइअतिसूधी॥ ४३॥ मुक्तिहुतेंनिस्प्रेहरहैं॥ तेजनमेरेंसुषकौंलहैं॥ तासुषकैंसुषजानेंतेई॥ औरसकलसमझेंनहिंकेई॥ ४४॥ निस्पृहजननिस्पृहसुषपावैं॥ स्पृहावंतकेनिकटनआवै॥ विषयसुपनिकैंवसमानवहोई ॥ इंद्रियजीतसकेंनःहिंकोई ॥ ४५ ॥ परिआधीनहोईममजबहीं ॥ विषयकछुनसकैंकरितबहीं ॥ विषयशत्रूमेंसकलनिवारौं ॥ आपमिलाऊंभवभयटारों॥ ४६॥ पावकप्रगटकऱ्यौलेअस्म ॥ होईप्रचंडकरैंसबभस्म॥ त्यौंममभक्तिप्रगटजोहोई ॥ जारेंपापरहैंनहींकोई ॥ ४७ ॥ बहूरिपापकोंनिकटनआव भक्तिप्रतापमोहिसोंपावें ॥ सोंधेंसिधजोगअष्टांग ॥ बहुविधिजज्ञहोईजोसांग ॥ ४८ ॥ सांख्यविचारसकलसोजानें ॥ बेदपढेंदेवेंबहूदानें ॥ तपहिकरेंइंद्रियमनबांधैं ॥ औरसकलधर्मानिकोंसाधैं ॥ ४९ ॥ तोहूंमोहिंकदेंनहींपावें ॥ भक्तिमोहिततकालमिलावैं ॥ एकमोहिभक्तिबसकरैं ॥ दूजेंतेंअतिअंतरपरैं ॥ ५० ॥ श्रद्धासहितकरेममभक्ति ॥ तासोंमेरीअतिआशक्ति ॥ मेंब्रह्मादिकसकलकोईस ॥ मोबिनऔरसकलअनीस ॥ ५१ ॥ सोमेंभक्तनकेआधीन ॥ तोमोसोंज्योंजलसोंमीन ॥ जोचंडालभक्तिमेंआवैं ॥ ताहीतननिरमलतापावैं ॥ ५२ ॥ वर्णआश्रमवंदनकरैं ॥ तापदरेणुसीसपरधरें ॥ तीनोंभवनदासबसताकैं ॥ मेरिभक्तिविराजैंजाकैं ॥ ५३ ॥ विद्यापढैंधर्मबहूकरैं ॥ जीवदयाबहुविधिविस्तरें ॥ सत्यवंतअरुदृढसंतोष ॥ कबहूंकहुकरैंनहिरोष ॥ ५४ ॥ कष्टसहितपरणतपसाधैं ॥

मनईंद्रियदेहादिकबांधें ॥ तीरथवृतानिआदेदेजेतें ॥ सबआचरणंकरैजोततें ॥ ५५ ॥ परिजोमेरीभ
क्तिनहोई ॥ तोनिरमलनहींहोवेकोई ॥ बिनरोमेंचद्रवेविनचित ॥ आनंदाश्रुकलाविनानित ॥ ५६ ॥
॥ तोतेंसाधभक्तिनहींकहें ॥ भक्तिविनाउरसुधनलहें ॥ द्रवेप्रेमतोजाकोंचित ॥ कबहूंरोवेमेरेहित ॥
॥५७॥ कबहुंगदगदवाणीहोई ॥ कबहुंउंचैगावैसोई ॥ कबहुंमधुरमधुरसुरगावें ॥ कबहुंप्रेममगनर
हिजावें ॥ ५८ ॥ कबहुंनृत्यप्रेमवसकरैं ॥ कबहुंहसेंगुणनिविस्तरें ॥ लोकवेदकीलाजनजानें ॥ ज्योंउ
नमतसकलयोंठानें ॥५९॥ जैएसोमेराजनहोई ॥ त्रिभुवनसुधकरतहेंसोई ॥ सकलभुवनकेपापनिवारैं
॥ सकलभुवनकोंसोजनतारैं ॥ ६० ॥ जैसेंहेममलीनताहोई ॥ बहुजलमाहिधोईजेंसोई ॥ औरहिज
तनबहुतविधिकीजें ॥ हेमहींबहूकसोटीदीजें ॥ ६१ ॥ परिकेईबिधिशुद्धनहोई ॥ कोटिजतनकरैजोको
ई ॥ सोईहेमअग्निमेंदीजें ॥ देकरिफुंकतमअतिकीजें ॥ ६२ ॥ तातेंकोईमलनहींरहें ॥ अपनेंसुध
रूपकोगहें ॥ त्योंहीजतनकरैबहुकोई ॥ परिआतमानिरमलनहींहोई ॥ ६३ ॥ मेरीभक्तिमांहिजबआ
वें ॥ तबसबकर्ममेलिछिटकावें ॥ निरमलहोईलहेंनिजरूप ॥ पावैमोहितजेंभवकूप ॥ ६४ ॥ ज्योंज्योंमे
रीभक्तिकरें ॥ मेरेंगुणनित्हदयमेंधरें ॥ श्रुवनकीरतनसुमरनठानें ॥ ज्योंज्योंऔरवासनाभानें ॥ ६५ ॥
त्योंत्योंत्हदयप्रकाशेज्ञान ॥ देषेंब्रह्ममिटसबआन ॥ द्वैतभावकतहूंनहींरहें ॥ निरभयानिजानंदपदलहैं ॥
॥ ६६ ॥ नेननीमांहींरोगज्योंहोई ॥ तातेंकछुनदेषेंसोई ॥ पुनिज्योंज्योंओषदाहिंलगावें ॥ त्योंत्योंदृष्टि

होतनितआवै ॥ ६७ ॥ त्यौंत्यौंवस्तुसकलकौंदेषैं ॥ आपुहिपरमसुषीकरिलेषैं ॥ तातैंभक्तिरूपदृढअं
जन ॥ जातैंदेपैंदेवनिरंजन ६८ ॥ जोसंसारसुपनिकौंध्यावैं ॥ सोसंसारमाहिंवहिजावैं ॥ अरुजोध्या
वैमेरेरचना ॥ पावैमोहिमिटैभवमरना ॥ ६९ ॥ तातैंसवसाधनभ्रमजांनैं ॥ सुपनसमानद्वैतसवमानों
मनवचक्रमसकलकौंत्यागों ॥ निशदिनममचर्णनिअनुरागों ॥ ७० ॥ जोयाभवहींचहैंछ्टिकायौ ॥ आ
रूचाहेममचर्णनिआयो ॥ तेतिनकीसंगतिपरिहरै ॥ जेनरजुवतिसौंवातांहिंकरैं ॥ ७१ ॥ जुवतिसुष
सुननेंहीश्रवनां ॥ नेननदेपैंकरैंनहींगवना ॥ कवहूंभुलिहृदैनहींआनैं ॥मनक्रमवचनानिरंतरभानैं ॥७२॥
ऐसौंवंधनकहूंनहोई॥कोटिसंगकरैंजोकोई॥ज्यौंज्योंषितअरुजोषितसंगी॥वंधनकरैंहोतप्रसंगी॥ ७३ ॥
तातैंतिनकीसंगतितजैं॥सावधानममचर्णनिभजैं॥निरभयठोरकरैंअस्थान॥मोबिनसंगतजैंसवआना ॥७४
॥मेरोध्याननिरंतरकरैं ॥ प्रेमसहितहृदेमेंधरैं ॥ कृष्णवचनसुणिहृदयेराषैं॥ उद्धवऔरप्रश्णकौंभाषौं ॥
॥ ७५ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुतुमहिंकोनाविधिध्यावैं ॥ कौनरूपमेंचितलगावैं ॥
मेतोमुगतसेईतुवचरना ॥ परिजोचहैंमिटायौमरना ॥ ७६ ॥ कृपासिंधुतुमकरुणाकरौ ॥ ध्यानजोगवा
निविस्तरौं ॥ सुनिउद्धवनिजजनकीबांनि ॥ तवश्रीहरिजीआपुवषानी ॥ ७७ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच
॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवतोकूंध्यानसुनाऊं ॥ जोगसहितसवअंगवनावूं ॥ जोगसहितजोध्यानांहिंकरैं
तोमनवेगरजतमपरिहरौं ॥ ७८ ॥ समआसनमेंआस्थिरहोई ॥ जघनिपरिरापेंकरदोई ॥ देहसमानच

इंडापूरिकुंभकस्थिरधारैं ॥ पुनिरेचकपिंगुलानिसारैं ॥
लैनहिंदोलैं ॥ नासादृष्टिकछुनहिंबोलैं ॥ ७९ ॥ इंद्रियअर्थसकलपरिहरैं ॥ मेरौहेतत्दृढमेधरैं ॥
बहुरौंपूरिपिंगुलाद्वार ॥ इडानिसारैंवारंवार ॥ ८० ॥ मंत्रसहितसोनामसगर्भ ॥ मंत्रबिनासोंकहींये
उद्धवद्वैविधिजोगकहावैं ॥ तातेंभेदसतगुरुतेंपावैं ॥ ८१ ॥ पूरैंराषैंरेचककरैं ॥ ओंकारमंत्रउरध
अगर्भ ॥ तातैंसोसगर्भसैंनाम ॥ सोउत्तमहैंप्राणायाम ॥ ८२॥ यौंत्रिकालअभ्यासैंकोई ॥ प्राणमा
रैं ॥ घंटानादतूलउरध्यावैं ॥ तासौंमिलिकरिप्राणचलावैं ॥ ८३ ॥ उंधेमुषसौंउर्द्धहोंक
सहींमैंस्थिरहोई ॥ बहूरौंत्दृदयकमलकोंध्यावैं ॥ अष्टपाषरीसौंविगसावैं ॥ ८४ ॥ अनलमध्य
रैं ॥ ताकेमध्यसूर्यहींधरैं ॥ सूर्यमैंपूरणससिआनैं ॥ शशिमैंअनलतेजमयजानैं ॥ ८५ ॥अतिसीतलसुषदानअनूप ॥
ममरूपहींध्यावैं ॥ परमप्रीतसैंमनहींलगावैं ॥ अंगुष्ठसमानचतुर्भुजरूप ॥ मकराक
८६ ॥ नूतनसजलमेघतनस्यांम ॥ तडिततूलअंबररुचिधाम ॥ मंदहाससोभानिधिआनन ॥ शंखअरुच
तकुंडलसुभकानन ॥ ८७ ॥ कंठेकौस्तुभमणिवनमाला ॥ उरभृगुलतालक्ष्मीविशाला ॥ अतिसोभायमानोंसि
क्रगदाअरुपद्म ॥ हस्तचारसोभाअतिसद्म ॥ ८८ ॥ हेममुगुटहीरामनिजर्यौ ॥ करकंकनअंगदमुद्रिका ॥
रधर्यौ ॥ भालतिलकअंबुजवरनैंन ॥ भक्तप्रसादसुधाकोअयन ॥ ८९ ॥ नषमणिग
पगनूपुरकटिमेक्षुद्रिका ॥ अंकुशवज्रध्वजाअरुबिंद ॥ चिन्हतचरणहरणदुषदंद ॥ ९० ॥ जिनकेध्यानमिटैंसबदूष
णकीप्रभाप्रकास ॥ उरअज्ञानअंधतमनास ॥ औरसकलअंगनिसबभूषन ॥

न ॥ ९१ ॥ वयकिसोरपरसकुमार ॥ नपासिरवध्यावैंवारंवार ॥ चर्णनितैंप्रतिअंगहींध्यावैं ॥ एकग
हैंएकहींछटिकावैं ॥ ९२ ॥ यौंलेनपतैंशिपापरजंत ॥ निसदिनत्हदयध्यावैंसंत ॥ औरवासनासबपरिह
रैं ॥ मेरोरूपअडिगमनधरैं ॥ ९३ ॥ याविधिमनजबनिहचलहोई ॥ तबफिरिअंगनध्यावैंकोई ॥
अतिसुंदरसुपमैंमनधारैं ॥ औरसकलचिंतवननिवारैं ॥ ९४ ॥ याविधिमनअपनेवसहोई ॥ तबविराट
मेधारैंसोई ॥ सकलविराटरूपममजानैं ॥ मोतैंभिनकछुनहींमानैं ॥ ९५ ॥ योविराटममरूपहींजा
नैं ॥ निहचलभयोभेदकौंभांनै ॥ तबताहूतैंमनहिनिवारैं ॥ शुद्धनिरंजनब्रह्मविचारैं ॥ ९६ ॥
ब्रह्मविचारनिरंतरकरैं ॥ सबआकारदूरिपरिहरैं ॥ आतमब्रह्मएककरिदेषैं ॥ चैतनरूपअखंडि
तलेपैं ॥ ९७ ॥ निजानंदनिहचलनिरधारा ॥ सत्यस्वरूपवारनहींपारा ॥ एकअजन्माआपैंआपु ॥ सु
षदुषरहीतपुन्यनहींपापु ॥ ९८ ॥ कालनकर्मजविनहींमाया ॥ आपैंआपनिरंजनराया ॥ जैसैंअग्निअ
खंडितहोई ॥ तातैंउठेपतंगासोई ॥ ९९ ॥ बहुरिअग्निमांहींसमावैं ॥ तबहिपतंगानामगवावैं ॥ ऐसें
आतमब्रह्मविचारैं ॥ एकजानिकरिद्वैतानिवारैं ॥ १०० ॥ ऐसीभांतिविचारहिंकरतैं ॥ निसिदिनिब्रह्म
विचारमनधरतैं ॥ त्रिगुणाकारसकलभ्रमभागैं ॥ होईब्रह्मसोवतज्यौंजागैं ॥ १ ॥ ह्वैकरिब्रह्मब्रह्मग
लिजावें ॥ जहाहूतैंबहुरिनहींआवैं ॥ ऐसीविधिभवदुषनिदहैं ॥ मेरोनिजानंदपदलहैं ॥ १०२ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ यहपेंडोतोसोंकह्यौंजाकरिहारीरिपुजाई ॥ पारियामैंबहुविघनहैंतैंभाष्यौसमुराई ॥ १०३

॥ ॥इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशास्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४
॥ ॥दोहा॥ ॥कह्योंपंदरहीध्यायमेंसिद्धिधारणाधार ॥ परमज्ञानमेंउपजेंअंतरायतिनलार ॥१॥
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवजोगपंथसमुजाउ ॥ तातेंबहुतविघ्नबताउ ॥ जोइंद्रिय
मनप्राणाहिंबाधें ॥ सावधानव्हैजोगहिसाधें ॥ १ ॥ मोमेंधरेंआपनोचित ॥ ताकोंसिद्धिविघ्नहेंनित ॥ जो
तिनसिद्धिनिकोंपरिहरें ॥ सोममचर्णनिकोंअनुसरें ॥ २ ॥ तिनसोंकबहूरहेभुलाई ॥ तोश्रमसकलवृथा
हिजाई ॥ असैंकृष्णवचनउरधारें ॥ उद्धवकीनोप्रश्णाविचारें ॥ ३ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चो
पाई ॥ ॥ केइप्रकारधारणादेव ॥ शिद्धिनकोंकेईविधिभेव ॥ तिनकेनामकृपाकारिकहों ॥ जोगीनि
केविघ्ननिकोंदहों ॥ ४ ॥ तुमआधीनसिद्धिहेंसकल ॥ तुमरेकृपातेंहोइअकाल ॥ उद्धवप्रश्णइहेंअधा
री ॥ तबबोलेगोपालमुरारी ॥ ५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवसिद्धिअठा
रहकहीयें ॥ ममधारणाकरेतेंलहीयें ॥ तिनमेंअष्टसिद्धिप्रधान ॥ दशमध्यमतेंकरोंबषान ॥ ६ ॥ जातें
देहरूपअरुहोई ॥ कतहूंनहींआवरनकोंई ॥ अणुमासिद्धिनामयहजानों ॥ महामोहनीमायामानों ॥ ७॥
जोतनकरेंमहाविस्तार ॥ जहांतहाकछुवारनपार ॥ महीमानामसिद्धिसोंकहीयें ॥ कबहूताकोंभूलनगहीयें
॥ ८ ॥ चोयहदेहहिंअतिलघुकरें ॥ मुष्टिनआविंदष्टिनपरें ॥ सोयहलघुमासिद्धिकहावें ॥ ममजनयाकेंनि
कटनआवें ॥ ९ ॥ जेजेइंद्रियभोगनिकरें ॥ जहांतहांविषयनिस्तरें ॥ तिनसबभोगनिजाकारिलहियें ॥

प्रापतनामसिद्धिसोंकहीयें ॥ १० ॥ एकठौरनिवैठारहै ॥ देषैसुनेसकलकौकहै॥ताहिअगोचररहैनकाई ॥ सोप्रकासकासिद्धिकहाई ॥ ११ ॥ इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ तिहुंलोकजिनकौंजुस्थान ॥ तिनकौंयौं प्रेरेज्योंजानैं ॥ ताहिईसतासिद्धिवषानैं ॥ १२ ॥ विषयसुषनिकौंकदैंनगहैं ॥ जातैंअतिआनंदितरहैं ॥ नामअवसितासिद्धिकहावैं ॥ मेरोभगतनिकटनआवैं ॥ १३ ॥ जोजोइच्छामनमेंल्यावे ॥ सोसोसकल फलकमेपावें ॥ वासितानामासिद्धिहैसोई ॥ मेरोजनअदरैनकोई ॥ १४ ॥ अष्टसिद्धिएअतिप्रधान ॥ इनतेंमध्यमभापौंआन ॥ तिनकेगुणव्यापैंनहीकोई ॥ नामअनुरमीकहीयैंसोई ॥ १५ ॥ दूरश्रवनसुने सबवेन ॥ दूरदरसदेपैंसबनेन ॥ मनकेवेगमनोजवध्यावैं ॥ कामरूपबहुरूपवनावैं ॥ १६ ॥ परकेतन मेंकरेंप्रवेस ॥ सिद्धिछठीप्रकायप्रवेस ॥ निजइच्छातैंतजैशरीर ॥ सोस्वच्छंदमृत्युहैवीर ॥ १७ ॥ मिल अपसरानिविचरेदेवा ॥ देषैतिन्हैंहिंलहैंसबभेवा ॥ सोस्वरक्रिडादरसनकहीयैं ॥ मिथ्याफलहैंकदैंनगही यें ॥ १८ ॥ जोसंकलपकरेसोहोई ॥ जथासंकलपीकहीयैंसोई ॥ जहांगयौंचाहैंतहांजावैं ॥ अप्रतिह तगतिसिद्धकहावैं ॥ १९ ॥ एदशमिलिअष्टादशकहीयैं ॥ औरैपंचतुछनहींगहीयैं ॥ वरतमानअरुभू तभाविष्य ॥ सबकछुजानैंलिष्यअलिष्य ॥ २० ॥ यहहैसिद्धित्रिकालज्ञान ॥ आगेंसिद्धिवषानौंआन ॥ सीतऊष्णआदिकजेद्वंद्व ॥ तिनहीजेनिवारैंसोअद्वंद्व ॥ २१ ॥ विषअरुअग्निसूर्यजलथंभा ॥ जातेंहोवे ईसोअचंभा ॥ प्रतिष्ठंभसोसिधीकहावै ॥ हरिजनताकेंनिकटनआवै ॥ २२ ॥ वेअष्टादशअरुएपंच ॥

मिलितेंईससकलप्रपंच॥एमेंमूलरूपउचारी ॥ साषाबहुतनहींविस्तारी ॥ २३ ॥ ममधारणाकरेतेंआवें ॥ जोगिनकौंबहूविधिचलावें ॥ जोतिनतेंबेचलेनकबहीं ॥ तोममचर्णनिपावेंतबही ॥ २४ ॥ जोधारणा तेंजोआवें ॥ एसेंजोगीकूंविचलावें ॥ सोसबउद्धवतोसोंकहौं ॥ जोगपंथकेविघ्ननिंदहौं ॥ २५ ॥ सगुणरूपजोकछुविस्तारा ॥ सोनानाविधरूपहमारा ॥ ताहिताहिमांहिंमनलावें ॥ तेसीतैसीसिद्धिहिपावें ॥२६॥ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधा ॥ पंचभूतकेसूक्ष्मबंधा ॥ तिनमैंजाजामेंमनलावें ॥ ताताकेरूपहीमिलिजावें ॥ २७ ॥ महत्तत्वकेमनहिंलगावें ॥ पंचभूतसाषाकरिध्यावें ॥ जाजासाषामैंमनधारें ॥ ताहिंतासमदेहनधारैं ॥ २८ ॥ पंचभूतकेजेप्रमानु॥तिनमेंजोगीधारेध्यानु ॥ तातासमलघुदेहहींकरें ॥ कहूंसौंकहूंगह्योंनपरे ॥ २९ ॥ सातिकअहंकारमनधारैं ॥ ताकोंमेरोरूपविचारें ॥ तबजेइंद्रियभोगनिकरें ॥ बहूतभांतिविषयनिस्तरें ॥ ३० ॥ तेतेसुषएजोगीपावे ॥ सोवहप्रातीसिद्धिकहावे ॥ मेरोसूत्ररूपमनिआनें ॥ तातेंत्रिभुवनकीगतिजांनें ॥ ३१ ॥ ज्यौंकरदीवालेकरदेषें ॥ योंत्रिभुवनअचर्णनिपेषें ॥ मेरेंकालरूपमनधारें ॥ सबव्यापकसबईसविचारें ॥ ३२ ॥ तातेंसिद्धिईसतापावें ॥ त्रिभुवनजानेंत्योंवरतावें जोदासोंजोईकरवावें ॥ ताकेअंतरज्योंउपजावें ॥ ३३ ॥ आदिपुरुषजोमेरोरूप ॥ तामेंधारेंचितअनूप ॥ तातेंसिद्धिअवसितापावें ॥ विषयानिचितआनंदबढावें ॥ ३४ ॥ निरगुणब्रह्ममाहीमनधारें ॥ सबकरतासबईसविचारैं ॥ तातेंबसितासिद्धिहिलहैं ॥ सोईसोपावेंजोचहैं ॥ ३५ ॥ शुद्धसत्वमेमोहिविचारे

॥ तामेंजोगीमनकोंधारै॥तातेंसुधआपुहिंहोई॥षटउरमीयापैनहींकोई॥ ३६ ॥गगनाधारप्राणमनधारैं॥
शब्दरूपउरमांहिविचारैं ॥ तबजहांलागेपवनआकाश ॥ सुनेंतहांलौंवचनानिवास ॥ ३७ ॥ नैनानिमैसु
यकोंधारें ॥ अरुसुर्यमेंनैंनाविचारैं॥ अप्रछन्नमोहिकोंलेषें ॥ तबसोतिहुंलोककूंदेषें॥ ३८ ॥ पवनसाहि
तमोमेंमनधारैं ॥ जहांतहाममरूपविचारैं ॥ ऐसेंमनकौंजहाचलावें ॥ मनकेवेगतहांउपजावैं ॥ ३९ ॥
सारेमेंरेरूपाविचारैं ॥ तिनहीतिनमेंमनकोंधारैं॥चाहेंभयोरूपतबजोई ॥ वारनलागेंहोवेंसोई ॥ ४० ॥ क
न्योंप्रवेसाहिंचाहेंजामें ॥ ध्यानआपुनौआनैतामें ॥ तबतातनमेंजावेंएसें ॥ भृंगफूलतेफूलहिजैसें ॥ ४१ ॥
मूलद्वारपगवंधलगावें ॥ प्राणचलाईसीसेंमल्यावें॥ ब्रह्मरंध्रहैगौनाहिंकरैं॥ जोमनहोईतांहिंअनुसरैं॥४२
॥ स्वर्गदेवसुरबनिताध्यावें ॥ मेरोरूपजानिमनल्यावें ॥ तबतेसाहिताविमानहिंआवें ॥ तेजोगीकूंसूखउप
जावें ॥ ४३ ॥ जोजोवस्तुदेमेंधारैं ॥ ताताकोंप्रभूमोहीविचारैं ॥ सोईसोपावेततकाल ॥ जबहींचा
हेंकालअकाल ॥ ४४ ॥ सकलानियंतासबकौईस ॥ निल्यस्वाधीनसकलकेसीस ॥जोगीएसेंमेकोंध्या
व ॥ ताकोआननिकोईमिटावें ॥ ४५ ॥ ज्ञानरूपसबअंतरजामी ॥ ध्यावैंमोहिसकलकौंस्वामी ॥ अप
नीजानैजन्ममरनकी ॥ ज्ञानत्रिकालअरुसबकेमनकी ॥ ४६ ॥ प्रकृतिगुणनितेंन्यारोंजानौ ॥ असाति
नकोंस्वामीकरिमानौं ॥ ध्यावैंमोहिसदाअद्वंद्व ॥ तबकोइनहींव्यापैफंद्ध ॥ ४७ ॥ सबमेंव्यापकसकलअ
तीत ॥ छिपेनसरअगिनजलसीत ॥ एसोमोकोंध्यावैंकोई ॥ ऐसोलक्षणपावेंसोई ॥ ४८ ॥ जेमेरेअव

तारानिध्यावैं ॥ आयुधछत्रचामरमनल्यावैं ॥ ताकौंकहौंनपराजय्यहोई ॥ सबहिनमांहिविराजेसोई ॥४९॥ यौंधारणाकरैममजोई ॥ सिद्धिनपावैजोगीसोई ॥ परिहैअंतरायींहैंसारैं ॥ मेरेभक्तिानिदूरनिवारैं ॥ ५० ॥ मोतेंएइनतेमैनाहीं ॥ तातैममजननिकटनजांहीं ॥ मोहिनलहैंइनहींजेलैवैं ॥ मोहिभजेतिनकौंएसेवैं ॥ ५१ ॥ मोहितेंउतपतिसबइनकि ॥ प्रेमतिपालकरौंतिनतिनकी ॥ ममआधीनासिद्धिअरुजोग ॥ सांष्यअरुज्ञानधर्मधनभोग ॥ ५२ ॥ सबकौंजनकसकलकौंस्वामी ॥ मेसबइनकौंअंतरजामी ॥सबमेबाहरभितरएक ॥ मोमेंवरतेंसकलअनेक ॥ ५३ ॥ पंचभूतसबभूतनिमाहीं ॥ बाहिरभिंतरदूजानाहीं ॥ त्योंसबमेहीनाहींआन ॥ आनदृष्टिसोईअज्ञान ॥ ५३ ॥ तातैंद्वैतभावनहींआनैं ॥ मेरोरूपसकलकरिमानैं ॥ साधनासिद्धिसकलभ्रमतजैं ॥ मेरेचर्णनिरंतरभजैं ॥ ५५ ॥ ममप्रसादममचर्णनिपावैं ॥ अतिअपारभवदुषमिटावैं ॥ यहमैंतोसौंभाष्यौज्ञान ॥ यातैंऔरसकलअज्ञान ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ एकब्रह्मकरिदेषनौयहसुनिदुष्करज्ञान ॥ पूछिविष्णुविभूतितबउद्धवपरमसुजान ॥ ५७ ॥ ॥ इतिश्रीमागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांपंचदशोध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहतसोलमैध्यायमैंप्रगटसूपइहदेस ॥ ज्ञानवीर्यप्रभावसबवर्णनकरीविशेषे ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच॥चौपाई॥तुमहोपरब्रह्मअविनासी॥चिदानंदविज्ञानप्रकासी॥आदिअंतमध्यनहींजाकौं ॥कोईभेदलहेनहींताकौं॥१॥तुमाहिंसकलजगतउपजावौ॥ तुमप्रतिपालौतुमाविनसावौ॥तुमसबबाहिरअरुसबमांही॥ सदाअ

लितालिपीकहुंनाहीं॥२॥जहांतहांतुमहोहोएका॥इहसबभ्रमजोदृष्टिअनेका॥ हेप्रभुयहजगअतिविस्तारा॥
उंचनीचबहूविविधप्रकारा ॥ ३ ॥ अरुयाजीवसतकारिमान्यौं ॥ विषयनिसौंबहूभांतिबुधान्यौ ॥ याकेए
कदृष्टिक्योंआवें ॥ कैसेंसकलब्रह्मकरिध्यावै ॥ ४ ॥ ज्ञानवंततबजनहेंजेतें ॥ ब्रह्मदृष्टिदेषतहेंतेतैं ॥ ता
तेंअबतुमकरुणाकरौं ॥ निजविभूतिमोसौंविस्तरौं ॥ ५ ॥ तिनमेंदेषिसबनिमेंदेषौं ॥ तबअद्वैतब्रह्मकरि
लेषौं ॥ सुनिउद्धवकेउत्तमबेन ॥ बोलहरिजोकरुणानेन ॥ ६ ॥ ॥श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपा
ई ॥ उद्धवप्रश्नभलोतुमकीन्हीं ॥ जोंतपरंपरमगतिचीन्हीं ॥ यहप्रश्नअर्जुनहीकारि ॥ तासोजामेंविधि
उचारि ॥ ७ ॥ तेहीविधिअबतोहीसुनाऊं ॥ ऐसेब्रह्मदृष्टिउपजाऊं॥कौरवअरुपांडवकुरुषेत ॥ जबही
जुरेंभारतकेहेत ॥ ८ ॥तबअर्जुनकौंरबहुविषैं ॥ सकलबंधुअपनेकारिलेषैं ॥ इनसबहींनकोजोमेमारौं॥
आपुहिंआपनरकमेंडारौं ॥ ९ ॥ ऐसीविधआन्यौअहंकार ॥ आपुहिंमान्यौमारनहार ॥ तबमेंताहींज्ञा
नसमुदायौ ॥ ताकौंतबअज्ञानमिटायौं ॥ १० ॥ प्रश्नकरीअर्जुनतबएसी ॥ तुममोसोंकीनीहेंजेसी ॥
तातेंउत्तरकौंउचरौं ॥ याविधिब्रह्मदृष्टिकौंकरौं ॥ ११ ॥ उद्धवमेसबहींनकोस्वामी ॥ अरुसबहीनकौं
अंतरजामीं ॥ आपहुंतेंसबकोउपजाऊं ॥ सबपोषेंसबकौंबरताऊं ॥ १२ सकलरहैंआधीन ॥ मोही
मेसबहोवेलीन ॥ तातेंसबमेंदुजानाहीं ॥ यौंविभातेजानौंमनमांहीं ॥ १३ ॥ पारितोसोंविशेषसोंकहौं ॥ ते
रोद्वैतदृष्टिकौंदहौं ॥ सबरक्षकनिमाहिमेंरक्षक ॥ तिनमेंकालसकलजेभक्षक ॥ १४ ॥ सोमेंप्रकृतिगु

णानिकोआदी ॥ पंचभूतमेमेंभूतादि ॥ सूत्रसकलवेदनमेंजानों ॥ वडेतुमाहीमहत्तत्वहिमान्यों ॥ १५॥
सबसूक्ष्मनिमांहिजीवदेषौ ॥ सबदुर्जयनिमांहीमनलेषौ ॥ वेदयज्ञनिमांहिंब्रह्मजानौ ॥ ओंकारमंत्रनिमें
मांनों ॥ १६ ॥ छंदनिमांहीगायत्रीछंद ॥ मेंअकारअक्षरमेंवृंद॥ सबदेवनिमेंमध्यपुरंदर ॥ सकलवसू
मैमैंवेसंदर ॥ १७ ॥ नीलकंठएकादशहरमें ॥ विष्णुनामद्वादशदिनकरमें ॥ तिनमेंभृगुजेसप्तमहाऋ
षी ॥ तिनमेंमनूजेसबेराजऋषी ॥ १८ ॥ देवऋषिनिमेंनारदजांनो ॥ कामधेनुधेनुनमेंमानौं ॥ सिधनिमें
कपिलस्वरूप ॥ पंक्षीयनिमांहिगुरुडममरूप ॥ १९ ॥ प्रजापतिमेंमेंहोदक्ष ॥ तिनमेंमकरजहांलौंमक्ष ॥
वादनिमांहेंअध्यात्मवाद ॥ सबअसूरनिमेंमेंप्रहलाद ॥ २० ॥ तप्तप्रकासमांहोंदिनेस ॥ जक्षरक्षगणा
मांहिंधनेस ॥ तिनमेंसोमसकलजेउडगन ॥ सबधातूमेंमेंहोंकांचन ॥ २१ ॥ गजनिमामांहिंमेंगजएरा
वत ॥ मेंअनंगजेसृष्टिउपजावत ॥ तहांवरूणाजेसबजलजंत ॥ नागनिमेंममरूपअनंत ॥ २२ ॥ नरनि
माहिंममरूपनरेस ॥ सर्पनिमांहिंवासुकीसर्पेस ॥ उच्चैःश्रवाहयनिमेंजानौं ॥ दंडधरनीतिनमेंजममानौ ॥
२३ ॥ सकलमृगनिमेंमेंमृगराज ॥ सारितनमेंगंगासरिताज ॥ सबआश्रमनिमांहिंसन्यास ॥ वर्णनि
मांहिविप्रममवास ॥ २४ ॥ सकलसरनमेंरूपसमुद्र ॥ सकलधनुषधारीनमेंरुद्र ॥ मेहोधनुषआयुधनिमा
हीं ॥ परमनिवासमेरूमोमांहीं ॥ २५ ॥ तेअतिगहनहिमालयतिनमें ॥ मेंपीपलसबवनस्पतिनमें ॥ मेंपुरो
हित्तनिमांहीवासिष्ठः ॥ तहांवृहस्पतिजेअधिष्ठः ॥ २६ ॥ सेनापतिनमांहिंसेनानी ॥ धरमप्रवृत्तकसौब्रह्मा

जानी ॥सकलऔषधीनमैंजवजानौं ॥ पितरनिमांहींअर्यमामानौ ॥ २७ ॥ ब्रह्मयज्ञसबयज्ञनिमांही ॥ वृत
अद्रोहसमाकोंनाहीं ॥ वायूअग्निजलसूर्यवांनीं ॥ अरुमनएपटसोधकजांनी ॥ २८ ॥चतूरदेहआतमा
विचार ॥ ब्रह्मचारीनमेंसनतकुमार ॥ अस्त्रिनुमेंसतरूपारानीं ॥ पुरुषनिमेंस्वायंभूजानी ॥ २९ ॥ साव
धानातिनमेंसंवत्सर ॥ अभयठौरातिनमेंउरअंतर ॥ मेहोधर्मअभयकोंदान ॥ गुह्यनमेंप्रियमोनसमान ॥
३० ॥ त्रीयापुरुषसंजोगीजेतें ॥ ब्रह्माहूतेंउतरेसबतेतें ॥ सकलवानरनिमैंहनुमंत ॥ ऋतुनिमांहिममरूपव
संत ॥ ३१ ॥ मारगशिरमासनिमैंजानौं ॥ नक्षत्रमांहींअभिजितमानौं ॥ देवलअसीतरहितजेदुंदर ॥
कनलकौंससबहिनमैंसुंदर ॥ ३२ ॥ जुगनिमांहींसतजुगसेंनाम ॥ वेदनिमांहिवेदमेंसांम ॥ व्यासनमांही
व्यासद्वैपायन ॥ तिनमेंतुमजेंविष्णुपरायण ॥ ३३ ॥ कविनिमांहींकविशुक्रहिंजानौं ॥ सक्तिवंतममयहत
नमानौं ॥ विद्याधरातिनमेंसुदरसन ॥ पद्मरागतिनमेंजेमणीगन ॥ ३४ ॥ सबतृणजातिनमैंकुसजांनौं ॥ हो
मवस्तमेंगोघृतमानौं ॥ तिनमैंधनजेसबव्यवसाय ॥ जयमार्गसबतिनमेंन्याय ॥ ३५ ॥ अंगसमाधीजो
गअंगनिमें ॥ मेहोक्षमाक्षमावंतातिनमैं ॥ धीरजमेंधीरजवंत ॥ मैंबलतिनमेंजेबलवंत ॥ ३६ ॥छलहींमां
हींछलमेहोजुप ॥ मेरेहेतकर्मममरूप ॥ वासुदेवसंकरषणवीर ॥ प्रद्युम्नअरुअनिरुद्धसरीर ॥ ३७ ॥
नारायणहयग्रीवमहीधर ॥ नरहरिअरुजमदग्निपुत्रवर ॥ व्यूहार्चननवपूजाजांनैं ॥ वासुदेवतहामोकौंमानैं
॥ ३८ ॥ तिनमैंथिरताजेसबभूधर पूरवाचितनामतेअप्सर ॥ मेहोविश्वावसुगंधर्व ॥ धरणीमांहींगंधमेंसर्व

॥ ३९ ॥ रसजलमांहिशब्दआकाश ॥ रविशशितारनिमैंपरकास ॥तेजस्वानिमाहींपाकजानौं ॥ विप्र
भक्ततिनिमैंबलीमानौं ४० ॥ वीरनुमांहिंअर्जुनसार ॥ मैंसबउतपतिथितीसंसार ॥ इंद्रियमनबुध्यादिक
जेतें ॥ मेरीशक्तिप्रवृतेतेतैं ॥ ४१ ॥ सबहेतूंहैंअर्थानिगहौं॥ तेजडातिनमैंचेतनरहौं॥शब्दस्पर्शरूपरसगं
ध ॥ तिनमैंपंचभूतसंबंध ॥ ४२ ॥ इंद्रियमनमहतत्वअहंकार ॥ त्रिगुणसहितएप्रकृतिविकार ॥ प्रकृ
तिपुरुषजहांकछुजेतौं ॥ मेरोरूपसकलहैतेतौं ॥ ४३ ॥ मोबिनकछुकछुहैनाहीं ॥ मेहीप्रगटरहौंसबमां
हीं ॥ जोप्रमाणगिणोमैंजबहीं ॥ तोतिनपारनपामोंतबहीं ॥४४॥ परिममनिरमितजेब्रह्मांड ॥ तिनकौंगन
तपैंनहींषंड ॥ तातैंकहौंविभूतिकहांलौं ॥ जोकछुमेरोरूपहैतहांलौं ॥ ४५ ॥ औरअबजुगतिविभूतिक
हौं॥द्वैतदृष्टिएसीविधिदहौं॥लाजतेजक्षमाधनदान॥सुंदरताऐश्वर्यअरुज्ञान॥४६॥बलसौभाग्यधीरजजहां
जहां॥ममविभूतिजानौतहांतहां॥एविभूतितोंसोंकछुकहीं॥अतिअपारकहिवेकोंरहीं॥४७॥ममथिरकाजकी
रयहजानौं ॥ इहअज्ञानकैंढमतिमानौं ॥ इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ निश्चलकरिदेषोभगवान ॥४८॥ मन
तेंसबआकारउतारौ ॥ चेतनमेंरोरूपबिचारौं ॥ एकअखंडितजहांतहांसोई ॥ आपापरदुजानहींकोई
॥ ४९ ॥ ऐसोंज्ञानब्रह्मकौपावौं ॥ ब्रह्महीपाईजगतनहींआवौं ॥ तनमनइंद्रियादिअरुप्राना ॥ थिरकरि
जिननधर्यौममध्याना ॥ ५० ॥ ताकेबहुतभांतिआचरना ॥ जपतपदानव्रतादिककरना ॥ काचेकलश
भर्यौजलजैसें ॥ पलपलश्रविजावेंसबतैसैं ॥ ५१ ॥ तातेंवचनकायमनप्राण ॥ सबकौंबंधकरेंममध्या

न ॥ मोहिध्यायिमोंमाहीसमावें ॥ तत्रसंसारमांहीनहींआवै ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ ॥जोउद्धवतोसौंक
ह्यौंयहविभूतिकौंज्ञान ॥ त्यौंहिसूक्ष्मथूलसबदेषोश्रीभगवान ॥ ५३ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेए
कादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेविभूतिवर्णनेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ हंसउक्त
स्वधर्मपुनिभक्तिलक्षणाप्रीत ॥ कहीसतरमींध्यायमैंवर्णाश्रमकीरीत ॥ १ ॥ श्रीशुकवाच ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ दासनिमैंउद्धवनिजदास ॥ जाकेंहृदयज्ञानप्रकास ॥ जिनजीवनकीहितमनधरी ॥ तातेंप्र
श्नकृष्णसौंकरी ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रभूतुमकलआदिउचार्यौ ॥ भ
क्तिनिमितधर्मविस्तार्यौ ॥ वर्णाश्रमआदिकनरजेते ॥ तिनधर्मनिसौंलागेंतेतें ॥२॥ तिनमेंकोईभगतिहींपा
वें ॥ कोइकरमसिंधुबहिजावें ॥ तातेंतुमकरुणामयदेवा ॥ भाषोनरधरमनिकोभेवा ॥ ३ ॥ धर्मकरतज्यौं
आवेंभक्ति ॥ तुमरेंचर्णबाढेंअनुरक्ति ॥ छूटैकालजालभवकूप ॥ लहेतुमारोब्रह्मस्वरूप ॥ ४ ॥ जद्यपि
पुनिविधिसोंविस्तार्यौ ॥ जबप्रभुहंसरूपतुमधार्यौं ॥ परिबहूकालकाहितेंभयौ ॥ तातेंधर्मलीनव्हेंगयौं ॥
५ ॥ हेकछुऔरकरेंकछुऔरें ॥ जातेंजीवनपावेंठोरें ॥ तातेतुमकरुणाकरिभाषौ ॥ वहेंजाततेंजीवनिरा
षौ ॥ ६ ॥ अरुयहतुमहीजानहुदेवा ॥ तुमबिनदूजोलहेंनभेवा ॥ तुमहीकहौंसुनोउरधरौं ॥ तुमरीराषौतु
महीकरों ॥७॥ ब्रह्महूकीसभामुझारी ॥ वेदजहानितमूरतिधारी ॥ तहांऊंयहकोईनाहिंजानैं ॥ ज्यौंबदे
सोंसबैवपानैं ॥ ८ ॥ अरुयहकैसेंकरिमनआवें ॥ कर्मकरैतिहिंभक्तिपावें ॥ अरुतुमयाहीकौंमनधारौ

॥ जातेनिजधर्मनिविस्तारौ ॥ ९ ॥ जोवैकुंठप्रयाणौकरीहैं ॥यहनिजधर्मनहींउचरीहैं ॥ तापीछैंकोईनहींक
हैं ॥ यहनिजधर्मगुनहीरहैं ॥ १० ॥ तातैंअबतुमकरुणाकरौ ॥ यहनिजधरमवेगिविस्तरौ ॥ ऐसोसुनोउ
द्धवकीवानी ॥ आपजुबोलेसारंगपानी ॥ ११ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ध
न्यधन्यउद्धवजनमेरे ॥ दूजोनाहिंबराबरतेरें ॥ मेरोनिजजनकहियेसोई ॥ हेतपराएवरतेजोई ॥ १२
॥ तातैंतुमपरकारजकऱ्यौ ॥ मोतैंपरमधर्मविस्तऱ्यौ॥उत्धवपरमधरममममभक्ति॥औरसकलतैंकरौविरक्ति
॥ १३ ॥ भक्तिविनाजोईजोधर्म ॥ सोसबजानौपरमअधर्म ॥ जबमैंकीयोप्रथमसंसार ॥ तबनहींहूतो
कर्मविस्तार ॥ १४ ॥ जेईजेमानवतनधरैं ॥ मोहीसेईतेतेउधरैं ॥ है कृत्यकृत्यलहैंममधाम ॥ तातैंसो
कृतजुगसैनाम ॥ १५ ॥ उम्कारस्पतबबेद ॥ ऐसैंकछूनहूतेभेद ॥ सबइंद्रियमननिहचलकरैं ॥
मेरोध्याननिरंतरधरैं ॥ १६ ॥ ऐसैंसबपापनिपरीहरैं ॥ सबमेरेचर्णनिअनूसरैं ॥ त्रेताविषैंभयमतिमंद
विपयानितेमानैंआनंद ॥ १७ ॥ तिननिमितबहूउद्यमकरैं ॥ राजसतैंपापनिविस्तरैं ॥ तबतिनहेतबेदात्रि
स्तारैं ॥ बहुतभांतिकेकर्मनिवारैं ॥ १८ ॥ वर्णाश्रमभेदउपजाये ॥ न्यारेन्यारेकर्मग्रहाये॥ अपनौधरम
त्यागजोकरैं ॥ सोनरजाईनरकमेंपरैं ॥ १९ ॥ ऐसैंबहूविधिभयदिषायौ ॥ थोरेकर्मनिमैंठहरायौ ॥ ता
मेंपाछैउत्तमभजन ॥ मोविनसकलकर्मकौतजन ॥ २० ॥ बहूरोबहूआरंभनिचहैं ॥ राजसतैंनाहिंनिश्च
लरहैं ॥ तिनकेहेतयज्ञउपजायौ ॥ विष्णुरूपकहीसबनिसुनायौ ॥ २१ ॥ विष्णुजजनकोजेतामाहीं ॥ द्वै

तद्यपिद्याअनिर्जैनाहीं ॥ मेंमुषहूतेंविप्रउपजायौ ॥ क्षात्रिवाहुनितैंननायौ ॥ २२ ॥ जंघनवैस्यपदनतेंसूद्रा ॥
पदनिचैंयोरैंसनक्षूद्रा ॥ पुनियहस्तजंघनतेंकीयौ ॥ ब्रह्मचर्यउरसंभवलीयौ ॥ २३ ॥ वक्षस्थलउपजौव
नत्रास ॥ मस्तकहुतेंरच्यौसन्यास ॥ तातेंपितासकलमेंएक ॥ मोतेंउपज्यौसकलअनेक ॥ २४ ॥ ता
तेंमोहीमेटिजोकरैं ॥सोसबज्ञाईबंधनमेंपरैं ॥ जाजाअंगहूतेंज्योउपज्यौं ॥ त्यौंत्यौंताकौंलक्षणनिपज्यौं ॥
॥ २५ ॥ ऊंचेअंगहूतेंसोऊंचौ ॥ नीचेअंगहूतेंसोनीचौ ॥ तिनकेबहुविधिभयसूभाव ॥ तातेंउपजैंनाना
भाव ॥२६॥ समदमसतक्षमासंतोप ॥ सदादयालनउपजेरोप॥ तपअरुसौचनमृममभाक्ति ॥ इनलक्षण
निविप्रअनूरक्ति ॥ २७ ॥ क्षमातेजजलउद्यमधीर ॥ सूरउदारअचलगंभीर ॥ विप्रभक्तमेरोद्दढभाव
॥ एक्षात्रिकेभएसूभाव ॥ २८॥ बुधीआस्तिकदानअदंभ ॥ विप्रभक्तउद्यमआरंभ ॥ वैस्यभयोलीने
एलक्षण ॥ मंदबुद्धिपरमहाविचक्षण ॥ २९ ॥ गाईअरुतिहूंवर्णकोसेवैं ॥ तिनतैकछूलहेंसोलेवै ॥ सम
मंतोपकपटतानाहीं ॥ ऐसेंलक्षणशूद्रनिमांहीं ॥ ३० ॥ मिथ्यावादहिंसाअरुचोरी ॥ बुद्धिनास्तिकहृदैक
ठोरी ॥ कामक्रोधअरुलेभविकारा ॥ वर्णनीचकैंयहप्रकारा ॥ ३१ ॥ कामक्रोधमदतृष्णारहितसत्यपि
गापरस्वारथसहीत ॥ जीवदयाअरुतैंअधर्म ॥ यहसबकौंसाधारणधर्म ॥ ३२ ॥ ब्रह्मचर्यकेधर्मनि
कहीं ॥ जातेंभाक्तिउगाईचहीं ॥ विप्रक्षत्रीअरुवैस्यानिवरना ॥ इनकौंसकलवेदविधिकरनां ॥ ३३ ॥
गर्भाधानादिकसंसकार ॥ तिहूंवरणकौंयहआचार ॥ जबतैंबहूरिजनैंउपजावें ॥ तबतैंगुरुकैंनिकटरहावैं

॥ ३४ ॥ बहुविधिगुरुकीसेवाकरैं ॥ वेदपढैंअर्थनितधरैं ॥ जनेउमेषलाकरजपमाला ॥ दंडकमंडलु
अरुमृगछाला ॥ ३५ ॥ दंतवस्त्रतनमलननिवारैं ॥ सीसजटाहस्तनिकुशधारैं ॥ आसनचंचलकदै
नकरैं ॥ लोकवार्तात्हदेनहीधरैं ॥ ३६ ॥ मूत्रपुरीषत्यागअसनाना ॥ हामेअरुजपभोजनजलपाना
इनमेंबचननहींउचरैं ॥ नषकेसादिकदूरनकरैं ॥ ३७ ॥ सदानिरंतरदृढव्रतधारैं ॥ कबहूंभूलिबिंदुन
हीडारैं ॥ जोआपहूतैंजावैंकबहीं ॥ बहूतभांतिपिछतावैंतबहीं ॥ ३८ ॥ करिअसनानाअरुप्राणायाम ॥ जापक
रैंत्रिपदीसेनाम ॥ अग्निअर्कअरुविप्रगाई ॥ सुरमुनिवृद्धनिनमीनकराई ॥ ३९ ॥ संध्याउपासनकरैत्रि
काल ॥ वचननबोलेहालनचाल ॥ गुरुकौंमेरौरुपहीजानैं ॥ नरकोबुधीकदैनहींआनैं ॥ ४० ॥ सर्व
देवमयगुरुकौंलेषैं ॥ तनकेकछूआचरणनदेषैं ॥ भिक्षाआदिऔराकछुजोई ॥ गुरुकौंआनिसमर्पैसोई
॥ ४१ ॥ जबगुरुताकौंआज्ञादेवैं ॥ तबैप्रसादआपुहीलेवैं ॥ बैठैंठाढैंआवतजात ॥ भोजनसयनरांतिप्र
भात ॥ ४२ ॥ नीचभांतिगुरुसेवाकरैं ॥ अंजुलीसींपाछैंअनुसरै ॥ ऐसेव्रतअखंडितधारैं ॥ मनहूंमैंन
हींभोगविचारैं ॥ ४३ ॥ ऐसैंकुलगुरुवरतैंसोई ॥ ज्यौंलगिवेदसमापतिहोई ॥ पुनिब्रह्माकेलोकहिचाहैं
॥ तोगृहस्थतहांनहीसंबाहैं ॥ ४४ ॥ गुरुकौंदेहसमर्पणकरैं ॥ वेदविचारहृदेमेंधरैं ॥ गुरुअग्निआप
सबमांही ॥ सेवेमोहीअवरकछूनाहीं ॥ ४५ ॥ जुवतिअरुजुवतिनकेसंगी ॥ इनकौंकदैनहोतप्रसंगी
॥ दरसपरसबानीपरहास ॥ त्यागैंदुरमानिअतित्रास ॥ ४६ ॥ सौचआचमनऔरअसनान ॥ स

ध्याउपासनगतअभिमान ॥ तीर्थसेवाजपतपभिक्षा ॥ तजैंदरससंभाषणइक्षा ॥ ४७ ॥ मनअरुवचनदेह
वसकरैं ॥ मेरेचर्णत्हदेमेंधरैं ॥ अरुममभजनसवनिकौधर्म ॥ भजनविनासवधर्मअधर्म ॥ ४८ ॥ ऐसे
ब्रह्मचर्यव्रतधारी॥दृढतपनिशादिनवेदविचारी ॥ विगतपापएसोविधिहोई ॥ मेरिभक्तिलहैंतवसोई ॥ ४९
॥ ऐसीविधिभवसागरतजैं ॥ मेरेपरमरूपकौंभजैं ॥ अरुजोकवहीहोईसकाम ॥ तवसोकरैंजुवतिअरु
धाम ॥ ५० ॥ केईनिहकामगहैवनवास ॥ कैअधीकारपाईसन्यास अरुजोउपजैमेरीभक्ती ॥ तौन
हींकरैंकहूआसक्ति ॥ ५१ ॥ यहहैंब्रह्मचर्यकोधर्म ॥ जातेंदूजोसकलअधर्म ॥ अवगृहस्थकोधर्मसु
नाऊं ॥ सकलगृहस्थनिकौंसमझाऊं ॥ ५२ ॥ ब्रह्मचर्यजोनहींठरावें ॥ तोग्रहस्थाश्रममेंआवें ॥ गुरु
तेंवेदपढेसवजवहीं ॥ गुरुदाक्षिणादेवेंपुनितवहीं ॥ ५३ ॥ गुरुतेंअग्यालेउरधरैं ॥ तवविधिसोंआश्रम
हीकरैं ॥ तवदेखेंउत्तमकुललक्षण ॥ करैंविवाहात्रियाविचक्षण ॥ ५४ ॥ ज्योंदेखेंअपनोअधिकार ॥
त्योंहिकरेंव्यवहारविचारें॥विप्रविवाहहैंचारोंवरन॥विप्रकोंछोडिछत्रिकोंकरन॥५५ ॥ वैस्यविविवाहवैस्य
अरुशूद्र॥शूद्रएकहीउंचनक्षूद्र॥उत्तमसोजोएकहिकरैं॥वहुतानिकष्टनहींविस्तरैं॥५६॥श्रुतिअध्ययनजज्ञ
अरुदान॥तिहूंवर्णकौंएकसमान॥दानग्रहनजज्ञकरवावन॥अधिकविप्रकौवेदपढावन॥५७॥पारिहैतीनवृत्ति
हैऐसें ॥ अग्निमध्यजलवरपेजैसें ॥ ईनतेंब्रह्मतेंजनहींरहें तातेंइनकोंविप्रनग्रहें ॥ ५८ ॥
करिकैशिलादेहनिरवाहैं ॥ तातैंअधिककोंनहींसंवाहैं ॥ विप्रदेहपूरणतपपईयें ॥ सोविषयनिलागिनहींग

॥ ३४ ॥ बहूविधिगुरूकीसेवाकरैं ॥ वेदपढैअर्थनिउधरैं ॥ जनेउमेषलाकरजपमाला ॥ दंडकमंडलु अरुमृगछाला ॥ ३५ ॥ दंतवस्त्रतनमलननिवारैं ॥ सीसजटाहस्तनिकुशधारैं ॥ आसनचंचलकदै नकरैं ॥ लोकवार्ताह्रदेनहींधरैं ॥ ३६ ॥ मूत्रपुरीषत्यागअसनाना ॥ होमेअरूजपभोजनजलपाना ॥ इनमेंबचननहींउचरैं ॥ नषकेसादिकदूरनकरैं ॥ ३७ ॥ सदानिरंतरदृढव्रतधारैं ॥ कबहूंभूलिबिंदुन हींडारैं ॥ जोआपहूतैंजावेंकबहीं ॥ बहूतभांतिपिछतावेंतबहीं ॥ ३८ ॥ कारिअसनानाअरूप्राणायाम ॥ जापक रैंत्रिपदीसेनाम ॥ अग्निअर्कअरूविप्रगाई ॥ सुरमुनिवृद्धनिनमीनकराई ॥ ३९ ॥ संध्याउपासनकरैत्रि काल ॥ वचननबोलेहालनचाल ॥ गुरूकौंमेरौरूपहीजानैं ॥ नरकोबुधीकदैनहींआनैं ॥ ४० ॥ सर्व देवमयगुरूकौंलेषैं ॥ तनकेकछूआचरणनदेषैं ॥ भिक्षाआदिऔराकछुजोई ॥ गुरूकौंआनिसमर्पैसोई ॥ ४१ ॥ जबगुरूताकौंआज्ञादेवैं ॥ तबैप्रसादआपुहीलेवैं ॥ बैठैंठाढैंआवतजात ॥ भोजनसयनरांतिप्र भात ॥ ४२ ॥ नीचभांतिगुरूसेवाकरैं ॥ अंजुलीसौंपीछैंअनुसरै ॥ ऐसेव्रतअखंडितधारैं ॥ मनहूंमैंन हींभोगाविचारैं ॥ ४३ ॥ ऐसैंकुलगुरुवरतैंसोई ॥ ज्यौंलगिवेदसमापतिहोई ॥ पुनिब्रह्माकेलोकहिचाहैं ॥ तोगृहस्थतहांनहींसंबाहैं ॥ ४४ ॥ गुरूकौंदेहसमर्पणकरैं ॥ वेदविचारह्रदेमेंधरैं ॥ गुरूअग्निआप सबमांही ॥ सेवेमोहीअवरकछूनाहीं ॥ ४५ ॥ जुवतिअरूजुवतिनकेसंगी ॥ इनकौंकदैनहोतप्रसंगी ॥ दरसपरसबानीपरहास ॥ त्यागेंदुरमानिअतित्रास ॥ ४६ ॥ सौचआचमनऔरअसनान ॥ स

ध्याउपासनगतअभिमान ॥ तीर्थसेवाजपतपाभिक्षा ॥ तजैंदरससंभाषणइक्षा ॥ ४७ ॥ मनअरुवचनदेह वसकरैं ॥ मेरेचर्णंत्हदेमैंधरैं ॥ अरुममभजनसबनिकौंधर्म ॥ भजनविनासबधर्मअधर्म ॥ ४८ ॥ ऐसे ब्रह्मचर्यव्रतधारी॥दृढतपनिशादिनवेदविचारी ॥ विगतपापएसोविधिहोई ॥ मेरिभक्तिलहैंतबसोई ॥ ४९ ॥ ऐसोविधिभवसागरतजैं ॥ मेरेपरमरूपकोंभजैं ॥ अरुजोकबहीहोईसकाम ॥ तबसोकरैंजुवतिअरु धाम ॥ ५० ॥ केईनिहकामगहैवनवास ॥ कैअधीकारपाईसंन्यास अरुजोउपजीमेरीभक्ती ॥ तोन हींकरैंकहूंआसक्ति ॥ ५१ ॥ यहहैंब्रह्मचर्यकोधर्म ॥ जातेंदूजोसकलअधर्म ॥ अबगृहस्थकोधर्मसु नाऊं ॥ सकलगृहस्थनिकौंसमझाऊं ॥ ५२ ॥ ब्रह्मचर्यजोनहींठरावें ॥ तोग्रहस्थाश्रममैंआवें ॥ गुरु तेंबेदपढेसबजबहीं ॥ गुरुदाक्षिणादेवेंपुनितबहीं ॥ ५३ ॥ गुरुतेंअग्यालेउरधरैं ॥ तबविधिसोंआश्रम हीकरैं ॥ तबदेखेंउत्तमकुललक्षण ॥ करैंविवाहात्रियाविचक्षण ॥ ५४ ॥ ज्योंदेखेंअपनोअधिकार ॥ त्योंहिकरैंव्यवहारविचारैं॥विप्रविवाहहैंचारौंवरन॥विप्रकौंछोडिछत्रिकोंकरन॥५५॥ वैस्यविविवाहवैस्य अरुशूद्र॥शूद्रएकहीउंचनक्षूद्र॥उत्तमसोजोएकाहिकरैं॥बहुतानिकष्टनहोंविस्तरैं॥५६॥श्रुतिअध्ययनजज्ञ अरुदान॥तिहूंवर्णकौंएकसमान॥दानग्रहनजज्ञकरवावन॥अधिकविप्रकौंवेदपढावन॥५७॥पारिहेतीनवृत्ति हैऐसैं ॥ अग्निमध्यजलवरपैजैसैं ॥ इनतेंब्रह्मतेंजनहीरहैं ताते इनकोंविप्रनग्रहैं ॥ ५८ ॥ कारिकैशिलादेहनिरबाहैं ॥ तातैंअधिककोंनहींसंवाहैं ॥ विप्रदेहपूरणतपपईयें ॥ सोविषयनिलागिनहींग

वईयें ॥ ५९ ॥ बहूतभांतिकष्टहिंतपकरीयें ॥ हरिभजीहरिकौंअनुसरीयें ॥ शिलाव्रतकरिरापैंदेह ॥ न
हींममताजुवतिसुतगेह ॥ ६० ॥ अतिथिपालनौरजतमनाहीं ॥ मोहीकौंदेषैंसबमाही ॥ जीवन्मुक्तहोई
सोविप्र ॥ मेरेचर्णनिपावेक्षिप्र ॥ ६१ ॥ जोकोईममभक्तिकरैं ॥ ताकौंकछूआपदापरे ॥ सोआपदामि
टावैंकोई ॥ सोमेरोहितकारीहोई ॥ ६२ ॥ ताकौंमेंउधारौंएसैं ॥ नावनसौंअंबोनिधजैसें ॥ परिक्षत्री
निजधर्मविचारैं ॥ सकलपालनाहित्वदेधारैं ॥ ६३ ॥ क्षित्रीसबकेदुषनिहरैं ॥ सकलजीवप्रतिपालनक
रैं ॥ सोक्षित्रीसुरलोकहिजावैं ॥ वासवसहीतमहासुषपावैं ॥ ६४ ॥ जोआपदाविप्रकौंपरैं ॥ तोसोंबनि
जवृत्तिकौंकरैं ॥ जद्यपिषडगवृत्तिहैंउंची ॥ परिसोअतिहिंसातेनीची ॥ ६५ ॥ जोक्षत्रीकौंपरैंविपत्ती ॥
तोसोंगहैंवनिजकीवृत्ति॥किंवाविप्रवृत्तिकौंगहैं ॥अथवामृगयाकरीनिरवहैं॥६६ ॥वैश्यहीपरैंआपदाजबहीं
शूद्रवृत्तिसोंधीरैंतबही ॥ अरूजोविपतिशूद्रकौंपरैं ॥ तोप्रतिलोमजवृत्तिहिकरैं ॥ ६७ ॥ याविधिजबही
मिटैविपत्ति ॥ तबहींगहैंआपनीवृत्ति ॥ पंचजज्ञएप्रतिदिनकरणें ॥ ग्रहस्थकौनाहीपरिहरणें ॥ ६८ ॥
करिकैंपाठऋपिनकोभजैं ॥ करिकछुहोमदेवनिकोभजैं ॥ भूतनिबलिशुधासौंपितर ॥ जलअन्नादीसकल
देसोनर ॥ ६९ ॥ तिनसबनमोकौंजानैं ॥ औरसबनिपरिकरुणाआनैं ॥ जोकछुएसहजाहिंधनपावैं॥
किंवान्यायतेंउपजावे ॥ ७०॥ तासौंलोगआपनौंपोषैं ॥ औरयज्ञकरिमोहीसंतोषैं ॥ जेतोलागतघरमेंहो
ई ॥ तेतोइधनरापेसोई ॥ ७१ ॥ औरसकलममहेतलगावैं ॥ भूलिनदूजैंमारगजावे ॥ जद्यपिरहैंकुटुं

बहूंमांहीं ॥ तोहूंलिएंकदेकहूंनाहीं ॥ ७२ ॥ निशादिनत्हृदयकरैंविचार ॥ मिथ्याजानेसबपरिवार ॥
अरिपुत्रबंधूसबएसैं ॥ जलकेनिकटबटाऊजेसैं ॥ ७३ ॥ एसबयौंहिप्रतिदेहआवें ॥ ज्योंनिद्राप्रातिसु
पनापावै ॥ ज्यौंज्यौंजागेवारंवारा ॥ त्यौंत्यौंमिटैंसूपनव्यवहारा ॥ ७४ ॥ यौंहीप्रतिदेहहिंएआवें ॥ देहत
जैसबतितजावै ॥ अस्यौंहिस्वर्गादिकलोक ॥ पायेहर्षगएअतिसोक ॥ ७५ ॥ तातेंसकलवासनादहैं
अतिथीसमानभवनमैंरहैं ॥ अहंकारममतानहींआनैं ॥ सबमायाबंधनकरिमानैं॥ ७६ ॥ सबकर्मनिमेरें
हेतकरैं ॥ मोविचअंतरायपरिहरैं ॥ प्रेमभावहृढउरमैंरापैं ॥ औरसकलहृदैतैंनापैं ॥ ७७ ॥ एकपुत्रभ
एवनजावें ॥ किंवाग्रेहहीमाहीरहावैं ॥ एसोग्रहीसुगतकरिमानौं ॥ औरकछुत्हृदैनहींआनौं ॥ ७८ ॥
अरुजोहोईभवनआशक्ति ॥ जुवतीसुतादिनुसोंअनुरक्ति ॥ विषयालंपटतृष्णाआतूर ॥ ज्ञानरहीतकरम
नमेंचातूर ॥ ७९ ॥ आपुहिपरमसताहीनजानैं ॥ औरकीचिंताउरआनैं ॥ भाईवृद्धपिताहेमेरौ ॥ मोचि
नदुषलहैंबहूतेरौ ॥ ८० ॥ यहअबलालघुसंततजाकी ॥ मोबिनहोईकहांगतताकी ॥ एअनाथमोबिनस
बवाला ॥ क्यौंकरिजीवैंअतिविहाला ॥ ८१॥ मोबिनईनहींकोनूप्रतिपालैं ॥ कौनविविधदुपनिकोंटालैं॥
ऐसैंनिशादिनआनैंचिंता ॥ कबहूंनहींहोवैंनिहचिंता ॥ ८२ ॥ कदैंनसुषपावेयालोक ॥ ग्रसोरहैंचिंताभ
यसोक ॥ याविधिचिंताकरतअपारा ॥ नरकहींजावैंवारंवारा ॥ ८३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मच
र्यग्रहचर्यंकौंमैंभाष्यौंइहधर्म ॥ जातेंउद्धववऔरकछुसोसबजानअधर्म ॥ ८४ ॥ ॥ इतिश्रीभागवते

महापुराणएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ अष्टादशमेंध्यायमेंग्यानप्रस्थसन्यास ॥ अधिकारविशेषकरतद्गतकरतप्रकास ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥अबमेंकहूंधर्मबनवास ॥ अरुअधिकारसहीतसंन्यास ॥ जातेंमेरीभक्तिपावें ॥ भक्तीपाईममचर्णनिआवें ॥ १ ॥ बरषपचासहूंतेंउपरांत ॥ तबवनजाईरहेंएकांत ॥ नारीसुतनमेंरहनेंदेई ॥ जोविधिबनैंसंगतोलेई ॥ २ ॥ कंदमूलफलवृतहींकरैं ॥ वलकलमृगछालातनधरैं ॥ त्रणपताकीसिज्यासंवारे ॥ इंद्रियनिकैंसबअर्थनिवारैं ॥ ३ ॥ केसरोमनषदूरनकरैं ॥ देहदंतमलनहींपरिहरैं ॥ भूमिशयनत्रिकालअस्नान ॥ मलनउतारैंमुसलसमान ॥ ४ ॥ ग्रीषमऋतुपंचाग्निसाधैं ॥ वरषामेंछायानहींबाधैं ॥ सीससकलजलधारासहैं ॥ सीतकालजलसायररहैं ॥ ५ ॥ एसीभांतिकरैंतपदुष्कर ॥ दुंद्वनव्यापैंज्यौंजलपुष्कर ॥ अग्निपकऋतुपकफलादी ॥ भोजनलघुपवित्रअनादी ॥ ६ ॥ मुसलउषलकेपाषान ॥ केईदंतनिसौंषोटैंधान ॥ देहजीविकाआपुहींआनैं ॥ अधिकनग्रहैंसंचनहींजानैं ॥ ॥ ७ ॥ तिनहींतिनसौंमोकौंजजैं ॥ औरजज्ञवनवासीतजैं ॥ अग्निहोत्रअरुपूरणमास ॥ त्यौंहिदरसअरुचातुरमास ॥ ८ ॥ इनसबहीनकौंममहेतकरैं ॥ मोबिनऔरत्त्हदैनहींधरैं ॥ यौंतपकरीमोकौंआराधे ॥ प्राणदेहइंद्रियमनबाधैं ॥ ९ ॥ यौंव्हैंसुधलहैंममभक्ति ॥ औरात्रिगुणविस्तारावेरक्ति ॥ यौंतबहींममचर्णनिवावैं ॥ केईक्रमब्रह्मलोकव्हैंआवैं ॥ १० ॥ अरुजोएसेंकष्टहकिरैं ॥ पारिकामनात्त्हदेमेंधरैं ॥

तासममूरषदूजानाहीं ॥ ताकेवृथासकलश्रमजांहीं ॥ ११ ॥ यौंपंचौत्तरवरषनिपाछैं ॥ ग्रहैसुधसन्यास
हीत्र्याछैं ॥ सकलक्रियाकौंत्यागहिंकरैं ॥ मनसोममसेवाअनुसरैं ॥ १२ ॥ कर्मरचितसबलोगनिजानैं
॥ तातैंछिनभंगुरकरीमांनैं ॥ तांहींहूतैंकरैंसबत्याग ॥ मनवचक्रमसौंदृढवैराग ॥ १३ ॥ वेदविहितविधि
मोकौजजैं ॥ ऋत्विजकौंसर्वसदैतजैं ॥ जबकोईसन्यासहीकरैं ॥ तबहीसुरविघ्नविस्तरैं ॥ १४ ॥
परियहविघ्नगणेकछुनाहीं ॥ मेरेचर्णधरैंउरमांहीं ॥ जौंकबहींकिछुवस्त्राहिराषैं ॥ तोकोपीनअौरस
वनाषैं ॥ १५ ॥ दंडकमंडलकरमेंधारैं ॥ ज्यौंमिलैंत्यौंनहींऔरविचारैं ॥ दोपिदेषिधराणिपगधरैं॥
वस्त्रछानीजलपानहींकरैं ॥ १६ ॥ संतवंतबानीकोंबोलैं ॥ हृदयविचारकढैंनहींडोलैं ॥ मौनधासीवानी
कोंदंडे ॥ अरुकायाकेकर्मनिषंडे ॥ १७ ॥ प्राणायाममनहींबसकरैं ॥ सबईंद्रियअर्थानिपरिहरैं ॥ अ
रुएचिन्हनहींजामांहीं ॥ भेषधरैंजतीसोंनाहीं ॥ १८ ॥ भिक्षाकरैंसतघरविप्र ॥ औरकहूंगहैंनहिंक्षिप्र
॥ सोउविप्रचतुरविधजेते ॥ जानिरहैंविप्रकौतितैं ॥ १९ ॥ विप्रकहिंजैंदशप्रकार ॥ तिनकौंतुमसौंकहौं
विचार ॥ देवविप्रऋषीविप्रहीजानौं ॥ विप्रविप्रअरुक्षत्रिसमानौं ॥२०॥ वैश्यशूद्रअरुएकोविडाल॥पसु
अरुम्लेछविप्रचंडाल ॥ भिक्षानितअरुपढैंपठावैं॥सकलअर्थअरुतत्वबतावैं २१ इंद्रियजीतसूशीलसंतोष
॥ देवविप्रसौंनिर्गतरोष ॥ तपअरुसत्यअहिंसाकरैं ॥ दिनदिनषटकर्मनिअनुसरैं ॥ २२ ॥ काललो
पकबहुंनहींहोई ॥ ऋषिब्राह्मणकहियतूहेंसोई॥बिनाहिंस्याफलफूलानिल्यावैं ॥ तिनहींसौदेहवरतावैं ॥२३॥

वरपासीतउष्णसवसहैं ॥ विप्रविप्रानिस्यशुद्रागहैं ॥ अस्वादिकनिकरैंआरोह ॥ रणमैंसूरतजैंतनमोह ॥
२४ ॥ नीतिसहीतठानैंआरंभ ॥ क्षत्रीविप्रत्वदैनहींदंभ ॥ अरुजोउद्यमबनिजकौंकरैं ॥ पशुराषेषेतीवि
स्तरैं ॥ २५ ॥ सोवहवैस्यब्राह्मणकहीजैं ॥ तातैंलेभिक्षानाहिगहीजैं ॥ तेललूनघृतदूधअरुलक्षा ॥ ति
लअरुनीलमहीमधूमक्षा ॥ २६ ॥ इनकौंबनिजकरतुहैंजोई ॥ क्षुद्राविप्रकहियतुहैंसोई ॥ सबभूतनिकें
द्रोहहिंकरैं ॥ सबकैंछिद्रनिदेषतफिरैं ॥ २७ ॥ प्रतिदिनाहिसोसोअधिकार ॥ बिप्रकहावैसोमंजार ॥
भक्षअभक्षअकारजकारज ॥ गम्यअगम्यनलषैंअनारज ॥ २८ ॥ कृतघनसकलपशुनकैंलक्षण ॥
सोपशुब्राह्मणकहैंविचक्षण ॥ वापीकूपतलावफुडावैं ॥ वनबागादिकनासकरावैं ॥ २९ ॥ संध्याअरुअस
नाननजानैं ॥ एसौविप्रमलेछबषानैं ॥ निंदकलोभीपरधनहरैं ॥ निरदयक्रूरापिसनताकरैं ॥ ३० ॥ सो
चंडालविप्रकरीमानैं ॥ ऐसैंदशविधिविप्रनिजानैं ॥ तातैंउत्तमभिक्षाकरैं ॥ औरसकलदूरपरिहरैं ॥ ३१
सातघरनितैंभिक्षालावैं ॥ ताहिकरिसंतोषउपावैं ॥ सोलेजावैनदीतडाग ॥ तातैंकछुकरैंएकविभाग ॥
३२ ॥ कोइमागेताकोंदेई ॥ केजलमांहींप्रवाहकरैंतेई ॥ विचरैंधरणीहोइनिहसंगा ॥ कदैंकछुनसंवा
रैंअंगा ॥ ३३ ॥ तनमनइंद्रियनिग्रहकरैं ॥ मेरोरूपत्वदैमैंधरैं ॥ निशदिनरहैंआत्माराम ॥ विषयसु
षनिकौंसुनैंननाम ॥ ३४ ॥ समदरसीअरुधीरजवंत ॥ सदारहैंनिर्भयएकांत ॥ मेरोभावभयौअतिसूध
॥ परमविवेकीज्यौंजलदूध॥ ३५ ॥आपुहिमोहिविचारैंएक॥कदैंनदषैंभूलिअनेक॥आतमअंसब्रह्मकौंजा

नौं॥बंधमुगतदोउभ्रममानौं॥३६॥बंधनजबइंद्रियनिवसहोई॥मुगतइंद्रियनबंधेसोई॥ऐसैजानींइंद्रियनी
जीतैं॥मोहीसुमरीतेकालव्यतीतैं॥३७॥दहूंलोकतेंहोइविरक्ति॥तनहूंनहीहोवेआसक्ति॥पुरग्रामादिकआ
इजोपरैं॥भिक्षाअर्थप्रवेसहिकरैं॥३८॥देसपवित्रसैलबनसरीता॥वानप्रस्थजहांआचरता॥ तहांतहांनितहीं
चलीजावै॥तिनआश्रमनिभिक्षापावैं॥३९॥तिनकौंलहैंसिलाकौंअन्न॥तातेहोवेमनप्रसन्न॥ताहीतेनिरमलता
ग्रहैं ॥ उपजैज्ञानसकलमलदहैं ॥ ४०॥ इंद्रियअर्थनिसत्यनदेखें ॥ छिनभंगुरसबनस्वरलेखें ॥ तातेंस
बतेंग्रहेंविरक्ति ॥ नहींउद्यमनविषैंआसक्ति ॥ ४१ ॥ यहसबअहंकारकृतजानैं ॥ आत्मविषेसुपनसब
मानैं ॥ कदैंनहींहृदयचिंतवनकरैं ॥ मनवचक्रमदूरिपरिहरैं ॥ ४२ ॥ ऐसीविधजबउपजैंज्ञान ॥ व्है
विरक्ततजैंसबआन ॥ मेरीभक्तिहृदैमेंआवैं ॥ तबसबवर्णाश्रमछिटकावैं ॥ ४३ ॥ विधिनिषेधदोउभ्रम
जानैं ॥ वेदस्मृतिकीसंकनमानैं ॥ अतिबुद्धिबालकसमरहैं ॥ विधिनिषेधकछुकहेनगहैं ॥ ४४ ॥ सबज्ञा
नेपरिजोउनमंत ॥ चैतनमयादिसेजडवंत ॥ पुष्पीतबानीरतिनहींहोई ॥ कबहूंबादनठानैंसोई ॥ ४५ ॥
बाहरमध्यएकसमरहैं ॥ कबहूंकोईपक्षनहींगहैं ॥ ज्यौंज्यौंकहैंसुनेत्यौंत्यौंही ॥ उत्तमतानहींत्यागैंत्यौं
हीं ॥ ४६ ॥ काहुहूंतेंउदवेगनआनैं ॥ अरुकाहूकेंइआपुनठानैं ॥ निंदाआदिसुनेदुखेन ॥ अंतरध
रैनिरंतरचैन ॥ ४७ ॥ काहूकौंआपमाननकरैं ॥ मनवचकर्ममानविस्तरैं ॥ पशुसमानवैरादिकनजानैं
॥ सकलविकारदेहकैंमानैं ॥ ४८ ॥ ज्यौंआत्मअपनेतनमांही ॥ सोईसबमेंदूजानाहीं ॥ ज्यौंनहूघटनि

माहीसत्तिएक ॥ नटनिसंगज्ञानियेंअनेक ॥ ४९ ॥ तातैंइष्टअनिष्टहिंकरैं ॥ सोसबअपुहीकौंविस्तरैं तातैंआतमबुधहिराषैं॥भेददेहकृतसोसबनाषैं॥५०॥असमेसमेभोजनहींआवें॥तोहूकछुनहींमनमैंल्यावें॥करमरचितसबदेहानिजानैं॥तिनहींतैंसबदुषसुषमानैं॥५१॥तेसबसुषदुषकर्मसरीरा॥यौंआत्मेमेंज्यौंमृगनीरा ॥ केवलअहारहीनहीनाषैं ॥उद्यमहूंकरिप्राणनिराषैं॥ ५२ ॥ प्राणनिराषैंव्हेंविचारा ॥ लहेमोहिछूटैसंसारा ॥ जोमेरीइच्छातैंआवैं ॥ उत्तममध्यमजोकछूपावैं ॥ ५३ ॥ ज्यौंअसनवस्त्रादिकचहैं ॥ जैसोआवेतेसोगहैं ॥ प्रियअप्रियकीबुद्धिनआनैं ॥ एदोउमिथ्याकरिमानैं ॥ ५४ ॥ कांइटेकनमनमैंधरैं ॥ मोबिनऔरसकलपरिहरैं ॥ सोचआचमनओरअसनाना ॥ औरैंकछूआचर्णहिनाना ॥ ५५ ॥ तेकछूसंकातेंनहिंकरैं ॥ जोकछूसोईइछाआचरैं ॥ ज्यौंमेरेश्रुतिकौंभयनाहीं ॥ दोउभ्रमजानतहेंमाहीं ॥ ५६ ॥ परितथापिकर्मनिआचरौं ॥ लोकनिकौंहितमनसैंधरौं ॥ त्यौंज्ञानीविधिकिंकरनाहीं ॥ विधिनिषेधभ्रमजानैंमांही ॥ ५७ ॥ परिइछाआपनीआचरैं ॥ लोकनिकोहेतत्दहेदेमैंधरैं ॥ ताकौंभिदद्दष्टिकहुंनाहीं ॥ ज्ञानद्दष्टिदेखतहैंमाही ॥ ५८ ॥ पूर्वसंसकारहेजोलौं ॥ देहमांहीसोबरतेतोलौ ॥ बहूरींभवमेंनहीं आवें ॥ मेरौनिजनिर्मलपदपावें ॥ ५९ ॥ अरूजाकौंउपजैवैराग ॥ कर्योचाहेआभवकोत्याग ॥ पारिममभजनजूक्तिनहींपावें ॥ सोसंतगुरकीसरणेआवें॥६०॥श्रमबिनालैहेंसोजुक्ति ॥पावेंमोहीलहेभवमुक्ति ॥ गुरुकौंब्रह्मरूपकरिदेषें ॥ मानवबुद्धिकदैंनहिलेषें ॥ ६१ ॥ श्रद्धासहितअसूयातजैं ॥ मनवचक्रमनिरंत

रभजैं ॥ ज्यौंलगींब्रह्मविचारनपावें ॥ त्यौंलगीगुरुतजीकहूंनजावें ॥ ६२ ॥ पीछेंज्योंजानेत्यौंरहैं ॥ परम हंसकेधर्मनिगहैं ॥ अरिजिनषड्रिपुजीतेनाहीं ॥ इंद्रियअर्थविचारतमांही ॥ ६३ ॥ चंचलबुद्धिनज्ञानवैराग ॥ ताकौंसकलवृथाहैत्याग ॥ भेषदिषाईजीवकाकरैं ॥ ताकौंदोषकह्यौंनहींपरैं ॥ ६४ ॥ देवपितरऋषिभूलिननाषैं ॥ तिनकौंरिणअपनेसिरराषैं ॥ अंतरगतिमेंताहींछिपावें ॥ आपहिवांचैबंधउपावें ॥ ६५ ॥ सोशुषकौंनलहैयालोक ॥ अरुत्यौंहिभ्रष्टहोईपरलोक ॥ एहैवर्णाश्रमकैधर्म ॥ इनतैभक्तिलहैदहिकर्म ॥ ६६ ॥ अबचार्यौंकेधर्मप्रधान ॥ न्यारेंन्यारेंकरौंवषान ॥ समअरुअहिंसासंन्यासीकौं ॥ श्रुतिविचारपवनवासीकौं ॥ ६७ ॥ ग्रहमैंदयाजन्ममममकर्म ॥ ब्रह्मचर्यगुरुसेवाधर्म ॥ ब्रह्मचर्यतपसोचसंतोष ॥ सकलसुत्हृदकतहूंनहींरोष ॥६८॥ मेरोभजनसकलममकारण ॥ एसबहीनकैंधर्मसाधारण॥ग्रेहीदेईवनिताऋतुदाना ॥ भूलिनगमनकरैंदिनआंनां ॥६९॥ याविधिअपनेंअपनेंधर्म ॥ मेरेंहेतकरैंसबकर्म सबमेंजानेंमेरोभाव ॥ कांहूंपरिनहींधरैंअभाव ॥७०॥ सोपावेंमेरीदृढभक्ति ॥ औरसकलतेंकरेंविरक्ति तातैंउपजेमेरोज्ञान ॥ देषेंमोहीमिटेसबआना ॥ ७१ ॥ ऐसौव्हैंपावेंममरूप ॥ बहुरिनआवेंयाभवकूप जेहैंसकलवर्णाश्रम ॥ तिनकेंएसेंभाषेधर्म॥७२॥ भक्तिसहितएमोहिमिलावें भक्तिविनाभवसिंधूबहावें ॥ ऐसोतत्वलहैंसोतरैं ॥ औरसकलनितजन्मेंमरैं ॥ ७३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवतोसौंकह्यौवर्णाश्रमकोधर्म॥यातेंममभक्तिलहैछुटैंबंधनकर्म ॥ ७४ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्री

भगवानुद्धवसंवादेअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पूर्वहिआश्रमधर्मतैंनिर्णयज्ञानसुभाग ॥ उनविंशतिअध्यायमैंज्ञानादिकतैंत्याग ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ उद्धवएव र्णअरुआश्रमां ॥ तिनकेमैंभाषेसबधर्मा ॥ इनमैंरहीममभक्तिउपावैं तातैंमेरोज्ञानहीपावैं ॥ १ ॥ ज्ञानही पाइंसकलभ्रमजांनैं ॥ वर्णाश्रममिथ्याकरिमानैं ॥ सबसाधनतजीमोकौंध्यावैं ॥ औरकछुत्त्वदेंनहींल्यावैं ॥ २ ॥ ज्ञानीकोंमैहिहौंसाधन ॥ अरुमेरौंहिकरौनैतआराधन ॥ मोहीकरिमोकौंअराधैं ॥ तनमनइंद्रि यमोसौंसाधैं ॥ ३ ॥ मोबिनस्वर्गादिकनहींलेही ॥ मेरेहींचर्णनिचितदेई ॥ मोबिनमुगतकदैंनहींगहैं ॥ मोबिनसकलवासनादहैं ॥ ४ ॥ मोहिसोहेतमैंताकौंप्रिय ॥ मोबिनऔरसकलअप्रीय ॥ जेहिंसहीतज्ञान विज्ञान॥तेहीजांनैंमोहीसूजान॥ ५ ॥ज्ञानीतेंमेरेप्रियनाहीं॥सदाबसैंमेरैंमनमांहीं॥मेताकौंमेरौहैंसोई ॥दूजौन हींपरसपरकोई॥६॥जपतपतीर्थव्रतअरुदाना॥कहौंकहांलैंजेविधिनाना॥जेविधिकरैंनहींफलएसौं ॥ ज्ञान कलातेंहोवैजेसौं॥७॥तातैंज्ञानत्त्वदेमैंधारौं ॥ औरैंसाधनसकलनिवारौं ॥सबमैंरूपआपनौजानौं ॥ मोही जानिप्रभुसेवाठानौं ॥८॥ व्हैकरिसहीतज्ञानविज्ञान ॥देषैंरुकलएकभगवान ॥बहुरिममनिजरूपसमावैं ॥ जहांजाइकोईनहीआवैं॥९॥जबहीप्राणीज्ञानहींपावैं ॥ तबहींममनिजरूपसमावैं ॥ ज्ञानविज्ञानहीपावैमो ही ॥ यहानिजमतोंकहतहौंतोही ॥ १० ॥ उद्धवतोंमैंविविधविकार ॥ जन्ममर्णसुषदुषप्रकार ॥ तेसम स्तयातनकैंजांनौं ॥ सोतनमायाभ्रमकरिमानौं ॥ ११ ॥ आपुहिसूधनिरंजनदेष्यौं ॥ द्वैतअतीतएकक

रिलेषौ ॥ एजेप्रगटसकलदेहादी ॥ तेआतममेंहूतेनआदी ॥ १२ ॥ अरुअंतहूंरहैंकछुनाहीं ॥ अ
बअज्ञानहूंतेंबरतांई ॥ ज्ञानदृष्टकरवरतेंबवहीं ॥ त्रिगुणरहीतआपुहैंतबहीं ॥ १३ ॥ जेसैंरजुमांहीआहि
कहैं ॥ आदिनहुंतौंअंतनाहिरहैं ॥ भर्मतेंमध्यमंदमतिमानौं ॥ हेनाहीपरिहैंसोजानों ॥ १४ ॥ त्यौंदेहादि
कसकलभ्रमदेषो ॥ आपुहींसदाब्रह्ममयलेषौ ॥ एसोसुनिहरिजोसौंज्ञान ॥ उद्धवजनपूछयौभगवान ॥
१५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुज्ञानकृपाकरिकहौं ॥ मेरेनानाभ्रमकौंदहीं ॥
अरुयौंहिभाषोविज्ञान ॥ भक्तिआपनीपरमनिधान ॥ १६ ॥ जाकौंचाहेसकलमहंत ॥ यातेंहोईजगत
कौअंत ॥ याविनज्ञानध्यानकछूनाहीं ॥ साधनसकलवृथाहीजाहीं ॥ १७ ॥ याकौंपाइमुगतिनहीलेवें ॥
औरसूपनिपरिदृष्टिनदेवैं ॥ एसीभक्तिकृपाकरिकहौं ॥ आपनेंजनहींऔरीनिवहौं ॥ १८ ॥यहभवसा
गरावेकटअनंत ॥ यामैंभ्रमतनआवेंअंत ॥ तापरितपैत्रिविधसंताप ॥ तिनमैंपरेंआपहिंआप ॥ १९ ॥
तातैंजीवमहादुषपावें ॥ सुषठानैंसोदुषव्हैंआवें ॥ तातैंदूजोरक्षकनाहीं ॥ मेविचारीदेख्यौमनमांहीं ॥ २०
॥ तुमरेचर्णछत्रासिरधारैं ॥ सोसमस्तसंतापनिवारैं ॥ ताकौंदशदिशिअमृतवर्षै ॥ ताकेदरशऔरसव
हर्षै ॥ २१ ॥ ज्योंकाहूकंगालहीलीजैं ॥ ताकेशिरछत्रधारिदीजैं ॥ सोव्हैंभूपमहासुषपावैं ॥ अरुऔर
निकेदुषमिटावैं ॥ २२ ॥ त्यौंतुमचर्णछत्रासिरधारैं ॥ सोआपुनैंसबदुषनिवारे ॥ सोभतीनौंलोकाहिंमाही
॥ तासमऔरकहूंकौनाहीं ॥ २३ ॥ अरुजेताकेसर्णहींआवैं ॥ तेतेसकलपरमसुषपावैं ॥ याभवकूपप

ज्यौंविहाला ॥ तापरडर्यौमाहीअहिकाला ॥ २४ ॥ तातैंविषयविषयीसूषजानै ॥ तिनानीमितबहुउद्यमठा
नैं ॥ तातैंसदाअमितदुषपावैं॥जाकौंकबहूंअंतनआवैं॥२५॥ताकौंकृपापीयूषापिवावौ॥काढीकूपतैंमृतकजि
वावौ ॥वचनामृतकीवरषाकरौ॥अपनेगुणनिबाधीउद्धरौ ॥२६॥तुमहीजगतपिताजगस्वामी॥जगपालकज
गअंतरजामी॥एसैंबचनसुनेभगवान॥तबउद्धवसोंभाष्यौज्ञान ॥२७॥श्रीभगवानुवाच ॥ चौपाई ॥ उद्धव
प्रश्नकरीतुमजोई ॥ धर्मपुत्रकीनीतिनसोई ॥ सरसिज्यामैंभीषमपरैं ॥ हमकूंसूनतवचनउचरैं ॥ २८॥
तेईअबमैंतुमहीसुनाउं ॥ भक्तिज्ञानविज्ञानबताउं ॥ प्रकृतिपुरुषमहतत्वअहंकारा ॥ शब्दादिकजेपंचप्र
कारा ॥ २९ ॥ त्रयगुणअरुइंद्रियदशएका ॥ पंचभूतमिलिभएअनेका ॥ थावरजंगमविविधप्रकारा॥
इनअठाईससकौविस्तारा ॥ ३० ॥ इनविनऔरकहूंकछुनाहीं ॥ एकदृष्टिदेषेसबमांही ॥ याकरिसक
लएकहिजानैं ॥ ताकौंसाधुज्ञानवषानैं ॥ ३१ ॥ अरुजबईहअठाईसतत्व ॥ मायाजानैंसकलअतत्व
आत्मएकब्रह्मकरिजानैं ॥ देहादिकसबमिथ्यामानैं ॥ ३२ ॥ रजुजानेंज्यौंसर्पनिवारैं ॥ त्यौंसमस्तमम
रूपविचारैं ॥ जैसेंदिसामोहामिटजावैं ॥ आठौंदिसकीबरषहिंपावैं ॥ ३३ ॥ करतनिरंतरज्ञानविचारा॥
देषेब्रह्ममिटैविस्तारा ॥ ताकौंकहियतुंहेविज्ञान॥तातेलहैंमोहितजीआन ॥ ३४ ॥ आदिहूंतौअरुहीयेअं
त ॥ सोईहैंअबहुंबरतंत ॥ वरणआकारप्रगटहैंचैतैं ॥ आदिअरुअंतनहींहैंतेतैं ॥ ३५ ॥ तातअबहुं
मिथ्यादेषैं ॥ तिहुंकालमोहीकौंलेषैं ॥ जेजेंतिहुंकालमेधरणी ॥ घटनामादिकमिथ्याकरणी॥ ३६ ॥ शु

तिकौमतोल्हदेमैंआंनै ॥ नेतिनेतिश्रुतीसदाभषानैं ॥ नामआकारवेदभ्रमभाषै ॥ ब्रह्मसत्यदूजौसबनाषै ॥ ३७ ॥ सकलघठनिमैंएकबतावैं ॥ उंचनीचसबभेदामेटावैं ॥ ऐसीभांतिविचारैवेद ॥ जानैंमोहीमिटावैभेद ॥ ३८ ॥ अरुयोंहीप्रगटसबलेषैं ॥ सप्तधातुकैंसबतनदेषैं ॥ अरुदेषैंसबउपजतांबिनसंत ॥ योंहीप्रत्यक्षविचारैंसंत ॥ ३९ ॥ सतपुरुषभयेहैजेतैं ॥ तिनकैंबचनविचारैंतेतैं ॥ एकमतोसबनिकौदेषैं ॥ जानैंमोहीभेदभ्रमलेषैं ॥ ४० ॥ अरुयौंअनुभवल्हदयाविचारैं ॥ चेतनराषिअचेतनटारैं ॥ सबदेषैचेतनआधार ॥ इंद्रियदेहविविधविस्तार ॥ ४१ ॥ चेतनतेजडअर्थनिगहैं ॥ चैतनबिनाकोईनहींरहै ॥ यौंवेदांततथादृष्टांत ॥ अनूभवअरुयोंहीसिद्धांत ॥ ४२ ॥ इनचारुहूंकौंमतौविचारैं ॥ मोहीजानीसबभेदनिवारैं ॥ सकलदृश्यतेहोईविरक्ति ॥ चेतनब्रह्मसदाअनुरक्ति ॥ ४३ ॥ कर्मरचितसबमिथ्यामानैं ॥ ब्रह्मलोककौंनस्वरजांनैं ॥देष्योसून्यौल्हदेमैंआवैं ॥ सोसबबंधनजानिबहावैं॥४४॥मेरीभक्तिल्हदैमैंधरैं॥ जिनतैंभक्तिहोईतेंकरैं॥भक्तअरुभक्तिहेतहैंजतें॥ तुमसौंपीछैंभाषेतेतैं ॥४५ ॥अबहूंबहूरोतबहेताविचारौं ॥ भक्तभक्तिसाधनउचारौं ॥ मेरीकथासुनैंअबकहैं ॥ प्रीतिसहितउरअंतरगहैं ॥ ४६ ॥पूजामैंअतिनेष्ठधारैं ॥ बहूतभांतिअस्तुतिविस्तारैं ॥ वंदनकरैंप्रदाक्षिणादेई ॥ अरुअष्टांगप्रणामकरेई ॥ ४७॥ सबभूतनमैंमोकौंजानैं ॥ परिममजनमेरोतनमानैं ॥ममभक्तिनिकौंबहुविधिसेवैं॥ तनमनधनतिनहिकौंदेवैं ॥४८ ॥ मेरेहेतकरैंजोकरैं॥ मोबिनसकलपरिहरैं ॥ मेरेंगुणनिकहैंउरधारैं॥ दूजिकामनासकलनिवारैं ॥ ४९

मेरेअर्थअर्थसबत्यागें ॥ सूषअरुभोगानितेंवैरागें ॥ जपतपजोगजज्ञव्रतदाना॥सयनासनभोजनजलपानां॥ ५० ॥ इत्यादिकसबममहितकरैं ॥ यातेंअंतरसबपरिहरैं ॥ सदाआपुकौंमोहिनिवेदैं ॥ प्रेमशास्त्रउरयंथहीभेदैं ॥ ५१ ॥ ऐसेंजबममभक्तिलहैं ॥ तबअबसेषकछूनहींरहैं ॥ साधनसिध्यलहैंसोसकल ॥ कालकर्मतेहोवेअकल ५२ ॥ जबमोविषैचितकौधारैं ॥ तबव्हैसातिकरजतमकौटारैं ॥ धर्मऐश्वर्यज्ञानवैराग ॥ इनकौसहजलहैंबडभाग ॥ ५३ ॥ अरुजोमेरीमुक्तिनपावैं ॥ देहगेहसोंचितलगावैं ॥ तबहोवैंरजतमअधिकारा ॥ बंधेअधर्मपरैंसंसारा ॥ ५४ ॥ बंधमुक्तकौचितहैंकारण ॥ बोरैचिताचितहैंतारण ॥ मोमेंधारैंमोकौंलहैं ॥ भवमेंधारैंभवमेंवहैं ॥ ५५ ॥ तातैधर्मज्ञानवैराग ॥ ईस्वरताआदिकजेभाग ॥ तेसमस्तमेरेआधीन ॥ तातेंहोवैंममलौलीन ॥ ५६ ॥ सेवतमोहीसकलएपावैं ॥ मोबिनकोईनिकटनआवैं ॥ मेरीभगतिकहावैंधर्म ॥ उद्धवदूजोसकलअधर्म ॥ ५७ ॥ एकब्रह्मदरसनसौंज्ञान ॥ याबिनऔरसकलअज्ञान ॥ अरुउद्धवसोंहैवैराग ॥ जोसमसताविषयानिकौंत्याग ॥ ५८ ॥अरुऐश्वर्यासिद्धिअणूमादी ॥ ममसेवककोसेवकआदी ॥ तातेंजेममसरणहींआवैं ॥ तेईमुक्तिभुक्तिसुषपावैं ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ ऐसेंअदभुतबेनजबकहेंकृपाकारिकृष्ण ॥ तबउद्धवजनहरषिकरीकीनीहारिसोंप्रष्ण ॥६० ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेमभूपूरणकृपाकरी ॥ ज्योंहैंत्योंबहुबिधिविस्तरी ॥ जोतुमधर्मभक्तिकृतभाष्यौ ॥ ब्रह्मदृष्टिकौंज्ञानाहिंराष्यौ ॥ ६१ ॥ अबवैरागादिकसमझायो ॥ मेरेसबसंदेहामि

ढायो ॥ त्यौंहीसकलतत्वसौंभाषौं ॥ होईअतत्वदूरिकरिनाषौं ॥६२॥ जमकहियेसोकेइप्रकारा ॥ अरुत्यौंकहौंनियमबिस्तारा ॥ अरुसमकौनकौनदमदेवा ॥ कोनक्षमाअरुधृतिकौभेवा ॥ ६३ ॥ कोनसूरतातपअरुदानु ॥ कोनसत्यकोनऊठबषान ॥ कोनत्यागकोनधनइष्ट ॥ कोनजज्ञकोनदक्षिणावरिष्ठ ॥ ६४ ॥ बलअरुदयालाभअरुसुष ॥ विद्यालज्जासोभादुष ॥ पंडितमूरषग्रहस्तपंथ ॥ स्वर्गनर्कअरुपंथकुपंथ ॥ ६५ ॥ कोनदारिद्रीकोनधनवंत ॥ कोनकृपनकोनईस्वरवंत ॥ अरुईनेंतउलटीहैंजेती ॥ समअरुदमआदिकहैंतेती ॥ ६६ ॥ मोसोंदेवकृपाकारिभाषौं ॥ राषोंतत्वअतवहींनाषौं ॥ यौंसूनिबहुउद्धवकीप्रश्न ॥ तबकृपाकारिबोलेकृष्ण ॥ ६७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हिंसारहीवसत्यअस्तेय ॥ संगविवर्जितसबकोंहय ॥ लज्जामौनआस्तिकधीरा ॥ ब्रह्मचर्यअरुक्षमागंभीरा ॥ ६८ ॥ एद्वादशयमगहैंनिवर्ती ॥ अरुत्यौंद्वादशानियमप्रवर्ती॥ सोचअरुकपटराहितधरमादर ॥ जपतपअरुधर्मपूजासादर ॥ ६९ ॥ तीरथअटनअतीतकौंपोष ॥ गुरुसेवाअरुदृढसंतोष ॥ परउपकारहोमविस्तारैं ॥ भुक्तिमुक्तिचाहैंसोधारैं ॥ ७० ॥ समजोमोमेंनेष्ठबुद्धी ॥ दमइंद्रियनिग्रहमनशुद्धी ॥ जोदूषनिउपजावेंकोई ॥ तिनतेंजाकैंदुषनहोई ॥ ७१ ॥ सकलसहैंकछुमननहिआनैं ॥ ताकौंममजनक्षमाबषानैं ॥ जिभ्याइंद्रियचंचलहोई ॥ तिनदोनोकौंत्यागेसोई ॥ ७२ ॥ रसअरुअबलाकौंनहींगहैं ॥ ताकौंमेरोज्ञानधृतिकहैं ॥ भूतद्रोहत्यागसोंदान ॥ भोगतजनसोंतपनहींआन ॥ ७३ ॥

सोईसूरजोजीतेसुभाव ॥ सोईसत्यसकलममभाव ॥ मोकोंलीयेबचनसोंसत्य ॥ मोबिनबोलेसकलअसत्य ॥ ७४ ॥ कर्मनिमेंजोहोईअसंग ॥ सोवहपरमसोचहैंअंग ॥ सोहैंत्यागतजैफलकर्म ॥ सोधनइष्टपरमम मधर्म॥७५॥यज्ञरूपमेंहोंनहींआन॥सोदक्षिणादेईसमज्ञान॥प्राणायामपरमबलकहीयें ॥ जाकरिबडोशत्रुम नगहीयें॥७६॥भाग्यजोममएश्वर्यपावें॥चेतननिजानंदव्हैंआवें॥मेरीभक्तिएकईहलाभ भक्तिविनासोंसक लअलाभ॥७७॥जातेंभेदमिटेसोविद्या॥उद्धवदूजीसकलअविद्या॥लज्जामानिअकरमनगहैं ॥ ममजनताकों लज्जाकहैं ॥ ७८ ॥ निहकिंचननिरपेक्षनिरलोभा ॥ इत्यादिकजेगुणतेसोभा ॥ सोसुषजोसुषदुषअनीत ॥ पुन्यनहींपापउष्णनहींसीत ॥ ७९ ॥ विषयनकीइच्छादुषजानौं ॥ गुणसंपन्नआव्यसोंमानौं ॥ बंधमु क्तकीयुक्तहिजानें ॥ ममजनपंडिततांहिवषानें ॥ ८० ॥ अहंकारजाकेजगआदी ॥ आपनेकहेदेहगे हादी ॥ सोसमस्तमूरुषहींजानौं ॥ यातेंऔरभांतिमतीमानौं ॥८१॥ जाकरिमोहीलहैसोपंथ ॥ जोप्रवृत्तिसो सकलकुपंथ ॥ नितसंतोषीसीतलव्हदय ॥ सातिकाचितसवनिपारिसुव्हदय ॥ ८२ ॥ यहहैंस्वर्गसुषकोंभं डार ॥ नरकनिमेंतामसअधिकार ॥ सतगुरुएकबंधुकरिजानौं ॥ औरसकलवैरीकरिमानौं ॥ ८३ ॥ सतगुरुहैसोमेरोरूप ॥ जातेंजीवतजैग्रहकूप ॥ सतगुरुबिनाबंधुनहींकोई ॥ सतगुरुविनाजोवैरीहोई॥८४॥ मानवतनसोईग्रहकहीयें ॥ ताकैंग्रहैंग्रहीव्हैंरहीयें ॥ सोदाद्रिजोतृष्णावंत ॥ कृपणइंद्रियनिबसचरतंत ॥ ८५ ॥ विषयनिअनासक्तसोईस ॥ विषयनिबसतेसकलअनीस ॥ इतनोप्रश्नकहींमेंतोसों ॥ जानावि

धितुमपूछीमोसीं ॥ ८६ ॥ विधिनिषेधकैलक्षणजेसें ॥ महापुरुषजानतहेतेसें ॥ विधिनिषेधकौंजोलौंजानैं ॥ उंचनीचभेदनिमानें ॥ ८७ ॥ सोयहसकलनिषेधहिजानौं ॥ भेददृष्टिमेंविधिमतिमानौं ॥ विधिअरुनिषेधनिषेधहिदेष्यौं ॥ दहुंतेंपरैंताहींविधिलेषौ ॥ ८८ ॥ विधिनिसेधपशुमानवमानें ॥ पंडितकदैंहृदैंनहींआनें ॥ तातेंविधिनिषेधभ्रमजानौं ॥ मेरोरूपसलकारिमानौं ॥ ८९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विधिनिषेधभ्रमजाननौंज्ञानकह्यौजवकृष्ण ॥ वेदवचनतवसुमारिकरिउद्धवकीनोप्रश्ण ॥ ९० ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांएकोनविंशोध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहतबीसमेंध्यायमेंभक्तिक्रियात्मकज्ञान ॥ अधिकारीहुविभागतैंसुलभयोगत्रयजान ॥ १ ॥ ॥उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥हेप्रभूजीतुमकरुणाकरौ॥मेरोयहसंसैंपरिहरौ॥तुमरीअज्ञाकहीयेंवेद॥ तांहीमेंदीसतुहेंभेद ॥१॥विधिनिषेधसोवेदबषानें ॥ नाहींतैंसबकोईमानैं ॥ तुमरीआज्ञाक्यौंभ्रमलेपैं ॥ जातेंविधिनिषेधनहींदषैं ॥ २ ॥अरुयहप्रगटदीसैदेव ॥ विधिनिषेधकेबहुविधिभेव ॥ प्रगटविधिवर्णाअरुआश्रम ॥ तिनकौंविविधभांतिविविधकर्म ॥ ३ ॥ तिनकौंप्रगटफलस्वर्गादि ॥ अनकोनहींयहपंथअनादि ॥ अरुनिषेधप्रगटप्रातिलोम ॥ अंबष्ठादिकजेंअनुलोम ॥ ४ वर्णनिमेंशंकरहोजेतें ॥ अरुतिनकेकर्मपुनितेतें ॥ तिनकैंप्रगटफलनरकादी ॥ कहेंहुतेंफलजाईनबादी ॥ ५ ॥ जाकेफलहिवेदज्यौंकहैं ॥ ताकौंकरीनरत्यौंहिलहैं ॥ अरुत्यौंद्रव्यदेसवयकाल ॥ प्रकटविधिनिषेधगोपाल ॥ ६ ॥अरुजोविधिनिषे

धनहींसत्य ॥ तोसुषदुषअरुफलअसत्य ॥ कोईस्वर्गनर्कनहींजावैं ॥ तोव्रहुश्रमकरिविधिनकरावैं ॥ ७
अरुकहाकहीजैवारंवारा ॥ तुमरैंवचनअनेकप्रकारा ॥ यहतोकह्यौंतुमारैंवेद ॥ जातेंविधिनिषेधकैंभेद
॥ ८ ॥ देवपितरमुनिमानवजेतें ॥ वेदनयनदेषतहैंतेतें ॥ विधिनिषेधतिनकैंफलजांनें ॥ अरुत्यौंहित्यौंतेउ
वषानें ॥ ९ ॥ सकलतुमारीआज्ञामांहीं ॥ ज्यौंज्यौंथापैंत्यौंवरताहीं ॥ सोमिथ्याक्यौंकहीयैंवेद ॥ या
कौंमोहीवतावोभेद ॥ १० ॥ द्विविधिवचनवढेंसंदेह ॥ वेहैंसत्यकौंधौंप्रभूएह ॥ यहपूरणसंदेहमिटावौ॥
एकभांतिकेवचनसुनावौ ॥११ ॥ याविधिपरमज्ञानविस्तारौं ॥ अपनेरचेजीवनिस्तारौं ॥ सुनीउद्धव
कीऐसीबानी ॥ तववोलेश्रीसारंगपानी ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवपरम
ज्ञानअबकहौं ॥ तेरेसबसंदेहाहिदहौं ॥ मैंभाषैंहैतीनउपाई ॥ कर्मअरुभक्तिज्ञानसमुझाई ॥ १३॥ज्यौं
ज्याकौंदेष्योअधिकार ॥ ताकौंतैसोकीयोबिचार ॥ जोभाषौंसबहीनसोज्ञान ॥ तातेंविषईतजैंनहीआन
॥ १४॥तातैंकर्मअकर्महोछाडाऊं॥लेकरिज्ञानमध्यठहराऊं॥तातैंवचनसकलममसत्य॥विधिनिषेधउनहींअ
सत्य ॥ १५ ॥ परिएसकलज्ञानकैंकारण ॥ ज्ञानलहैंतेंसकलनिवारण ॥ एतुमसेंढीब्रह्मकोज्ञांनौं ॥ ता
तैंकछूसंदेहनआंनौं ॥ १६ ॥ जिनभवसुषज्यौंहित्यौंजान्यौं ॥ ब्रह्मलोकलौंनस्वरमांन्यौं ॥ तातेंतिनकैंउ
द्यमदहैं ॥ औरसकलतजीथीरव्हैरहैं ॥ १७ ॥ तिनकौंज्ञानजोगअधिकार ॥ थीरव्हैंकरनौब्रह्मविचा
र॥अरुजिनविषयसुषनहींजानैं॥अरुतिनकेउद्यमनहींभानैं ॥ १८ ॥पारिममगुणसुनिसुषमानैं॥मेरोभजनभ

लौकरिजानैं ॥ ताकौंभक्तिजोगहितकारी ॥ ऐसैंजनैंतत्वविचारी ॥ १९ ॥ अरुजेविषयनिकेआधी
न ॥ तिनकौंउद्यमसौलौलीन ॥ कथासुननकौंनहींअवकास ॥ अरुममप्रीतिनहींअभ्यास ॥ २० ॥
तिनकौंकर्मजोगसुषदाई ॥ ईनतैंऔरनश्रेयउपाई ॥ एतीनौंभाषतहौंतोसौं ॥ निश्चलचितव्हैंसुनियेमोसौं
॥२१॥ प्रथमहीजोगकर्मविस्तारौ ॥ विषईजीवनिकौंनिस्तारौ॥मेरेबहुविधिगुणाविस्तारा॥कथाप्रसंगीविविध
प्रकारा ॥ २२ ॥ तिनमैंप्रीतिनउपजैंतोलौं ॥ ममजनसंगकरैंनहींजोलौं ॥ अरुजोलौंनबढैवैराग ॥
विषयीनकौंनहोवैंत्याग ॥ २३ ॥ तोलौंकर्मजोगनहीतेडा ॥ कर्मोनकरिमाकाभज ॥ अपनेंधर्ममांहोथि
तिरहैं ॥ कबहूंभूलिनिषेधनगहैं ॥ २४ ॥ यज्ञमहोत्सवबहूंविधिकरैं ॥ सकलकर्ममहितविस्तरै ॥ म
नतैंईछासकलमिटावैं ॥ सोनरस्वर्गनर्कनहींजावैं ॥ २५ ॥ ऐसैंज्ञानभक्तिकौंलहैं ॥ तातैंकर्मकालमहा
दहैं ॥ उद्भवयहमानवतनऐसौ ॥ सकलसृष्टीमांहींनहींजैसौ ॥ २६ ॥ स्वर्गनर्ककेईवंछैजाकौं ॥ परि
क्योंहीनहींपावैताकौं ॥ ज्ञानभक्तियातनकरिलहैं ॥ औरसबनिकरिभवजलवहैं ॥ २७ ॥ जोएसोमान
वतनपावैं ॥ सोसमस्तकामनामिटावैं ॥ तजैनिषेधएसकलकर्म ॥ अरुकामनाहेतजेधर्म ॥ २८ ॥ अ
रुफिरिनाहिंवंछैनरदेहा ॥ परमरतननहींपावैएहा ॥ जद्यपिबहूरौनरतनपावैं ॥ परिज्ञानादिककछुनराहावैं
॥ २९ ॥ मातापिताभाईकुललोग ॥ ज्ञानमिटावैंकारिसंयोग ॥ षानपानआदिकबहुंसाधैं ॥ वालापनसौं
ताकौंबाधैं ॥ ३० ॥ तातैंज्यौंलागिनाहींमरैं ॥ त्यौंलगिजतननिरंतरकरैं ॥ यातनकौंमिथ्याकरिजानौं ॥

अरुब्रह्मदानीकरीमांनौं ॥ ३१ ॥ तातेंजनतानिरंतरकरैं ॥ सावधानताहितृदैंधरैं ॥ यातनैंमैंआशक्ता नहोई ॥ करेंउपायमुगतकोसोई ॥ ३२ ॥ ज्यौंपषीतरुवासाकरैं ॥ तामैंप्रीतिमानमनधरैं ॥ अरुतावृक्ष हिकांटेकोई ॥ जिनकैतृदैंदयानहींहोई ॥ ३३ ॥ वृक्षसंगजोपंषीपरैं ॥ तोतिनकैवसऌहैंकरिमरैं ॥ परि सोप्रथमवृक्षहिंत्यागें ॥ काटतदेषिआपउठिभागौं ॥ ३४ ॥ आपुहीएसीभांतिविचावें ॥ पीछैंतहांरहैंजहा भावें ॥ त्यौंहींनरतनतरुआधारा ॥ आतमपंषकीयोआगारा ॥ ३५ ॥ ताकौंनिशदिनकरैंप्रहार ॥ स दानिरंतरवारंवार ॥ औसोदेषिंधरैतनत्रास ॥ प्रथमहींत्यागैंतरुकौवास ॥ ३६ ॥ मोमैंआईवसेराकरैं ॥ तातेंवहुरिनजन्मैंमरैं ॥ मानवतनभवसागरनावा ॥ मेरिकृपाहुंतैंयहपावा ॥ ३७ ॥ जामैंगुरुषेवटसुषदाई सानकूलमैंपवनसहाई ॥ तोहुंआपुहिजोनहींतारैं ॥ नावछोडिभवसागरडारैं ॥ ३८ ॥ ताकौंआतमघाती मानौं ॥ दूजोआतमघातनजानौं ॥ अरुजोभवतेहोईविरक्ति ॥ दुषमयजाननिहोवैराक्ति ॥ ३९ ॥ सो समस्तइंद्रियवसकरैं ॥ मननिश्चलकरिमोमैंधरैं ॥ जोमनधारतअचलनहोई ॥ तोहूंआतुरनहोवेकोई ॥ ४० ॥ एकहीवारनसकलनिवारैं ॥ कर्मसकलउपाधीटारैं ॥ कछूएकआसपूरेमनकी ॥ तृदैंराषैंमूल सपननकी ॥ ४१ ॥ देवेसोवजवेकेहेत ॥ सावधाननिरंतररहैंसुचेत ॥ आगेंफलकोअवधीबतावें ॥ दुषादिपाइविरक्तिउपारैं ॥ ४२ ॥ ऐसेंक्रमहिक्रममनधारैं ॥ कर्मसकलविकारनिवारैं ॥ इंद्रियगुणतृ दयनहींअन्नैं ॥ स्वासजीतिमनकीगातिभानें ॥ ४३ ॥ मनजीतनकौंपरमउपाई ॥ जातैंमनगतिजानीज.

नीजाई।।जैसैंअवसतुरंगमहोई।।अस्वनारवसनहोयेसोई।।४४।।तवतापरीचढीकरिअस्ववार ।। हठनहींक
रैंएकहीवार ।। कछुहयकोंरूपसहितचलावै ।। पीछैंदेचाबुकदोरावै ।। ४५ ।। ऐसीविधिहयकोवसकरैं
।। त्यौंजोगीकर्मकर्ममनधरें ।। सांख्याविचारानिरंतरकरे।।याविधियहजगजन्मैंमरैं ।। ४६ ।। तत्वनकीउत्प
त्तिविचारैं ।। ज्योंज्योंनिनसैंसैंमनधारें ।। सकलउपाधीउरेंकोदेपैं ।। आगुहिपरेंसकलतैंलेपें ।। ४७ ।।
याविधिजौंलगिमनवसहोई ।। तौंलगिकरैविचारहिंसोई ।। ऐसिविधजवसांख्याविचारैं ।।गुरुकेवचनतत्त्व
देमैंधारें ।। ४८ ।। तवसवहिंतेंहेइविरक्ति ।। मनमोंमेंहोवैंअनूरक्ति ।। जोगपंथजेअष्टप्रकारा ।। अरु
यहआतमादेहविचारा ।। ४९ ।। अरुममश्रवनकीर्तनध्यान ।। मनजीतनकौंपंथनआन ।। जोगअरुभ
क्तिसांख्यएतीन।।सवग्रंथनिर्मलीनेंचीन।। ५० ।।ईनतैंचोथोनहींठपाई ।। तातैंमनमोंमेंठहराई ।। ।। तातैं
चोथोकछुनकरणौं ।। ईनपंथनिमोकौंअनुसरणौं ।। ५१ ।। अरुजोकदैंपापहैंआवें ।। सावधानताउरन
रहावैं ।। तोहूऔरनकरैंउपाई ।। सोसोपाईहैतैंजाई ।। ५२ ।। औरकरैंनानाविधिजोई ।। सोसोअ
धिकअधिकमलहोई ।। विधिनिषेधसवहीमलजानौं ।। कवहुंकछुउत्तममतिमानौं ।। ५३ ।। विधिनिषे
धएकोनिंदोई ।। जातैंवंधेरहेंसवकोई ।। भयतैंवहुआरंभनिकरैं ।। अपनेअपनेविधिआचरें ।। ५४ ।। ता
पीछैंसववंधजनाऊं ।। करीअनंधसकलछोडाऊं ।। सकलनत्यागेंएकहीवार ।। तातैंकीनैंवहुतप्रकार
५५ ।। तातैंविधिनिषेधनहींकरणा ।। सकलत्यागीमोमेंमनधरणा ।। विधिनिषेधजनमिथ्याजानैं ।। अरु

भवसुषसबदुपकरिमानैं ॥ ५६ ॥ पारिसमरथतजिवैकौनाहीं ॥ प्रबलज्ञानप्रगट्यौनहींमांही ॥ ताकोंभक्ति जागअधिकार ॥ सहजैछूटैंसकलविकार ॥ ५७ ॥ मेरीकथानिरंतरसूनैं ॥ ल्हदेमांहिमेरेगुनगुनैं ॥ द्दढविश्वासल्हदैमैंराषैं ॥ मेरगुणनामानितभाषैं ॥ ५८ ॥ योंजद्यपिविषयनिमैंरहैं ॥ पारिमनवचकर्मत्यागैं चहैं ॥ सोनितभक्तिजोगसोंभजैं ॥ मोविचअंतरायसोंतजैं ॥ ५९ ॥ तंत्रपंथपूजाविस्तरैं ॥ ममहेतजो कछूसोकरैं ॥ याविधिसकलवासनानासैं ॥ मेरोरूपल्हदयप्रकासैं ॥ ६० ॥ तातैंब्रह्मरूपकरिजानैं ॥ द्वैतभावमिथ्याकरिमानैं ॥ संसयकर्मभर्मसबभागैं ॥ अहंकारतजिसोवतज्यौंजागैं ॥ ६१ ॥ जहांतहांमो हिकोंदेषैं ॥ मोबिनऔरकछुनहीलेषैं ॥ ऐसोऽहैममरूपसमावैं ॥ याहीजन्मऔरनहीपावैं ॥ ६२ ॥ तातैंजाकौमेरीभक्ति ॥ निशदिनममचर्णनिअनुरक्ति ॥ तातैंजद्यपिनाहींज्ञान ॥ अरुनाहिंवैरागनिदान ॥ ६३ ॥ तोहूसौंमोकौंअनुसरैं ॥ अतिदुस्तरभवसागरतरैं ॥ वर्णाश्रमकेधर्मनिकरैं ॥ बहुतभांतितप कौंअनुसरैं ॥ ६४ ॥ निशदिनसांष्यज्ञानविचारैं ॥ गहीवैरागसकलअघजारैं ॥ साधेजोगअष्टप्र कार ॥ दानव्रतादिकबहुविस्तार ॥ ६५ ॥ असबआपुहितचलीआवैं ॥ ममजनकेआधीनरहावैं ॥ मेरीभक्तिसकलसिरताजा ॥ जैसैंसकलनरनिमेंराजा ॥ ६६ ॥ भुक्तिमुक्तिपलनहींपरीहरैं ममजनकीनितसेवाकरैं ॥ अरुमैंजद्यपिबहुविधिकहौं ॥ भुक्तिमुक्तिकछुदौंनीचहौं ॥ ६७ ॥ परीमेरौनि जजनहींलेनैं ॥ सकलत्यागिममचर्णनिसेवैं ॥ निरपेक्षतापरमहैश्रेय॥ मौंबिनसकलवस्तकौंदेयें ॥६८॥

निस्पृहतायहसुषअपार ॥ जहांनहींकालकर्मअधिकार ॥ मैंनिस्पृहानिस्पृहजोहोई ॥ मेरोभक्तकहीजैसो
ई ॥ ६९ ॥ मेरेशमीलक्षणहैंजामैं ॥ मेरोरूपजानीयौंतामैं ॥ सबतेंनिस्पृहनितममभक्त ॥ मैंनिस्पृहता
सौंअनुरक्त ॥ ७० ॥ तातेंनिस्पृहतासुषऐसौ ॥ सकलविस्वमैंनाहींजैसौ ॥ निस्पृहजनमेरोसुषपावैं ॥ स्पृ
हावंतमैंनिकटनआवैं ॥ ७१ ॥ जेएकांतभक्तहैंमेरैं ॥ तिनकैंपुन्यपापनहींनेरैं ॥ रागद्वेषवर्जितसमदरसैं
॥ गुणातीतब्रह्मकौंपरसैं ॥ ७२ ॥ जोगभक्तिसांख्यएतीन ॥ तीनौंएकैकहैंप्रवीन ॥ इनकौंपाईमोकौंपा
वैं ॥ एबिनपाएनमोमैंआवैं ॥ ७३ ॥ असाधनहैंतीन्यौंनीकैं ॥ इनबिनऔरनतारकजीकैं ॥ एसाधनहैं
मेरोरूप ॥ इनतैंतत्वनऔरअनूप ॥ ७४ ॥ मेरोगोप्यरहस्यहैंजोग ॥ जीवब्रह्मकौंक्षिप्रसंजोग ॥ छूटै
सकलअविद्याभोग ॥ कालज्ञालनहींसंसेरोग ॥ ७५ ॥ एमैंतीनपंथविस्तारैं ॥ इनकरीबहुतजीवविस्ता
रैं ॥ जेइनजेजनइनमैंआवैं ॥ तेइतेंमेरोपदपावैं ॥ ७६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेइनपंथनिकौंतजैं ॥
करेकर्मविकार ॥ तिनपशुजीवनिकौंकहैं ॥ विधिनिषेधविस्तार ॥ ७७ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीधर
श्रीलक्ष्मीनृसिंहपरानंदसंदोह ॥ तिनकीकृपाकटाक्षतैंदूरहोतमनमोह ॥ १ ॥ ज्ञानक्रियाहरिभक्तिसैंजिन
कौंनहिंसंतोष ॥ तिनकाम्यौंकेहितकह्यादृव्यदेशगुणदोष ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई
॥ ॥ ज्ञानभक्तिअरुकर्मउपाई ॥ आपमिलनकौंदिएबताई ॥ परिजेअतिहिपशुअज्ञान ॥ इनकौं

छोडिकरैंकछुआन ॥ १ ॥ बहूतकामनातदैंधरैं ॥ तिनहितबहुकर्मनिविस्तरैं ॥ तेपशुदुषनिरंतरपावैं ॥ भवप्रवाहमांहिबहिजावैं ॥ २ ॥ तिनहितविधिनिषेधउचारैं ॥ तिनकेंबहुआरंभनिवारैं ॥ अपनौहिपनौअधिकारा ॥ तामेंवरतेतजोविस्तार ॥ ३ ॥ ऊंचोनीचोसवगारिहरैं ॥ अनेकर्ममांहीअनुसरैं ॥ सोसोतिन तिनकौंविधिजानौं ॥ तातैंऔरानिषेधाहिमांनौं ॥ ४ ॥ एकछुवस्तुबुद्धमातिदेषों ॥ पशुजीवनकौं बंधनलेपों ॥ उपजीवस्तुसमस्तअसुध ॥ परिकहींभावेंसुधअसुध ॥ ५ ॥ कर्मसकलछोडावनकारण ॥ मेंयहकीयोवेदउचारण । पापछोडाईधर्मग्रहवाऊ ॥ याविधिबहुआरंभछूडाऊं ॥ ६ ॥ यहसमस्तजगकोंव्यवहार ॥ जातेंजगकौंवारनपार ॥ क्षितिजलपवनतेजआकास ॥ सबजगपंचभूतपरकास ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकथावरपरजंत ॥ पंचभूतकरिसबवरतंत ॥ अरुएकैआत्मसबमांही ॥ तातैंभेदकहुंकछुनाहीं ॥ ८ ॥ परितथापिमभाष्योवेद ॥ ताकरिकीनेनानाभेद ॥ तिनकेस्वार्थसुषकेहेत ॥ विधिउचारीफलनिसमेत ॥ ९ ॥ देशकालगुणद्रव्यसुभाव ॥ इनकोंभाष्योंनानाभाव ॥एकानिषेधएकविधिभापें ॥ योंसंकोचमाहीसबरापें॥१०॥अरुजिनदेशकृष्णमृगनाहीं॥अरुजहांद्विजसेवानकरांहीं ॥ अरुजो कृष्णमृगजबरहैं ॥ परिमिलेछतहावासागहैं ॥ ११ ॥ अरुजद्यपितुरकऊंतहांनाहीं ॥ परिमघहटआदिनूकोंमांही ॥ अरुजोमगधादिकपरिहरैं ॥ परिकदरजतादूरनकरें ॥ १२ ॥ अरुकदरजतामेंटोहोई ॥ परिजो उसरहोवेंसोई ॥ सोसोदेसनिषेधकहीजें ॥ तिनमेंवासादिकनहींकीजै ॥ १३ ॥ तिन

तैंऔरदेसरुचौजानै ॥ तिनमांहिंवासादिकठानैं ॥ औरजोकालकर्मकौनाहीं ॥ सूतकआदिभयजामाहीं ॥ १४ ॥ सोसोकालनिषेधकहीजैं ॥ उतमसोजामेंविधिकीजै ॥ वस्त्रादिकजलादिकसूध ॥ मुत्रादिक तेंहोइअसूध ॥ १५ ॥ सूधअसूधवचनतेंयौंही ॥ सूंघतेपुष्पादिकयोंहीं ॥ तवहींपावककर्‌यौसोसूध ॥ बहूतकालतैंहोइअसूध ॥ १६ ॥ कहींयेंभूमींमसानअसूध ॥ बहुतकालतेंकहींयेंसूध ॥ भूपींमेंवरपाज लहोई ॥ बहूतकालतेंशुद्धहींसोई ॥ १७ ॥ औसीभांतिऔरउजानों ॥ शुद्धअशुद्धभेदपहीचांनों ॥ विनुंगानसुधवालादिक ॥ स्नानादिकतैंशुधजुवादिक ॥ १८ ॥ जीरणवस्त्रअधनकोसूध ॥ द्रववतकौंपरम असूध ॥ औरौसकलशक्तिउनमान ॥ शुधअशुधाहिकीयोंनषान ॥ १९ ॥ सोसबदेशकालअनुसार ॥ विधिनिषेधकौंकर्‌यौविचार ॥ धनअरूपात्रबस्त्रगजदंत ॥ तेलअरुघृतहेमादिअनंत ॥ २० ॥ कालाग्निजलमाटीवाई ॥ जथाजोगहेंसुधकराई ॥ अरुजोकछुलग्योदुर्गंध ॥ ज्योंलगिधोएमीटेनहींगंध ॥ २१ ॥ त्योंलगिजानीअसूधनगहीयें ॥ गंधगएतेनिमलकाहियें ॥ शक्तिअवस्थातपअस्नान ॥ संसकारसुभकर्मअरुदान ॥ २२ ॥ ममसुमरणतेंहोवेसूध ॥ करेअन्यथाहोइअसूध ॥ मेरोमंत्रलीयेंविधिजानौं ॥ मंत्रविहीनानिषेधाहेमानौं ॥ २३ ॥ अपनोमोहिसुधरुवकर्म ॥ करेविपर्ययहोइअधर्म ॥ देशकाल कर्मअरकरता ॥ द्रव्यमंत्रएषटआचरता ॥ २४ ॥ एजोसुधहोइतोसूध ॥ एनअसूधतोहोइअसूध अरुकहुंहोवेंशुधअशुध ॥ कहुंअशुधयोंहोवेंशुध ॥ २५ ॥ सुधअसुधभेदहैंजाकैं ॥ रागद्वेषहोवेगो

ताकैं ॥ जोकहीयैउंचेकोधर्म ॥ नीचैंकोहैंउचैंअधर्म ॥ २६ ॥ अरुजोकछुधर्मनीचेकूं ॥ सोईहैंअधर्मऊंचेकूं ॥ तांहींतेंदोउभ्रमजानैं ॥ मेरोभक्तकदैंनहिमानैं ॥ २७॥ जोकबहुंविषअमृतलीजैं ॥ लेऊंचेनीचेकुंदीजैं ॥ तोतिनमेंभेदनहोई ॥ मरनोअमरएकसमदोई ॥ २८ ॥ योविधिनिषेधउहोवैं ॥ उंचनीचकीठौरनजावैं ॥ परिएदोउहेकछुनाहीं ॥ आपविचारोअंतरमांही ॥ २९ ॥ नीचैंनीचकर्मआचरैं॥मदिरापानादिकउचरैं॥तोहुंइनकौंदूषणनाहीं॥सोनितहीहैंदूषणमांही ॥३०॥अरुजोग्रहीकरतहैसंगऋतुकेसमयजुवतिप्रसंग ॥ तोताकौंकछुदूषणनाहीं ॥ सोनितहीहैदूषणमांही ॥ ३१ ॥ जैसैंपर्योधरणीपरकोई ॥ ताहीनपरनीकोंभयहोई ॥ परिजेकछुचढेहैंऊंचें ॥ संगकरिदहिआवैंनीचें ॥ ३२ ॥ तातैंतिनकौंसंगनकरणो ॥ मनवचक्रमसंगपरिहरणो ॥ ज्यौंज्यौंप्राणीछोडेकर्म ॥ त्यौंत्यौंछुटैंपावैंमर्म ॥ ३३ ॥ क्षेमधर्मसबनिकौंएह ॥ मिटेसोकमोहसंदेह ॥ यानिमितमेंभेदसूनायें ॥ थोरैंथोरैंमेंठहरायें ॥ ३४ ॥ पीछेंभ्रमकहीसकलनिवारैं ॥ ऐसीभांतिजीवनिविस्तारैं ॥ जबनरविषयनिउत्तमजानैं ॥ तबतिनमेंअशक्तिहिठानैं ॥ ३५ ॥ तातैंत्हृदयउपजैंकाम ॥ तातैंतहांकलहकौंधाम ॥ ताहिंहुतैक्रोधउपजावैं ॥ तबअविवेकआपुहीआवैं ॥ ३६ ॥ सोअविवेकहरैंसबज्ञान ॥ तातैंप्रानिमृतकसमान ॥ तातैंकाजअकाजनजानैं ॥ निशदिनबहुविधिचिंताठांनैं ॥ ३७॥ सबपुरुषारथहोवैंछीन ॥ निशदिनरहैंदुषितअरुदीन ॥ तातैंसमुझैआपुनआन ॥ मिथ्याजीवेवृपभसमान ॥ ३८ ॥ ज्यौंहोवेलौहारकैषाल ॥ स्वासलेतयोंषोवैंकाल

अरुपुनिकहैंकर्मफलजेतैं ॥ स्वर्गादिकनानाविधितेतैं ॥ ३९ ॥ तेतेकहींकरिरुचीउपजाई ॥ मेटीनिषेध निवधिकरवाई ॥ जैसैंऔषधकटुकषवावैं ॥ वालककौंलाडूहिंदिपावैं ॥ ४० ॥ औषधकौफललाडूना हीं ॥ औषधहूंतैंरोगसवजाहीं ॥ स्वर्गहेतजोकर्मनिकरैं ॥ पुनिसुन्तित्वफलहिंपरिहरैं ॥ ४१ ॥ तवअ नर्थतजिअर्थहिंआवैं ॥मोमांहीनिहकर्मसमावैं॥अरुजवतेंजन्महीपावैं ॥ तवतैंआपुहिविषयकमावैं॥४२ ॥ पुत्रकलत्रकुटंवअरुप्राना ॥ इनकेहेतचहैंसुषनाना ॥ आपुआपुकौकरैअनर्थ ॥ तिनकौंमूरषजानैंअ रथ ॥ ४३ ॥ ऐसैयाभवमैंनितभर्मैं ॥ कदैंनजानैंसुषकेमर्मैं ॥ अरुतिनकौजोभरमतदेषैं ॥ सदानिरंतर दुषीतलेषैं ॥ ४४ ॥ सोतिनकौंकवहूंनवहावैं ॥ अर्थअरुकामनकदेंदृढावैं ॥ तातैंमैंतोसवविधिजानौं॥ कै सैकामअरुअर्थवषानौ ॥ ४५ ॥ परिजेकछुश्रुतिमांहीसुनायें ॥ अर्थधर्मअरुकामवतायें ॥ तेतेसकल छुडावनकारण ॥ हेतविचारकीयोउचारण ॥ ४६ ॥ एसोवेदतत्वनहिंजानैं ॥ मूरषपुष्पितवैनवषानैं ॥ फलनिहेतआरंभकेकर्म ॥ तिनकौंकदैंनछूटेभर्म ॥ ४७ ॥ कामीकृपणलोभअधिकारी ॥ तृष्णाआकुल सदाविकारी ॥ फूलहिंमांहीफलकरीमानैं ॥ कामनिलागतत्वनहींजानैं ॥ ४८ ॥ मैंतिनकेनितद्दढैमाही ॥ परितौहूतौजानैनाहीं ॥ जातैंयहसवजगतपसारा ॥ अरुसमस्तयाकेआधारा ॥ ४९ ॥ जाकीशक्ति पाइसववर्त्तैं ॥ चंवकसंगलोहाज्यौंनितैं ॥ जाकीआज्ञासवहींमानैं ॥ कोईमरजादानहींभानैं ॥ ५० ॥ ए सोंहिसवहीनमेंईस ॥ जेसैंसकलदेहमेंसीस ॥ परितेकांमकर्मतेंअंध ॥ नामोहींदेषैंअर्थनिवंध ॥ ५१ ॥

जैसेंनयनरोगमयहोवें ॥ आगेंहोतिवस्तुनजोवें ॥ योंअज्ञानअंधकमिष्ठ ॥ देषेनहींनिकटमेइष्ट ॥ ५२ ॥ तेमोविनममतोनजांनें ॥ हरिजीवनजज्ञादिकठांनें ॥ तेफिरतिनहींहतेंपरलोक ॥ जन्मजन्मपावेभयसोक ॥ ५३ ॥ जबयाकेंबहुहिंसादेषी ॥ हनिहनिजीवजीवकापेषी ॥ ति ाकेहेतकहो‍तु ानी ॥ हिंसाजज्ञाहेमांहिवषानी ॥ ५४ ॥ पशुवधएकजज्ञमेंभ ष्यौ ॥ औरसमस्तदूरकरिनाष्यो ॥ जबप्राणी तामें5हरावें ॥ तबपुनिवेदसकलछुडावें ॥ ५५ ॥ वानिमितपसुहिंसाभाषी॥सोमूरषनितत्वकरिराषी॥ तातैंबहूविधिकर्मनिकरें ॥ बहुकामत्हदैमेंधरैं ॥ ५६ ॥ पशुहिंसाकरिकरेंव्यवहार ॥ जेजे गावेबहुप्रकार ॥ देवाितरभूतनकोंयजे ॥ उरतेंसुषइच्छानहींतजें ॥ ५७ ॥ सुनतुलस्वर्गादिकभोग ॥ तिनकौंसुनिउत्मयालोग ॥ तिनकोइच्छात्हदैमैंधरें ॥ द्रव्यषरीचकर्मनिबिस्तरैं ॥ ५८ ॥ विघ्रहोईबहुकर्मनिमांहीं ॥ स्वर्गादिकउागवैंगाहिं ॥ ज्यौंकोईसायरपरहिंजावैं ॥ धनहितग्रहकैंधनहींलगावें ॥ ॥ ५९ ॥ पाछेंपरैविघ्रजोकोई ॥ तादोन्योंतेंजावेंसोई ॥ योंजेबहुविधिकर्मअपावें ॥ तेपसुदुहूलोकतैंजावें ॥ ६० ॥ सातिकजेतेदेवानिभजैं ॥ जक्षादिकानिराजसजजैं ॥ तामसभूतप्रेतबहूहेवे ॥ तनमनधनतिनतिनकोंदेवें ॥ ६१ ॥ इहांजज्ञबहुतविधिकीजैं ॥ विप्रनिवहूतदक्षिणादीजैं ॥ तातेंस्वर्गादिकसुषपाईयें ॥ तहांबहुतविधभोगभोगईयें ॥ ६२ ॥ पुनिजबहोवेतिनकौअंत ॥ तबहूवेभूवमेंदनरंत ॥ ऐसीभांतिकामनाकरें ॥ तिनानिमितकर्मनिविस्तरैं ॥ ६३ ॥ तिनकौमेरीवातनभावैं ॥ भक्तिकहातैंत्हदेआवें ॥ज

यपिवेदकमंउचारैं ॥ धर्मअर्थकामाबिस्तारैं ॥ ६४ ॥ परितथापिब्रह्महींनतावैं ॥ क्रमक्रमदूजौंसकलछो
डावैं ॥ परिश्रुतिकौंआसेनहींजानैं ॥ फिरिकछूऔरेऔरबषानैं ॥ ६५ ॥ शब्दब्रह्ममहांदुर्बोध ॥ पंडि
तहूंनहींपावैंसोध ॥ सुषमरूपथूलव्हैंजाकौं ॥ मोत्रिनभेदलहैंकौताकौं ॥ ६६ ॥ प्राणसरूपपरासेनाम ॥ प
स्यंतिकौंमनमेंधाम ॥ तीजीकंठमध्यमामूल ॥ चोथीप्रगटवैषरीथूल ॥ ६७ ॥ भेदतिनकौंकोइनजानैं ॥ ता
तैंऔरेऔरबषानैं ॥ अंतपारकोइनहींपावैं ॥ ज्यौंसायरथाह्यौंनहींजावैं ॥ ६८ ॥ अतिगंभीरअर्थहैंजा
कौं ॥ कोईभेदनजानैंताकौं ॥ मेसबहिनमैंअंतरजांमीं ॥ शक्तिअनंतसकलकोस्वामी ॥ ६९ ॥ सर्वव्या
पकब्रह्मस्वरूप ॥ लिपनकबहूंपरमअनूप ॥ सोईव्यापकसबहिनूमांहीं ॥ शब्दरूपदूजाकौनाहीं ॥ ७० ॥
कमलनालमेंतंतूजैसें ॥ शब्दरूपसबमेंमेंऐसे ॥ सोईप्रगट्यौबहुविस्तार ॥ मनकरित्हृदयहूंतैंमुषत्धार ॥
॥ ७१ ॥ज्यौंमकारितंतुनिबिस्तारैं ॥ करिबिस्तारबहुरिसंहारैं ॥ वेदत्यौंहिममाविस्तार ॥ ओंकारमूलआ
कार ॥ ७२ ॥ तातैंअक्षरबहुतप्रकार ॥ तिनतैंछंदवारनहींपार ॥ चारचारअक्षरअधिकांहीं ॥ छंदहोतएसीवि
धिजांहीं ॥ ७३ ॥ अेकहुंतैंयौंहोईअनेक ॥ बहुरौंसकलएककेएक ॥ गायत्रीअक्षरचौवीस ॥ उष्णिकछं
दअष्टअरूवीस ॥ ७४ ॥ जोबत्तीसअनुष्टुपसोहैं ॥ बृहतिनामतीसषटकोहैं ॥ पंक्तिनामअक्षरचालीस ॥
सौंहीत्रिष्टुपचौवालीस ॥ ७५ ॥जपतिछंदअष्टचालीस ॥ कहतपारनहींकोटबरीस ॥ याविधिप्रगट्योबहुवि
स्तार ॥ जाकौंकछूंवारनहींपार ॥ ७६ ॥ कहांहदैमैंकहांवतावै ॥ लेकरिअंतकहांठहरावैं ॥ एसोमतो

नजानैंकोई ॥ मोबिनभावैंविधिकिनहोई ॥७७॥ जज्ञरूपकहीमोकौंराषैं ॥ सकलदेवमयमोकौंभाषैं ॥ मेरेहेतकर्मकरवावैं ॥ मोतैंउपज्यौंसकलबतावैं ॥ ७८ ॥ अंतसकलकौंभाषेनास ॥ मोकौंकहैंनित्यप्रकास ॥ नानारूपनिवृथाजनावैं ॥ एकब्रह्मकहीसकलसुनावैं ॥ ७९ ॥ जेसैंसापजेवरीमांही ॥ यौंसबजगतबतावैंनाहीं ॥ मोकौंनित्यनिरंजनभाषैं ॥ अंजनसकलदूरिकरीनाषैं ॥ ८० ॥ तातैंश्रुतिनितमोहीबतावैं ॥ परियहतत्वनकोईपावैं ॥ सोपावैंजोममआधीन ॥ होईनिहकामरहैंलौलीन ॥ ८१ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ यौंसुनिकरिश्रुतितत्वकौंउद्धवलह्यौंआनंद ॥ प्रणकारिपुनिकृष्णसौंजातैंछूटैभवफंद ॥ ८२ ॥ ॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेएकाविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥
तत्वगणितबावीशमैंकह्यौंभेदसबएक ॥ जन्ममृत्युविधिआदिलेमायाब्रह्मविवेक ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥-हेदेवेशतत्वहैंकेतैं ॥ कहोकृपाकरिमोसौंतेतैं ॥ जिनकौंरचितसकलसंसार ॥ जोदीसेनानाविस्तार ॥ १ ॥ तुमतौंअष्टाविंशतिकहें ॥ तेमैंदढकरिमनमैंगहें ॥ परिबहूतैंमिलिबहुविधिकहें ॥ अरुतिनतेंसुनित्योंहिगहें ॥२॥ कोईकहैतत्वछवीस ॥ अरुत्योंकोईकहेपंचीस ॥ केईषटअरुकेईचार ॥ केईभाषैंशतविचार ॥ ३ ॥ केईनवकौंकरैंविवेक ॥ केईभाषैंदशअरुएक ॥ केईतत्वनतैंषोडश ॥ अरुत्यौंएकैकहैंत्रयोदश ॥ ४ ॥ केईभाषैंदशअरुसात ॥ अैंऋषिमतैंस्मृतिविष्यात ॥ कौनप्रयोजनलेलेंभाषैं ॥ यौंअपनेअपनेमतराषैं॥५॥कृपाकरौनिजबेनसुनावौ ॥ सत्यमतोसोमोहीजनावौ

सुनिउद्धवकैवेनरसाल ॥ कृपासिंधूबोलेगोपाल ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
॥ हेउद्धवज्यौंज्यौंसबभाषें ॥ जितनेजितनेतत्वनिराषैं॥ तेतेंतुमसबमानोसत्य ॥तत्वविचारैंसबैंअसत्य॥७॥
मायादेपिकहैंजोजेतें ॥ मायामांहींसत्यहैंततैं ॥ मोहींदेषिजोतिनकोंदषें ॥ तोसमस्तमिथ्याकरीलेषें ॥ ८
॥ मायामांहींजुक्तविचारें॥ आनौआनौमतोउचारें ॥ यहयोंयहयोंयहयोंनांहीं ॥ कहैंसबैंमिलिआपुनमांहीं
॥९॥ यहयोंहीहैंजोमैंभाषों॥तेरीकहीसत्यनहींरापौं ॥ याविधिममामायाभरमाए ॥ तिननानाविधिपंथचलाए
॥१०॥मममायाकीशक्तिअनंत॥तिनकेपंथनिकोंनहींअंत ॥ जबसमदमउरअंतरआवैं॥तबएसकलभेद
छिटकावैं॥११॥जेतेतत्वसकलमायाकैं॥जिनतेंभएसकलताताकैं॥क्रमक्रमतत्वउपजतेगए ॥ त्यौंत्यौंभेदब
हूतविधिभए॥१२॥जैसेएकवृक्षविस्तार ॥ ताकीसंपतिबहुतप्रकार॥कहुसाषाबहूतपरेसाषा ॥अरुतिनकें
बहूउपसाषा॥१३॥तिनकोंबहुतभांतिविस्तार॥पानफूलफलविविधप्रकार॥अरुतावृक्षहिंवरनेकोई॥ज्यौंज्यौं
कहैंसत्ययोंहोई॥१४॥ योंरेहोईकहेसोसाषा ॥ बहुतेंहोईमिलिपरसाषा ॥ उपसाषामिसिबहुतेंविहोवै ॥
तेसबपंथासत्यसबजोवैं ॥ १५ ॥ योंसंसारवृक्षविस्तार॥मायामूलसकलप्रकार ॥तत्वसकलसाषापरसाष
अरुतिनकेबहुविधिउपसाषा ॥ १६ ॥ तातेंज्यैंवर्णत्योंसत्य ॥ पारिसबमायासकलअसत्य ॥ त्योंहित्योंजि
नकेमनआयौ ॥ त्यौंहित्यौंतिनवरनिसुनायौं ॥ १७ ॥ मायाकरीबंध्योसोआतम ॥ तातेंछोडैसोपरमात
म ॥ एद्वैतअरुजडचोवीस ॥ तिनकौंमिलेसकलछवीस ॥ १८ ॥ अरुजेबंधमुक्तहैदोई ॥ तेभमंमा

यासत्यनकोई ॥ तातैंजीवब्रह्मदूनाहीं ॥ यौंपचवीसजानौंमाही ॥ १९ ॥ सतरजतमएगुणहैजेतै ॥ जडसरूपमायाकेतेतै ॥ रजउतपतिसातिकप्रतिपाल ॥ तामसरूपग्रसतहैकाल ॥ २० ॥ राजसहुतैंकर्मअधिकार ॥ तामसतैंअविवेकअपार ॥ सातिकगुणतैंउपजेज्ञाना ॥ एहेमायाकेगुणनाना ॥ २१ ॥ इनतैंपरेआतमामानौं॥तातैंब्रह्मरूपकरिजानौ ॥पंचवीसताहितेकरे ॥ त्यौंहितैसुनिऔरउगए ॥२२॥सोहेकालगुणनिविस्तारै ॥ सोउसभावसोशक्तिपसारै ॥ तातैंकालरूपहरिजानौं ॥ अरुसुभावमहत्तत्वहिमानौं ॥ २३ ॥ तातैंतत्वअधिकनगहीयें ॥ पंचवीसछवीसहिकहीयें ॥ प्रकृतिपुरुषमहतत्वअहंकारा ॥ तनमात्रएपंचप्रकारा ॥ २४ ॥ कर्णत्वचानयनरसघ्राणा ॥ एपंचौइंद्रियहैज्ञाना ॥ पायुउपस्थचर्णकरवानी ॥ पंचकर्मइंद्रिययहजानी ॥ २५ ॥ मनदशहुंइंद्रियकौराजा ॥ जाकीशक्तिकरैंसबकाजा ॥ क्षितिचलपवनतेजआकाश ॥ एअठाईसतीनगुणपास ॥ २६ ॥ गतिउत्सर्गकर्मअरुबचना ॥ एपांचौइंद्रियफलरचनां ॥ तातैंअष्टाविंशतितत्व ॥ अधिकनभाषेंज्ञानसित्व ॥ २७ ॥ सृष्टिआदिथिमायाएक ॥ पुरुषशक्तितैंभईअनेक ॥ तनमात्रामहतत्वअहंकार ॥ ऐहेकारणनवप्रकार ॥ २८ ॥ पंचभूतमनइंद्रियदश ॥ कारजरूपप्रकृतिषोडश ॥ सत्वरजतमगुणतीनप्रकार ॥ तिनतैंरच्यौंसकलविस्तार ॥ २९ ॥कारणकरणप्रकृतिजानौं॥पुरुषनिमितसाक्षीमानौं ॥ इच्छाशक्तिपुरुषतैंगावें ॥ मिलिसमस्ततत्वसृष्टिउपावें ॥ ३० ॥ सतधातुकौंसवविस्तारा ॥ आतमद्रष्टाकैआधारा ॥ सकलतत्वशतमेंआयें ॥ तातेंएकनिशपत्र

तायैं ॥ ३१ ॥ पंचभूतआपाहिउपजायैं ॥ तिनकैंबहुविधिदेहबनायें ॥ आपुप्रवेसकीयौहारितिनमें ॥ चेतनदीसतुहैंजिनाजिनमैं ॥ ३२ ॥ ऐसीविधषटकौविस्तार ॥ आपुमांहीसबकरैंविचार ॥ पृथिवीआपतेजत्रयतत्व ॥ अरुआतमानिर्मितसबसत्व ॥ ३३ ॥ याविधिचारतत्वविस्तार ॥ ऊंचौनीचौसबसंसार ॥ पंचभूततनमात्रापंच ॥ पचेंद्रियसबपरपंच ॥ ३४ ॥ मनआतमामिलिदशसात ॥ तत्वसत्तदशजानोतत ॥ मनआतमाएककरिजानैं ॥ तेजनषोडशतत्वबषानें ॥ ३५ ॥ पंचभूतअरुइंद्रियपंच ॥ ब्रह्मजीवमनकोपरपंच ॥ एसीविधिकरिपंथचलावैं ॥ तेहरकौंसबजगतबतावें ॥ ३६ ॥ इंद्रियपंचपंचहीभूत ॥ आत्मामिलिसबउद्भूत॥ऐसीविधएकादशकहैं॥जुक्तविचारत्ददैमैगहें ॥३७॥ पंचभूतमनबुधअहंकार॥ आतमामिलिनवकोविस्तार॥ऐसीबहुविधिमारगकहैं॥जुक्तिविचारत्ददैमैगहें॥३८॥प्रकृतिपुरुषकौंलहैंविवेक॥इनकौंजानिएककौंएक॥एसोसुनितत्वकौंज्ञान॥उद्धवपूछ्योपरमसुजान॥३९॥उद्धवउवाच ॥चौपाई ॥हेप्रभुजीयहज्ञानसुनावौ॥मेरेउरकोअज्ञानामिटावौ॥चैतनज्ञानरूपअविनासी ॥सुधानंदपरमप्रकासी॥४० ॥ऐसैंआतमतुमरोरूप ॥ परैंगुणनितैंपरमअनूप ॥ जडविनासमयपरमअसुध ॥ दुषरूपपलसुषनशुध ४१ ॥ ऐसीप्रकृतिपुरुषतैंन्यारी ॥ तोहूंभईपरस्परप्यारी ॥ प्रकृतिमांहीआत्मामिलिरह्यौ ॥ अरुआतमाप्रकृतिकरिगह्यौ ॥ ४२ ॥ इनमेंभेदनजान्यौंपरैं ॥ एकमेकव्हैसबअनुसरें ॥ इनमैंप्रकृतिकहांलौंकहीयैं ॥ कोनआतमाजोदृढगहीयै ॥ ४३ ॥ करिकरुणाबानीविस्तरौं ॥ वचनबानसंशयपारिहरौं ॥

तुममामाबंध्योसंसार ॥ तुमहीहुतैंहोइंउधार ॥ ४४ ॥ तुमहीमायाकीगतिजानों ॥ कृपाकरौतबतुमहीभा
नौ ॥ बानीसुनिभक्तअपनेकी ॥ तबबोश्रीकृष्णविवेकी ॥ ४५ ॥ ॥ श्रीभगवनुवाच ॥ ॥ चौपा
ई ॥ ॥ हेउद्धवयहज्ञानअगाध ॥ कोइएकलहेंममसाध ॥ सोयहज्ञानसुनावोंतोही ॥ तुहैसदाअनुव्र
तमोही ॥ ४६ ॥ उद्धवप्रकृतिरचेसंसार ॥ सुषमथूलविविधप्रकार ॥ उपजेंबरतेंहोइंबिनास॥नामेंआत्म
नित्यप्रकास ॥४७॥ उद्धवयहहेमेरीमाया ॥ तिनसतरजतमगुणउपजाया ॥ तिनकोंसकलत्रिविधविस्तार
॥ जाकोकछुपारनहींपार ॥ ४८ ॥ त्रिविधकहनकोंपरिकहूंभेद ॥ तिनतेंजीवलहींनेत्यबेद ॥ अध्यात्म
अधिदैवअद्भुत ॥ त्रिविधरूपसबजगउदभूत ॥ ४९ ॥ दृगअध्यात्मरूपअधिभूत ॥ रविअधिदैवमिलि
अदभूत ॥ तीनोंमिलेपरसपरजबही ॥ तिनकोंकार्यसीजैंतबही ॥ ५० ॥ तीन्योंविनाकछुनहींहोइं ॥ ती
नोंमिलिवरतेसबकोइं ॥ त्वचास्पर्शपवनज्योंजानों ॥ कर्णनिशब्ददिगयोंमानों ॥ ५१ ॥ नासागंधअ
स्वनीसूता ॥ जिव्हारसवर्णजलजूता ॥ चितचेतनाअंतरजामी ॥ बुद्धिबोधनाब्रह्मास्वामी ॥ ५२ ॥
अहंकारअहंकरतारुद्र ॥ मनमानवोदेवताचंद्र ॥ याविधित्रिविधप्रपंचपसार ॥ सकलपरेंआत्मानजसी
र ॥ ५३ ॥ इनतीनोंविनजगतनहोइं ॥ तेआतमाविनरहेंनकोइं ॥ आदिसकलकेआतमएक ॥ जातें
चेतनहोइंअनेक ॥ ५४ ॥ आत्मस्वप्रकाशअविनासी ॥ चेतनरूपसकलसुषराशी ॥ एसबाआतमे
केबंधाय ॥ अरुआतमांसकलकेपार ॥ ५५ ॥ विनआतमाकछुनहींहोइं ॥ अरुआतमाननानेंकोइं

महत्तत्त्वज्यौंउमज्यौंअहंकार ॥ तिहुंगुणनिकौंत्रिविधप्रकार ॥ ५६ ॥ सोअज्ञानमूलकरिमानौं ॥ जा
कौंकीयोंजगतमयजानौं ॥ सोआतमांआपहिलीयौ ॥ भवभयआपुआपुकौंकीयौं ॥ ५७ ॥ आतमस
दाएकहीरूप ॥ अहंकारतेंपरेंअनूप ॥ सोजबरूपआपनोंजानें ॥ तबहीसकलउपाधीभानैं ॥ ५८ ॥
॥ सोकछूहोइनहींउपाधी ॥ परिआतमालेईकरिव्याधी ॥ समुझेजबहीआपनोंरूप ॥ तबआतमातजेभव
कूप ॥ ५९ ॥ असतबरूपआपनौंजानैं ॥ जबममचर्णत्द्देमेंआनैं ॥ जद्यपिमिथ्याबसंसार ॥
॥ जोकछूदीजेंविविधप्रकार ॥ ६० ॥ परिजौलौंनहींमोकौंभजैं ॥ तोलौंनिजअज्ञाननतजैं ॥
जबहींमेरेसरणहिंआवैं ॥ तबहीआतमज्ञानहिंगावैं ॥ ६१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसैंश्रीमुखबैनसुनिप्र
कृतिपुरुषकोज्ञान ॥ उद्धवकीनोंप्रण्णतबहरिजनपरसुजान ॥ ६२ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ तुमकरिरहितबुधिहैजिनकी ॥ कहियेदेवकौंनगतीतिनकी ॥ सकलव्यापिआत्माएक ॥ क्यौंक
रिपावैदेहअनेक॥६३॥अरुशुभअशुभकर्महैंजतें॥त्रिगुणरचितकहीयेंसबतेतें ॥ तिनकर्मनिनिहकर्मबंधा
वें॥क्योंकरिजानिआजोनोपावें ॥६४॥अमरमरेकेसेंकाहिदेवा॥जाकौमाहीबतावौंभेवा ॥ यहतुमाबिनानको
ईजानैं ॥ जद्यपिविद्याबेदबषानैं ॥ ६५ ॥ जोकछुपढैबंधसोहोई ॥ तातैंतत्वनजानैंकोई ॥ याविधिउद्धव
पूछ्योंज्ञान ॥ तबहंसीबोलेश्रीभगवान ॥ ६६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धव
यहमनअरमविकारी ॥ सबइंद्रियनिमांहीआधिकारी ॥ इंद्रियनिव्हैंमनईसबकरैं ॥ सुन्हैतरूहुउद्यमाविस्त

रैं ॥ ६७ ॥ सोतनतजिदूजैंतनजावैं ॥ तहाहीतहाआतमाआवैं ॥ जिनजिनसुषनिसुनेअरुदेषै ॥ तिन
तिनकौंउत्तमकरिलेषैं ॥ ६८ ॥ तिनकोसोमननिशिदिनिध्यावैं ॥ यहतनछीनभएतहांजावैं ॥ वहतनपाई
बिसारेयाकौं ॥ जन्ममर्णकहियतुहैंताकौं ॥ ६९ ॥ जातनमेंबांधेअभिमान ॥ छोडैपूर्वतनकोआन ॥ ज
न्ममरणआत्मकौंसोई ॥ दूजोजन्ममरणनहींकोई ॥ ७० ॥ जैसैंसुपनमनोरथजावै ॥ यहतनछोडीओ
रहीपावैं ॥ तबयातनकीसुधीनरहैं ॥ वाहीतनकोंआपुहींकरैं ॥७१॥ जन्ममरणस्मृतिकौंहोई ॥ आतम
जन्ममरणहेसोई ॥ औरकछुआत्मनहींमरैं ॥ अरुकबहुनाहींअवतरैं ॥ ७२ ॥ योंतनमेंमनकोअभि
माना॥तातैंतनउपजतुहैंनाना॥तेसबआतमकेआधारा॥तनमनबुधिचितअहंकारा ॥७३ ॥जिनसंगतिआ
त्मकौंदुष॥तिनहिंतजेंविनपलनहींसुष॥उद्भवसकलदेहहैंजेतें ॥सदासकलविनशनहैंतेतैं ॥७४॥कालनदीप्र
वाहप्रचंडताकरिपलकपरकनहींपंढ॥जैसैंनदीनिरंतरवहैं॥परिदेषनकौंत्यौंहीरहैं॥७५॥औरज्योंआर्चिनिरं
तरजावैं ॥ परिदीपादीतिमहिंरहावैं ॥ अरुजैसैंसबवृक्षनिकेंफल ॥ दीसैंत्यौंपरिथिरनाहींपल ॥ ७६ ॥
त्यौंहिसबदेहानिकौंजानौं ॥ कालहींग्रसतनिसादिनमानौं ॥ जद्यपिअवस्थाजातिलेषैं ॥ बालकुमारजुवादि
कदेषैं ॥ ७७ ॥ परितोहूंमूरषनहींजाने ॥ मैंवहईहौंयौंकरिमानैं ॥ यहआत्मासोसदाअजन्म ॥ देहसं
गतेंपावेजन्म ॥ ७८ ॥ अरुत्यौंअमरनिरंतरजानौं ॥ देहसंगमरतोसौंमानौं ॥ जैसेंअग्निदारुकेसंग ॥
सदांलहेउतपातिअरुभंग ॥ ७९ ॥ ज्यौंलगितनकौसंगतीरहैं ॥ त्यौंलगिआत्माअतिदुषसहैं ॥ गर्भप्रवेसबू

द्धिअवतार ॥ वालकअवस्थातथाकुमार ॥ ८० ॥ जौवनमध्यजराअरुमरनां ॥ नवअवस्थादेहआव
रना ॥ आतमएकरूपसबहिनमैं ॥ कबहुंनहिंलिषैंतिनतिनमैं ॥ ८१ ॥ ऐसैंजानिमुक्तितबहोई ॥
मेरीसरणांगतजेकोई ॥ अपनौंदादौपिताविचारौं ॥ तिनकौंमरणौंउरमैंधारौं ॥ ८२ ॥ भाईन्यौंअबमें
अनुरक्त ॥ त्यौंहीतेहूंहूतेंआशक्त ॥ तेतोप्रगटकालवशभयें ॥ परवशभएछोडिसबगये ॥ ८३ ॥ मे
रीयैंहीहैगतिऐसी ॥ भईबापदादाकेजेते॥अरुमेरेंअबबालकहैंजैसैं ॥ हमहुंहुतौंपिताकेतैसै ॥ ८४ ॥ स
कलअवस्थासोममगई ॥ यहतोप्रगटऔराहिभई ॥ याविधिजैसैंसबदेह ॥ सबछूटहैंपुत्रधनगेह ॥ ८५
यौंउरमैंबहुभांतिविचारैं ॥ अपनेंबंधनसकलनिवारैं ॥ देहादिकसबसंगतितजैं ॥ सदानिरंतरमोकौंभजैं
॥ ८६ ॥ बीजजन्मपाकेतेंअंत ॥ षेषीषेषमाहीविरतंत ॥ षेतीकरणहारसोन्यारा ॥ यौंतनन्यारौंकरैंवि
चारा ॥ ८७ ॥ कर्मबीजविस्तारैंनाहीं ॥ दग्धकरेंजेहीतनमांही ॥ तिनतेंन्यारोआपुहींजानैं ॥ संगकरे
तेंसुषदुषमानैं ॥ ८८ ॥ तातेंतनकौंसंगनिवारैं ॥ याविधिआपुआपुकौंतारैं ॥ जोजनन्यारोआपुनजानैं
॥ तनसुषहेतकर्मसबठानैं ॥ ८९ ॥ तिनतेंनानादेहनिपावैं ॥ तिनहीजन्मीजन्मीमरीजावैं ॥ सातिकतेंसुर
कैंऋषिहोई ॥ राजसनरकैंदानवसोई ॥ ९० ॥ तामसपस्वादिककेभूत ॥ याविधित्रिगुणजगतअदभूत
॥ जद्यपिआत्मसदाअनीह ॥ कबहुंकछुंनकरेसनीह ॥ ९१ ॥ परितनकरतेंकरताहोई ॥ संगदोषबं
धतहैसोई ॥ जैसैंनाचैगावैंकोई ॥ तिनकौंदूजोद्रष्टाहोई ॥ ९२ ॥ त्यौंत्यौंआबहुबेठकरैं ॥ तानतालरा

गाहेउरधरैं ॥ त्यौंमायागुणकर्मनिठानैं ॥ आत्मकरैंआपकौंमानौं ॥ ९३ ॥ तिनहींकर्मनिबंधेआपु ॥
जोकछुकरैंहोईसोपापु ॥ तिनकौंतनतजैंनहींजोलौ ॥ जनममरणदुषमिटेनतोलौं ॥ ९४ ॥ जलप्रवाहठि
गठाठौकोई ॥ तबवृक्षानिदेषैंचलतेसोई ॥ नयनभ्रमतजौकोईदेषैं ॥ तबसबभ्रमातिधरातिलेषैं ॥ ९५ ॥
तैसैंयहआत्माथिरजांनौं ॥ औरसकलचंचलकरीमानौं ॥ निश्चलमनकरिदेषैंजबही ॥ निश्चलब्रह्मरूप
हैंतबहीं ॥ ९६ ॥ जैसैंस्वप्नमनोरथमृषा ॥ यौंसबजगतअरुविषयतृषा ॥ परिजद्यपिजगसत्यनकोई ॥
तोहूंकर्दैनिवृतनहोई ॥ ९७ ॥ जैसैंसुपनसत्यकछुनाहीं ॥ परिजोलेहिनिद्रामांहीं ॥ तोलगिसकलसत्यई
जानैं ॥ सुषदुषपावैंउद्यमठानैं ॥ ९८ ॥ त्यौंअज्ञाननिंदसबजोलौं ॥ जनममरणभवमिटेनतोलौं ॥ तातैं
उद्धवसबभ्रमजानौं ॥ महाअनर्थरूपकरिमानौं ॥ ९९ ॥ विषयनिकौउद्यमछाटिकावौ ॥ अरुजेहेतेस
कलमिटावौ ॥ ज्यौंलगिआपुहिसमुझैनाहीं ॥ त्यौंलगिहैंनानाभयमाही ॥ १०० ॥ आपुहिसमुझैनहींतो
लौं ॥ ममआधीननहोईजोलौं ॥ ममआधीननिरंतररहै ॥ जगउपहाससीससबसहैं ॥ १०१ ॥ केई
एककरेअपमानां ॥ केहगिईबांधेअज्ञाना ॥ केईमूतेथुंकेतनमें ॥ डारैंधूरभीषकेअनमैं ॥ २ ॥ एकै
डहीकैमूढडिगावे ॥ एकेनिंदेचोटलगावैं ॥ ऐसैंबहुविधिदुषउपजावैं ॥ बहुविधिभयकैंबैनसुनावे ॥ ३ ॥
परिजोअपनोश्रेयबिचारैं॥सोएकोमनमैंनहींधारैं॥बहुकष्टनितैंमनानिडिगावैं॥सोभवतजीममचर्णनिआवैं॥४
मेरोपंथपडगकीधारा ॥ जोनहींडिगेसोउतरेपारा ॥ हारिकेबेननिदुष्करजांनीं ॥ उद्धवप्रष्णकरीभयमानीं

॥ १०५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुतुमएसेंबेनसुनायैं ॥ तेमेरेमनदुष्करआयैं ॥ जोअसाधवेकाजधिकावें ॥ तातैंसहैंकोनविधजावें ॥ १०६ ॥ मेरेंह्रदैज्ञानठहरावौं ॥ सहनउपाईमो हीसमुझावौं ॥ जेसहनोउत्तमकारिजानैं ॥ असत्यौंऔरनिपासबषानौ ॥ १०७ ॥ पारितैंआईपरेनही सहैं ॥ अंतप्रकृतिकेबसव्हैंरहैं ॥ केवलजेतुमचर्णआधारा ॥ तिनमेंकोइनहींविकारा ॥ १०८ ॥ ते नितानिश्चलसीतलरूप ॥ नितआनंदितपरमअनूप ॥ तिनकौंकदैलिपेंकछुनाहीं ॥ सदाबसेतवचर्णनिमां हीं ॥ १०९ ॥ औरेंसकलप्रकृतिआधीन ॥ सदाबिकारनिआगेदीन ॥ तातैंतुमहींकरूणाकरौ ॥ ज्ञा नादिकममह्रदयेंधरौ ॥ ११० ॥ दोहा ॥ ॥ एसीकिनीप्रश्णतबउद्धवपरमसुजान ॥ भाष्योंसह नउपाईतबभवभंजनभगवान ॥ १११ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसं वादेभाषाटीकायांद्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तिरसकारमनसहनतासंयमबुद्धिप्रकार ॥ कहीअध्यायतेवीशमेंभिक्षूगीतमझार ॥ १ ॥ दुष्टवचनशरतेंबुरेभलेशत्रुकेबान ॥ श्रीधरजोनरसहतहैं तासमसाधुनआन ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेउद्धवएसोनहींकोई ॥ दु र्जनवचनक्षुभितनहींहोई ॥ दुर्जनचनबानजोसहैं ॥ मनक्रमबचनक्षोभनहींलहैं ॥ १ ॥ जोएंसोसोसाध कहावैं ॥ याबिनसाधपदईनहींपावें ॥ षेंचीकसीसहनेगहीबान ॥ अरुतेंभेदेपरमअस्थान् ॥ २ ॥ तौति नतैंदुषहोईनऐसो ॥ दुष्टवचनवाननतैंजैसौं ॥ पारिमेताहींउपाईसुनावौं ॥ सहनसीलताउरठहराऊं ॥ ३ ॥

मोसोंसुनोएकइतिहास ॥ जातेंहोवेन्हदैंप्रकास ॥ भिक्षुकएकज्ञानमयभाषी ॥ ताकीतोऊंसुनाऊंसाषी ॥ ४ ॥ कीयौअसाधुनिन्हूअपमाना ॥ तिरस्कारठान्योंविधिनाना ॥ तबताभिक्षुकगाथाकही ॥ कुमति आपनीसगरीदही ॥ ५ ॥ सोअबसुनौंसुचित्तव्हैमोसौं ॥ निजजनजानीकहतहौंतोसौं ॥ मालवदेशर हेंघरजाकौं ॥ षेतीवणिजजीविकाताकौं ॥ ६ ॥ क्रोधवंतलोभीअरुकामी ॥ विप्रनकैंअपजसकौंनामी ॥ जाकेंहोइद्रव्यअधीकाई ॥ अरुजोनहींदेहींनहींषाई ॥ ७ ॥ आपनकौंपीडाउपजावे ॥ पुत्रादिक षानेंनहींपावें ॥ देवपितरअतिथिनहींपोषें ॥ वैंनहूंकौनकदेंसंतोषें ॥ ८ ॥ सोकदरजएसोद्विजहोई ॥ तातेंनीचौऔरनकोई ॥ तातेंसोकदरजद्विजभयौ ॥ सबजगमेंजिनअपजसलयौं ॥ ९ ॥ ज्ञातिअति थिबंधवनिजतनकौं ॥ ईनहींहेतनपरचैंधनकौं ॥ पुत्रादिककलपेंदुषलहैं ॥ ज्ञातिभृत्यदुबैंननिकहैं ॥ १०॥ पुत्रकलत्रअरुकन्याभाई ॥ जहांलगेंसबबंधसगाई ॥ तेसबद्रोहानिरंतरकरैं ॥ ताकौंअप्रीयसबआ चरैं॥११ ॥ ऐसोदेषीपापअतिताकौं॥जक्षसमानवितहैंजाकौं॥धर्मकामदूनोकारिहीन॥दुहूंलोककेसुषतेंछीन ॥१२॥जिनहेतपंचजज्ञाननिनकरैं॥सकलग्रस्तदंडकौंभरैं॥तिनतवकीयौदेवतिनकोप॥तातैंभयोविप्रधनलोप ॥ १३ ॥ कछुद्रव्यज्ञातिनीहरलयौ ॥ चौरिभएहुतैंकछूगयौ ॥ कछूअग्निलगेंतेजऱ्यौं ॥ कछुधरणीमांही विसऱ्यौं ॥ १४॥ कछुराजाविप्रतेंगयो ॥ यौंबहुभांतिछिनसबभयौ ॥ जबताकौंधनसबहरिलियो ॥ तिर स्कारतबसबहीनकीयौं ॥ १५ ॥ बहुतकष्टकरिधनउपजायो ॥ सोनहींदीयौनआपुनषायौं ॥ तातेंउपजी

चिंताचित ॥ निशादिनबर्यौन्हदेमैंवित ॥ १६ ॥ होवैंतत्तषेदकौपावैं ॥ आसुकंठबहूतावीधिध्यावैं ॥ ऐसी विधिउपज्यैंवैराग ॥ जातैंसकलदुषनिकौत्याग ॥ १७ ॥ तबसोविप्रवचनउचारैं ॥ तबबहुतभांतिआ पुहिधिकारैं॥अहोवृथामैंकष्टउपायौ॥आपआपकौंदुषउपजायौ॥१८॥बहुतैंश्रमउपजायौद्रव॥सुपनसमान भयोसोसवै॥नामेषरच्यौमामैंषायौ ॥ नामैंएकहुंअगलगायौ ॥ १९ ॥ द्रवकदरजकहैंजेतो ॥ एकहुअ र्थनआवैंतेतो ॥ नायहलोकनहीपरलोक ॥ केवलदुषवटैंभयसोक ॥ २० ॥ बहुतकष्टसहीईंहांउपायौ ॥ पुनिपरलोकनरकमैंजायौ ॥ परमजसस्विनकोजससुध ॥ अरुजेपंडितज्ञानप्रबुध ॥ २१ ॥ सकलगुण निकेहैंगुणजेते ॥ लोभलेशतेंनासेतेतैं ॥ जेसैंरूपवंतअतिकोई ॥ केहुअंगनहींनहोई ॥ २२ ॥ सेतकुष्ट कोछटीकाएक ॥ मेटेगुणअरुरूपअनेक ॥ यौंथोरोऊजोहोवैंलोभ ॥ मेटैंसकलरूपगुणसोभ ॥ २३ ॥ जबतैंधनकौंसाधनकरैं ॥ द्रव्यहेतउद्यमाविस्तरै॥तबतेत्रासशोकभयलहैं ॥ चिंताअग्निनिरंतरदहैं ॥ २४॥सिद्धभयअरुरक्षितभोग॥नाशलगैंनहींसुषसंजोग॥चौरीहिंस्यामिथ्यादंभ॥कामक्रोधविशमणीथंभ॥ २५॥ वैरअरुगर्भसपरधामेद ॥ अप्रतितिचिंताभयषेद ॥ एपंद्रहजबहोईअनर्थ ॥ तबतिनहुतैंहोवैंअर्थ ॥ २६ ॥ तातैंपरमअनर्थकहावैं ॥ भलोचहेसोदूरिबहावे ॥ अर्थनामसुनीभूलेलोक ॥ बिनाविचारपावैंभ यसोक ॥ २७ ॥ पुत्रकलत्रबंधवअरुभाई ॥ मातपितासहीतसजनसहाई ॥ द्रव्यहेतसबकरैंविरुधा ॥ आपुआपुमैंठानैंजुध ॥ २८ ॥ द्रव्यकाजअतिक्रोधाहिंकरैं ॥ तिनकौमारैंआपनमरैं ॥ धनहेतप्रीयमाण

निछटिकावैं ॥ आपुहिंमूढनरकमैंजावैं ॥ २९ ॥ जाकेदेवबहुतविधिध्यावैं ॥ परियानरदेहनहींपावैं ॥
सोनरतनतामैंदुजदेह ॥ करुणामयहरिजीकोगेह ॥ ३० ॥ ताकौंपाईअर्थनहींसाधैं ॥ सबतजिहरिकौं
नाहींआराधैं ॥ महाअनर्थअर्थकोगहैं ॥ सोभवसिंधुआपुतैंवहैं ॥ ३१ ॥ तातैंदूजोनहींमतिमंद ॥ परैं
दुषमैंतजीआनंद।देवपितरऋषिभूतसहायौ॥पुत्रकलत्रआपुहितभाई॥ ३२ ॥धनईपाईजोईनहींपोषैं॥औ
रनहूंकौंजोनहींसंतोषैं॥सोसबत्यागीनरकमैंजावैं॥तहांमूढनानादुषपावैं॥३३॥सोतनधनमैंव्रथागमायौ॥भवदु
षतेंनहींआपवचायौ॥जेहिपाईबधीएसीकरैं॥तातैंबहुरिनजनमेंमरैं॥३४॥सोनरतनमैंव्रथागमायौ॥छांड्यौ
अर्थअनर्थउपजायौ॥वयबलआयूसकलममगए॥नषशिखवृद्धअंगसबभए ॥३५॥ अबमेंअर्थकोनावि
धिसाधैं॥दुराराध्यहरिकौंआराधैं॥भाईजेअनर्थसबजानैं॥तेउक्यौंआरंभनिठानैं॥ ३६॥छोडेअर्थअनर्थ
उपावैं ॥ क्यौंसबआपुंआपुंदुषपावैं ॥ परिएकोईनहींस्वतंत्र ॥ सकलदेषीयतूहैपरतंत्र ॥ ३७ ॥ तेजा
कीमायाकरीमोहैं ॥ नटबाजीकेसमसबसोहैं ॥ भाईसोप्रभुबडोवरिष्ठ ॥ ब्रह्माआदीसकलकौंइष्ट ॥
३८ ॥ जेधनअरुजेधनकेदाता ॥ जेकामांधअरुकामाविष्याता ॥ अरुबहुधर्मकर्महेजेतैं ॥ मातपितासु
षदाईतेतैं ॥ ३९ ॥ कहोकहातेंहेतआचरैं ॥ मृत्युग्रस्ततेंनहींपरिहरैं ॥ कालरूपशत्रुहैंजाकौं ॥ क
हौंकहांकोसुपहैंताकौं ॥ ४० ॥ परिजेदीनबंधुभगवान ॥ करुणासागरपरमानिधान ॥ तिनहीमोकौं
करुणाकरी ॥ जातेंममउरऐसीधरी ॥ ४१ ॥ भवसागरतैंतारैंजाकौं ॥ देहीनामवैरागहीताकौं ॥ ता

तैंमोहीदीयोवैराग ॥ मेरेप्रगटेपूरणभाग ॥ ४२ ॥ अबजोआयूहोईकछुमेरौ ॥ ताकारिमजनकरौंहारि
केरौ ॥ यातनकेगुणसकलनिवारौ ॥ मनतैंसकलकामनाटारौ ॥ ४३ ॥ सकलसाधूअनुमोदनकरैं ॥
तथास्तयौंकहीउचरैं ॥ जद्यपिआयूथोरोहैमेरौ ॥ तोहूहरिकौपदअतिनेरौ ॥ ४४ ॥ नृपषट्वांगज
बहींहरिध्यायौ ॥ एकमूर्तिमेंहरीपायौ ॥ तातैंप्रभुसमकोईनाहीं ॥ जनकौंप्रगटहोतफलमांही ॥ ४५ ॥
मनबचकर्मअबताकौंभजौं ॥ दूजीसकलकामनांतजौं ॥ ऐसोनिश्चयमनमेंधर्‍यौ ॥ भिक्षुकभयोसकलपरि
हर्‍यौ ॥ ४६ ॥ सीतलत्द्वदयतृषासबत्यागी ॥ निश्चलभयोविप्रबडभागी ॥ अहंकारममताकछूनाहीं ॥
एकाकीबिचरैंभूवमांही ॥ ४७ ॥ इंद्रियप्राणबचनममगयौ ॥ अंतरबाहारसंगसबदह्यौ ॥ आपुहीकाहु
कौंनलषावें ॥ भिक्षाहेतग्रहनमैंआवें ॥ ४८ ॥ संसकारनहींतबकौंजाकौं ॥ जीरणवस्त्रढुकतनताकौं ॥
भिक्षुकवृद्वाविप्रकोंजोवैं ॥ तबबहुदुष्टघातकीहोवैं ॥ ४९ ॥ कईताकौंदंडछूडावौं ॥ कईपात्रपोषलेजावें
॥ कईलहैंकमंडलकरतैं ॥ कईनिकशनदेईनघरतैं ॥ ५० ॥ कईधूरभीषमेंडारैं ॥ कईमूढक्रोधकरि
मारैं ॥ कईआसनकौंलेभागें ॥ उरधकरकेईपगलागै ॥ ५१ ॥ कईकंथाकौपारिहरैं ॥ मारुमारुवानी
उचरैं ॥ कईषोषलेईजपमाला ॥ कईवस्त्रजाहींलेबाला ॥ ५२ ॥ कईआनिआनिकरिदेवें ॥ कईषो
सीषेंसीपुनिलेवैं ॥ कईभीषअनलेजांही ॥ भोजनकरषंपावेनाहीं ॥५३॥ कईतनमेंथूंकेमूंते ॥ कईनिंदा
करेंबहुतें ॥ कईकाननिलागींपुकारैं ॥ कईसीसधूलिजलडारैं ॥ ५४ ॥ कईमोनछोडाईबोलावें ॥ के

ईबोलतमोनगहावैं ॥ केईताहींबाधीकरिराषैं ॥ जाननपावैंकेईभाषैं ॥ ५५ ॥ केईकरेबहुतअपमान ॥ निंदेबहुविधिमूढअजान ॥ यहहैंचौरज्ञानहींपावैं ॥ विनदेषेनिशिचौरीआवैं ॥५६॥ याकौंछिनभयोहैंबित्त ॥ तातेंयहहैंव्याकुलचित्त ॥ सकलकुटुंबयांहीपरिहर्‍यौ ॥ जीवनकाजभेषयहधर्‍यौ ॥ ५७ ॥ देखोयह कैसोहैंमोटो ॥ महाप्रबलअंतरकोषोटो ॥ देषोहमपचीहारेंकेतें ॥ परियाकेभेदेनहींतेतें ॥ ५८ ॥ धीरज वंतअडिगयहएसो ॥ पवनप्रचंडमेरोगिरिजैसो ॥ याकौंजानिनहमकछुकह्यौं ॥ बकज्यौंध्यानमौनगहिर ह्यौं ॥ ५९ ॥ योंकरिक्रोधबंधलेडारैं ॥ काटमांहीदेउपरमारैं ॥ हांसीसहीतविनतीकरैं ॥ हेतसेंबिषबे ननिउचरैं ॥ ६० ॥ एभोतिकदुषभासेजेसैं ॥ देवआत्मकपावैतेसैं ॥ सीतअरूऊष्णवरषादिदेवक ॥ जरारोगआदीकजेदेहीक ॥ ६१ ॥ ऐसैंबहुविधिपावेदुष ॥ कदेंनआवैंतनकोंशुष ॥ परिसोकदैंनमन मैंआनैं॥अपनेंकरेंकरमसबजानैं ॥६२॥ तबतिनभाषीगाथाएक ॥ त्हदयधार्‍योपरमाविवेक ॥ भिक्षूक कहैंबचनतबजेई ॥ मेतोसोंभाषतहोंतेई ॥ ६३ ॥ ॥ भिक्षूकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुषदुषदा ईकलोगणएतें ॥ असुनहींदेहनहींसुरजेतें ॥ नाग्रहनहीकर्मनकाल ॥ एसमस्तहेमनकेष्याल॥६४॥ जा तचक्रमेंमनहींफिरावैं ॥ जीवमहादुषमनकैंपावैं ॥ मनहींकरैंविषयनिकौंभोग ॥ तातेंहोइकर्मसंजोग ॥ ६५ ॥ होवैंसतरजतमविस्तार ॥ जातेंजोनिविविधप्रकार ॥ तातैंदुषनिरंतरलहैं ॥ देहसंजोगतेंनिसदिन दहैं ॥ ६६ ॥ तातैंदुषदाईमनएक ॥ संतकहेयहपरमविवेक ॥ अपआतमासदाअनीह ॥ परिसोमनक

रिकरिसनिह ॥ ६७ ॥ मनसौंबंध्यौंअविद्यामांहीं ॥ जातेंबंधनजानेंमांहीं ॥ विषसमानविषयनिकौंआवैं ॥ ताकैंसंगजीवदुषपावैं ॥ ६८ ॥ यहहैंजीवब्रह्मकोअंग ॥ याकौंसुमृतिमनकेंसंग ॥ मनकररिहितब्रह्म सुषराशी ॥ सदाएकरसपरमप्रकासी ॥ ६९ ॥ तातेंबंधनमनहींकरैं ॥ संगआतमाजनमैंमरैं ॥ जबम नरहीतजीवयहहोई ॥ तबशिवजीवभेदनहींकोई ॥ ७० ॥ तातेंजिनअपनोमनगह्यौं ॥ ताहींकछुकरणो नहींरह्यौं ॥ अरुजोमनबशकीनोंनाहीं ॥ तोश्रमसकलवृथाहींजाहीं ॥ ७१ ॥ सुवर्णादिकदेवैंबहुदाना ॥ एकादशीआदीव्रतनाना ॥ अपनेंअपनेंधर्मनिकरैं ॥समदमजमनियमनिविस्तरैं॥ ७२ ॥विद्यावेदपढैंउचरैं ॥ औरसकलधर्मविस्तरैं ॥ परिजोनाहींबशमनएक ॥ तोमिथ्याआचर्णअनेक ॥ ७३ ॥ मनवशकाज कहेंसबतेतें ॥ विधिआचर्णवेदमेंजेतें ॥ मननिग्रहसौंउत्तमज्ञाना ॥ मननिग्रहाबिनसबअज्ञानां ॥ ७४ ॥ तातेंममजोनिग्रहकरैं ॥ सोविधिकाहेकौंबिनिस्तरैं ॥ तातेंविधिहूंतेकछुनाहीं ॥ सबविधिहेमननिग्रहमांहीं ॥ ७५ ॥ अरुजोबसनाहींमनएक ॥ तोविधिकीन्हैंवृथाअनेक ॥ सबईनकोफलमनबसकर्णों ॥ मनवश काजसकलआचर्णों ॥ ७६ ॥ मनकौंबसकरेजोकोई ॥ इंद्रियगुणआपेंवसहोई ॥ मनवश बिनइंद्रियवशनाहीं ॥ करिकरिजतनबहुतमरीजाई ॥ ७७ ॥ मनबशभएसकलबसदेवा ॥ तीनो भवनकरेतासेवा ॥ सकलबलनुतेंमनबलवंत ॥ मारीकरीसबहीनकौंअंत ॥ ७८ ॥ मनकौंको ईजीतिनाशकै ॥ बहुतानिउपायकरिकरिथकैं ॥ ऐसैंमनकौंजीतेंकोई ॥ सबहीनमांहींप्रबलहैंसोई ॥ ७९

सोदुर्जयबसमननाहिंकरैं ॥ बाहिरक्षुधादिकविस्तरैं ॥ वैरीमित्रबहूतविधिठानैं ॥ अनहेतअरुहेताततिनतैं जानैं ॥८०॥ तेअतिमूढसुषीनहीहोवैं ॥ मनजीतैंबिनुजुगजुगरोवैं ॥ दुषरूपजडमिथ्यातनकौं ॥ आपमानिकारिबांध्यौमनकौं ॥ ८१ ॥ तबबहुकीएदेहसमंधी ॥ तिनसौंमूरषममताबंधी ॥ यहमेंएहसमस्तैहमेरें ॥ मित्रशत्रुठानैंबहुतेरें ॥ ८२ ॥ तातैमूढमहादुषपावैं ॥ उपजिउपजिपुनिमरिमरजावैं ॥ तातेंदुषकोंमनहीकारण ॥ अतमकौंभवजलमेंडारण ॥ ८३ ॥ अरुजोसुषदुषदाताएतैं ॥ मोकौंदुषदेतहैंतेतैं ॥ तेसबसुषदुषमोकौंनाहीं ॥ देंहएकसबआपुनमांही ॥ ८४ ॥ तेसुषदुषदेहहीसबपावैं ॥ अत्मकेकहुंनिकटनआवैं ॥ अरुजद्यपिमनकेसंजोग ॥ करैंजीवएसुषदुषभोग ॥ ८५ ॥ ताहुंमेंदुषदेवौंकहांकौ ॥ रूपसकलममदेषौंजाकौं ॥ आपआपकौंक्यौंदुषदीजैं ॥ अपनौअनहितआपक्यौंकीजैं ॥ ८६ ॥ यातनमेंमेहिदुषपावौ ॥ अरुतिनहींमेंक्यौंउपजावौं ॥ दंतनिभूलिजीभकाटीजैं ॥ तौफिरितिनहींकहांदुषदीजैं ॥ ॥ ८७ ॥ दंतनिअरुजिभहिंदुषदेई ॥ सोतोसकलआपकौंलेई ॥ इंद्रियअधिपतिदेवताजेतैं ॥ जोदुषदानिहोईसबतेतैं ॥ ८८ ॥ तोहूंआपकोपक्यौंकीजैं ॥ परकीउपाधीक्यौंसिरलीजैं ॥ करदीजैंमुषमांहीअसनसौं ॥ तोमुषकाटैंकरहिदसनसौं ॥ ८९ ॥ तोपावकअरुवासवजानैं ॥ रागदोषभावैंयौंठानैं ॥ यौंसबइंद्रियनिकेसबदेवा ॥ करैंआपमेंदुषअरुसेवा ॥ ९० ॥ तेतेसबजानैंत्यौंकरैं ॥ ज्ञानीअपनेमनहींधरैं ॥ अरुजोसुषदुषदाताआप ॥ दूजैकौंकछुनाहींपाप ॥ ९१ ॥ तोयहसबआपनौस्वभाव ॥ अ

रुकौनकौंअनीयेंअभाव ॥अरुआतमैंमसुषदुषनाहीं ॥ उपजैंज्ञानसकलमिटजांहीं ॥ ९२॥ आपभूलि
सुषदुषकरिलीनैं ॥ सबमिटिजाईआपकौंचीनैं ॥ तातैंदोषकौनकौंधरीयें ॥ जोअपनोमनवशहिकरीयें
॥ ९३ ॥ अरुजोग्रहसुषदुषकेदाता ॥ लोकवेदकहीयेंविष्याता ॥ तोआपनकौंक्रोधहिकीजैं ॥ परकोदु
षआपवेयेंलीजैं ॥ ९४ ॥ ग्रहआकाशमाहींहेजेतें ॥ द्वादशरासीबसेसबतेतें ॥ रागदोषआपनैंमकरैं
॥ तिनकौंसुषदुषनितहींपरैं ॥ ९५ ॥ तातैंरासीजन्मजेपावें ॥ तिनकीसंगतिसुषदुषआवें ॥ तातैंअतम
सदाअजनमा ॥ वारवारदेहनिकौंजनमां ॥ ९६ ॥ तातैंसुषदुषतनहींपावें ॥ निकटआत्माकेनहींआवें
॥ अरुजद्यपिसंगतदुषपरैं ॥ आपुक्रोधतौंकहांसौंकरैं ॥९७॥ करणहारतेंयहहीजानैं ॥ रागदोषभावें
त्यौंठानैं॥अरुदुषदानिहोइजोकर्म॥ तेतोसकलआपहीभर्म॥९८॥यहजडदेहकर्मतामांही ॥आतमनिकट
देहहींनाहीं॥आतमचेतनज्ञानस्वरूप॥परेंसकलतेंपरमअनूप॥९९॥तातैंक्रोधकौनकौंकरैं ॥काकौंदोषत्दे
देमैंधरैं॥अरुजोदुषकालतेंकहीयैं॥तोआपनमैंकदेंनलहीयें ॥ १००॥ तनहींकालहुतैंदुषपावें ॥ तेआत
मकेनिकटनआवें ॥ कालआतमाब्रह्मस्वरूप ॥ देहविलक्षणसकलअनूप ॥ १०१ ॥ तातैंकालहुतैंदुषना
हीं ॥ कालभयानकदेहिनमांहीं ॥ ज्यौंलेअग्निअग्निमेंडारैं ॥ सोवहअग्निनअग्निजारैं ॥ १०२ ॥ अरु
जौपालाकौंकनलीजैं ॥ लेबहुतेपालामैंदीजैं ॥ तौंतापालाकौंभयनाहीं ॥ जद्यपिरहैसदातामांहीं ॥१०३
॥ यौंहीएकआतमाअकाल ॥ सुषदुषादिदेहनकेष्याल ॥ आतमसबतेंसदाअनीत ॥ इच्छारहितअ

नीहअभीत ॥ १०४ ॥ अरुआतमापरेंतेंपरें ॥ द्वंद्वजहांलौंतेसबउरें ॥ कोईआतमाकौनहीजानैं ॥ सुषदुषकौनकौनकौठानैं ॥ १०५ ॥ सुषअरुदुषजहांलौंजेतें ॥ एकप्रकृतिकेसबतेतें ॥ सोप्रकृतिआप जडरूप ॥ चेतनआत्मब्रह्मस्वरूप ॥ १०६ ॥ केवलमानीलीयोसंसार ॥ सुषदुषतनमनसकलअसार मोहनिशातेंजागेजेतें ॥ निरभयभएसकलहीतेतें ॥ १०७ ॥ तातेअबमेंभयनहींआनौं ॥ आपहीपरैंसक लतेंजानौं ॥ हरिचर्णनिकीसेवाकरौं ॥ ऐसीविधभवसागरतरौं ॥ १०८ ॥ जेइजेआएहरिशरणां ॥ तिनहींतिनपाएंहरिचरणा ॥ तातैंमैंहरिचर्णनिभजौं ॥ मनक्रमवचनआनसबतजौं॥१०९॥ ॥ श्रीभ गवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ उद्धवयौंद्विजभयौविरक्त ॥ तनहुमेनरह्यौअनुरक्त ॥बहुतअसाधुनिबहुत डिगायौं ॥ परिसौकछूनमनमेंमल्यायौं ॥ ११० ॥ एभाषेंअष्टादशश्लोक ॥ करिविचारमेंन्योभयशोक ॥ तातैंउद्धवसुषदुषदाईक ॥ आतमकौंकोईनहीलायक ॥११॥ सुषदुषदातानाहींकोई ॥ जोतोकहूंद्वैत कछूहोई ॥ सुषदुषभ्रमतेंजानेसकल॥आत्माएकअजन्माअकल ॥ २ ॥ भ्रमछूटैंदूजाकोऊनाहीं ॥ मेरोरूपामिलेमोमांही ॥ जबसुषदुषमिथ्याकरिमानैं ॥ मानामानद्वंदैनहींआनैं ॥ १३ ॥ धीरजधरीमम चर्णनिभजैं ॥ देहादिककीआसातजैं ॥ तबभवसागरकौंतरिजावैं॥ मेरोनिजानंदपदपावैं ॥ १४ ॥ तातैं उद्धवमनवचकर्म ॥ सकलद्वैतकौंजानैंभर्म ॥ सबतेंमनकौंनिग्रहकरौं ॥ निश्चलकरिममचर्णनिधरौं ॥ १५ ॥ याहीकौंकहीयतुहेंजोग ॥ जाकरिहोवेममसंजोग॥अरुजोयागाथाकौंधारैं ॥ सुनेसुनावैंसदाविचा

रैं ॥ २६ ॥ तिनकैंनिकटइंद्रनहींआवैं ॥ अंतकालममचर्णनिपावैं ॥ तातैंयाकौंसदाविचारौं ॥ मेरोव
लअंतरगतिधारौं ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसौंकह्यौमनसंजमदृढज्ञान ॥ अबभाषत
हौंसांष्यकौंसुनतामिटेज्यौंआन ॥ ११८ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धव
संवादेभाषाटीकायांत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सांष्ययोगकरिकैंकह्यौमनकोमोह
दहन ॥ चिंतातैंसबयोनिमैंआतमआवागवन ॥ १ ॥ भेदभावजीनकेहृदयश्रीधरभेदमिटाय ॥ कृष्णक
ह्योउद्धवप्रतिचौवीशैंअध्याय ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवतोसौंसाष्य
हिकहौं ॥ द्वैतभ्रमभ्रमाहिविनदहौं ॥ जाहीसुनकिछूटैद्वैत ॥ देषैएकब्रह्मअद्वैत ॥ १ ॥ प्रथमाहिमहापुरुष
जोभये ॥ तोयहसांष्यप्रकटकरिगयैं ॥मुक्तसांष्यजानतहीहोई ॥ सांष्यविनानहिछूटैकोई ॥ २ ॥ सोई
सांष्यकहैंमितोसौं ॥ निश्चलमनव्हैसूनियोमोसौं ॥ उद्धवप्रथमहुंतोमेएक ॥ मोबिनकछुनहूंतौअनेक ॥
३ ॥ तबमैंप्रकृतिआपतैंकरी ॥ जडचेतनद्वैविधविस्तरी ॥ तिनदोनोंतैंउपज्यौपुत्र ॥ महातत्वकहीयतुहे
सूत्र ॥ ४ ॥ एकप्रकृतिकेतानगुणकीनें ॥ लक्षणभिनतिहुंकेदीनै ॥ सूत्रहुतैंत्रिविधअहंकार ॥ भरमाव
नकौंवडोविकार ॥५॥ पंचभूतजेंपृथिवीआदि ॥ अरूपंचेतनसूक्ष्मशब्दादी ॥ तामसअहंकारतैंएतैं ॥
राजसतोंइंद्रियसबतेतैं ॥६॥ सातिकतैंमनअरूसबदेवा ॥जिनकौंपाइभयेबहुभेवा ॥तबसबहीनमैंप्रेरीमिला
यौ ॥ तिनसबहीनमिलिअंडउपायौ ॥ ७ ॥ अंडसलीलमांहीथिरकर्‍यौ ॥ तातेंमैनिजअंशाहिधर्‍यौ ॥

आदिपुरुषसोमेरोरूप ॥ त्रिगुणानियंताज्ञानस्वरूप ॥ ८ ॥ तासनाभतेंउपज्यौपद्म ॥ तामेसकलभवनकोसद्म ॥ पद्महूतेंतबब्रह्माभयो ॥ वरलेमोसोंजगनिरमयो ॥ ९ ॥ राजसअधिपतिभयोविरंच ॥ तातैंप्रगव्योसकलप्रपंच ॥ लोकपाललोकनसौंसारैं ॥ तीनोलोकत्रिविधाविस्तारैं ॥ १० ॥ स्वर्गलोकदेवनिकौंदीयौं ॥ अंतरिक्षभूतानिग्रहकीयौं ॥ भूमीलोकमैंमानवराषैं ॥ असुरअहीनकौंनीचैंभाषैं ॥ ११ ॥ महरलोकजनतपसतलोक ॥ चार्यौमेंशिधनकेंवोक ॥ जोत्रिगुणकर्मनिकौंकरैं ॥ तेतीनोलोकनिमैंफिरैं ॥ १२ ॥तपअरुजोगतथासंन्यास॥इनितैंतिनवारौमैंवास ॥ भक्तिहुतैंजावैवैकुंठ ॥जोसबहीनकरीसदाअकुंठ ॥ १३ ॥ प्रबलकालरूपहैंमेरो ॥ जगतसकलभक्षातिहकेरो ॥ सत्यलोकहुमैंजोजावैं ॥ कालतहांउताकौंषावैं ॥ १४ ॥ कबहुंजाईकष्टकरीउंचै ॥ तबहुंकालढहावतनीचैं ॥ ऐसीविधिसबभरमतरहैं ॥जन्मेंमरैंबहुतदुषसहैं ॥ १५ ॥उत्तममध्यमनीचेजेते ॥छोडेबडेबहुतविधिकेतें ॥ जेकछुजहांलगेआकार ॥ तेसबप्रकृतिपुरुषविस्तार ॥१६॥ प्रकृतिपुरुषविनऔरनकोई ॥ इंद्रियमनगोचरहैंजोई ॥ प्रथमहिनिराकारमेंएक ॥ तातेंभएआकारअनेक ॥ १७ ॥ अरुपुनिमैंहीरहोहोअंत ॥ तातैंअबहूमैंवरतंत ॥ जाकीआदीअंतहैंजोई ॥ ताकेमध्यहूमेंपुनिसोई ॥ १८ ॥ ज्यौंमाटीतेंबहुघटभए ॥ अंतरफूटीमाटीमिलिगए ॥ माटीआदीमाटीहेअंत ॥ तोमाटीमयमध्यवरतंत ॥ १९ ॥ ज्यौंकांचनकेबहुआभरना ॥ आदीअरुअंतएकहीसुवरना ॥ तोमध्यहुंऔरकछुनाहीं ॥ नामरूपमिथ्याहोईजाई ॥ २० ॥ त्यौं

जबदेषैंत्यजिव्यवहार ॥ तबमैंहौंसबविस्तार ॥ आदिअरुअंतमध्यमैंएक ॥ मिथ्यानामरूपअनेक॥
२१ ॥ मायातैंमहत्तत्वअहंकार ॥ तिनतैंहोईसकलविस्तार ॥ बहुरौनामसकलकौहोई ॥ महदादि
कौरहैनकाई ॥ २२॥प्रकृतिमूलयोपुरुषआधारा॥अरुजोकालसकलकरतार॥ मेरीशक्तितीनयौंजानौं
मोतैंद्वैतकदैमतीमानौं ॥ २३ ॥ याविधिचल्यौंजाइविस्तार ॥ नदीप्रवाहतुल्यसंसार ॥ परमात्माकीइच्छा
ज्यौंलौं ॥ वरतैंसकलनिरंतरतौलौं ॥ २४॥ बहुरौसकलप्रलयकौहोई ॥ सूषमथूलरहैनाहिकोई ॥ म
हाबलिष्टशक्तिममकाल ॥ ताकौसकलजक्षग्रहष्याल ॥ २५ ॥ कालविनाशैंसकलब्रह्मंड ॥ कितहु
कछुनराषैषंड ॥ अनावृष्टिहोवैशतवर्ष ॥ तातैंदेहनिकौंअकर्ष ॥ २६ ॥ छोटेबडेदेहहैजेतैं ॥ लीनअ
सनमौंहोवैंतेतैं ॥ असनभोमिमैंहोवैंलीन ॥ भूमिगंधामिलिहोवैछीन ॥ २७ ॥ गंधलीनहोवैंजलमांही ॥
जलसुषमरसमांहीसमांही ॥ रससबतेजमांहीमिलिजाई ॥ तेजरूपमैंजाईसमाई ॥ २८ ॥ रूपपवनमां
हीमिलिरहैं ॥ पवनहींतबस्पर्शगुणगहैं ॥ स्पर्शलीनहोइंतबगगन ॥ गगनशब्दमैंहोवैंगमन ॥ २९ ॥
शब्दमिलैंतामसअहंकार ॥ सोअरुइंद्रियदशप्रकार ॥ तेसबमिलिराजसअहंकार ॥ मिलिकरिसक
लहोईसंसार ॥ ३० ॥ अहंकारमहत्तत्वहींमिलैं ॥ प्रकृतितबैंमहत्तत्वहीगलैं ॥ देवमनसातिकअहंकार
॥ मिलिकरीसकलहोईसंघारा ॥ ३१ ॥ प्रकृतिकालमैंहोवैंलीन ॥ कालपुरुषामिलिहोवैंछीन ॥ पुरुषामि
लेपुरुषोत्तममांही ॥ पुरुषोत्तमकाहिजावैंनाहीं ॥ ३२ ॥ भेदाभेदरहिततवएक ॥ नित्यानंदद्वैतावितरेक ॥

चेतननिरमलज्ञानस्वरूप ॥ पूरणअक्षयपरमअनूप ॥ ३३॥तातेंउद्धवमिथ्याद्वैत ॥ आदिअंतमध्यअद्वैत ॥ जलबुदबुदासमसबआकार ॥ उत्तममध्यमविविधप्रकार ॥ ३४ ॥ एसेंसदाविचारेंकोई ॥ ताकौं कोनभांतिभ्रमहोई ॥ रविउद्योतरहैंतमकेसैं ॥ नदीमध्यदावानलजैसैं ॥ ३५ ॥ यहमैंभाष्योसांख्यप्रकार॥ सकलद्वैतउतपतिसंहार ॥ जाकेज्ञाननसंसेरहैं ॥ अहंकारदृढग्रंथीहिंदहैं ॥ ३६ ॥ छोडेरूपअरूपस मावैं ॥ जातेंबहुरिनदुषकौंपावैं ॥ तातेंयाकौंसदाविचारौं ॥ मोकौंजानिआपकौंतारौं ॥ ३७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उद्धवयहतोसौंकह्यौसांष्यज्ञानविचार ॥ अबगुणवृत्तिनकोकहौंभिन्नभिन्नप्रकार ॥ ३८ ॥

॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धदसंवादेभाषाटीकायांचतुर्विंशोध्यायः ॥ २४॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पंचबीशौंध्यायमैंनिर्गुणतासुविवेक ॥ चितमैंवरतैंतीनगुणगुणकीवृत्तिअनेक ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवअबभाषोगुणवृत्ति ॥जिनकौंजानैंलहैंनिवृत्ति ॥ जागु णतेंजोलक्षणहोई ॥ भिन्नभिन्नभाषोंसोसोई ॥ १ ॥ समदमक्षमाविवेकस्वधर्म ॥ लजामाननकरैंविकर्म ॥ सत्यदयानहींभूलैंशुद्ध ॥ उत्तममारगमैंथिरबुध ॥ २ ॥ जसअरुसोभाधीरजवंत ॥ परउपकारसदा वरतंत ॥ बुध्धिआस्तिकनित्यनिहसंग ॥ संतोषीअरुदानअभंग ॥ ३ ॥ कोमलविनयदीनचतुराई ॥ सी तलह्दयसकलदुषदाई ॥ एसीभांतिवहुतसंपति ॥ सातिकगुणकीजाणोवृत्ति ॥ ४ ॥ आतमइनसबनि तेंन्यारा ॥। चेतनकरीवरतावनहारा ॥ भोगसक्तिहदैंबहुकाम ॥ धनअभिलाषाजसआराम ॥ ५ ॥

तृष्णाहासगर्वअलबंत ।। रिपुमंत्रादिकभेदअनंत ।। करीकामनाभजेसबदेव ।। परमारथकौलहैंनभेव ।।
६ ।। बहुआरंभनिमांहीउत्साह ।। सदाकठोरसदाअतिचाह ।। बहुतवृत्तिराजसकीऐसी ।। तुमसौंभाषी
मैंजैसी ।। ७ ।। हिंसाक्रोधलोभअधिकाई ।। जहांतहांदीनअरुदंडऊठाई ।। श्रमअरुकलहसोकअरु
मोह ।। निद्राआलसभयपरद्रोह ।। ८ ।। निशादिनचिंताउद्यमहीन ।। हृदयेंआसासाहसछीन ।। ऐसी
बहुतामसकीवृत्ति ।। जिनतैंकदैंनलहैंनिवृत्ति ।। ९ ।। उपजैंममताअरुअहंकार ।। तातैंकरैंविविधव्यवहा
र ।। तेसबमिलितगुणनिकीवृत्ति ।। जिनतैंबहुविधिहोइंप्रवृत्ति ।। १० ।। धर्मअर्थकामअनूरक्त ।। श्र
द्धालोभतथाआसक्त ।। धर्मप्रवृतपराइणजैंतैं ।। बहुतभांतिविस्तारेतेतैं ।। ११ ।। वरतेअपनेअपनेधर्म ।।
प्रियग्रहअरुग्रहसुषकर्म ।। एसबमिलितगुणनिकीवृत्ति ।। जिनतैंबहुविधिहोइंप्रवृत्ति ।। १२ ।। समदम
आदिजुक्तनरहोइं ।। सातिकलक्षणकहियेंसोइं ।। राजसकामादिकअधीकार ।। तामसजहांक्रोधादिवि
कार ।। १३ ।। जबस्वधर्मसोंमोकौंभजैं ।। दूजीसकलकामनातजैं ।। त्रियापुरुषभावेंसोहोइं ।। सातिकप्र
कृतिकहींजैंसोइं ।। १४ ।। सबकामनाहृदैंधरीलेवैं ।। अपनेकर्मनिमोकौंसेवैं ।। यहस्वभावराजसकौंकही
यैं ।। मुगतहेतकबहुंनहीगहीयैं ।।१५।। जबहींसाहृदैमेंआनै ।। जिनकर्मनिममसेवाठानै ।। सोवहतामसप्र
कृतिकहावें ।। तातैंममसुषकदैंनपावैं ।। १६ ।। सतरजतमतिनौंगुणजेहैं ।। जीवहीकौंबंधनसबतेहैं ।। तेगु
णमेरीआग्याकरैं ।। तातैंमोहींभजेतेतरैं ।। १७ ।। चितहूतैंउपजैंएसकल ।। ईनकौंतजैंआतमाअकल ।।

इनकौंछोडीरहैंमोमांही ॥ बहुर्‌योउपजैविनसैंनाहीं ॥ १८ ॥ करिसाधनरजतमपरिहरैं ॥ सातिकगुण
कीवृद्धिहीकरैं ॥ सातिकसुरजौंपरकास ॥ अतिसीतलज्यौंचंदाविगास ॥ १९ ॥ सबकल्याणमूलसुष
कारी ॥ निश्चलकरणसकलदुषहारी ॥ तातैंधर्मज्ञानसुषलहैं ॥ चिंतासोकमोहभयदहैं ॥ २० ॥ जब
सातिकतामसनंहीरहैं ॥ राजसआईबसेरागहैं ॥ राजसरूपसंगबलभेद ॥ तातैंमानकर्मभयषेद ॥ २१
॥ जबसातिकरजछुटैदोई ॥ केवलएकतमोगुणहोई ॥ तमअविवेकनासआवरना ॥ उद्यमरहीतजडता
करना ॥ २२ ॥ तातैंसोकमोहकोवासा ॥ निंद्राआलसानिशादिनआसा ॥ जबछूटैइंद्रियनुकीवृत्ति ॥
ट्टदयनहींइहांउतपाति ॥ २३ ॥ चितप्रसंनसकलनिहसंग ॥ सोसातिकममयहहैंअंग ॥ जबइंद्रियतन
मनबुधी ॥ थिरनहींरहैंलहैंनसुधी ॥ २४ ॥ ठानैंविविधकरमविस्तार ॥ सोजानौंराजसअधिकार ॥
जबविकारमनबहुविधिगहैं ॥ आसाबंधनिरंतररहैं ॥ २५ ॥ सोकविषादचेतनाहीन ॥ सोतामसउद्यम
बलछीन ॥ जबउपजैंसातिककौंभाव ॥ तबसबहोवैंदेवसुभाव ॥ २६ ॥ राजसतैंअसुरनकीवृ
त्ति ॥ भूतगणनिकौंतमउतपति ॥ सातिकतैंजागरणहोई ॥ राजसपावेसुपनासोई ॥ २७ ॥ ता
मसहूतैंसुषपतिलहैं ॥ ब्रह्मतुरीयानिरंतररहैं ॥ सातिकऊर्ध्वलोकनितजावैं ॥ राजसनरआदीकतनपावैं ॥
२८ ॥ तामसनीचैंथावरआदी ॥ याविधिभरमेजीवअनादी ॥ सातिकवृद्धमानजोहोई ॥ तातैंमरणलहैं
नरकोई ॥ २९ ॥ सोदेवनिकेलोहिजावैं ॥ राजसतैंमरीनरतनपावैं ॥ तामसतैंमरीनर्कनीलहैं ॥ तीनो

गुणतजीमेमैंरहैं ॥ ३० ॥ मेरेहेतकर्मजोकरैं ॥ तामैंदूजोफलनहींधरैं ॥ सोवहसातिककर्मकहावैं ॥
तातैंजीवमहासुषपावैं ॥ ३१ ॥ फलनिमितममकर्मनिठानैं ॥ ताकौंराजसकर्मबषानैं ॥ हींसाहेतकरेमम
कर्म ॥ सोतामसहैंबडोअधर्म ॥ ३२ ॥ भेदरहीतवहसातिकज्ञान ॥ देहभेदसौंराजसजांन ॥ बालकमू
कतुलजोहोई ॥ तामसज्ञानकहींजैसोई ॥ ३३ ॥ आतमदेहरहितजोएक ॥ सोहैंमेरोज्ञानविवेक ॥ हो
ईविरक्तवसिएएकंत ॥ सातिकवासकहैंसोसंत ॥ ३४ ॥ ग्रहमैंकहींयेंराजसवास ॥ तामसजहांसुराआ
वास ॥ थावरचलममूरतिजहां ॥ निरगुणवासकहींजैंतहां ॥ ३५ ॥ सातिककर्ताजोनिहसंगी ॥ सो
राजसकर्ताफलप्रसंगी ॥ विधिकारिरहीततामसकिर्ता ॥ आसालागिकर्मनिविस्तरता ॥ ३६ ॥ आप
हीमेटीरहैंममशर्णा ॥ ताकौंसबनिरगुणआचरणा ॥ सोजननिरगुणकरताकहीयें ॥ ताकैंसंगपरमपदल
हीयें ॥ ३७ ॥ जोनिहकर्मंआतमांजानैं ॥ सकलजतनकीश्रद्धाठानैं ॥ सकलत्यागिनिश्चलजोहोई ॥
सातिकश्रद्धाकहीयैंसोई ॥ ३८ ॥ राजसश्रद्धाठानैंकर्म ॥ तामसश्रद्धाकरेविकर्म ॥ निरगुणश्रद्धामेरीभ
क्ति ॥ जातेंमिटेसकलआसाक्ति ॥ ३९ ॥ पंथपवित्रविनाश्रमआवैं ॥ जामैंआपनोधर्मनजावैं ॥ जातें
उपजेनहींविकार ॥ सोकहीजेसातिकअहार ॥ ४० ॥ षाटामीठातीषाषारा ॥ दुखदायीकराजसअहा
रा ॥ जोअशुधहिंसातेंआवैं ॥ सोतामसअहारकहावैं ॥ ४१ ॥ ममजनअरुमेरेंउच्छिष्ट ॥ सोनिरगुण
भोजनअतिइष्ट ॥ इंद्रियसुषतृष्णादिकदहैं ॥ तजिआरंभनिथीरव्हैंरहैं ॥ ४२ ॥ आतमतेंउपजेसुषजोई ॥

सातिकसुखकहीयतुहैंसोई ॥ इंद्रियसुषराजसहीगहीयें ॥ निद्राआलसतामसकहीए ॥ ४३ ॥ मेरेप्रेम
भक्तिसुषजोई ॥ निरगुणसुषकहतुहैंसोई ॥ इंद्रियसुखराजसहीगईएं ॥ निद्राआलसतामसकहीए ॥
४४ ॥ मेरेप्रेमभक्तसुषजोई ॥ निरगुणसुषकहतुहैंसोई ॥ द्रव्यदेशफलकालअरुज्ञांन ॥ करताकर्मंत्र
वस्थादान ॥ ४५ ॥ श्रद्वानिष्ठाअरुआकार ॥ त्रिगुणनिर्मितसबविस्तार ॥ जोकच्छुकहौसुनौअरुदेषौ॥
मनअरुबुधीजहांलगिपेषो ॥ ४६ ॥ सोसबप्रकृतिपुरुषविस्तारा ॥ त्रिगुणनिर्मितसकलपसारा ॥ इनतेंजी
वलहेंसंसार ॥ त्रिगुणकर्ममयवारंवार ॥ ४७ ॥ जोइंनतीनौगुणनिनिवारैं ॥ चितआपनौंमोमेंधारैं ॥
सोमेरोनिरगुणपदपावैं ॥ बहुरौयाभवमेंनहीआवैं ॥ ४८ ॥ जातेंयहएसीनरदेह ॥ जाकरिमिटैसकल
संदेह ॥ होवैप्रगटज्ञानविज्ञान ॥ पावैमोहिमिटैसबआन ॥ ४९ ॥ तातेंपंडितसकलनिवारैं॥ मोकोंसइआ
पकौंतारैं ॥ याविनसकलपंडितजांनौं ॥ तेतेआतमघातीमांनौं ॥ ५० ॥ सबहूंतेंहोवेनिहसंग ॥ सावधा
नपलपरेंनभंग ॥ इंद्रियदेहप्राणमनजीतैं ॥ ममचरचादिनरैंनवितीतैं ॥ ५१ ॥ सकलसातिककीसंगति
करैं ॥ राजसअरुतामसपरिहरैं ॥ देहादिकतेंनिस्पृहहोइ ॥ आगेंइच्छाकरैंनकोई ॥ ५२ ॥ मोमेंधा
रैंनिहचलबुधी ॥ तवपावैंअंतरगतिशुधी ॥ याविधिसातिकहुंछटिकावैं ॥ तातौंलिंगशरीरमिटावैं ॥ ५३
॥ लिंगशरीरमिटैभवतजैं ॥ निरमलरूपआपनौंभजैं ॥ एसेंहोईमोहिकौंजानैं ॥ बाहिरभितरद्वैतनमानैं ॥
५४ ॥ मोमेंमिलिमोहिमेंरहैं॥ बहूरोकालअग्निगहीदहैं॥ रहैंनिरंतरमेरेसंग ॥ तातेंकदेंनहोवेभंग ॥ ५५

॥दोहा॥ ॥ हेउद्धवतोसोंकहींतीनोगुणकीवृत्ति ॥ अबऔरैंज्ञानाहिकहौंजातैंहोइनिवृत्ति ॥ ५६ ॥
॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांपंचविंशोऽध्याय : ॥
२५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ योगभ्रंशयोगीनकोहोतकुसंगतिपाय ॥ कहैसुसंगतीकारणैंछब्बीसैंअध्याय
॥ १ ॥ जाययोसितासंगतैंयोगधारणाध्यान ॥ श्रीधरसदाबिचारियेऐलगीतआष्यान ॥ २ ॥ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवयहनरतनहैंऐसौं ॥ सकलसृष्टिमैंनाहींजैसौं ॥ यातन
करीममज्ञानहींपावैं ॥ तातैंभवतजीमोमैंआवैं ॥ १ ॥ तातैंऐसैंतनकौंपाई ॥ मोमिलनेकोकरैंउपाई ॥
अंतरमाहीमोहीविचारैं ॥ औरैंसकलवासनाटारैं ॥२॥ ममभक्तनकेंलक्षणजांनैं॥त्यौंत्यौंआपुआपुमैंठानैं
अनायासतवमोकौंपावैं ॥ कालव्यालबहुरोनहीषावैं ॥ ३ ॥ मायागुणतवमिथ्याजानैं ॥ मेरोज्ञानपाइंक
रीभानैं ॥ यौंव्हैरहैदेहहूंमांही ॥ तोहूंफिरिलहैंकहुंनाहीं ॥ ४ ॥ परिजद्यपिहोवैंएसोऊं ॥ करैअसाधूसं
गनहींतोऊं ॥ शिश्नअरूउदरपरायणजेतैं ॥ मनक्रमवचनत्यागिएतेतैं ॥ ५ ॥ कैरैअसाधूएककौसंग
॥ तोहूंज्ञानध्यानकौभंग ॥ असंतसंगजबनरहाकिरैं ॥ ताकेसंगनरकमेंपरैं ॥ ६ ॥ जैसैंअंधअंधकेसं
ग ॥ कूपपरेंहोवैंसुषभंग ॥ याकीगाथाभाषौंऐक ॥ तातैंउपजैंपरमाविवेक ॥ ७ ॥ जबउरबसीबिरहतन
दत्यौं ॥ सोकमोहसागरमैंबत्यौ ॥ जबपुरूरवाभाषीजोई ॥ तोसोंभाषोगाथासोई ॥ ८ ॥ राजापुरूरवा
चक्रवरति ॥ ताकीआनजहांलौधरती ॥ शापहुंतेंउतरीउरबसी ॥ सोमिलिकैंनृपकेउरबसी ॥ ९ ॥

बहूर्यौआपभुक्तिजबभई ॥ तबताजिनृपाहिंउरबसीगई ॥ नृपतिविलापकरैंबहुरोवैं ॥ परिसोनृपकोंऔरन जोवैं ॥ १० ॥ राजानग्नदेहसुधनाहीं ॥ बानीबिकलदीनतामाहीं ॥ लजारहीतमंदमतीजैसें ॥ चल्यौउर बसीपोछेतैसें ॥ ११ ॥ अहोप्रियातुमठाढीहोवो ॥ मेरीऔरकृपाकरीजोवो ॥ मोकोंमारकहांतुमजावें ॥ कृपाकरौमेरेग्रहआवौ ॥ १२ ॥ मिलीउरबसीसंगसुषपायौ ॥ सोसोसकलदुषव्हैआयौ ॥ नृपतनभयो भोगवतभोग ॥ पाईउरभसीकोसंजोग ॥ १३ ॥ ताउरबसीज्ञानआकर्ष्यौ॥तातैंमलोमानकेंहर्ष्यौ ॥ तन मनत्दृदयकछूनहींआन्यौं ॥ निशदिनमासबरषनहींजान्यो ॥ १४ ॥ तबतानृपकेपूरणभाग ॥ जातेंप्रग टभयोवैराग ॥ तबनृपबचनबषानेंजेई ॥ तोसोंमैंभाषतहोतेंई ॥ १५ ॥ ॥ पुरूरवाउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ अहोएकदेषोममंमोह ॥ आपुहींकीयेआपनोद्रोह ॥ गहीयोंकंठदेवकीमाया ॥ जिनमेरोसबआवग माया ॥ १६ ॥ ईनमोंकोंडहींक्यौंवहुतेरौ ॥ सर्वसआपुलीयौहारिमेरौ ॥ मैंदिनरातनजान्यौंजात ॥ अ मृतकरिमान्यौंविषघात ॥ १७ ॥ वरषसमूहगएममवीत ॥ सकलविकारनिलेनोजीत ॥ देषोमेंकेसौडहीं कायौ ॥ अस्त्रिकेकरआपाविकायौ ॥ १८ ॥ जोमैंराजाचक्रवर्ती ॥ जीतीसमस्तकरीबसधर्ती ॥ सक लभूपममचर्णनिसेवैं ॥ तनमनधनसबमोकोंदेवैं ॥ १९ ॥ सोमैंबिकानोंअस्त्रिहाथ ॥ ज्यौंवानरबाजिगरसा थ ॥ ज्यौंअस्त्रिमोहिनचायौ ॥ त्यौंत्यौंमैंमुरषसुषपायौं ॥ २० ॥ तापरराजसहीतताजिमोह ॥ त्रिणस मानकरिचलीबिछोह ॥ नग्नभयोमैंपाछैंधायौं ॥ ज्यौंउनमत्तआपबिशरायौं ॥ २१ ॥कौनभांतिताकौंबल

होई ॥ तेजप्रतापरहैनहींकोई ॥ जोहोवैंअग्निआधीन ॥ जेसेंषरीसंगषरदीन ॥ २२ ॥ विद्यामौनतप
स्यात्याग ॥ बनमेंसबवोदृढबैराग ॥ एसमस्तकीनेंकछुनाहीं ॥ ज्यौंलगीत्रियाबसैंमनमाही ॥ २३ ॥
यहउरबसजिबहींतेंपाई ॥ कामअग्निबहुभांतिजगाई ॥ परियहअग्निनसीतलभई ॥ अधिकअधिक
नितबधतिगई ॥ २४ ॥ जैसेंअग्निप्रज्वलितहोई ॥ तामेंइंधनडारेंकोई ॥ सोत्यौंअधिकअधिकप्रजरैं
॥ पलकोनहींसीतलताकरैं ॥ २५ ॥ मेंअपनोनजान्यौंअर्थ ॥ आपुआपुकौंकीयोअनर्थ ॥ मूरषआ
पुहींपंडितमानैं ॥ परैंमृत्युमुपअमृतजानैं ॥ २६ ॥ जोमेंईससकलभुवकेरौ ॥ सोव्हैरह्यौत्रियकौंचेरौ
॥ मेंमूरषताकौंधीकार ॥ जिननकीयोकछुज्ञानविचार ॥ २७ ॥ अग्निकरिजाकौचितहऱ्यौ ॥ ज्ञानवि
चारसकलपरिहऱ्यौ ॥ ताकौंहरिबिनकौनछोडावैं ॥ दूजोआपनछूटनपावैं ॥ २८ ॥ तातेंमेंहरिसणीनिग
हों ॥ सकलत्यागिहरिकौव्हैरहौं ॥ जद्यपिदेवींमोहिबुझायौ ॥ त्रियाप्रीतिदुषकहीसमुझायो ॥२९॥ तोहूं
मैंमूरषनहींचान्यौ ॥ कामअंधसुषहीकारिमान्यौ ॥ तातेंताकौनहींअपराध ॥ यहमेरोमनबुडैंअसाध ॥
३० ॥ ज्योंमेंस्वर्गनरकहीदेष्यौं ॥ दुषहीमांहीसुषकारिलेष्यौ ॥ गुणमेंसापजानदुषपावैं ॥ अग्निपतंगपरैं
मरिजावैं ॥ ३१ ॥ तोतिनकौंअपराधनकोई ॥ आपदुषकारिलेवैंसोई ॥ तातेंतिनकोयहसुभाव ॥ मेंम
नमेंक्यैांधऱ्यौंअभाव ॥ ३२ ॥ जामेंआपअग्निमेंपरौं ॥ ताउरदुषकवनकौंधरौं ॥ देहमलीनमहादुर्गं
ध ॥ सोकरिजानिविमलसुगंध ॥ ३३ ॥ सोअपनीअविद्याकऱ्यौ ॥ निजानंदआतमाविसऱ्यौ ॥

यहतनतोबहूतनकोकहीयैं ॥ तातैंममतागहीक्यौंरहीयैं ॥ ३४ ॥ मातपिताआपुनौंकारिकह्यौं ॥ अस्थि एकमेकामिलिरहैं ॥ केयहतनकहीयेराजाकौं॥केपावकभक्षनहैंताकौं ॥ ३५ ॥ कैभूकोकेश्वानसृगाल॥ केअपनोमित्रकेकाल ॥ यहतनकौंधोकहीयैंकिंनाकिंनकौं ॥प्रगटदीसतुहैंतिनातिनकौं॥३६॥महाअशुद्धदेह यहएसी ॥ प्रगटनरकषानहैंजेसी ॥ तहांकौनमनबाधेमतिमंद ॥ अस्थिनामकालकौंफंद ॥ ३७ ॥ त्वचारुधिरमांसअरुअंत ॥ मज्जामेदरोमनषदंत ॥ विष्ठामूत्रऋतुकृमिदाट ॥ अस्थिप्रगटनरककीषाड ॥ ३८ ॥ तातैंअस्त्रीअरुतासंगी ॥ ताकौंनहींहुंजैंप्रसंगी ॥ ताकेंदर्शक्षुभितमनहोई ॥ देषेबिनाबिचरेनकोई ॥ ३९ ॥ तातैंतिनकौंदर्शनाहिकरीयैं ॥ आपहिंआपनरकमेंपरीयैं ॥ जोयहअर्थइंद्रियनिवारैं ॥ मनक्रमवचनहुंशंगतैंटारैं ॥ ४० ॥ तबयहमनसहजहिंथिरहोई ॥ कदेंविकारनपरसेंकोई ॥ अरुतातैंजेअस्त्रिनिकौंभजैं ॥ अरुआस्त्रितिनकौंबुधतजैं ॥ ४१ ॥ दर्शपरसअरुश्रवनानिवास ॥ सबभावनितैंमानेत्रास ॥ इंद्रियनिकौंविसवासनकरैं ॥ ज्ञानवंतानितहींपारिहरैं ॥ ४२ ॥ महापुरुषजेजीवनमुक्ता ॥ तिनकौंयहसबसंगअजुक्ता ॥ तोतैंजगतैंछूटैंचहैं॥तेंहमसेंक्यौंसंगतिगहैं ॥ ४३ ॥ तातैंमेंसबसंगतिनिवारी ॥ श्रीपतिचर्णकमलउरधारी ॥ दीनबंधूकरुणामयस्वामी ॥ कृपाकरीयहअंतरजामी ॥ ४४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याविधिबचनकहैंनरराज ॥ तजिलरबसीलोकसबसाज ॥ ज्ञानलह्यौंसबसंशयटारी ॥ मननिश्चलकरीमोमेंधार्यौ ॥ ४५ ॥ तातैंउद्धवयहपुरुषार्थ ॥ नरतनपायौंतबहींस्वार्थ ॥ ज

वसमस्तकौसंगतितजैं ॥ सतसंगतिगहिमोकौंभजैं ॥ ४६ ॥ संतवतावैंहेतउपदेश ॥ जिनतैंसंशेरहेनलेश ॥ मनकौसबआशक्तिनिवारैं ॥ संतमहाभवसागरतारैं ॥ ४७ ॥ निस्प्रहानिरारंभसमदरसैं ॥ संग्रह रहीतद्वंद्वनहींपरसैं ॥ अहंकारममतानहींआनैं ॥ मोहिभजैंदूजौनहीजानैं ॥ ४८ ॥ मेरीकथाश्रवणजेंकरैं ॥ तेसबपापनितैंनिस्तरैं ॥ सुनैकहैंअंतरगतिध्यावैं ॥ अतिआतुरसोप्रीतिद्दढावैं ४९ ॥ सोजद्यपिउपदेशनदेवैं ॥ तोहूंमोहिाचहेतेसेवैं ॥ तहांकथामेरीनितहोवैं ॥ तेईअंघसंदेहनिषावैं ॥ ५० ॥ तेसहजहीलहेममभक्ति ॥ सहजहिंहोवेसकलविरक्ति ॥ मेरीभक्तिलहेंनरजबहीं ॥ पूरणकामभयोसोतबही ॥ ५१ ॥ तातैंकछूनकरणोरहैं ॥ ज्ञानानंदरूपममलहैं ॥ सीतनिशाकहुंहोवेकोई ॥ तहाअग्निपरजारैंसोई ॥ ५२ ॥ तमतुषारभयसहजहिजावैं ॥ त्यौंसाधुसबदुषमिटावैं ॥ यहअपारसागरसंसार ॥ जामेंबूडेजीव अपार ॥ ५३ ॥ तिनकौंनामप्रगटएकएह ॥ संतरूपप्रगटममदेह ॥ ज्यौंप्राणनिराषैंअहार ॥ मेरीशरणदुषसंहार ॥ ५४ ॥ ज्यौंज्यौंपरलोकधर्मधनजानौं ॥ त्यौंभवतारकसाधूमानौं ॥ जिनकेंह्रदयप्रगटममचर्ण ॥ तिनविनऔरनयाभवशर्णं ॥ ५५ ॥ ज्यौंबाहिरिरहैंसूर्यएक ॥यौंउरनयनउद्घारैंअनेक ॥ संतमातपिताहितकारी ॥ संतैदेवबंधूदुषहारी ॥ ५६ ॥ तातैंसंतसंगनितकरणौ ॥ औरउपायनह्रदयें धरणौ ॥ तिनतैंअनायासैंभवतरैं ॥ अनायासैंमोकौंअनुसरैं ॥ ५७ ॥ तबपुरूरवाएसोकऱ्यौ ॥ सहत उरबसीलोकपरिहऱ्यौ ॥ सबतजीभयौआतमाराम ॥ विचऱ्यौंभूवमैंव्हैंनिःकाम ॥ ५८ ॥ तातैंअसंत

संगतिपरिहरैं ॥ साधुसंगतिनिरंतरकरैं ॥ साधूजनसूषहींभवतारैं ॥ सुषहीममचर्णनिचितधारैं ॥ ५९ ॥
दोहा ॥ ॥ ऐसोसाधूअसाधूकौंसुनोहरिजीसोसंग ॥ तबउद्धवजनपूछियौकमजोगपरसंग ॥ ६० ॥
॥इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांऐलगीतायांषट्विंशोऽध्यायः ॥
२६ ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीधरपूजनविधिसबैंमूरतिअष्टप्रकार ॥ सत्तावीशैंध्यायमैंचित्तशुद्धनिजसार ॥ १
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूकृपाकरौअबऐसी ॥ भाषौंक्रियाजोगविधिजैसी ॥जाके
करतहोईसतसंग॥पर्वैज्ञानहोईनिहसंग ॥१॥ यहजोतुमप्रतिमाकीपूजा॥तातैंश्रेयकहेनहींदूजा॥याकौंकहैं
व्यासअरुनारद॥गुरुबृहस्पतिपरमविशारद॥२॥औरोसकलमुनिस्वरजेतें॥परमश्रेययहभाषेतेतें ॥ कलप
आदीतुमविधिसोकत्थौं॥सोदृढकरीविधित्हृदयगत्थौं ॥३॥ तिनभृग्वादिसुतनिसुनायौ ॥ शंभूहूंतैंभवानीपा
यौ ॥ जेतेसकलवर्णआश्रम ॥ अस्त्रिशूद्रहुसबकोधर्म ॥ ४ ॥ याविधिऔरधर्महीजेतैं ॥ याहीकाजक
हैंसबतेतैं ॥ याबिनुऔरधर्मजेकरैं ॥ तोतिनतौंफिरिबंधनपरैं ॥ ५ ॥ यहसबधर्मनिकौहैधर्म ॥ याहीहूंतें
काटैंसबकर्म ॥ तातैंपूजाविधिविस्तारौ ॥ कृपाकरौजीवनानिस्तारौ ॥ ६ ॥ तुमदयालसबकोहितकारी ॥
सुमरतसकलदुषभयटारी ॥ शुनिकैंपरउपकारीबेन ॥ बोलेहरषिकमलदलनैन ॥ ७ ॥ श्रीभगवानुवाच
॥ ॥चौपई ॥ उद्धवयाकौंअंतनपार ॥ ममपूजाविधिविस्तार ॥ पारैतोकूंसंक्षेपसुनाऊं ॥ तामैंतत्व
सकलकौंल्याऊं ॥ ८ ॥ पूजाविधिहैतीनप्रकार ॥ वैदकतंत्रमिश्रितसार ॥ वेदमंत्रअरुवैदकअंग ॥ सो

कहीएवेदकपरसंग ॥ ९ ॥ याँहीतंत्रिकामिश्रितजानैं ॥ भावेंतासौंपूजाठानैं ॥ विप्रक्षत्रीवैस्यत्रिवनौं ॥ इ
नकौयाविधिपूजाकरनां॥१०॥सोसमस्तविधितुमहींसुनाऊं ॥ जीवनिकौंकल्यानउपाऊं॥प्रतिमा भूमिअगिन
जलवाई ॥ द्विजअरुआपअर्कअरुगाई ॥ ११ ॥ अरुसबहीनमैंमोकौंजानैं ॥ जथाजोगसबपूजाठां
नैं ॥ गुरुअरुमोंमेंभेदनराषें ॥ मानुषबुद्धीदूरिकरीनाषैं ॥ १२ ॥ शुद्धहोईजलमाटीसंग ॥ असनाना
दिसकलईअंग ॥ जेजेप्रगटवेदअरुतंत्र ॥ तेतसकलपढैममंत्र ॥ १३ ॥ संध्योपासनादिजेकर्म ॥प्रग
टतिहूंवर्णकैधर्म ॥ तिनतिनसौंनितमोकौंभजैं ॥ होईनिषेधसकलसौंतजैं ॥ १४ ॥ जाहीकरिममसुमिर
णहोई ॥ कटैसबकर्मनिकौंसोई ॥ सोइसोकहियैममधर्म ॥ ममसुमिरणबिनबंधनकर्म ॥ १५॥ अब
भाषौंप्रतिमाकेभेद॥सेवतजिनहींमिटैभवषेद॥एकशिलाकीकहियैमूरति॥एककाष्ठकीयौंममसूरति॥१६॥
एकलेपचंदनकीकरियैं ॥ एकचित्रपुस्तकलिषिधरीयै ॥ प्रतिमाएकसुवर्णसंवारी ॥ एकमनोमयमनमैंधा
री ॥ १७ ॥ एकमृत्तिकाकीलेकीनीं ॥ एकरतनमणिकीकरिलीनी ॥ एममप्रतिमाअष्टप्रकार ॥ जा
नैंममंदिरनिजसार ॥ १८ ॥ तिनमैंहोवेंनिश्चलजेती ॥ सयनादिकनकरावेतेती ॥ सालिगरामआदिहे
जेती ॥ मरौतनजांनैंनिततेती ॥ १९ ॥ औरसबनिकौपूजाकाल ॥ किंवाजानैंनितगोपाल ॥ लेपीलिषी
नमाजंनकरैं ॥ औरअस्नानहीविस्तरैं ॥ २० ॥ उत्तमसामग्रीसोंसेवें ॥ तनमनसबमोकौंदेवें ॥ जोनिह
कामानिःकपटहोई ॥ करेभावबसमोंकौंसोई ॥ २१ ॥ उत्तमवस्तकनिमनकरिल्यावैं ॥ प्रेमसहीनसबमो

होचढावैं ॥ उत्तमविधिअस्नानकरावैं ॥ वस्त्रआभरणादिकपहिरावैं ॥ २२ ॥ अग्निघृतादिकहोमही
करैं ॥ धरणिरविअस्त्कातिविस्तरैं ॥ जलकौंपूजेजलफलफूल ॥ जानेमोहीसकलकौंमूल ॥ २३ ॥ भ
क्तिसहितजोअर्पैतोई ॥ ताहुमेंमोकोंसुषहोई ॥ तोजेधूपदीपनैवेद ॥ मोकौंबहुविधिकरैंनिवेद ॥ २४ ॥
ताकीमहिमाकहाबषानौं ॥ ज्यौंहिंयोंमेंहीपाहिचानौं ॥ तातैंमैंनित्यप्रतीतिआधीन ॥ तोषनमानौंप्रीतिविहीन
॥ २५ ॥ अबभाषौंपूजाविधितोसौं ॥ सावधानव्हैंसुनियोमासौं ॥ होईपवित्रकरैंअस्नान ॥ मनमेंराषैंमे
रोध्यान ॥ २६ ॥ पूजासाजप्रथमसबलेई ॥ फिरिउठबैकौंरहननदेई ॥ बैठेउत्तरकेपूरवमुष ॥ निश्चल
प्रतिमाकेबलसन्मूष ॥ २७॥ दर्भनिसौंनिजआसनकरैं ॥ अंगनिकैंन्यासहींविस्तरैं ॥ न्यासकरैंमममू
रतिअंग ॥ तबठानैंअस्नानप्रसंग ॥ २८॥ उत्तमकलसतोयसौंभरैं ॥ दूजेजलकेपात्रहींधरैं ॥ जलमैं
बहूतसुगंधमिलावैं ॥ तासौंमोहीअस्नानकरावैं ॥ २९ ॥ अर्धपादअरुविष्टरकरैं ॥ तीनपात्रतातैंजलभ
रैं॥गंधपुष्पतामेंबहुधरैं॥गायत्रीअभिमंत्रनिकरैं ॥३०॥ तबआपनौंकरैतनशुध ॥ कौउद्धारनहोईअशुध॥
र्हदयमांहीममरूपहिंध्यावैं॥उँकारजहांतैंआवैं॥३१॥जैसैंग्रहमेंदीपप्रकास॥यौंध्यावैंतनमांहींउजास ॥पूजौ
प्रेमसोतनमयहोई॥पुनिमूरतिमैंथपिसोई ॥३२॥ सांगोपांगकरैंतनपूजा॥कोईभावनउपजैंदूजा॥देवैंअर्घपाद
आचमन॥रचेअष्टदलपंकजभवन॥३३॥तापरअस्थापैंधरमादी॥सकलशक्तिरविशशिअग्न्यादी॥शंष
चक्रगदाअसिअस्त्र॥धनुषअरुबानमूलहलशस्त्र ॥३४॥ एआठतेआठदिशिआनैं॥वनमालालताउरजा

न॥नंदसूनंदमहाबलचंड॥कुमुदेक्षणबलकुमुदप्रचंड॥३५॥अष्टदिसापारदससमग्र॥ठाढौगरुडजोरीकर अग्र॥विष्वक्सेनव्यासगुरुदेव॥गणपतिदुर्गाअरुसबदेव॥३६॥करजोरेहरिसन्मुषठाढैं॥हरषतबदनप्रेमअ तिबाढैं॥सबहीनकौंपूजैंअर्घादि॥विनयनमृतावंदनआदी ॥३७॥चंदनअरुकपूरउशीर॥कुंकुमअगरसुगं धतनीर॥प्रथमहींकछुमधूपर्कचढावैं॥निरमलजलअचमनकरावैं॥३८॥पुनिसुगंधजलदेइसनांन॥मंत्रवंदन मनक्रमनहींआन॥पुंडरीकलोचनभवभान॥आदिपुरुषसबकेउपजावन ॥३९॥जयजयब्रह्मसकलआधार नमोनमस्तेवारंवार ॥ एसैंमंत्रतंत्रहीउचारैं॥सहस्रशीर्षाश्रुतिबिस्तारैं॥४०॥वस्त्रजनेउअरुआभरना॥अं गअंगतिलकादिककरना ॥ उत्तममालाबहुतसुगंधा ॥ प्रेमसहीतमोसैंमनबंधा ॥ ४१ ॥ बालभोगआ चमनकरावैं ॥ कुसुमसुगंधधूपबनावैं ॥ बहुतभांतिआरतीउतारैं ॥ नानाविधिनैवेदसंवारैं ॥ ४२ ॥ षी रषांडघृतदधीलापसी ॥ लाडुपुवासुहारसुरसी ॥ विंजनकरैंऔरबहुतरैं ॥ भोगलगावैंबहुहितमेरैं ॥ ४३ ॥ नितदांतुनउवटनौतेल ॥ अन्हापैंचामृतमेल ॥ अलंकारदर्शनआदरस ॥ गीतनृत्यवाजिंत्रसुपरस ॥ ४४ ॥बहुतभांतिनैवेदसंवारैं ॥ नितनाहींतोपर्वनटारैं ॥ बहुरिकरैंपावकमेंपूजा ॥ मोबिनताहीनजानैंदूजा ॥ ४५ ॥ अग्निकुंडमैंअग्निधरैं ॥ समिधघृतादिकहोमहींकरैं ॥ होमकरैंपठीपढिमममंत्र ॥ जिनकौंकहैंवेद अरुतंत्र ॥ ४६ ॥ करीहोमआचमनकरावैं ॥ ताकोंमेरोरूपहींध्यावैं ॥ तप्तसुवर्णतुल्यछबीअंग ॥चारु चतुर्भुजआयुधसंग ॥ ४७ ॥ पीतवसनकुंडलबनमाला ॥ सीसमुकुटकटीसूत्रविशाला ॥ भृगुलताआरु

लक्ष्मीआदि ॥ बहुविधिध्यावैंरूपअनादी ॥ ४८ ॥ पुनिनंदादिपारषदजेतें ॥ बलीविधानसोंपूजेंतेतें ॥जपेंमूलमंत्रबहुवार ॥ जाविधिबांधेप्रेमअधिकार ॥ ४९ ॥ पीछैंतापरसादहिलेवैं ॥ लेकरीममभक्तनकौंदेवैं ॥ आग्यांपाईआपतबपावैं ॥ प्रीतिसहितजेतोजीयभावैं ॥ ५० ॥ पुनिअर्पेंसुगंधतांबूल ॥ उत्तममालाउत्तमफूल॥ मेरेगुणउंचैसुरगावैं॥नामनिभाषैप्रेमबंधावै॥५१॥ मेरेगुणअरुकर्मसराहैं ॥पूरणप्रेमसिंधूअवगाहैं ॥ कथानितममसुनैंसुनावैं ॥मोंबिनकहुंनपलठहरावैं ॥५२॥ चर्णपलोटैंसयनकराई ॥ मुषतैंनामनबूलीजाई ॥ प्राकृतसंसकृतहैंअरुवेद ॥ जेईजेंअस्तुतिकेभेद ॥ ५३ ॥ तिनतिनसौंममअस्तुतिकरैं ॥ वारवारचर्णनिमेंपरैं ॥ पीछैंधारजोरकरदोई ॥ करैंदीनव्हैंविनतीसोई ॥ ५४ ॥ हेप्रभूभवसागरतैंतारौं ॥ कालमृत्युभयशोकनिवारौं ॥ तुमबिनमेरेंऔरनकोई ॥ पाऊंचर्णनिकोजेंसोई ॥ ५५ ॥ दृढदैंजोतिजोतिमेंधारैं ॥ मूरतिकौंसेव्याविस्तारैं ॥ यौंआकारजहांलौंदेषैं ॥ तेंसमस्तममूरतिलेषैं ॥ ५६ करैंयथाविधिसबमेंपूजा ॥ मोंकोंछांडिनजानैंदूजा ॥ याविधिक्रियाजोगमनलावैं ॥ सोनरभुक्तिमुक्तिफलपावैं ॥ ५७ ॥ मेंकोंउत्तमग्रहसंवरावैं ॥ तामेंममप्रतिमापधरावैं ॥ मोकौंकरैंबागफूलवाई ॥ जन्ममहोत्सवकीअधिकाई ॥ ५८ ॥ ममहितसदाव्रतादिकदेवैं ॥ बहुतभांतिममभक्तिनिसेवैं ॥ ममपूजाप्रवाहकैहेत ॥ देवेंगामपुरहाटअरुषेत ॥ ५९ ॥ सोममसमईस्वरतापावैं ॥ तिहुंलोककौंईसकहावैं ॥ जोममप्रतिमाथापनकरैं ॥ सोसबभूपतिव्हैंअवतरैं ॥ ६० ॥ जोमेरोमंदिरसंवरावैं ॥ तिहूंलोककाप्रभूतापावैं ॥ पूजा

दिकनीब्रह्माकोलोक ॥ जहांनहींनानाभयसोक ॥ ६१ ॥ तीनौंकीएलहैंवैकुंठ ॥कालादिकसबतेंअकुं
ठ॥जोयौंसेवेंहैंनिहकाम॥सोममभक्तिलहैंसुषधाम ॥६२॥ निहकामीभांवेंत्यौंसेवैं॥जोतनमनधनसबमोको
देवैं ॥ सोपावेमेरोनिजज्ञान ॥ लहैंमोहिछूटैंसबआन ॥ ६३ ॥ वृत्तिसुरनिअरुविप्रनिकेरी ॥ अरुजो
करिहोएकछोमेरी ॥ दईऔरकोंकिंवाआपु ॥ ताकैंहरेकयौंसबपापु ॥ ६४ ॥ सोहोवेकृमिविष्टा
मांही ॥ बरषकोटिकहूंनिकसैंनाहीं ॥ करताप्रेरकतथासहाई ॥ अनुमोदकैजिनरुजिउपजाई ॥ ६५ ॥
सबहिनकौंफलहोईसमान ॥ भावेउत्तमभावेंआन ॥ तातेंममाहितकर्मनिकरैं ॥ सोबहूतनिलेभवजलतरैं ॥
६६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याविधिपूजाकौंकरैंताकैंउपजैंज्ञान ॥ जातेंमेरोपदलहैंताकौंकरौंबषान ॥
॥ ६७ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांसप्तविंशोऽध्यायः
॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ अष्टविंशतिध्यायमैंज्ञानयोगपुनिसार ॥ श्रीधरश्रीउद्धवप्रतिवर्णतनंदकुमार ॥
१ ॥ श्रीभगवनुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवताकौंभाषौंज्ञान ॥ जातेंलेहमोहितजोआन ॥ उत्त
ममध्यमकर्मसुभाव ॥ जेसबजगकेनानाभाव ॥ १ ॥ तिनातिनकौंनिंद्यानहींकरैं ॥ अरुकछूनहींअस्तुति
विस्तरैं ॥ प्रकृतिपुरुषनिर्मितसबजानैं ॥ एकजानिसबभेदाहिभानैं ॥ २ ॥ ब्रह्माआदिकीटपरिजंत ॥ ए
करूपदेषेममसंत ॥ जेजेबहुविधिकर्मसुभाव ॥ तिनकौंआनैंभावअभाव ॥ ३ ॥ तासोंहोईअर्थतेभ्रष्ट ॥
मायामोहाचितआकृष्ट ॥ मिथ्यामाहिचितकौंधरैं ॥ तातेंमूरषजनमेंमरैं ॥ ४ ॥ लीनहोईजबइंद्रियदेह ॥

स्वमलहैंतबआतमएह ॥ जहांमनलग्यौंतहांतहांजावैं ॥ बहुतभांतिकेसुषदुषपावैं ॥ ५ ॥ पुनिसुषपतिमेंहोवे लीन ॥ मरणोकहिएअहंममहीन ॥ यौंसुषपतिअरुदेषतमुपना ॥ जन्ममरणबहुसुषदुषउपनां ॥ ६ ॥ ज्यौंलगिसोवैंतोलगिपावैं ॥ जागैंकछुएनहींरहावैं ॥ त्यौंयहसुषपापअरुपुन्य ॥ जन्ममरणसबमानौंशून्य ॥ ७ ॥ जापेयहसबद्वैतअसत्य ॥ मोंबिनऔरकछूनहींसत्य ॥ देषनकहनसुननमेंआवैं ॥ मनअरु बुद्धिजहांलगिजावैं ॥-८॥ तेसमस्तजोकछुवैंनाहीं ॥ तोसुभअसुभकहैंकहामांहीं ॥ जद्यपिहैमिथ्यासंसार ॥ तोहूंदुषकौंवारनपार ॥ ९ ॥ ज्यौंलगोंदेहबुधीनहिंछूटैं ॥ तोलगोंभवभयपलकनटूटैं ॥ जैसैंअपने ध्वनिकीझांहीं ॥ अरुप्रतिबिंबसिंहकीनाहीं ॥ १० ॥ सीपरूपजेवरिमेंसाप ॥ अरुमृगतृष्णांमाहींआप ॥ हैंनाहींपरिहैंसोजानैं ॥ तिनतेंसुषदुषबहुविधिमांनैं ॥ ११ ॥ ज्यौंलगिमिथ्याजानैनाहीं ॥ तोलगिसकल अनर्थनजाही ॥ ब्रह्मरूपयहसबसंसार ॥ जहांलगिकछुहैआकार ॥ १२ ॥ ब्रह्मरूपब्रह्महीउपजावैं ॥ ब्रह्मब्रह्मआधाररहावैं ॥ ब्रह्महिकरैंब्रह्मप्रतिपाल ॥ ब्रह्मरूपब्रह्मकौंकाल ॥ १३ ॥ जैसैंजलबुदबुदजल मांहीं ॥ जलकौंछोडिद्वैतकछुनाहीं ॥ त्यौंहीब्रह्मसरूपसबएक ॥ देषेभरमतेंजीवअनेक ॥ १४ ॥ पारि यहसबजानौंनिरमूल ॥ ज्यौंमृगवारीगगनमेंफूल ॥ त्रिगुणरचितसबयहजगजानौं॥तेगुणमायाकेहीमानौं ॥ १५ ॥ जोयाविधिसबमिथ्याजानैं ॥ ब्रह्मभावनात्दृढैंआनैं ॥ परिजद्यपिसौंजगमेंरहैं ॥ तोराविद्यागुण दोषनगहैं ॥ १६ ॥ याजगमेंशुभअशुभनदेषैं ॥ मिथ्याजानेभरमकरीलेसैं ॥ ज्यौंप्रतक्षघटादिकदेषैं॥

उपजतविनसतामिथ्यालेषैं ॥ १७ ॥ धरनीआदिकालत्रयसत्य ॥ नामरूपतेंसकलअसत्य ॥ यौं
हीब्रह्मसत्यत्रिहुंकाल ॥ नामरूपामिथ्याजंजाल ॥ १८॥ अरुत्यौंकरदेषेअनूमान ॥ भाईयहजडतनमन
प्रान ॥ शक्तिकौनकीचैतनरहैं ॥ अपनेअपनेअर्थनिगहैं ॥ १९ ॥ निराकारतेंचेतनहोई ॥ सबआ
कारजहांजोलोई ॥ तातैंसबमिथ्याआकार ॥ चेतनब्रह्मसकलआधार ॥ २० ॥ अरुश्रुतिकौप्रमाण
विचारैं ॥ नेतिनेतिकहीवेदपुकारैं ॥ अरुत्यौंदेषैंअनूभवमाही ॥ नामरूपयहकछुहेनाहीं ॥ २१ ॥ अं
तनरहैंहूतेंनहींआदी ॥ आत्मनिश्चलब्रह्मअनादी ॥ ऐसोबहुविधिकौविस्तार ॥ मिथ्याजानैंवर्णआकार
॥ २२ ॥ मनक्रमवचनहोईनिहसंग ॥ ब्रह्मविचारहिकरैंअभंग ॥ ऐसेबचनकहेभगवान ॥ तब
उद्धवपूछ्यौंनिजज्ञान ॥ २३ ॥ उद्धवउवाच ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुयहआतमअविनासी ॥
चेतनरूपस्वयंप्रकासी ॥ निरगुणनिराकारनितसुध ॥ सदाअनावृतसदाप्रबुध ॥ २४ ॥ ईहार
हितसदाआनंद ॥ सकलप्रकासकलिपैनदुंद ॥ अरुदेहैंशक्तिकरीहीन ॥ जडअसुधव्हैंजावैंलीन
॥ २५ ॥ तातैंतिनकोसंगनकोई ॥ महाविशेषपरसपरहोई ॥ कछूइच्छानहींआतममाही ॥ अरुत
नसौंकछूहोवेनाहीं ॥ २६ ॥ आतमाकौंबंधननंहीकोई ॥ अरुआत्मआवरणनहींहोई ॥ यहसंसारल
हैसौंकोन ॥ आत्मसूधसदासुषभोन ॥ २७ ॥ यहकारिकृपाभोहीसमझावौ ॥ मेरेप्रभुसंदेहामिटावौ ॥ ऐ
सेंउद्धवपूछ्यौज्ञान ॥ तबबोलेंभवपतिभगवान ॥ २८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥आत

मकोनाहींसंसार ॥ अरुतिनकोनाहींआकार ॥ तिनदोनोतेंजोअविवेक ॥ ताहीकोंभवदुषअनेक ॥२९
इंद्रियप्राणदेहमनबंध ॥ इनसोंचोआत्मसनबंध ॥ तातेंआभासेंसंसार ॥ महादुषनानापरकार ॥३०॥
जोंलगिलोंइनीसोंसंबंध ॥ तोंलगिआतमाजानेबंध ॥ सोअज्ञानकर्‌योंसबजानों ॥ नाहींकछूसकलकरी
मांनों ॥ ३१ जद्यपिहैंमिथ्यासंसार ॥ परितोहूंकहूंवारनपार ॥ सदाजीवदुषहीमेंरहैं ॥ वारवारतनछोंड
गहैं ॥ ३२ ॥ ज्यौंसुनाकछुहोवेंनाहीं ॥ परिसबसाचौनिद्रामोहीं ॥ योंज्यौंसुषदुषमनआध्यावें ॥ सोसो
सकलसुपनमेंआवें ॥ ३३ ॥ हैंनाहींपरिहैंसोजानें ॥ नानाविधकेसुषदुषमानें ॥ जागेहीकछुहीयेंनाहीं ॥
सबव्यवहारवृथाव्हैंजांहीं॥३४॥हरषशोकभयसोचअरुलोभ॥इच्छाक्रोधअसोभअरुसोभ॥जन्मअरुमर
णविकारजहांलौं॥ अहंकारकेसकलतहांलों ॥३५॥ आतमसदाएकरसरहैं ॥ अहंकारसंगतिदुषसहैं ॥
इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ सूत्रअरुमहत्तत्वअभिमान ॥ ३६ ॥ इनिसौंमिलिकरआतमएक ॥ याकैंसुष
दुषगहैंअनेक ॥ तिनातिनकेहितकर्मनिकरैं ॥ कर्मनिकैवशजनममेमरैं ॥ ३७ ॥ लिंगबंध्योदेहनिमेंजावें
॥ तिनकैंसंगमहादुषपावें ॥ बुधवचनमनप्राणसमीर ॥ महत्तत्वइंद्रियकर्मशरीर ॥ ३८ ॥ सुषअरुदुष
ममताअहंकार ॥ तिनकोंनानाविधिसंसार ॥ सोनिरमूलसकलाहेजानें ॥ ज्यौंजेवरीसापस्यौंमानें ॥ ३९
॥ ज्ञानषडगभजीमोहीउपावें ॥ गुरुसेवासौंसाधनधरावें ॥ तासोकाटीव्हैंनिहसंग॥विचरेंसबदेषतममअंग
॥ ४० ॥ गुरुकेवचनदृढदेमेंधारैं ॥ आदीअंतलोश्रुतिविचारैं ॥ जनममरणदेषेप्रतक्ष ॥ तजीअज्ञानही

होवेदक्ष ॥ ४१ ॥ साधनधर्ममांहीथितहोई ॥ आतमदेहविचारोदोई ॥ जोयाजगकीआदीअरुअंत ॥ सोईमध्यविचारैंसंत ॥ ४२ ॥ आदीअरुअंतमध्यमेंएक ॥ नामरूपभ्रमरूपअनेक ॥ हेमएकज्यों आदीअरुअंत ॥ मध्यकीएआभरणअनंत ॥ ४३ ॥ तोकछुहेमछोडीनहींआन ॥ जोविचारकरीदेषे ज्ञान ॥ मिथ्यासकलनामआकार ॥ हेमकालत्रयकरेविचार ॥ ४४ ॥ त्योंजगआदीमधअरुअंत ॥ मोहीअरूपविचारैंसंत ॥ आदीअंतमेंएकअरूप ॥ सोईमध्यवृथासबरूप ॥ ४५ ॥ जाग्रतसुपनसुषति अवस्था ॥ आदीअरुअंतमध्यमास्वस्था ॥ ईनकेनासभएजोरहैं ॥ सकलछोडताकौंबुधगहैं ॥ ४६ ॥ इंद्रियदेहइंद्रियनिकेदेव ॥ इंद्रियविषयनिकेबहुभेव ॥ तेसबजाकेकहींविननाहीं ॥ सत्यब्रह्मजोषोजोमांही ॥ ४७ ॥ जाहींप्रकासतसकलप्रकासैं ॥ जाकीशक्तिसत्यासिभासैं ॥ मुषकौंमुषकर्णनिकेकर्ण ॥ करा केकरचर्णनिकेचर्ण ॥ ४८ ॥ नाशानासनैनकेनैन ॥ जिभ्याजीभवेनकैंवेन ॥ याविधिसकलप्रकासकए क ॥ ताविनमिथ्यासकलअनेक ॥ ४९ ॥ एजैनामरूपाविस्तार ॥ जिनसौंपूरणसबसंसार ॥ तेसबअ दीहुतेकछुनाहीं ॥ अरुनहींरहीयैंअंतहूमांही ॥ ५० ॥ तातैंअबहुमिथ्यामानैं ॥ कारणब्रह्मनिरंतरजानैं ॥ नामधर्‍योसोसकलविकार ॥ तिहूंकालमैंमाटीसार ॥ ५१ ॥ यहजोकछुसोब्रह्मसमस्त ॥ आदीमध्य अरुसबकैंअस्त ॥ ऐसैंबहुविधिवेदबषानैं ॥ ब्रह्मवतायदैतसबभानैं ॥ ५२ ॥ आदिसमस्तहूतौंकछुना हीं ॥ अबआभासतएमध्यमांही ॥ यातैंपरब्रह्ममरूप ॥ सकलप्रकासकआपअनुप ॥ ५३ ॥ बहुवि

चित्ततामैंआभासैं ॥ ताकीशक्तिशक्तिप्रकासैं ॥ तातैंसकलब्रह्महीलेषौ ॥ तजिकरीरूपअरूपहीदेषौ ॥ ५४ ॥ इनतैंपरेंरूपममजानौ ॥ अरूएसबममरूपहिंमानौ ॥ द्वैतछोडिनिश्चलव्हैरहौ ॥ जानिब्र ह्मताब्रह्महींलहौ ॥ ५५ ॥ ऐसोजोनितकरैंविचार ॥ मिथ्याजानैंसबअप्रकार ॥ गुरुसेवाकरीज्ञा नबधावैं ॥ चेतनमोहीअखंडितध्यावैं ॥ ५६ ॥ यहजोतनसोआतमनाहीं ॥ तनघटरूपविचारोमांही ॥ अरुइंद्रियतेंदीपसमान ॥ इनहींप्रकासतआत्माज्ञान ॥ ५७ ॥ अरुयौंदेवपवनमनबुद्धी ॥ आतमकौंनहींजानैंशुधी ॥ क्षितिजलतेजपवनआकास ॥ अहंकारगुणचितपरप्रकास ॥ ५८ ॥ श्यामप्रकृतितनमात्रापंच ॥ इनहींसौंसबैंद्वैतप्रपंच ॥ तेजडआत्मकौंनहींजानैं ॥ आतमशक्ति इहांसोठानैं ॥ ५९ ॥ सकलप्रकाशकआतमएक ॥ एजडजाननसकैंअनेक ॥ याविधिजो ममरूपविचारैं ॥ सकलउपाधीउरैंकटारैं ॥ ६० ॥ सोबनरहैंइंद्रियनिथंभे ॥ किंवापुरुषाविषयनिआरं भैं ॥ तोहुंताकौंनहींगुणदोष ॥ जीवतहींजिनपायोमोक्ष ॥ ६१ ॥ जैसैंघनरविआडेआवे ॥ तोतिनसौंर वीनछिपाए ॥ अरुजोमेघदूरिव्हैंगयें ॥ तोकछुरविप्रकाशनभये ॥ ६२ ॥ रविहैंपरैंउरेघनवृंद ॥ जा नेलिप्तलोकमतिमंद ॥ जैसैंप्रगटपवनघनतोई ॥ धूमधूलअरुदामनीहोई ॥ ६३ ॥ ऋतुकेगुणसीतउ ष्णादी ॥ उपजतविनसतरहैंअनादी ॥ परिनहींलिप्तअलितआकास ॥ त्यौंआतमापरकास ॥ ६४ ॥ परितोहूंसंगतिनहींकरैं ॥ मायागुणनिदूरिपरिहरैं ॥ ज्यालोकारिनमेरीदृढभक्ति ॥ छूटीनहीरजतमआ

शक्ति ॥ ६५ ॥ द्वैतभेदनहींभूलैजोलौं ॥ ममजनसंगकरैंनहींतोलौं ॥ जैसैंरोगहोइतनमाहीं ॥ दृढक
रिमूलउषार्यौंनाहीं ॥ ६६ ॥ सोतजीऔषधअपथ्यहींकरैं ॥ तोवहूरोजगमैंअवतरैं ॥ वंधुकुटंबशि
ष्यभहुतेरैं ॥ आवैंसकलसुरनकेप्रेरैं ॥ ६७ ॥ तेतेअंतराइंसवकरैं ॥ जोगीकौंकर्मनिविस्तरैं ॥ सोति
नतैंपावेअवतार ॥ बहुर्योकरैंभक्तिविस्तार ॥ ६८ ॥ कर्मपंथमेंभूलैंनाहीं ॥ मैप्रेरकताकेउरमांहीं ॥
याविधिपाईज्ञानविज्ञान ॥ देषेमोहिमिठावैंआन ॥ ६९ ॥ तबताकौंकर्मकरमनीकरै ॥ लेनदेनभोजनवि
स्तरैं ॥ पूरवसंसकारकरवावै ॥ विधिकौलिष्यौंमिथ्याजावैं ॥ ७० ॥ सोमुनिमगनब्रह्मसुषमांहि ॥ ता
तैंकरताजानैंनाहीं ॥ जोवैठोअरुठाढोहोइ ॥ आवैजाइकहूंजेसोइ ॥ ७१ ॥ अनषाइजलपिवैंसोवैं ॥
जोव्यवहारदेवकौंहोवैं ॥ सोसोकछूनजानैंजोगी ॥ निश्चलरहैंब्रह्मरसभोगी ॥ ७२ ॥ जोकवहूदेषैंसंसा
र ॥ इंद्रियगोचरविविधप्रकार ॥ तेतेकछूसत्यनहींजानैं ॥ सुपनसमानज्यौंजागैंमानैं ॥ ७३ ॥ प्रथम
आतमाहूंतोअबंध ॥ आपहीभयोप्रकृतिसोबंध ॥ बहूर्योमोसोंविद्यापावैं ॥ तबदुषजानिप्रकृतिछिटका
वैं ॥ ७४ ॥ तबबहुर्यौताकौंनहींगहैं ॥ मोहीजानिमोहीमेंरहैं ॥ प्रथमहिजबमोकौंनहोज्ञान्यौं ॥ तबमा
यासुषउत्तममान्यौं ॥ ७५ ॥ बहुरौजबममसर्णहीआवैं ॥ ममप्रसादअज्ञानामिटावैं ॥ तबमायाकोंदुषम
यजानैं ॥ परमानंदरूपमोहीमानैं ॥ ७६ ॥ तातैंआपहीगहीउपाधी ॥ ताकौंतैंजानीकरीव्याधी ॥ स
दानिरंतरमोमेंरहैं ॥ बहुर्योभवसागरनहींबहैं ॥ ७७ ॥ ज्योरवीअंशसकलहीअक्ष ॥ पारिरविबिनान

लैषेंप्रतक्ष ॥ रविसंजोगबहुरिजबहोई ॥ तबसमस्तदेषैंसोसोई ॥ ७८ ॥ रविबिनअंधकारतबहोवें ॥
तातेकोइननहींजोवैं ॥ रविसंजोगप्रकासहिपावैं ॥ तबसबदेषैंतमहींमिटावैं ॥ ७९ ॥ परितैनैनात्रिकाल
अलेप ॥ अंधकारसौंभयेनलेष ॥ तस्यौंकेत्यौंतमहींमाही ॥ परिरविबिनुकछूदेषैंनाहीं ॥ ८०॥ रवितेउ
त्तमउपाधीपरिहरैं ॥ पाईप्रकाशप्रकासहीकरैं ॥ त्यौंयहआतममेरोरूप ॥ स्वयंप्रकाशकपरमअनूप॥
८१ ॥ जन्ममरणमरजादारहित ॥ कहुंकरीकबहुंनहींगहीत ॥ दूजैरहितआतमाएक ॥ ताहीकरिए
देहअनेक ॥ ८२ ॥ महाअनुभावसकलअनूभाव ॥ जामेंकदैनकर्मस्वभाव ॥ नित्यानंदसदाअतिशुद्ध
सदानिरीहसदाप्रबुध॥८३ ॥ जाकरिइंद्रियतनमनप्राना ॥ चेतनव्हैंवरतेंविधिनाना ॥ जोलोमनअरुवचन
नजावैं ॥ औरकौनाविधिताकौपावैं ॥ ८४ ॥ परिजबमेंतैरहीतोभयौ ॥ तबताकौसबबलमिटोगयौ ॥
अंधकारआयौअज्ञान ॥ जातेंदूरिभयौमेंभान ॥ ८५ ॥ जबबहुरौममशर्णोंहिआवैं ॥ तबसोज्ञानप्रका
सहींपावें ॥ तातेंछोडिसकलउपाधी ॥ जोमोबिनकरलीनोंव्याधी ॥ ८६ ॥ ताकौंअबहूंपरसैंनाहीं ॥ प
रिमोबिनतजीनहींजाहीं ॥ मोकौंपाइसकलपरिहरैं ॥ मेरेचर्णनिकौंअनुसरैं ॥ ८७ ॥ रविप्रकासमिटैत
मजैसे ॥ ममप्रकासद्वैतभ्रमएसैं ॥ सोपुनिमोकौंनहींविसरावैं ॥ मोहीसेंईमोमांहींसमावैं ॥ ८८ ॥ मोमेंहु
तेंनमायाल्यावैं ॥ एसैंमायामेंनहींआवैं ॥ तातेंनित्यहींमोमेंरहै ॥ मोमिलिपरमानंदलहैं ॥ ८९ ॥ उद्धव
इतनोहीअज्ञाना ॥ जो!केवलमेंजानैंनाना ॥ ब्रह्मविनाकछुदूजोनाहीं ॥ जैसैंसापजेवरिमांहीं ॥ ९० ॥ द्वै

तदेहजडमिथ्याजानैं ॥ चैतनएकब्रह्मथीरमानें ॥ अरुयहपंचवरनविस्तार ॥ उाजेंविमसेंवारंवार ॥९१
जाकौंमिथ्यावेदबषानैं ॥ अरुत्यौंहीगुरुसाधूमानैं ॥ अरुअनुभवतेंत्यौंहीदेषैं ॥ जागेंसुपनजगतत्यौंलेषैं
॥ ९२ ॥ एसोजगतसत्यतेंजानैं ॥ पुसापितबानीबेदबषानैं ॥ अंतनश्रुतिवचनविचारैं ॥ उरैंकहैंतेंईउ
रधारैं ॥ ९३ ॥ तातेंकर्मकामबहुकहैं ॥ तेमूरषयाभवमेंबहैं ॥ कर्मविषैंहोतिनकीबुधी ॥ तातेंकदेंनपावें
सुधी ॥ ९४ तातैंतिनकौलगैनज्ञान ॥ मुरुषआपहिजानेजान ॥ तातैंविषईजीवसमस्त ॥ तिनभ्रमायेंकरे
तेंअस्त ॥ ९५ ॥ तातेंउद्धवएहीज्ञान ॥ ब्रह्मजानीकरिछोडेंआन ॥ मेरोभजननिरंतरकरैं ॥ जाप्रका
सद्वैतपरिहरैं ॥ ९६ ॥ अरुउद्धवजोजोगकहावें ॥ अष्टअंगकोबेदबतावें ॥ सोज्यौंऔरविधित्यौंजा
नौं ॥ भवमोचनकबहूंमतीमानौ ॥ ९७ ॥ जबयाकैतनप्रबलविकार ॥ करीनसकैभक्तिअधिकार ॥
तातैंबहुविधिविस्तरैं ॥ ममविसवासपाईपरिहरैं ॥ ९८ ॥ प्रथमाहिंजोगधारणाकरैं ॥ सीतऊष्ण
सोगहीपरिहरैं ॥ एसैंकरितपापनिवारैं ॥ मंत्रमहबाधादिकटारैं ॥ ९९ ॥ भोजनक्षुधाऔषधी
रोग ॥ यौंतनजतनएकहैंजोग ॥ कामादिकमानसविकार ॥ जीतैंममसुमिरणआधार ॥ १००
॥ ममभक्तनकीसेवाकरें ॥ तापरिदंभादिकपरिहरैं ॥ याविधिविघ्नसमस्तनिवारैं ॥ मेरोभजनत्हदैमैंधा
रैं ॥ १ ॥ अरुएकैमूढकेराजा ॥ साधेजोगदेहकैंकाजा ॥ जोयहदेहमिटाईचहीयैं ॥ देहामि
टमेरौपदलहीयैं ॥ २ ॥ मेरोअंसआतमाएह ॥ याकौंदुषदातायहदेह ॥ तादेहहींजोराप्यौंचहैं ॥

तेआपुहींयाभवमेंवहैं ॥ ३ ॥ तनकोरोगजरादीकटारैं ॥ स्वासजीतीकरिमृत्युनिवारैं ॥ अंतमृत्युहो
वेंकलपंत ॥ बहुन्यौपावैंदेहअनंत ॥ ४ ॥ तातेंवृथाकरेंश्रममूढ ॥ मेरोभजनपावैंगूढ ॥ तातैमैंरहौंसंतनि
मांही ॥ तिनकौंकबहूंआदरनाहीं ॥ ५ ॥ अरुप्रथमजोजोगहीकरैं ॥ विघनिनिवारीभगतिविस्तरैं ॥ ता
कौंतनज्यौंनिश्चलहोई ॥ तोहुंआदरकरैंनकोई ॥ ६ ॥ छोडैंजोगसमाधिसमेत ॥ गहीममचर्णबढावैंहेत
॥ जोगमांहीबढैअहंकार ॥ तातैंनहींछूटैसंसार ॥ ७ ॥ तातैंसबनजीमोकौंभजैं ॥ ममआधीनव्हैआपत
जैं ॥ ममप्रसादतैंमोकौंपावैं ॥ बहुरौभवदुषमेंनहींआवैं ॥ ८ ॥ जोहोवैंमेरेआधीन ॥ आपामानैंसबबल
हीन ॥ मैंआधीनहोईताजनकैं ॥ जौंआधीनदेहयामनकैं ॥ ९ ॥ केवलजोममसरणहींआवैं ॥ ताहीकी
सबइच्छाजावैं ॥ तातैंविघननआवैंकोई ॥ विघ्नतहांजहांइच्छाहोई ॥११०॥ ममआनंदरहैंआनंदीत ॥
सबदेवनकेहोवैंबंदीत ॥ तातैंउद्धवएहीकरनौ ॥ मेरोभजनव्हदैमेंधरनौं ॥ १११ ॥ जगअरुआपब्रह्मम
यजानैं ॥ द्वैतभावकबहूंनहींआनैं ॥ ब्रह्मभावतैंब्रह्महीपावैं ॥ जन्ममरणकेदुषविसरावैं ॥ ११२ ॥ ब्रह्म
भावनहींउपजेजोलौं ॥ जन्ममर्णदुषमिटैनतोलौ ॥ तातैंब्रह्मभावकौंकरैं ॥ दूजौंसकलजतनपरिहरैं ॥
११३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसोसुनोश्रीकृष्णसौंअतिहींदुष्करज्ञान ॥ पूछ्यौंसुगमउपाईतबउद्धवप
रमसुजान ॥ ११४॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांअ
ष्टाविंशोध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उनतीसैंअध्यायमैंआगैंकौविस्तार ॥ श्रीधरभक्तियोग

पुनिउद्धवप्रतिनिरधार ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुतुमयहज्ञानवषान्यौं ॥
सोतोमैंअतिदुकरजान्यौं ॥ बशनाहींइंद्रियमनजिनकौं ॥ कैसेंकाजहोयेप्रभुतिनकौं ॥ १ ॥ जेहेंपरमहं
सदृढचित ॥ तिनकौंब्रह्मदृष्टिहेंनित ॥ औरोजेयहज्ञानविचारैं ॥ षेंचीषेंचीयामनकौंधारैं ॥ २ ॥ तिन
कौंमनबशहोईनज्यौंज्यौं ॥ महाकलेशलहेंतेंत्यौंत्यौं ॥ तिनकैंमनबशहोईनक्यौंहीं ॥ श्रमकरिजन्मगमा
वेंयोंहीं ॥ ३ ॥ तवपदपरमानंदसमुद्र ॥ ताकौंभेदनजानेंक्षूद्र ॥ करैंजोगयज्ञादिककर्म ॥ तिनतेंकदेंन
छूटेंभर्म ॥ ४ ॥ यातेंगर्भबंधेजोकरैं ॥ तातेंजुगजुगजनमेंमरैं ॥ केवलभक्ततुमारेजेतें॥ परमानंदलहेंस
बतेतें ॥ ५ ॥ जबहींतेंतवसर्णहींआवें ॥ तबहींतेंतवचर्णनिपावें ॥ तबहींतेंपूरणसुषपावें ॥ मायानिकटन
तिनकौंआवें ॥ ६ ॥तातेंजगतहींसहजामिटावें ॥ तुमचर्णनिमैंसहजसमावें ॥ तुमब्रह्मादिकसकलकेंनाय
क ॥ सबइनकौंप्रभूताकेंदायका ॥ ७ ॥ तिनकैंचर्णागहेंजेदीन ॥ तुमतिनकौंहोवोआधीन ॥ अस्त्य
हकहाअचंभास्वामी ॥ तुमसबकेंप्रभुअंतरजामी ॥ ८ ॥ तिनकौंसबतजिसेवेजोई॥करेआपवशतुमको
सोई ॥ सीसमुकुटधारीहेंजेतें ॥ तवपदमुक्तिविचारेतेतें ॥ ९ ॥ रामरूपतुमभएमुरारी ॥ तिनकौनिवा
नरअधिकारी ॥ वानरसकलसषातुमकरे ॥ सबहीनकेसबहितआचरे ॥ १० ॥ तातेंजोतुवकृतहीवि
चारैं ॥ सोक्यौंपलतुमभजननिवारैं ॥ तुमहींनषशिषदेहसंवारी ॥ चेतनशक्तितुमहीपुनिधारी ॥ ११ ॥
सदारहेतुमरेआधार ॥ तुमहींतिनप्रतिपालनहार ॥ तोपरिजीवतुमहीनाहिजानें ॥ करताभरताऔरनिमानें

॥ १२ ॥ तोहुंतुमअवगुणनहींआनौं ॥ बहुविधिजहांतहांरक्षाठानौ ॥ पुनिजबहींतवसरणहींआवैं ॥ तव तुमसोंचारौंफलपावैं ॥ १३ ॥ परितथापीसोअतिअज्ञान ॥ तुमकोंशेईलेईजोआन ॥ चारपदार्थसे वकताकैं ॥ तुमरीभक्तिविराजेताकैं ॥ १४ ॥ एकजहांनाहींतुमभजनौं ॥ नरकजानिसोईसोतजनौ ॥ तातेंजोहोवेसवेज्ञ ॥ तुमारेउपकारनिकौतज्ञ ॥ १५ ॥ अरुविधिसमआयुर्बलपावे ॥ बहुविधिप्रत्युप कारबतावे ॥ तोहूंतुमहोअनृणनहींहोई ॥ ब्रह्माआदिजहांलोजोई ॥ १६ ॥ तोंतुमबाहरसद्गुरुरूप॥ भिंतरचेतनशक्तिअनूप ॥ यौंजीवनिकैंपापनिवारौ ॥ आपहिंदेभवसंकटतारौं ॥ १७ ॥ तातेंभाषेभजना नंद ॥ सहजामिलौतवछूटैफंद ॥ एपुनिप्रीयउद्धवकेबेन ॥ बोलेकृष्णकृपाकेअयन ॥ १८ ॥ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ धन्यधन्यउद्धवममभक्त ॥ सबजीवनकेहेतअनुरक्त ॥ तोसोंकहों आपनौंधर्म ॥ जातेंमिटेसहजसबकर्म ॥ १९ ॥ करतेंसुषआगेंसुषपावैं ॥ छोडोभवभयमोमेंआवें॥ उद्धवकर्मकरेंनरजेते ॥ मेरेहेतकरेसबनेतें ॥ २० ॥ कर्मानिमेंभाषेंममनाम ॥ मेरेकारिराषेधनधाम ॥ मोमेंअरपेमनकीवृत्ति ॥ तातेंसबआचर्णनिवृत्ति ॥ २१ ॥ मेरीप्रीतिकरेंजोकरें ॥ मेरीप्रीतिरहितपरिह रैं ॥ जिनदेसनिमेरेभक्त ॥ तिनकरीबासहोईअनुरक्त॥२२॥सुरअरुअसुरनानिमेंजेतें ॥ मेरेभक्तभये हेकेतें ॥ तिनातिनकैंआचर्णनिजानें ॥ त्योंहात्यौंआपुनहींठांनें ॥ २३ ॥ मेरेजन्ममहोच्छवकरैं ॥ परव णिमेंमिलापविस्तरैं।।मेरीजहांजातराहोई ॥ तहांतहांचलिजावेंसोई॥२४॥गीतनृत्यवाजंत्रकरावैं॥छत्रचमर

आदिकअधिकावैं॥आतिउदारताकरिसबठानैं॥ममहेतलगैंभलोसोजानैं॥२५॥सबभूतनिमेंमोकौंदेषें॥अंतरबाहिरएकहीलेषें॥आपआदीजगमेंमैंजानैं॥त्यौंआकाशअनावृतमानैं॥२६॥ योसबमेंजानेंममभाव॥त्यागेसकलप्रवृत्तिसुभाव॥ सबहीनिकेसतकारहींकरैं॥ ज्ञानदृष्टिभेदहींपरिहरैं॥ २७॥एकैविप्रवेदअधिकारी॥ एकेअंतजमहाविकारी॥ एकेविप्रनिकेधनहरता॥ अरुएकैधनकैविस्तरता॥२८॥ एकैतेजहीनबहुदेपें॥ तेजवंतएकैबहुपेषैं॥ एकेक्रूरसकलदुषदाई॥एकेसातिकसकलसहाई॥२९॥ इत्यादिकनानाविधिदेषें॥ परिजोभेदकहूंनहिंलेषें॥ मेरीदृष्टसबनिमेंआनैं॥ ममजनपंडिततातहिबषानैं॥ ३० ॥ याविधिसबमेंमोकौंजानैं॥ देहभेदकछूयेनहिंआनैं॥ थोरेकालमांहीताजनकैं॥ सबविकारमिटज्ञावैंमनकैं॥ ३१ ॥ स्पर्धातिरस्कारअहंकार॥ सकलमिटैकछूलागैनवार॥ तातेंदेहदृष्टिनहींधरैं॥ लोककुटुंबलाजपरिहरैं॥ ३२ ॥ हांसीकरेसकलहीलोक॥ परिसोआनैंहरषनसोक॥ तिनकीकछुमनमेंनहींआनैं॥ सबजीवनमैंमोकौंजानैं॥ ३३ ॥ षरषचरचांडालनिअंत॥ जहांलोमेरीसृष्टिअनंत॥ नमसकारतिनतिनकौंकरैं॥ दंडसमानधरनिमेंपरैं॥ ३४॥ जौंलगिथावरजंगममांही॥ मेरोभावहोईथिरनाहीं॥ त्यौंलगिमनवचकायसमेत॥ योंसबमेंठानेंममहेत॥ ३५ ॥ याविधिकरतरहेनरजोई॥ ताकौंसकलब्रह्ममयहोई॥ मिटेअविद्याविद्यापावैं॥ तातेंबंधनसकलमिटावैं॥ ३६ ॥ उद्धवसकलमतेंहेजेतें॥ ममरूपहिजानैंसबतेतैं॥ उद्धवएसोधर्महैमेरो॥ कथाप्रभावकहोतिनकेरो॥ ३७ ॥मनक्रमवचनजहांलोंजेते॥

वेदमध्यमैभाषैतेते ॥ तिनमैंयहमतोममसार ॥ जातैंवेगिमिटैंसंसार ॥ ३८ ॥ अनूरूपप्रगटजोहोई ॥ क्यौंहीबहुरिमिटैंनहिसोई ॥ जहांलगीगुणनिर्मितवस्त ॥ तहांलगिसबहोवैंअस्त ॥ ३९ ॥ मैंनिरगुण सबगुणप्रकासी ॥ तातैंममधर्मंअविनासी ॥ मेरोनासकदैंनहींक्यौंही ॥ मेरोधर्मथोरोउत्यौंही ॥ ४० ॥ अरुउद्धवयहकहाकहीजैं॥मेरोधर्मकदैंनहींछीजै॥उद्धवजोलौकिकव्यवहारा॥राजसतामसविविधप्रकारा॥ ४१॥जिनतेंकेवलहोईअनर्थ॥प्रवृत्तिहुंकोमीटेनअर्थ ॥ नर्कनिमांहीडारनहार॥कामक्रोधद्वेषादिविकार॥ ४२ ॥ जेतोउतेंमोमेंकरे॥तोहूंमोहीलहैंभवतरैं ॥ जेसैंकंसमरणभयकऱ्यौ॥मेरोधर्मनहींआचऱ्यौं ॥४३॥ परिसोभयउकरीमोमांही ॥ ममपदपहुंच्यौभवमेंनाहीं ॥ अरुगोपीनकिएव्यभिचार ॥ लंघेबेदतजेभरतार ४४ ॥ परिव्यभिचारीमोमेंकऱ्यौं ॥ तोहुंतिनभवसागरतऱ्यौ ॥ अरुजोद्वेषकीयोशिशुपाल ॥ जातेंजीवनि ग्रासेंकाल ॥ ४५ ॥ परिसोउमोमेंकरिदोष ॥ भवजलतजीकरीपहुंच्यौमोष ॥ यौंविषरूपविकारहिंजेतें ॥ मोमेंआएअमृतभएतेतैं ॥ ४६ ॥ तातेंयहविवेकचतुराई ॥ एहैबुधीदूजीनहींकांई ॥ जोजूठेसोसाचहीं लीजैं ॥ पूरणकाजआपनौंकीजैं ॥ ४७ ॥ यहझूठिक्षिणभंगुरदेह ॥ सकलविकारनिकोग्रेह ॥ ताकरी पहियैंहरिअविनासी ॥ निरविकारपुणसुषराशी ॥ ४८ ॥ यहसबब्रह्मज्ञानकौसार ॥ जातेंमिटेसहजसंसार ॥ मैंसंक्षेपमांहिसबकह्यो ॥ जातेंसारनकहींवेंरह्यौं ॥ ४९ ॥ यहनरतनअरुयहममज्ञान ॥ देवनिकौं दुर्लभहीजान ॥ यद्यपिजीवलहैंनरदेह ॥ तोहूंज्ञाननपावेंएह ॥ ५० ॥ तातेंमेंभाष्योनिजज्ञान ॥ यातेंमोहील

हेतजिआन॥उद्धवग्रणकरीतुमजेती॥उतरसहीतकहीमैंतेती॥५१॥तेसबतत्वबेदकौजानौं॥ मेरोपरमरूपक
रिमानौ॥यहतुमरौमेरोसंवाद॥ अध्यात्मपरमात्मवाद॥५२॥ताकौंसुनित्द्दढमैंधारैं॥पावैंमोहीआपकौंतारैं॥
जोयहमेरोपूरणज्ञान ॥ मेरेभक्तानिदेवेदांत ॥ ५३ ॥ सोकहीयतुहेमेरोदाता ॥ जहांतहांकहीयतविष्याता
॥ जोजोदेईलहैसोई ॥ लोकबेदभाषतहैंदोई ॥ ५४ ॥ तातेदानदेईजेमेरी ॥ मेंआधीनहोईतिहकेरो
मोहिदेइसोसौंकौंपावैं ॥ तिनकौंलेमोमांझिसमावे ॥ ५५ ॥ जोजनयाकौंनितहींपढें ॥ ताजनसोमोसोंहित
बढैं ॥ सोजनमेरोअतिप्रियहोई ॥ ताकेंसमदूजोनहींकोई ॥ ५६ ॥ जोयहसुनेंनितहींकरीसादर ॥औ
रसकलकौंकरेंअनादर ॥ सोकर्मनिसौंलिप्तनहोई ॥ मेरीभक्तिलहैंद्दढसोई ॥ ५७ ॥ मेयहपरमज्ञानउ
चार्‍यौं ॥ उद्धवतुमकछुत्द्ददैधार्‍यौ ॥ सोकमोहभयभंयोनिवर्त ॥ निश्चलभयोत्द्ददयआवर्त ॥ ५८ ॥ उ
द्धवयहजोमेरोज्ञान ॥ सोमतिजानौमोतेंआन ॥ तातेंदंभसहीतजोहोई ॥ नास्तिककलहकुवासासोई॥५९
॥ प्रीतिनजानैंनहींममभक्ति ॥ दुर्विनीतविषयनिआसक्ति ॥ तिनकौंज्ञानदनोएह ॥ ज्यौंकलरभूमिबीजअ
रुमेह ॥ ६० ॥ ईनदोषनिकरिहोईविहीन ॥ मेरीभक्तिप्रितिद्दढदीन ॥ अस्त्रिसूद्रअरुएसोहोई ॥ तिन
हीसोंअंतरनहींकोई ॥ ६१ ॥ एसीविधिसुज्ञानहिकहीयैं ॥ तोतिनसहीतपरमपदलहीयैं ॥ जोयहमेरोजा
नैंज्ञान ॥ ताहिजानवैरहीतआन ॥ ६२ ॥ ज्यौंकोईपीवेपीयूष ॥ ताकेदूजोरहेनभूष ॥ ज्ञानअरुकर्मजोग
अष्टांग ॥ कृषिवाणिज्यनीतिसबअंग ॥ ६३ ॥ धर्मअर्थमोक्षअरुकाम ॥ इनसबहीनकौमोमेंधाम ॥

ताँतैंआवेमेमेजोईई ॥ इनसबईनकौंपावेसोंई ॥ ६४ ॥ परिमेरोजनकछूनलेवे ॥ सकलत्यागकरीमो
कौंसेवें ॥ ताँतेंसाधअरुसाधनजेतें ॥ ममजनदेषेमोमेंतेतें ॥ ६५ ॥ सबतजोजबचर्णममसेवें ॥ आपानी
वेदेकछुनहिलेवें ॥ ताकैंसमदूजोप्रियनाहीं ॥ सोनितमोमेंमेतोमांहीं ॥ ६६ ॥ जबसुनिएसैंहरिजीकेबैन॥
उद्धवअश्रुकुलाकुलनैंन ॥ आगैंठाढौअंजुलिबंध ॥ प्रेममगनतनमनदृढबंध ॥ ६७ ॥ बेनहुतेंबोल्यौनहिं
जावें ॥ कंठहुतेंगदगदसुरआवें ॥ ताँतेंउद्धवचुपकरीरहैं ॥ कछुवेरकछुवैननकहैं ॥ ६८ ॥ बहुर्योचित
थंभकरिधीरज ॥ पूरणप्रेमभयौअबकीरज ॥ निश्चलआपुकृतार्थमांन्यौं ॥ सबसंदेहदूदैतेंभान्यौ ॥६९
॥ हरिकेचरणनिमाथेधार्यो ॥ उद्धवभक्तवचनउचार्यो ॥ जिनतेंहरिसोंबाढेप्रेम ॥ जिनसौंकहीसुनिउप
जेंक्षेम ॥ ७० ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नाथअजन्माअरुअविनासी ॥ परमानं
दपरमप्रकासी ॥ तिनकेसन्निधानजबआयौ ॥ तबहींसबअज्ञानमिटायौ ॥ ७१ ॥ सन्निधानपाककेजावे
॥ सहजेंतमभएसीतगमावें ॥ अरुतापरतुमपरमदयालू ॥ मोनिजधनपरिभयेकृपालु ॥ ७२ ॥ यहविज्ञान
दीपमोहिदीनो ॥ जातेंसकलशुभकीनो ॥ तुमरैंचरणसरणभुवमांहीं ॥ दूजोठौरकदेसुषनाहीं ॥ ७३ ॥
जोकोईतुमकृतकौंजानें ॥ अरुतोपरिभवकौंदुषमानें ॥ जोतुमचर्णसर्णनहींआवें ॥ तोदूजैंकहांतेंसुषपावें
॥ ७४ ॥ प्रभूजोतुमअतिकरुणाकरी ॥ ममंमायाफांसीपारिहरी ॥ सकलजादवनिमैंअस्नेह ॥ अरुजुव
तिसुतावितयहदेहा ॥ ७५ ॥ एसबमेरेमनतेंटरैं ॥ अपनेचर्णकमलचितधरैं ॥ तुमविस्तारिआपनीमाया

॥ जिनयहसकलजगतभरमाया ॥ ७६ ॥ सौतुमज्ञानषडगसौंछेदी ॥ होइंकृपालनिजप्रीतिनिवेदी ॥ न
मोनमस्तेज्ञानप्रकासी ॥ जोगेस्वरईस्वरअविनासी ॥ ७७ ॥ दीजैंमोहीएकवरदेवा ॥ निश्चलदृढदयतुमा
रीसेवा ॥ तुमहिछोडिदूजोनहींजानौं ॥ परिसेवकव्हैसेवाठानौं ॥ ७८ ॥ मोहिप्रसाददीजियेएह ॥ तुम
सौंनिश्चलबढेसनेह ॥ करीविनंतीउद्धवभक्त ॥ बोलैहरिजीव्हैअनुरक्त ॥ ७९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवा
च ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तथाअस्तुउद्धवममभक्त ॥ ममचर्णनिनिश्चलआसक्त ॥ अबतुमउद्धव
एसीकरौ ॥ लोकनिकौशिक्षाविस्तरौं ॥ ८० ॥ बदरिषंडआश्रमहैमेरौ ॥ अतिपुनीतदरसनतिहकेरौ
॥ तहांतीर्थममचर्णनिकौंजल ॥ दरसेंपरअस्नानहरेमल ॥ ८१ ॥ नामअलकनंदासोगंगा ॥ निरमल
करैंदरससबअंगा ॥ तहांजाइतुमवासाकरौ ॥ फलभछनतरुबलकलधरौ ॥ ८२ ॥ दूंदूसीतउष्णादिक
सहौ ॥ विनयादिकसुभलक्षणगहौ ॥ इंद्रियनिकेअर्थनिपरिहरौं ॥ यहविज्ञानज्ञानउरधरौं ॥ ८३ ॥ मो
तेंसीष्यौज्ञानतुमजोई ॥ बैठेएकांताविचारोसोई ॥ बचनचितसबमोमेधर्‌यौ ॥ मेरोधर्मसदाविस्तरौ ॥ ८४
॥ तवगुणतीनोकोपरिहरींहौं ॥ ममनिरगुणपदकौंअनुसरीहौ ॥ यहउद्धवप्रतिज्ञाहेमेरी ॥ फिरिउत्पत्तीनव्है
हैतेरी ॥ ८५ ॥याविधिकृष्णवचनउचारैं ॥ तेउद्धवलेमस्तकधारैं ॥ चर्णनिपरप्रदक्षिणादीनि ॥ तवच
लवेकीइच्छाकीनी ॥ ८६ ॥ जद्यपिद्वंद्वदृढदैनहींआवें ॥ तोहूहरिजतिजेनजावें ॥ अश्रूकंठआतिआतुरबु
धी ॥ तनमनभयौनतनकीसुधी ॥ ८७ ॥ कृष्णवियोगानिअयौंकारिसहैं ॥ बारबारचालिफिरिफिरिरहैं ॥

तबअंतरजामीगोपाल ॥ जनकौंजानैंप्रेमविहाल ॥८८॥ निकटबुलाईमिलेदेअंग ॥ ज्ञानरूपकीनोसर्वंग
तबअपनीपावरीदीनी ॥ तेउद्धवजनमाथैंलीनी ॥ ८९ ॥ तोहूंप्रथमहिकृष्णपधारैं ॥ जादवलेप्रभाससंहारैं
तबहीतहांउद्धचलीआए ॥ कृष्णएकहीबैठेपाये ॥ ९० ॥ पुनिमैत्रेयपधारेतहां ॥ कृष्णदेवबैठेहैंजहां ॥
दहुंकीयोहरिकौंपरनाम ॥ दरसनपायौअतिअभिराम ॥ ९१ ॥ ठाढेभएजोरिकरदोई ॥ प्रेममगनक
छूकहैंनकोई ॥ तबतिनकोंहरिभाष्यौज्ञान ॥ जैसैंअंधकारकौंभान ॥ ९२ ॥ मैत्रेयकौंदीनौंआदेस ॥
विदुरहीकहीयौउपदेस ॥ आग्यादीतीउद्धवजनकौं ॥ अपनीशक्तिकियोथिरमनकौं ॥९३॥ तबउद्धवह
रिचर्णनिपरै ॥ हरिह्रदयनिश्चलकरिधरैं ॥ पुनिउद्धवजनपहुंचेतहां ॥ नरनारायणप्रगटेंजहां ॥ ९४ ॥
तहाजाईकीनौआचर्ण ॥ जेजेहरिभाषेतेकर्ण ॥ बलकलअंबरफलआहार ॥ प्रेममगननितब्रह्मविचार॥
९५॥तबात्रिगुणविस्तारमिटायौ॥उद्धवब्रह्मनिरंजनपायौ॥यहहरिउद्धवकोसंवाद॥हरिजीकोहैपरमप्रसाद॥
९६ ॥ जाकैंकृपाकरैंसोपावैं ॥ ताजिभवसिंधुब्रह्ममैंजावैं ॥ तबतैंयाकौंभाषैसुनैं ॥ प्रेमसहितह्रदेमैंगुनैं॥
९७ ॥ तबतैंपावैपरमानंद ॥ श्रमहीविनामिटैंदुषद्वंद्व ॥ यहस्वयमेवआपहरिकह्यौ ॥जामैंकछूसंदेहनरह्यौ
९८ ॥ यामैंएसोकृष्णप्रभाव ॥मिटैंजगतउपजेहरिभाव॥ जिनहरिप्रगटअमृतदेंकरैं ॥ भक्तिनिपाईसक
लदुषहरैं ॥ ९९ ॥ एकजलधितैंअमृतउपायौ ॥ निजाधीनदेवानिकौंपायौं ॥ जरारोगआदिकदुषहरैं॥
बलउपजाईविगतभयकरैं ॥ १०० ॥ अरुदूजोयहअमृतएक ॥ वेदसिंधुतेंब्रह्मविवेक ॥ सोअपनेजनन

कौंपायौं ॥ जनममरणभवयहिमिटायौ ॥ १ ॥ ऐसैंआदिपुरुषअविनासी ॥ सुनतमिटेजिनहिभवफासी॥ कृ
ष्णरामलीनौअवतार ॥ तिनकौंवंदनवारंवार ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसैंसुनिशुकदेवसौंपरमतत्व
उपदेश ॥ कृष्णकथाकेप्रमसौंकीनौप्रष्णनरेस ॥ १०३ ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे
श्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांउद्धवमुक्तिनिरूपणंनामैकोनात्रिंशोध्यायः ॥ २९ ॥ ॥इतिभगवतउद्ध
वसंवादसंपूर्णः ॥ ॥सकलचौपाईदोहाः ॥ ॥दोहा ॥ ॥ इच्छाहेनिजधामकीमौशलछलकौवार॥
कहततीसिवैंध्यायमैंयदुकुलकोसंहार ॥ १ ॥प्रथमसुणीसंक्षेपजोअवपूछौविस्तार॥ श्रीधरकथावसानमैंनृ
पप्रतीश्रीशुकसार ॥ २ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुहरिकीकथासुनावौ ॥ क
र्णपुटीनअमृतयहपावौ ॥ हरिउपदेशउद्धवयहदीनौ ॥ पीछैंआपकहातिनकीनौ॥१॥जादवकुलकौंप्रगयौं
श्राप ॥ हरिजीकहाकन्यौतवआप ॥ ईश्वरकौंबाधानहींकोई ॥ अरुद्विजश्रापनमिथ्याहोई ॥ २ ॥ स
वकेतनमनमोहनदेह ॥ परमानंदसुधाकोगेह ॥ जोनारीहरिदरसनपावैं ॥ तिनसौनैंननषैंचैंजावैं ॥ ३ ॥
अरुजेहरिकेरूपाहिंगावैं ॥ वानीशहितमानतेंपावैं ॥ अरुजेसुनिकरित्हदयेंधरैं ॥ तेपलकोनहींछोडपरैं
॥ ४ ॥ भारतमैंअर्जुनरथमांहीं ॥ वैठेंदरसनलहेंजाजाहीं ॥ तिनतिहरिकीसमतापाई ॥ सबसंसृतितत
कालगमाई ॥ ५ ॥ ऐसोतनहरित्याग्यौंकेसें ॥ कोईहरैंनागमणिजैसैं ॥ ऐसैंवचनकहैंनरदेव ॥ उत्त
रदीनौश्रीसुकदेव ॥ ६ ॥ ॥ श्रीशुकदेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ द्वारावतिउठैंउतपात ॥

तिनकौंदेषकहीहरिवात ॥ उग्रसेनआदिकसबलोक ॥ सभास्वधमांहरषनसोक ॥ ७ ॥ तिनसौंकृष्ण वचनउचारैं ॥ हरिकौंमर्मनलषैंविचारैं ॥ निजमायासौंमोहितकरैं ॥ ज्ञानविवेकसबनिकेहरैं ॥ ८ ॥ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेजादवैंसुनोममवात ॥ द्वारावतीबहुतउतपात ॥ एउ तपातैंमृत्युनिसांना ॥ तातैंत्याजियेयहअस्थांना ॥९॥ जुवतीबालवृधसबजेतें ॥ संषोद्धारपैठएतैतैं ॥औ रोसकलप्रभासहींजैयें ॥ तहांपश्चिमसरस्वतीअन्हैयें ॥ १० ॥ करीस्नान्तननिरमलकरीयें ॥ सुध रदृदयतीरथवृतधरीयैं ॥ जेजेबहुतपितृअरुदेवा ॥ तिनकीकरियेपूजासेवा ॥ ११ ॥ अरुवि प्रनकीपुजाकीजैं ॥ करीसनमानदानबहुदीजैं ॥ गाईभूमिसोनोवस्त्रादी ॥ हयहाथीरथअन्नगृहा दी ॥ १२ ॥ आसिरवादाद्विजनकीलीजैं ॥ जातेंविघ्नसकलहूंछीजैं ॥ देवअरुविप्रगाइकीपूजा ॥ पाप हरणविधिधर्मनदूजा ॥ १३ ॥ ऐसीसुनीहरिजीकीबानी ॥ सबजादवनिभलीकरिमांनी ॥ नांवनिबैठि सिंधुतैंउतरैं ॥ चढीकारिरथनिप्रयाणौकरैं ॥ १४ ॥ ज्यौंहरितिनकौंआग्यादीनि ॥ त्यौंत्यौंसवनिसवैंवि धिकीनी ॥ कारिअस्नानधर्मबहुठानैं ॥ मध्यप्रभासआपबहुमांनैं ॥ १५ ॥ तबतिनकीयैंमदिरापान ॥ जातेंभूलिगएसबज्ञान ॥ तबतेमत्तसकलईभए ॥ हरिमायाविवेकहरिलयें ॥१६॥ तिनमैंकलहभयौउत पन्न ॥ सबमेंप्रेरकहरिप्रछन्न ॥ तवतिनकीतांसभामझारी ॥ सात्यकीवीरगिराउचारी ॥ १७ ॥ कृतब्र ह्माकौंकरीअपमान ॥ सातिकछोडेबाणीवांन ॥ भाईजोछत्रीतनधारी ॥ अरुबहुमेंकहीयेंआधिकारी ॥

१८ ॥ सोऐसीकौंकरैं ॥ सोवतबालनिकैसिरहरैं ॥ यहप्रद्युम्नवचनसतकार्‍यौ ॥ कृतब्रह्मांकौंअंतधी
कार्‍यौ ॥ १९ ॥ तबकृतवर्मांकीनौक्रुध ॥ बाणिबाणप्रकास्यौजुध ॥ अरेकरैछत्रीकोऐसी ॥ व्याधक्रू
रतुंकीनींजैसी ॥ २० ॥ भूरिश्रवानिरायुधभयौ ॥ जाकौंबाहुजुगलकटीगयौ ॥ ताकैंबधतेकीनौऐसैं ॥
व्याधकसाईकरैंनहींजैसैं ॥ २१ ॥ तबसातिकउठीबोलेबानी ॥सुनोसुनोहेसारंगपांनी ॥ इनकौंजसअरु
आपसरायौ ॥ तातैंएसौमतोव्हैंआयौ ॥ २२ ॥ एकहींवचनषडगतिनकाढ्यौ ॥ कृतवर्मांकौमस्तकबा
ढ्यौ ॥ जद्यपिसबमिलिबहुतानिवार्‍यौ ॥ तोहूंसातिकक्रोधनटार्‍यौ ॥ २३ ॥ तातैंसकलभएतेक्रुध्ध ॥ सा
तिकहींसोंठान्योयुध ॥ तातैंसकलभएद्वैऔर ॥ जुधरच्यौसायरतटघोर ॥ २४ ॥ कोईधनुषबानसौंल
रैं ॥ केईषडगगहेसहरैं ॥ केईफरसीगदाकुठार ॥ केईलेहसिहाथप्रहार ॥ २५ ॥ केईगुरजगोफना
कोई ॥ वृक्षादिकनिलरैंतेतेई ॥ हरषितसबैंकरैंसंग्राम ॥ बैठेदेषेंकृष्णअरुराम ॥२६॥ हयसौंहयहाथी
सोंहाथी॥रथसोंरथसाथीसोंसाथी ॥ परसौंपरउठेउटानिसौं ॥ महिषरूमहीषबैलबैलानिसौं ॥२७॥ षचर
सौंषचरमिलिलरैं ॥ नरसौंनरमिलिजुद्धहींकरै ॥ महामतकछूलषैनऐसैं ॥ जुधकरैंबनमैंगजजैसैं ॥२८
॥ सांबप्रद्युम्नठान्योजुध ॥ त्यौंअक्रूरभोजअतिक्रुध ॥ तहांसंग्रामजीतअरुसुभद्र ॥ करैंजुधवीरनकौंभ
द्र ॥ २९ ॥ गदसेनामकृष्णकोभ्राता ॥ नामसुचारुपुत्रविष्याता ॥ त्यौंसातिकसौंमिलिअनिरुध ॥सुरथ
सुमित्रकरैंमिलिजूध ॥ ३० ॥ उल्मुकनिसठसहस्त्रसतजीत ॥ भानुआदीजोधाअपरिमीत ॥ आपूत्रा

पुमैंजुधहींठानैं॥हरीकरीमोहीकछुनहीजानैं॥३१॥वृष्णिवंसदासारहवंस॥सातत्वअंधकभोजवतंस ॥अरुबु दसूरसेनअरुमाथुर॥देशविसर्जनकौंतिरकुरकुर॥३२॥आपुआपुमिलिजुधहिठान्यौं॥सबनिपरस्परसुत्हृ दभान्यौं ॥ पुत्रपिताभाईअरुभाई ॥ मामाअरुभानैंजलराई॥३३॥ककाभतीजेनातीनाना ॥ मित्रमित्रमि लिजुधहीठाना॥सुत्हृदसुत्हृदज्ञातिनसौंज्ञाती॥सबमिलिभएपरसपरधाती॥३४॥तबसरक्षीणभएसबतिनकैं ॥टूटैधनूषतथाजिनजिनकैं॥आयुधसकलक्षीणजबभए॥तबतिनकरनिएरकालए॥३५॥भएमूसलचूरणते जेतैं ॥ वज्रसमानासिंधूतटतैतैं ॥ तैतेसकलकरनिकरलीनैं ॥ हरिसौंजुधक्रोधहिंकीनैं ॥ ३६ ॥ रामकृ ष्णवहूभांतिनिवारैं ॥ परतैंमूरखकछूनविचारैं ॥ रामकृष्णकौंरिपुकरीजानैं ॥ युधबुधिअंतरगतिआनैं ॥ ३७ ॥तबआपहूंकीयोतिनकोप ॥ कर्यौचहैंसबहींनकोलोप ॥ तबएरकाकरनिकरलीए ॥ थोरेमांहिप्र लयसबकीए ॥ ३८ ॥ विप्रश्रापआच्छादितकरैं ॥ हरिमायाविचारसबहरैं ॥ पावकक्रोधप्रगटतहांभ यौ ॥ बंसविपनिकुलजारिमारिगयौ ॥ ३९ ॥ तबकुलसकलनष्टहरिदेष्यौ ॥ भूकोभारउतार्योलषौ॥ जा कारणलीनौअवतार ॥ सोपरिहर्योधरणीकोभार ॥ ४० ॥ तबसमूद्रतटमैंबलिभद्र ॥ कीनोब्रह्मध्यानअ तिभद्र ॥ आपुहींब्रह्ममाहींलेराष्यौ ॥ मानवदेहदूरिकरिनाष्यौ ॥ ४१ ॥ रामप्रयाणलष्यौहरिजबहीं ॥ लघूपीपलतलिबैठेंतबहीं ॥ निरमलरूपचतुरभुजधार्यौ ॥ दशहुंदिशिकोतिमरननिवार्यौ ॥ ४२ ॥ ज्यौं विनुधूमपावकप्रकासा ॥ ऐसोप्रगटभयोउजासा ॥ पीतवसननीतनघनस्याम ॥ तप्तसुवर्णसोभाअभिराम॥

४३ ॥ सुंदरहाससहीतमुखपद्म ॥ कमलनयनसोभाकेसद्म ॥ कर्णनिकुंडलमकराकार ॥ सीस
मुकुटसोभाअधिकार ॥ ४४ ॥ रुचिरनीलशिरकेशविसाल ॥ उरभृगुलतामणिवनमाल ॥ कंठकौस्तु
भकटिसूत्रविराजै ॥ क्षुद्रघंटिकानूपुरराजै ॥ ४५ ॥ बहूआभूषणभूषितअंग ॥ देषतमोहिंअमितअनंग ॥
आयुधमूरतिवंतसमस्त ॥ सुमरीजिनहीहोईभयअस्त ॥ ४६ ।.उत्तमचर्णकमलआरक्त ॥ जिनकौउर
ध्यावैंनितभक्त॥दक्षिणजंघानीचैंकर्यौ॥वामचर्णताउपरधर्यौ॥४७॥ यौंनिश्चलव्हैबैठेकृष्ण ॥ सुमिरताजि
नहींमिटेभवतृष्ण ॥ अतिलघुमूशलषंडजोरह्यौ ॥ जलमेडार्यौमछहिगह्यौ ॥ ४८ ॥ सोवहमछजालमैं
आयौ ॥ ताकैउदरलोहसोपायौ ॥ जराव्याधभलकासोकीनौ ॥ लेकरीशरकेआगेदीनौ ॥ ४९ ॥सो
वहव्याधहूतोवनमाहीं॥हरिकौपदातिनजान्यौनाहीं॥हरिकौचर्णदृष्टजबपर्यौ ॥ मृगमुषजानिघाततिनकर्यौ॥
५०॥सोईबाणलगायोचर्ण ॥ विप्रवचननहींमिथ्याकरण॥सोवहवधिकनिकटचलीआयौ॥रूपचतुरभुजद
रसनपायौ॥५१॥ चरणलग्यौतबदेष्योबान॥जराभयोतबमृतकसमान॥चर्णनिपरिबोलैंभयभीत॥कंपतअं
गलग्यौंज्यौंसीत॥५२। हेप्रभूमैंकीनौअपराध॥तुमहींनजान्यौमूरषव्याध॥यहमैंकीयौसकलअयानैं॥ बान
चलायोमृगमुषजानैं ॥ ५३ ॥ यहअपराधतुमहिंप्रभुटारौ ॥ जेंतुमनामलियेंतेंतारौ ॥ तुमसुमिरणसबपा
पविनासैं ॥ मिटैंअज्ञानज्ञानप्रकासैं ॥५४॥ ब्रह्माआदिकरेंआराध॥तिनकोमैंकीनोंअपराध॥तातैंप्रभुजी
विलंबनकर्यौ ॥ मोपापीकेप्राणनिहरौ ॥ ५५ ॥ जातैंबहुरौंकरौंनऐसो ॥ यहअपराधकर्योमेंजे

सौ ॥ जिनकीमायाकौविस्तार ॥ ब्रह्माशिवसनकादीकुमार ॥५६॥ औरौश्रुतिदृष्टांतहैजेतैं ॥ क्यौंहिजांनीसकैनहींतेतैं ॥ मोहीतसकलतुमारीमाया ॥ तातैंतिनहुंपारनपाया ॥ ५७ ॥ तिनकौंपापजोनीहमजैतैं ॥ कोनभांतिकरिजानैंतेतैं ॥ तातैंअबदूजांनाविचाऱ्यौ ॥ बेगिमोंपापनिकौंमारौ ॥५८॥ ऐसीजराबधिककीबानि ॥ सुनीनिहकपटसारंगपानी ॥ तबप्रभूआपवचनउचाऱ्यौं ॥ ताकौंसकलसोकभयटाऱ्यौं ॥ ५९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उठउठजराभयमतीआनैं ॥ अपनेंकर्यौंपापमातिजानैं ॥ यहसमस्तलीलाहैमेरी ॥ यामेंकहाशक्तिहैतेरी ॥ ६० ॥ मेरीकृपाजाईतूंस्वर्ग ॥ जहांमहासुषनहीउपवर्ग ॥ ऐसैवचनकहेहारिजबहीं ॥ ढ्यौविमानस्वर्गतेंतबहीं ॥ ६१ ॥ तीनपरीक्रमाअरुपरनाम ॥ कारिकैबधिकगयौसुरधाम ॥ चढविमानस्वरलोकहिंगयौ ॥ जयजयशब्दजहांतहांभयौ ॥ ६२ ॥ तबरथलीयेसारथीदेषैं ॥ परिहरिजोकौंकहुंनपेषैं ॥ तुलसीगंधपवनजबपायौ ॥ ताकेषोजकृष्णपैआयौ ॥ ६३ ॥ पींपलमूलकीयेंहेआसन ॥ प्रभामानौंशशिसूरहुताशन ॥ आयुधआगेंमूरतिवंत ॥ यौंदेषेनिजपातिभगवंत ॥ ६४ ॥ तबदारुकधीरसनहिंकऱ्यौ ॥ रथतजीविहवलचर्णनिपऱ्यौ ॥ उमग्यौहृदयनैनजलछायौ ॥ प्रेममगनमुषवैननआयौ ॥ ६५ ॥ तबकरिधीरजअसुनिवारै ॥ करुणासहितवचनउचारैं ॥ हेप्रभुमेंतुमचर्णनिनदेषें ॥ तेपलपलककलपकारिलेषें ॥ ६६ ॥ जबतेंनष्टदृष्टमेंभयौ ॥ सबदुषएकवारअनुभयौ॥ भूलिदिशानकहुंसुषपायौ ॥ ज्यौंउडुपतिनिसामाहिछिपायौ ॥ ६७ ॥ तुमबिनमेंज्यौंतनाबिनप्रान ॥ जैसैनैन

अंधबिनभान ॥ एसेंवचनकहतहिसूत ॥ देष्योएकचरितअद्भूत ॥ ६८ ॥ गगनहुतैंउत्तमरथआयौ हयनिसहितअरुगरुडसुहायौ ॥ मुरतीवंतहरिआयुधजेतें ॥ रथमेंजाइचढेसबंततैं ॥ ६९ ॥ यहचरीत्र दारुकजबदेष्यौ ॥ विस्मयभयौअंचभालेष्यौ ॥ तबहरिसूतहिबचनसुनाए ॥ करिसनमानदुषविसराए ॥ ७० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सूतद्वारकाकौंतुमजावौ ॥ समाचारसबजाईसुनावौं ॥ सबकौंमरणरामनिर्याण ॥ अरुमैंहूंअबकरतप्रयान ॥ ७१ ॥ द्वारामतीरहामतिकोई ॥ तनकौंधारैंजहांलौजाई ॥ यहनरलोकतजौंमेंजबहीं ॥ सिंधूद्वारिकाबोरैंतबहीं ॥ ७२ ॥ हमारैंमातपितादिकजेई ॥ लेअपनैंलोकानितैंतेई ॥ दिलीजईयौअर्जुनसंगा ॥ रहैंद्वारिकाऽहैहौंभंगा ॥ ७३ ॥ तिनकौंयहसंदेशसुनावौं ॥ अरुतुममममधर्मनिमनलावौं ॥ मममायारचनायहजांनौं ॥ नामरूपयहमिथ्यामानौ ॥ ७४ ॥ क्षिणभंगुरसबनानारूप ॥ निश्चलजानौमोहिअनूप ॥ जहांतहांव्यापकमोकौंजानौं ॥ नामरूपसबमायामानौं ॥ ७५ ॥ मेरेचर्णनिरंतरभजौं ॥ दूजीसकलवासनातजौं ॥ ऐसैंव्हेआवौमोमांही ॥ जातेफिरिदुषपावौनाही ॥ ७६ ॥ यहसुनिसूत कृष्णसोज्ञान ॥ छोड्यौसोकमोहभयआन ॥ नमस्कारकरिवारंवार ॥ प्रदक्षिणादेईविविधप्रकार ॥ ७७ ॥ हरिबिजोगतेंअतिदुषपायौ ॥ ज्ञानविचारचितठहरायौ ॥ हरिकेचर्णकमलचितधारैं ॥ तवदारुकद्वारिकांपधारैं ॥ ७८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहनृपमैंतोसौंकह्यौंजदुकुलकौसंहार ॥ अबभाषौंहरिकौंगवनअरुहरिजनउद्धार ॥ ७९ ॥

॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादस्कंधेश्रीशुकपरिक्षितसंवादेभाषाटीकायांबलदेवनिर्याणोनामात्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥ ॥दोहा॥ ॥ कृष्णगधारेधामकौंएकतीसवैंध्याय ॥ तिनकेपीछैप्रीतितैंवसुदेवादिकजाय ॥१॥ हरिभक्तकेहेतकोलीलाविग्रहरूप ॥ श्रीधरभजैंसुभावतैंतेंजैंअंधभवकूप ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥चौपाई ॥ तबब्रह्मासनकादिनुलीयैं ॥ भृग्वादिकनितथासंगकीयैं ॥ सहितभवानीशंकरदेव ॥ इंद्रादिकअरुसुरउपदेव ॥ १ ॥ विद्याधरकिन्नरगंधर्व ॥ पितरमहोरगचारणसर्व ॥ गरुडलोकपंक्षीअरुसिद्ध ॥ हरिकैदरसकामनाविध ॥ २ ॥ सबमिलिहरिदरसनकौंआए ॥ सबमिलिहरिकेदरसनपाए ॥ हरिकेंजनमकरमगुणगावें ॥ सबमिलिजयजयशब्दसुनावैं॥३॥सकलविमाननिछायौगगन ॥ वरषेपुष्पप्रेमकरिमगन ॥ वारंवारकरैंपरनाम ॥ मुषतेंभाषेंहरिकोनाम ॥ ब्रह्मादिकसबकृष्णाविभती ॥ कृष्णहीकरीतिनकीउदभूति ॥ तेसमस्तदेषैंभगवान ॥ नैनमुदीतनठान्योंध्यान ॥ ५ ब्रह्मआपएककरीध्यायौ ॥ द्वैतभावसबदूरिबहायो॥ निजतनलोकनिकौंआभिराम॥ध्यानधारणामंगलधाम॥६॥ताकौंअग्निधारणाकरी ॥ अग्निउपायभस्मसोकरी ॥ तबहरिजीवैकुंटोसिधारे ॥ यावेधिसबकैकारजसारे ॥ ७ ॥ तबदुंदुभिवाजेसुरलोक॥उपज्जौंहरषमिटेभयशोक ॥ सत्यअरुकीर्तिधीरजधर्म ॥ सोभाअरुजेउतमकर्म ॥ ८ ॥ तेसबगणसंजगदीस ॥ जातेंहरिसबहीनकेईस ॥ तातेंजहांकथाहरिजीकी ॥ पूजाध्यानधारणानीकी ॥ ९ ॥ तहांसमस्तरहैतेईतैं ॥ इत्यादिकसबविधिजेईतैं ॥ ब्रह्माआदिसकलसुरजेतैं ॥ ह

रिकीगतिनजांनैंतैं ॥ १० ॥ हरिवैकुंठप्रयाणोकऱ्यौ ॥ सोकिनहुंकौंजाननपऱ्यौ ॥ कहुंनहींतिनहरिकों
दष्यौं ॥ बडौअचंभासबहींनलेष्यौं ॥ ११ ॥ जैसैंमेघहुंहोआकाश ॥अरुदामनीगगटघनपास ॥ कदे
करीप्रगटगुपतव्हैंजावैं ॥ ताकौंषोजनकोईपावैं ॥ १२ ॥ त्यौंहरिकौयोप्रयाणौजबही ॥ काहुतिनहींनदे
ष्योंतबही ॥ भुमेप्रगटहुतेंतबदेषैं ॥ गुप्तभएकीनहुनहींपेपैं ॥ १३ ॥ हेनृपयहअचंभानाहीं ॥ शक्तिअ
नंतसदाहरिमांही ॥ जदुकुलमैंहरिकौअवतार ॥ अरुकरीवौनानाव्यवहार ॥१४॥ सोसमस्तमायाकरी
जानौं ॥ हरिकीशक्तिहोतसबमानौं ॥ हरिजीसदाएकरसरहैं ॥ कर्मनकरैंजनमनहींगहैं ॥१५ ॥ औ
रैंकरमकरतसबजानैं ॥ जनमलीयौहरिजीकौंमानैं ॥ एसबदेहनिकैंव्यवहार ॥ हरिजीइनसबहीनकेपार
॥ १६ ॥ जैसैंनटवाजीविस्तारैं ॥ बहुऱ्यौंआपाहिसकलनिवाऱ्यौ ॥ बाजिगरसकलतैंन्यारा ॥ यौंहरि
कैकर्मअरुअवतार ॥ १७॥ जिनहरिरच्यौत्रिगुणसंसारा ॥ नानांभांतिप्रगटआकारा ॥आपप्रवेशकी
यौतिनतिनमैं ॥ सबबरताईविनासेछिनमैं ॥ १८ ॥अंतआपकैंआपहीरहैं ॥ सौंहीइनअवतारनिगहैं ॥
गुरुकेमृतकपुत्रजिनिआन्यौं ॥ कालमृत्युकौंगर्वहीभान्यौं ॥ १९ ॥ ब्रह्मशस्त्रनैंतुमहींबचायौ॥ बधीकहीं
स्वर्गसंदेहपठायौ ॥ तेजौआपनीरक्षाकरते ॥ तोतिनकौंकाहेपरिहरतें ॥ २० ॥ सबजगकौउतपतीप्रति
पाल ॥ नासकरैंजिनैंकेवलकाल ॥ एसैंसकलशक्तिमयदेवा ॥ ब्रह्माआदिकरैजासेवा ॥ २१ ॥ह
रिवैकौधरनीकौभार ॥ धन्योंहुतौंमानुषअवतार ॥ तामैंभूकौभारउताऱ्यौं ॥ पीछैंदेहहूरिकारिआर्यो ॥

२२ ॥ ज्यौंकांटोलागेपगमांही ॥ सोकांटाबिननिकसेनाहीं ॥ कांटेकाटोकाढ्यौजबहीं ॥ वहऊडारिदी नोंपुनितबहीं ॥ २३ ॥ यौंहारमृतकदेहक्यौंराषे ॥ निजानंदपदसौंक्यौंनाषें ॥ अरुएकहींआतिहिअ ज्ञान ॥ तिनकौप्रगटदिषायौंज्ञान ॥ २४ ॥ जोगसाधनकरिराषेदेह ॥ पुरुषार्थकरिमानैंएह॥ सकलविकारनिकोआगार ॥ ताकौंराषितजैंसुषसार ॥ २५ ॥ तातैंतिनकोमोहमिटायौ ॥ दे हतजेतेंब्रह्मबतायौ ॥ ऐसैतनकौंकीयोअनादर ॥ तातैंकोईकरैंनहींआदर ॥ २६ ॥ तातैंहरिवैकुंठपधारैं ॥ बाजीज्यौंदेहादिनिवारैं ॥ ब्रह्मारुद्रइंद्रादिकजेतें ॥ देषिप्रयाणौंहारिकोंतेतैं ॥२७॥ विस्मयभएकृष्णगु णगावैं ॥ अपनेअपनेलोकनिजावैं ॥ जोहारिचरितपढैंउठिप्रात ॥ कृष्णदेवकीनिरमलबात ॥ २८ ॥ सो दृढभक्तिकृष्णकोपावै ॥ जातैंकृष्णलोकमैंजावैं ॥ हारिदारुकद्वारकांपठायौ ॥ सोवसुदेवनृपतिपैंआयौ ॥ २९ ॥ कृष्णवियोगविकलआतिचित ॥ जैसैंकृपणगएतेंवित ॥ तिनदूनोंकेचर्णनिपरैं ॥ तबसारथीबचनउ चरैं ॥ ३० ॥ आंसुप्रवाहालैंनैननितैं ॥ आतिव्याकुलअटपटैंबैननितैं ॥ सबजदुकुलकौंनाससुनायौं ॥ अरुबलकोनिर्याणजनायौ ॥ ३१ ॥ यौंसुनिलोकततसबभयैं ॥ करतविलापप्रभासहींगयैं ॥ तहांजाई हरिजीनहींदेषें ॥ तबवैकुंठगएकारिलेषें ॥ ३२ ॥ तबरोहणीदेवकीवसुदेव ॥ उग्रसेनराजानरदेव ॥ ह रिवियोगतैंउपज्यौंसोक ॥ तातैंचहूंतजौंनरलोक ॥ ३३ ॥ रामकृष्णकोऐसोविजोग ॥ जातैंमिथ्यौदेहसं जोग ॥ बलजुवातिसबलैबलदेह ॥ अगानिप्रवेशकीयोआतिनेह ॥३४॥ वसुदेवहींलेषोडशनारी ॥ की

यौसहगवनाचितासंवारी ॥ प्रद्युम्नादीजहांलौजेतौं ॥ तिनकीत्रियनिलीयेंसबतेतैं ॥ ३५ ॥ रानहीनकौअ
तीकृष्णविजोग ॥ तातैंकर्‍यौअग्निसंजोग ॥ हरिकीवधूजहांलौजेती ॥ रुकमनिआदिसकलमिलितेती
॥ ३६ ॥ हरिकौंरूपहृदैमैंधर्‍यौं ॥ अग्निप्रवेशसकलमिलिकर्‍यौ ॥ अर्जुनपरमसपाहरिजीकौं ॥ कृ
ष्णविजोगप्रहारकजीकौं ॥ ३७ ॥ तातैंअर्जुनअतिदुपपायौं ॥ कृष्णज्ञानतबाहिंहृदैंआयौं ॥ गीतामा
हिकह्यौहरिज्ञान ॥ मिथ्यादेहसत्यभगवान ॥ ३८ ॥ ऐसौबहुविधिज्ञानविचार्‍यौ ॥ कृष्णवियोगदुःख
सबटार्‍यौ ॥ आपआपमैंमारेजेतैं ॥ अपनेंबंधुज्ञातिप्रीयतेतैं ॥ ३९ ॥ तिनकौंजेपिंडादिकदाना
॥ मृतकक्रियाजेतीविधिनाना ॥ सोईसोअर्जुनसबकरी ॥ कृष्णप्रीतिनेंनहींपरिहरी ॥ ४० ॥ तब
द्वारिकाकृष्णविनुभई ॥ सायरबौरिपलमैंलई ॥ केवलहरिजिकेयहनैंतें ॥ त्यौंहीरहैंमकालहीने
॥ ४१ ॥ नितविहारजहांहरिजीकौं ॥ सुमरतसुनतउधारणजीकौं ॥ मंगलसकलमंगलनिंकारी ॥
त्रिभुवनहोवैंनितचेरी ॥ ४२ ॥ अखिवालवृधसबजेतें ॥ मरनमरतउबरेतेकौनें ॥ तेअर्जुनादिलौलिआ
ए ॥ समाचारपांडवनिसुनाए ॥ ४३ ॥ तुमरेसकलपितामहजेतें ॥ कृष्णप्रयाणहोसुनकारिनेतें ॥ नृपक्षी
वंशधरराजाकीयौ ॥ मथुरातिलकवज्रकोंदीयौं ॥ ४४ ॥ तेसबनानिजचित्तगदिठिराए ॥ कृष्णहोसबै
कृष्णसयभए ॥ जोयहहरिजीकोअवतार ॥ जोमैंकसमगुणाविस्तार ॥ ४५ ॥ तिनकौंकहैंसुनैंअरुजोउ
॥ सबपापनितैंछूटैंसोई ॥ यावीधिहरिजीकेअवतार ॥ बालापननैंकमअपार ॥ ४६ ॥ लोकअरुवेदपे

प्रगटजेते ॥ गावैंसुनैंविचारैंतेतैं ॥ तबतैंलहैंपरमआनंद ॥ मिलैंकृष्णछूटैंदुषदंद ॥ ४७ ॥ ॥ दोहा
यहहरिकोअवतारमैंतुमसौंकह्यौंसूनाई ॥ याकौंकहिसुनिसुमरननरनारायणमैंजाई ॥ ४८ ॥ ॥ चौपाई
ब्रह्मनिरीहनिरंजनस्वामी ॥ सकललोककेअंतरजामी ॥ भक्तिनिहितधरैंअवतार॥नानाभांतिकरैंउद्धार॥
४९ ॥ तिनमैंकृष्णस्वयंभगवान ॥ ज्ञानक्रियासबशक्तिप्रधान ॥ जिनकैंगुणनिकहैंशुकदेव ॥ सुनताहित
न्यौपारिक्षतदेव ॥ ५० ॥ जिनकोनामालियेभवनाहीं ॥ लेकरिराषैनिजपदमांहीं ॥ असैंकृष्णसंतनिकौवि
त्त ॥ नमस्कारतिनप्रभुकौंनित ॥ ५१ ॥ तेअबसंनदासकेराम ॥ देहधरीजीवनकेकाम ॥ कृपानिधान
भक्तिकरवावैं ॥ अपनिशक्तिल्हदैमैंल्यावैं ॥ ५२ ॥ एसौविधभवदुषामिटावैं ॥ अपनेपरमपदपहुचावैं॥
कृष्णरूपतिनज्ञानसुनायौ ॥ उद्धवजननिजपदपहुचायौ ॥ ५३ ॥ सोलेकह्यौसंस्कृतव्यास ॥ तातेंहोइअ
नर्थप्रकास ॥ जोपंडितजानैंपैंसोई ॥ दूजोकदैंनजानेकोई ॥ ५४ ॥ तातैंतिनअबकरुणाकीनी ॥ मोसेव
कक्यौंआग्यादीनि ॥ सबलोकनिकौहितमनधारी ॥ ममउरव्हैंभाषाविस्तारी॥ ५५॥याकौंवाचेसुनैंसुना
वैं ॥ ध्यानकरैंउंचैंसुरगावैं ॥ तैंतेलहैंज्ञानवैराग ॥ प्रेमभक्तिहरिकौअनुराग ॥ ५६ ॥ प्रेमप्रवाहमगन
नितरहैं ॥ भवदावाग्निकदैंनहींदहैं ॥ एसेव्हैकरिब्रह्मसमावैं ॥ ताजिआनंदजक्तनहींआवैं ॥ ५७ ॥ क
बहुंकौरैकमनाकोई ॥ यातैंलहौंसकलसोसोई ॥ तातैंजेजहोइसहकाम ॥ अबजेबडभागीनिहकाम॥
५८ ॥ तिनसबनिकौंभाषाएह ॥ भक्तिअरुमुक्तिकोगेह ॥ तातैंयासौंकोजैंप्रीति ॥ यहहैसकलसंतन

करीरीति ॥ ५९ ॥ संवतसोलसहबाणवा ॥ ज्येष्ठसुक्लसष्टीकुजादिवा ॥ संतदासगुरुआज्ञादीनि ॥ चतुरदासयहभाषाकीनी ॥ ६० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परमज्ञानपरगटाकियोममघटहैनिजदेव ॥ तेमेरेउरनितवसैंसंतदासगुरुदेव ॥ ६१ ॥ विद्वज्जनतैंविनतीश्रीधरकरतप्रवीन॥ एकादशएकतीसपेंदोहाकियानवीन ॥ ६२ ॥ पुष्करछायामध्यहैपरशुरामसुषग्राम ॥ श्लेमबादजाकौंकहैंश्रीधरकविताताम ॥ ६३ ॥ श्रीधरपुनिशोधनकीयोसंवतविक्रमाधीश ॥ माधवसितप्रतिपदशनीचवधोत्तरएकुणीस ॥ ६४ ॥ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीशुकदेवपरिक्षितसंवादेभाषाटीकायांश्रीकृष्णप्रयाणोनामएकात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हेंपुस्तक भाषाएकादशस्कंध मुंबईंत बापूसदाशिवशेटहेगिष्टेशेय्येयांणीं आपलेछापखान्यांत छापिलेंठिकाण हनुमानगल्ली शके १७८८ क्षयनामसंवत्सरे जेष्ठकृष्णप्रतिपादिगुरुवासरेसमाप्तं श्रीगजाननार्पणमस्तु
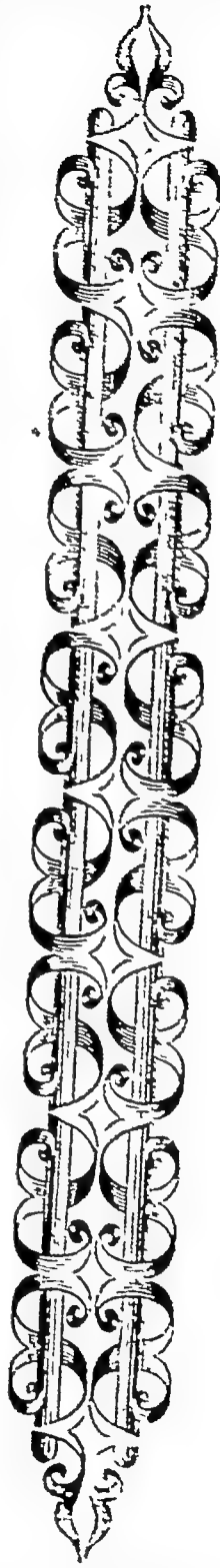
इतिश्रीमद्भागवतभाषाएकादशस्कंधःसमाप्तः